सम्मेलन-पत्रिका
के
नव प्रकाशित विशेषांक

⊙

राष्ट्रकवि सनेही-शती विशेषांक — मूल्य २०.००

⊙

आगामी विशेषांक

(क) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जन्मशती विशेषांक

(ख) आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी,
आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
तथा आचार्य परशुराम चतुर्वेदी स्मृति-विशेषांक

⊙

जानकारी के लिए सम्पर्क करें

सम्पादक : सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

सम्मेलन-पत्रिका

(त्रैमासिक)

[पत्र विशेषांक]

भाग ६८ : संख्या १-२
पौष-ज्येष्ठ : शक १८०३-४

सम्पादक
डॉ० प्रेमनारायण शुक्ल

वार्षिक
२०·०० रु०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन • प्रयाग

संयुक्तांक
१०·०० रु०

सम्पादकीय

पत्र-साहित्य

पत्र हमारे अन्तर्जगत् का सहज चित्र है। जिन भावों एवं अरमानों को हम अपने ओठों पर नहीं ला पाते हैं, वे अनायास ही कागज पर उभरकर हमारे अन्तस् के स्वरूप को उद्घाटित कर देते हैं। हमारी आशाएँ, आकांक्षाएँ, मनुहारें, हास-उच्छ्वास किम्बहुना कथ्य-अकथ्य सब-कुछ पत्र के माध्यम से हमारे सामने आ जाता है।

पत्र हमारे सूने क्षणों का साथी है। वर्तमान का कोलाहल जब हमारे कानों को बधिर-सा बना देता है, स्वजन-परिजन जब सभी एक-एक करके साथ छोड़ देते हैं और अपने पराये-से हो जाते हैं तब पत्र ही हमारा सम्बल बनता है। वही हमारे सखा के रूप में हमें ढाढ़स बंधाता है। वह उष्ण-शीत, सरस नीरस अतीत को वर्तमान में साकार करता हुआ जीवन के विभिन्न रूपों की झाँकी उपस्थित करता है। जीवन-डगर की एक लम्बी यात्रा के उपरान्त पड़ाव के रूप मे ही पत्र हमारे विश्राम-स्थल की रचना-सा करता है, जहाँ हम अपने वर्तमान को भूलकर स्मृति-पथ पर बड़ी तीव्रगति से चलते हुए अतीत में रमण करने लगते हैं। इस दृष्टि से पत्र एक सूक्ष्म साक्षात्कार का कार्य करता है।

हमारे वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन मे प्रायः एकरूपता का अभाव पाया जाता है। जो हम नही हैं, अथवा यो समझिए कि हम जिन आदर्शों की कल्पना मात्र करते हैं, उन्हें अपने व्याख्यानों में, अपनी उपदेशपरक चर्चा में, अपने लेखन-व्यापार में उरेहते रहते हैं। पर जब हम अपने को अपने मे झाँककर देखते हैं तब हमारी असली तसवीर हमारे सामने आती है। इस प्रकार जीवन की कथनी और करनी में बहुत बड़ा अन्तर प्रतीत होता है। किन्तु अपने पत्रो मे हम स्वतः ही अपना प्रत्यक्षीकरण करा देते हैं। मस्तिष्क का मन्थन और हृदय का आलोड़न-विलोडन पत्रों मे रूपायित हो जाता है। पत्रो की अपनी विशिष्ट स्पन्दनशीलता होती है, उनका अपना स्वर होता है, अपनी ध्वनि होती है और अपने संकेत होते हैं जिनके सहारे छोटे-बड़े, बुध-अबुध, सभी अपने जीवन के विचित्र कार्य-कलापों में दत्तचित्त रहते हैं। लिपि-ज्ञान और भाषा-सृष्टि के क्षणों से ही कदाचित् पत्र का प्रचलन हो गया होगा। साहित्य के इतिहास में पत्रों की कहानी वैचित्र्य, कुतूहल, जिज्ञासा, औत्सुक्य आदि सबको बटोरती चलती है। पत्र लिखने और पत्र बाँचने दोनों के प्रति जन-मानस का सहज उल्लास देखा जाता है। इसीलिए तो दूसरे के पत्रों को खोल-खोलकर पढ़ने और रहस्य को समझने और अनसमझे ही कुलाबे बाँधने के हौसले भी देखे जाते हैं। कोई-कोई तो ऐसे चतुर-चितेरे होते हैं जो "खत का मजमूं भाप लेते हैं लिफाफा देखकर।"

पत्र हमारी भावात्मक अभिव्यक्ति का एक विशिष्ट माध्यम है जिसका प्रयोग संस्कृत-साहित्य में भी उपलब्ध होता है। महाकवि कालिदास विरचित 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' के तृतीय अंक में शकुन्तला सुग्गे की छाती के समान कोमल कमलिनी के पत्ते पर अपने नखों से ही लिखकर अपनी भावना दुष्यन्त के प्रति निवेदित करती है।[1]

पत्र लिखने का चाव एक अवस्था-विशेष का परिणाम होता है। कोई अपनी उम्र की गति के साथ पत्र लिखने के हौसले को बुलन्द करता है और कोई अपनी अवस्था की उपेक्षा करके अपनी मन की सहज तरंग में पत्रों के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करता है। कसम खा-खा कर "मसि कागद छूयौ नहीं" का उद्घोष करने वाला बेचारा कबीर भी अपने पत्र में और कुछ न लिख कर केवल अपने प्यारे का, आराध्य का बार-बार नाम अंकित कर अपनी लगन को व्यक्त करता रहता है। पर उसके पत्र लिखने के उपक्रम बड़े ही विचित्र हैं, अनुपम हैं—

यहु तन जारौं मसि करौं, लिखौं राम को नाउँ।
लेखनि करौं करंक की, लिखि-लिखि राम पठाउँ॥

चंदवरदाई ने स्वयं कोई महत्त्वपूर्ण पत्र लिखे या नहीं, यह भले ही शोध का विषय बने, पर इतना स्पष्ट है कि उसने अपने हृदय की सहज उमंग में संयोगिता द्वारा पृथ्वीराज को एक पत्र भिजवा ही तो दिया—

प्रिय प्रिथिराज नरेस जोग लिखि कग्गर दिन्नौ
× · × ×
दिक्खंत दिट्ठि उच्चरिय वर, इक पलक बिलंब न करिय।
अलगार रयनि दिन पंच माहि, ज्यों रुक्मिनि कन्हर बरिय॥

जन-जन के मानस मे रमने वाले तुलसी के रामचरितमानस के भी पत्र अपनी प्रतिष्ठा प्राप्त करके ही रहे। धनुष-भंग के उपरान्त तुलसी महाराज जनक के दूतों को उनके पत्र के साथ दशरथ के पास भेजते हैं—

पहुँचे दूत राम-पुर पावन। हरषे नगर बिलोकि सुहावन।
भूप द्वार तिन्ह खबर जनाई। दसरथ नृप सुनि लिए बोलाई।
कर प्रनाम तिन्ह पाती दीन्हीं। मुदित महीप आपु उठि लीन्हीं।
बारि बिलोचन बाँचत पाती। पुलक गात, आई भरि छाती।
राम-लखन उर, कर बर चीठी। रहि गए कहत न खाटी मीठी।
पुनि धरि धीर पत्रिका बाँची[2]। हरषी सभा, बात सुनि साँची।

---

१. तुज्झ ण आणे हिअअं मम उण कामो दिवावि रत्तिम्भि।
णिग्घिण तवइ बलीअं तुइ वुत्तमणोरहाइँ अङ्गाइँ।
तव न जाने हृदय मम पुनः कामो दिवाऽपि रात्रिमपि।
निर्घृण तपति बलीयस्त्वयि वृत्तमनोरथान्यङ्गानि।

२. "धैर्यमाधाय राजा तु वाचयामास पत्रिकाम्"-अध्यात्म रामायण।

तुलसी के एक ऐसे पत्र के सम्बन्ध मे किंवदन्ती चली आ रही है जिसने मीराँ की सम्पूर्ण जीवन-पद्धति को बड़े निष्ठा के साथ एक ऐसी सरणि में डाल दिया जिससे मीराँ भक्त-मण्डली में मीर बन गयीं। ऐतिहासिक तथ्य तो नहीं कहा जाता, पर हाँ, जनश्रुति ऐसी चली आ रही है कि मीराँ ने अपने पारिवारिक जीवन से संत्रस्त होकर मार्ग-दर्शन के लिए तुलसीदास जी को एक पत्र लिखा—

> "स्वस्तिश्री तुलसी कुलभूषन, दूषन हरन गोसाईं।
> बारहिं बार प्रनाम करहुँ, अब हरहु सोक समुदाई।
> घर के स्वजन हमारे जेते सबन्ह उपाधि बढ़ाई।
> साधु संग अरु भजन करत मोहिं देत कलेस महाई।
> मेरे मात-पिता के सम हौ, हरिभक्तन्ह सुखदाई।
> हमको कहा उचित है करिबो, सो लिखिए समझाई।"

कहा जाता है कि इसी पत्र के उत्तर में तुलसी ने निम्नांकित पद लिख भेजा जिससे मीराँ को अपनी कृष्ण-भक्ति के लिए दृढ संकल्प प्राप्त हुआ—

> "जाके प्रिय न राम बैदेही,
> सो नर तजिय कोटि वैरी सम, जद्यपि परम सनेही।
> × × ×
> नाते सबै राम के मनियत सुहृद सुसेव्य जहाँ लौं
> अञ्जन कहा आँखि जो फूटै बहुतक कहौं कहाँ लौं।"

7042

पत्र लिखने की नाना कल्पनाओं के बीच मीराँ की मस्ती निराली है। वह अपनी तन्मयता एवं आत्मविश्वास के प्रतिफलस्वरूप उन्हे हेय समझती हैं जो निरन्तर पत्राचार किया करते हैं—

> "सब कोउ अपने पिया को लिखि-लिखि भेजत पाती।
> मोरे पिया मोरे हिरदय बसत हैं, ना कहुँ आती जाती।"

प्रणयी जीवन में भावात्मक दृष्टि से पत्र का विशेष महत्त्व अनुभव किया जाता है। सूर की प्रेम-व्यञ्जना में इसके मनोरम प्रसंगो की उद्‌भावनाएँ की गयी हैं। 'पाती' और फिर प्रिय के हाथ की लिखी 'पाती' बड़ी मूल्यवान् है, बड़ी सान्त्वनाप्रद है—

> "पाती मधुबन तै आई।
> ऊधौ हरि के परम सनेही, ताकै हाथ पठाई।
> कोउ पढ़ति, कोउ धरति नैन पर, काहूँ हृदै लगाई।
> कोउ पूछति फिरि-फिरि ऊधौ को आपुन लिखी कन्हाई।"

गोपियाँ यह विचार कर कि "कत लिखि-लिखि पठवत नंदनंदन कठिन बिरह की काँती" उसे पढ़ती ही नहीं हैं। विरह-ज्वाल से झुलसी हुई गोपिकाएँ उस पाती को पढ़ कर अपने को विस्मृति-पथ पर कैसे ले जायें। वियोग के क्षणों में पिय की पीर भरी स्मृति ही तो सुखद बनती है। वही तो जीवन का सम्बल है।

पाती सम्बन्धी सूर की अनेकानेक उद्‌भावनाएँ बड़ी मर्मस्पर्शी हैं—

(i) ब्रज मैं पाती पढ़न न आवै ।
सुंदर स्याम लाल लिखि पठई, कोउ न बाँचि सुनावै ।

(ii) काहे कौं लिखि पठवत कागर ।
मदन गुपाल प्रगट दरसन बिनु क्यों राखै मन नागर ।

(iii) ऊधौ कहा करै लै पाती ।
जौ लौं मदन गुपाल न देखैं, बिरह जरावत छाती ।

और जब उद्धव के बहुत आग्रह करने पर जोग-पत्रिका हाथ में ली गयी तब तो इतना अधिक अश्रुप्रवाह हुआ कि "देखत अंक स्याम सुंदर के ह्वै गई स्याम स्याम की पाती ।" अब वे अंक कैसे बाँचे जायें?

इसी सन्दर्भ मे आधुनिककाल के कवि 'रत्नाकर' की पत्र सम्बन्धी कल्पनाएँ भी बड़ी ही हृदयद्रावक हैं—

(i) उझकि उझकि पद-कंजनि के पंजनि पै
पेखि-पेखि पाती छाती छोहनि छबै लगी ।
हम कौ लिख्यौ है कहा, हम कौ लिख्यौ है कहा,
हम कौ लिख्यौ है कहा, कहन सबै लगीं ।

× × ×

(ii) लच्छ दुरे सकल बिलोकत अलच्छ रहे
एक हाथ पाती एक हाथ दिये छाती पर ।

(iii) ह्याँ तो विषमज्वर-वियोग की चढ़ाई यह
पाती कौन रोग की पठावत दवाई है?

और अन्त मे जब उद्धव द्वारा निहोरे करने पर गोपिकाओं ने पत्र का उत्तर लिखना चाहा तब—

दाबि-दाबि छाती पाती-लिखन लगायौ सबै
ब्योंत लिखिबै कौ पै न कोऊ करि जात है ।

× × ×

सूखि जाति स्याही-लेखिनी कै नैकु डंक लागै
अंक लागै कागद बररि बरि जात है ।

उर्दू के शायरों ने भी खतोखिताबत में अपनी दिलचस्पी का बड़ी खूबसूरती के साथ इजहार किया है । कुछ नमूने देखिए—

क़ासिद के आते-आते ख़त इक और लिख रक्खूँ
हम जानते हैं वो क्या लिखेंगे जवाब मे ।

हिन्दी साहित्य में पत्रवाहक के रूप में जिस प्रकार उद्धव को व्यंग्य सुनने पड़े हैं उसी प्रकार उर्दू साहित्य मे बेचारा क़ासिद (पत्रवाहक) बड़ी दया का पात्र रहा है । देखिए—

"क़ासिद ! नहीं यह काम तेरा अपनी राह ले।
उसका पयाम दिल के सिवा कौन ला सके।"

साहित्य-सृष्टि के क्षणों में लेखक की एक कलात्मक भावभूमि होती है। वह अपनी कल्पना-तूलिका द्वारा हलके-गहरे रंगों के सम्मिश्रण के द्वारा बड़े आकर्षक भाव-चित्र उपस्थित करता है। पर उसका यह सौन्दर्य भाव का सौन्दर्य है, यथार्थ का सौन्दर्य नहीं। कला-निर्माण के क्षणों में तो कलाकार अतीन्द्रिय जगत् में विहार करता है। वह जगत् बड़ा ही पूत है, सुखद है। पर यथार्थ का जगत् उस काल्पनिक जगत् से नितान्त भिन्न है। कलाकार का, साहित्यकार का नित्यप्रति का भोगा जाने वाला जो व्यक्तित्व है, जीवन है उसका वास्तविक दर्शन तो उसके पत्रों में ही पाया जाता है। जीवन और जगत् कैसा हो और यह है कैसा, अर्थात् आदर्श और यथार्थ के बीच का अन्तर तो पत्रों द्वारा ही प्राप्त होता है। इस आधार पर हमारे मनीषियो, साहित्यकारों, राजनीतिज्ञों, ऐतिहासिक महापुरुषों, समाज-सेवियों आदि के द्वारा लिखे गये पत्रो का विशेष महत्त्व है। वे पत्र हमारी युग-चेतना के दस्तावेज हैं। दीनबन्धु सी० एफ० ऐण्ड्रूज का नाम उन महान् व्यक्तियों में अग्रणी है जिन्होंने भारतवर्ष की सेवा मे एक तपस्वी का-सा जीवन व्यतीत किया है। उनकी सेवाओं की अभ्यर्थना मे १५ जुलाई, सन् १९५१ को रवीन्द्रनाथ टैगोर ने पत्र लिखते हुए एक स्थल पर लिखा था—

"As a letter writer you are incomparable ! your letters come down like showers of rains upon the thirsty land. Writing letters is as easy to you as it is easy for our salt Avenue to put forth its leaves in the begining of the spring month."

श्री सी० एफ० ऐण्ड्रूज के पत्रो का संग्रह लन्दन से "लेटर्स टु ए फ्रेण्ड" नाम से प्रकाशित हुआ है। इन पत्रो से उनकी चिन्तन-धारा एवं वन्दनीय क्रिया-कलापों का परिचय प्राप्त होता है।

कभी-कभी महान् पुरुषो के पत्र देश की प्रतिभा पर बड़ी सटीक टिप्पणी करते हुए पाये जाते हैं। नवम्बर, सन् १९१३ मे लेनिन ने गोर्की की अस्वस्थता के समय जो पत्र लिखा था, उससे बोलशेविक डॉक्टरों के प्रति उनकी भावना का परिचय मिलता है। लेनिन ने एक अपने सुयोग्य डॉक्टर की सम्मति के आधार पर गोर्की को लिखा था कि "खुदा इन कामरेड डॉक्टरों, खासतौर से बोलशेविक डॉक्टरों से हमारी रक्षा करे।······ इन कामरेड डॉक्टरों में ९९ प्रतिशत गधे होते हैं।"* इस प्रसंग में यह आवश्यक नहीं है कि लेनिन का कथन सर्वांशतः ठीक ही हो। पर उसके विचारों की दृष्टि से (जो किसी आग्रह-विशेष के परिणाम भी हो सकते हैं) उसकी इस भावना को महत्त्व दिया जा सकता है।

*पद्मसिंह शर्मा के पत्र, पृष्ठ २९ (भूमिका भाग)

भारतवर्ष के इतिहास में स्वतंत्र नेता के रूप में महाराज शिवाजी का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। उन्होंने जो पत्र मिर्जा जयसिंह को लिखा था उसका ऐतिहासिक मूल्य है। उस युग में भारतीय राजनीति क्या खेल खेल रही थी, किस प्रकार स्वदेश का एक वर्ग अपनी ऐश्वर्य-लिप्सा मे अन्धा हो रहा था और दूसरा वर्ग देश की स्वतंत्रता के प्रति समर्पित था, आदि बातो का पता ऐसे ही पत्रों से प्राप्त होता है।

स्वतंत्रता संग्राम मे सतत संघर्षरत पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने जो पत्र अपनी बेटी इन्दिरा को लिखे थे उनका महत्त्व कई दृष्टियो से है। उन पत्रो में न केवल पण्डित नेहरू का अपना जीवन-दर्शन है, अपितु देश-विदेश की नानाविध स्थितियों का परिज्ञान भी सन्निहित है। उन पत्रो का आज वैयक्तिक महत्त्व न होकर सार्वजनिक महत्त्व है। ये पत्र एक प्रकार से शैक्षिक महत्त्व की उस भूमिका के रूप मे हैं जिन्होने आज इन्दिरा जी को देश के सर्वमान्य नेता के रूप मे उभारने का गौरव प्राप्त किया है। इसी प्रकार महात्मा गांधी ने जो पत्र टाल्स्टाय को लिखे हैं वे अनेक दृष्टियो से बड़े ही महत्त्वपूर्ण हैं। गांधी जी के पत्रो का संग्रह चार भागों मे "बापू की प्रेम प्रसादी" नाम से प्रकाशित हुआ है। गांधी जी केवल राजनीतिक नेता ही न थे, उनके चिन्तन का क्षेत्र धर्म, समाज, राजनीति और इन सबसे ऊपर व्यक्ति था। उनका विश्वास था कि व्यक्ति के विकास मे ही जीवन के सभी क्षेत्रों में विकास सम्भव है। इन पत्रो मे ऐसे ही नानाविध रूपो की झाँकी प्राप्त होती है।

श्री सुभाष चन्द्र बोस, वीर सावरकर, सरदार पटेल और पं० कमलापति त्रिपाठी के पत्रो के संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। ये सभी महापुरुष भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की कठिनतम साधना से जुड़े रहे हैं। इनके पत्रो मे उस युग की चिन्तन-धारा प्रवाहित हो रही है। स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास-लेखन मे इन पत्रो की विशिष्ट भूमिका हो सकती है।

प्रायः करुणभावपूर्ण क्षणो अथवा उल्लासमय मन.स्थिति मे भी व्यक्ति जीवन तथ्यों की बड़ी ही सटीक अभिव्यक्ति कर देता है। हम सभी पारिवारिक जीवन मे बच्चों के महत्त्व से परिचित हैं। हमारे जीवन-कानन मे हमारे बच्चे वसन्त-श्री के रूप में हैं। माता-पिता के पारस्परिक स्नेह-बन्धन को वे सुदृढ़ करने वाले हैं। टाल्स्टाय ने इसी तथ्य को अपने सात वर्षीय शिशु के अकाल ही कालकवलित होने पर व्यक्त करते हुए लिखा है—

> "ईश्वर ने उसे यहाँ इसलिए भेजा था जिससे वह यहाँ प्रेम को बढ़ावे और इस संसार से विदा होकर प्रेमपूर्ण ईश्वर से मिलने के पूर्व हम दोनो को प्रेम के बन्धन में बाँध दे। इतना अधिक हम कभी एक-दूसरे के निकट न आ पाये थे, मैं और मेरी पत्नी सोफिया। जितना प्रेम अब मैं सोफिया से करता हूँ उतना मैंने पहले कभी नहीं किया था।"

अंग्रेजी साहित्य के सुप्रसिद्ध विद्वान् लेखक डॉ० जॉनसन का पत्र जो उन्होंने अपनी पत्नी के निधन पर लिखा था, उनके पत्नी-प्रेम की अतल गहराई का परिचय प्रदान करता

है। १७ मार्च, सन् १७५२ की रात्रि में उनकी पत्नी दिवंगत हुई। अपने मित्र रैवरेण्ड डॉक्टर टेलर को अपने मन की पीर को व्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा—

"Do not live away from me, my distress is great."

थोड़े-से ही शब्दों में जीवन के अभावमय सूनेपन को डॉ० जॉनसन ने बड़ी मार्मिकता के साथ अभिव्यक्त किया है।

आस्ट्रिया निवासी विश्वविश्रुत लेखक स्टीफन ज्विग अपनी कलम का धनी था। कलाकार की स्वतन्त्र प्रतिभा का उन्मेष उसके साहित्य में देखा जा सकता है। यह एक संयोग ही था कि उसे राजकीय कोप का भाजन बनना पड़ा। हिटलर की दानवी लिप्सा ने सर्वत्र भय, अशान्ति, क्लेश और घोर चिन्ता का वातावरण उत्पन्न कर दिया था। साहित्यकार स्टीफन को उसकी क्रोधाग्नि में जलना पड़ा। विदेशों में दर-दर की खाक उसे छाननी पड़ी और अन्त में अपने जीवन से हताश होकर सन् १९४२ में अपनी पत्नी के साथ विष-पान करके अपने जीवन का ही अन्त कर दिया। मरने के पूर्व उसने जो पत्र लिखा था उसमें उसकी अन्तर्वेदना और जन-जन के लिए कल्याण-कामना सन्निहित है—

"सम्पूर्ण मित्र-मण्डल को मैं नमस्कार करता हूँ। ईश्वर करे कि दीर्घ रात्रि के पश्चात् उषा के दर्शन करने का सौभाग्य उन्हें प्राप्त हो। मैं तो अपना धैर्य खो चुका हूँ। इसलिए उसके पहले ही विदा लेता हूँ।"

अमेरिका के महान् संत इमरसन भी पत्र-लेखन में विशेष रुचि रखते थे। उनके पत्रों का पृथुल भाण्डार है जो पाँच भागों मे प्रकाशित हुआ है। सम्पूर्ण भागों के पृष्ठों की सख्या बत्तीस हजार है।

ऊपर जिन विदेशी विद्वानों के पत्रों का उल्लेख किया गया है उसका एकमात्र उद्देश्य इस बात पर बल देना है कि साहित्य-क्षेत्र में पत्र-साहित्य का अपना पृथक् महत्त्व है। आत्मकथा एवं डायरी के पत्रों में भी जीवन का परिचय मिलता है। हमारी रुचियाँ एवं दैनिक जीवन के स्वरूप इनके द्वारा व्यक्त हो जाते हैं, पर मन का सहजोन्मेष, उसकी 'अकूल तरंग' का आत्मीयतापूर्ण परिचय पत्र द्वारा ही सम्भव होता है। पत्र लिखना भी एक कला है। तथ्य तो यह है कि साहित्य की अन्य विधाओं में प्रतिभा पर कलात्मकता का आवरण पड़ा रहता है पर पत्र में प्रतिभा अपना घूँघट उघार देती है। हम उसके द्वारा पत्र लेखक को अत्यन्त निकट से पहचानने लगते हैं, क्योंकि उसमें अन्तः और बाह्य का भेद मिट जाता है।

इन दिनों प्रकाशित होने वाली पुस्तकों के फ्लैप पर अथवा भीतर कुछ-न-कुछ लेखकों के सम्बन्ध में मिल जाता है, पर आज से प्रायः २०-२५ वर्ष पूर्व ऐसी परम्परा न थी। मध्ययुगीन तथा प्राचीनकाल के कवियों में तो आत्मपरक कुछ भी नहीं था। हाँ, वर्ण्य-विषय के बीच प्रकारान्तर से कुछ ऐसा आ जाय जिससे लेखक के सम्बन्ध में कुछ जाना जा सके, यह दूसरी बात थी। यह प्रसन्नता का विषय है कि विगत १०-२० वर्षों के भीतर हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के लेखकों ने पत्र साहित्य की ओर विशेष

ध्यान दिया है। मराठी, बँगला और उर्दू के लेखकों के पत्रों के संग्रह पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। हिन्दी के विद्वानों ने भी इस दिशा में ध्यान दिया है और कुछ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पत्र साहित्य प्रकाश में आया है। आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द के पत्रों का एक बहुत बड़ा संग्रह पं० भगवद्दत्त द्वारा प्रकाशित किया गया है।

हिन्दी साहित्य का भारतेन्दु-युग अपने मनमौजीपन के लिए अपनी साहित्यिक कृतियों द्वारा जाना जाता है। भारतेन्दु, प्रतापनारायण मिश्र तथा बालमुकुन्द गुप्त के पत्रों में भी निर्द्वन्द्वता एवं फक्कड़पन की झिलमिलाहट उपलब्ध होती है।

पण्डित पद्मसिंह शर्मा की रुचि पत्रों के प्रति अधिक थी। वे स्वजनों एवं अपने मित्रों को पत्र प्राय: लिखा ही करते थे। उन पत्रों में वैयक्तिकता के साथ-ही-साथ साहित्य सम्बन्धी चर्चा भी हो जाया करती थी।

प्रेमचन्द के पत्रों को भी साहित्य-जगत् मे विशेष सम्मान प्राप्त हुआ। उनके पत्रों में व्यक्तिगत जीवन-स्वरूपों के अतिरिक्त साहित्यिक एवं राजनीतिक पक्षों पर भी विचार प्राप्त होते हैं।

राहुल सांकृत्यायन के पत्रों का भी अपना अन्दाज है। वे सच्चे अर्थों में मसिजीवी थे। किसी के कृपापूर्ण सहयोग की अपेक्षा वे अपने श्रम-बिन्दुओं से अपने परिश्रम को सरस बनाते रहे। उनका साहित्य उनकी श्रमपूर्ण यात्राओं का प्रतिफल है। इस सन्दर्भ में उनके पत्र-साहित्य का विशेष महत्त्व है।

पत्र-साहित्य की शृंखलाओं में डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल और आचार्य हजारी-प्रसाद द्विवेदी के पत्र भी अपना एक निश्चित मूल्य रखते हैं। हिन्दी के भीष्मपितामह माने जाने वाले पं० बनारसीदास चतुर्वेदी के पास तो पत्रो का मूल्यवान् कोष है। उन्हें पत्रों के प्रति विशेष आकर्षण है। ये पत्र लिखते भी खूब हैं।

मुझे अपने युग के दो साहित्य-महारथियो—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तथा आचार्य श्यामसुन्दरदास के भी कुछ पत्र अपने गुरुजनो से देखने को मिले हैं जिनमें वैयक्तिक प्रसंगों की ही चर्चा घुमा-फिराकर की गयी है। इन पत्रो से जिस वातावरण का परिचय मिलता है उसके विषय मे मात्र इतना ही सकेत करना पर्याप्त होगा कि इस आपाधापी के बीच व्यक्ति का जीवन किस घुटन मे व्यतीत होता है।

इधर 'बच्चन : पत्रो में' शीर्षक से कविवर 'बच्चन' के पत्रों का संग्रह प्रकाश में आया है। इन पत्रों से लेखक की संवेदनशीलता, आत्मीयता एवं कवि-सुलभ भावुकता का परिचय मिलता है। इस पत्र-सग्रह मे प्रश्नोत्तर शैली के भी कुछ पत्र हैं जिनमें 'बच्चन' जी के ही शब्दों में ही उनके जीवन के विविध पक्षो पर अधिकाधिक रूप से प्रकाश पड़ता है, साथ ही, उनकी साहित्य सम्बन्धी विचारधाराओ से भी परिचय प्राप्त होता है।

दिल्ली विश्वविद्यालय के निवर्तमान अध्यक्ष डॉ० विजयेन्द्र स्नातक का भी एक पत्र संग्रह प्रकाशित हुआ है। उन्होंने अपनी साहित्य सम्बन्धी मान्यताओं एवं विविध अनुभूतियों

को पत्रात्मक शैली में व्यक्त किया है। साहित्य का विवेचन और अनेकानेक सरल प्रसंगों का आत्मीय शैली में चित्रण ही इस पत्र-संग्रह की विशेषता है।

कुछ ही समय पूर्व डॉ० जीवन प्रकाश 'जोशी' द्वारा सम्पादित पत्र-संग्रह 'अंचल पत्रों में' शीर्षक पढ़ने को मिला है। इस संग्रह में लेखक के विभिन्न साहित्यिक विषयों एवं साहित्य-सेवियों से संबंधित विचारों का ज्ञान प्राप्त होता है। 'अंचल' जी एक सुधी-चिन्तक हैं। उनके अपने विचार महत्वपूर्ण हैं। पत्र-शैली में इस प्रकार का विवेचन एक विधा का रूप ग्रहण कर रहा है।

पत्रों के महत्त्व का अनुभव करते हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने हिन्दी-जगत् के प्रमुख साहित्यकारों के पत्रों को प्रकाशित करने का निश्चय किया है। एक योजना के रूप में सन् १९८२ मे 'पंत जी और कालाकाँकर' शीर्षक से कविवर सुमित्रानन्दन पंत के पत्रों का प्रकाशन किया गया है। इन पत्रों द्वारा पंत जी की महाराज कालाकाँकर परिवार से जहाँ एक ओर घनिष्ठ आत्मीयता का परिचय मिलता है वहीं कवि के वैयक्तिक जीवन, भाव-जगत् एवं चिन्तन-धारा का भी पता चलता है। इतना ही नहीं, कवि की अनेक कविताओं की पृष्ठभूमि का भी परिज्ञान हो जाता है। साहित्य-जगत् मे इस पत्र-संग्रह को अच्छा सम्मान प्राप्त हुआ है।

प्रस्तुत पत्र-संग्रह सम्मेलन की पत्र-प्रकाशन-योजना का एक अंग है। इसमें मूलतः आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के ही पत्रों का प्राधान्य है। सम्मेलन संग्रहालय मे इस समय श्री धनपतराय (प्रेमचन्द), श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', श्री राहुल सांकृत्यायन, श्री रामधारी सिंह 'दिनकर', श्री सियारामशरण गुप्त, श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी, श्री शिवपूजन सहाय तथा श्री उदयशंकर भट्ट के जो पत्र-संग्रहालय में प्राप्त थे, उन्हें भी संगृहीत कर दिया गया है। हमें यह स्वीकार करने में संकोच नही है कि इस संग्रह मे प्रकाशित प्रत्येक पत्र साहित्यिक, ऐतिहासिक अथवा अन्य किसी उद्देश्य-विशेष की दृष्टि से मूल्यवान् नहीं हैं। पर मेरे सामने दो विचार थे। एक तो यह कि दिवंगत व्यक्तियों की जो भी पंक्तियाँ सम्मेलन के पास हैं वे नष्ट होने से बच जायँ और दूसरे यह कि जिन मनीषियों ने साहित्य-पादप को अपने खून-पसीने से सींचा है, उसे समृद्ध बनाया है, उनकी प्रत्येक प्राप्त पक्ति हम अपने साहित्यानुरागी सुहृद् जनो के समक्ष उपस्थित कर दें। इन पक्तियो के माध्यम से भी वे कुछ-न-कुछ कह ही रहे हैं। उदाहरण के लिए इस संग्रह का प्रथम पत्र ही है जो द्विवेदी जी ने ११-११-१५ को लिखा था। यह पत्र मात्र चार पंक्तियों का है जिसमे सरस्वती मे लेख लिखने का आग्रह किया गया है। इसी में वे लिखते हैं -"जहाँ तक हो सके भाषा सरल, बोलचाल की हो। क्लिष्ट संस्कृत शब्द न आने पावें। मुहावरे का ख्याल रहे। वाक्य छोटे-छोटे हों।" इससे द्विवेदी जी के भाषा सम्बन्धी मानदण्ड का परिचय प्राप्त होता है। द्विवेदी जी के पत्रों का यह संग्रह अपने में पूर्ण नहीं है, पर जितना भी है उससे द्विवेदी जी की जीवन-पद्धति, उनके आदर्श, उनकी रुचि, उनकी व्यावहारिक स्पष्टता एवं तत्परता आदि का सम्यक् परिचय प्राप्त होता है।

उनके कुछ अंग्रेजी भाषा में लिखे गये पत्र देवनागरी लिपि में प्रकाशित किये गये हैं जिनसे द्विवेदी जी के पाण्डित्यपूर्ण अंग्रेजी भाषा के ज्ञान का भी पता चलता है। कतिपय पत्रों के बीच-बीच में द्विवेदी जी संस्कृत-सूक्तियों एवं आदर्श वाक्यों का प्रयोग करते हुए पाये जाते हैं। इससे उनका संस्कृत-प्रेम व्यक्त होता है। शब्दों के प्रयोग में द्विवेदी जी कितना अधिक सावधान थे उसका पता उनके १-१-२० के पत्र (पृष्ठ ६६) से चलता है—"प्रथम परिच्छेद के हेडिंग में 'हँसी' को 'हँसि' न करिए तभी अच्छा है। हँसी के रखने से लाइन में अधिक Force आ जाता है और विशेष मजा मिलता है। 'धूप' के अर्थ में 'रौद्र' शब्द का प्रयोग हिन्दी में नहीं होता, बँगला ही में होता है। इसी तरह "अदने' इत्यादि शब्दों का भी विचार पुनर्मुद्रण के समय कर लीजिएगा।" इसी प्रकार अन्यत्र भी उनके भाषा सम्बन्धी विचार पाये जाते हैं।

हमारा विश्वास है कि इस पत्र-संग्रह में संगृहीत पत्रों के आधार पर जहाँ पत्र-लेखकों की वैयक्तिक स्थिति, रुचि, मान्यता, जीवनादर्श आदि का परिचय प्राप्त होगा वहीं यह भी पता चलेगा कि इन महापुरुषों ने किन परिस्थितियों में रहकर साहित्य-सृष्टि की और वे अपनी साधना के प्रति किस निष्ठा के साथ समर्पित थे।

—*प्रेमनारायण शुक्ल*

अनुक्रम

पृष्ठ संख्या

सम्पादकीय	डॉ० प्रेमनारायण शुक्ल	३-१२
भूमिका	श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा	१-२१

खण्ड : १ — १-५७

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के पत्र
पण्डित देवीदत्त शुक्ल के नाम
पत्र-संख्या १ से ४, ६ से ५६, ६२ से ६६, श्री एच० के० घोष के नाम
पत्र-संख्या-६०; श्रीमती ऊषादेवी मित्रा के नाम
पत्र-संख्या-६१ तथा श्री पण्डित शिवाधार पाण्डेय के नाम पत्र-संख्या-५

खण्ड : २ — ६१-९०

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के पत्र
श्री किशोरीदास वाजपेयी के नाम
पत्र-संख्या-१०० से १५२

खण्ड : ३ — ९३-९५

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के पत्र
पण्डित रामगोविन्द त्रिवेदी के नाम पत्र-संख्या-१५३,
१५५ से १५७
श्रीमती निहालचन्द्र के नाम पत्र-संख्या-१५४

खण्ड : ४ — ९९-१००

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के पत्र
पण्डित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी के नाम पत्र-संख्या-१५८-१५९

खण्ड : ५ — १०३-१०९

श्री धनपत राय (प्रेमचन्द) के पत्र
पण्डित देवीदत्त शुक्ल के नाम
पत्र-संख्या-१६० से १६४
श्री रामचन्द्र टण्डन के नाम पत्र-संख्या-१६५ से १६७

पृष्ठ संख्या

खण्ड : ६ — ११३-१२५

श्री 'हरिऔध' के पत्र
पण्डित देवीदत्त शुक्ल के नाम
पत्र-संख्या-१६८ से १७६, १८२ से १८८ तथा
पण्डित किशोरीदास वाजपेयी के नाम
पत्र-संख्या-१७७ से १८१

खण्ड : ७ — १२६-१३६

श्री 'निराला' के पत्र
पण्डित देवीदत्त शुक्ल के नाम पत्र-संख्या-१८९ से २०३

खण्ड : ८ — १३९-१६६

श्री राहुल के पत्र
पण्डित देवीदत्त शुक्ल के नाम पत्र-संख्या-२०४, २०६ से
२१०, २१४, २१५, २१७, २२० से २२३
पण्डित रामगोविन्द त्रिवेदी के नाम पत्र-संख्या-२०५,
२११ से २१३, २१६, २१८-२१९, २२८ एवं
पण्डित किशोरीदास वाजपेयी के नाम
पत्र-संख्या-२२४ से २२७, २२९ से २४४

खण्ड : ९ — १६९-१७१

श्री दिनकर के पत्र
श्री प्रभात शास्त्री के नाम
पत्र-संख्या-२४५ से २४९, २५१, २५२ तथा
पण्डित किशोरीदास वाजपेयी के नाम पत्र-संख्या-२५०

खण्ड : १० — १७५-१७६

श्री सियारामशरण गुप्त के पत्र
पण्डित देवीदत्त शुक्ल के नाम पत्र-संख्या-२५३ से २५५

खण्ड : ११ — १७९-१८८

श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी के पत्र
श्री प्रभात शास्त्री के नाम पत्र-संख्या-२५६ से २६९

पृष्ठ संख्या

खण्ड : १२ १६१-२२६

आचार्य शिवपूजन सहाय के पत्र
पण्डित रामगोविन्द त्रिवेदी के नाम पत्र-संख्या-२७० से
२७४, २७६ से २८४, २८६ से २८८, ३००, ३०४-३०५।
पण्डित देवीदत्त शुक्ल के नाम पत्र संख्या-२७५, २८५ से
२९५, २९९, ३०१ से ३०३ तथा
पण्डित किशोरीदास वाजपेयी के नाम पत्र-संख्या-३०६

खण्ड : १३ २३३-२४८

पण्डित उदयशंकर भट्ट के पत्र
श्री प्रभात शास्त्री के नाम पत्र-संख्या-३०७, ३०८, ३१० से ३२८ तथा
पण्डित देवीदत्त शुक्ल के नाम पत्र-संख्या-३२९ से ३३७ से ३४३
श्री प्रभात शुक्ल के नाम पत्र-संख्या-३०९

भूमिका

आचार्य द्विवेदी के पत्र

पत्र-साहित्य—किसी भी राष्ट्र का जीवन मात्र उसकी शक्तियों के प्रतीकों में ही नहीं व्यक्त होता, उसकी परिव्याप्ति उत्स के क्षणों के साथ-साथ व्यक्तिगत, नितान्त निजी दैनन्दिन क्षणों में भी व्यक्त होती है जिसमें हम अपने छोटे-छोटे सन्दर्भों से जुड़ते, टूटते, निःस्पृह उदासीन होते हुए भी अपनी अभिरुचियों के साथ-साथ संस्कारों का भी परिचय देते हैं। वैयक्तिक आचरण, पसन्दगी-नापसन्दगी, स्वीकृति-अस्वीकृति का व्यापक दायरा तो प्रायः व्यक्तित्व के एक व्यावहारिक रूप को ही प्रस्तुत करता है, किन्तु जो व्यावहारिक है वह आईसबर्ग का केवल एक लघु अंश मात्र है। अधिकांश तो वह है जो जल के अतल में डूबा रहता है। जो अदृश्य है उसी में यह शक्ति होती है कि बड़े-से-बड़े जलपोतों को चकनाचूर कर दे। व्यक्ति का जीवन भी कुछ इन्हीं गहराइयों में उतर कर जाना जा सकता है। इन गहराइयों तक उतरने के कई साधन हैं। पत्र-साहित्य उन्हीं साधनों में से एक है।

भारतीय उदासीनता—भारतीय लेखन साहित्य में हमें इस व्यक्तिगत साहित्य का सर्वथा अभाव मिलता है। प्राचीन लेखक के विषय मे हम केवल प्रचलित किंवदन्तियों से ही अनुमान लगाते हैं। वह कैसे थे? कैसे उठते-बैठते थे? कैसा व्यवहार करते थे? उनकी रुचियाँ क्या थीं? पहनावा-ओढ़ावा क्या था? पिता, पुत्र, पति, मित्र, सहृदय आदि के रूप मे क्या दृष्टि थी आदि के विषय में बहुत कम पढ़ने-लिखने को मिलता है। प्राचीन ग्रन्थों की पुष्पिका मात्र मे जितना तथ्य लेखक देता था उतना ही हम जान पाते हैं। कालिदास, भवभूति, भास, सूरदास, तुलसीदास, मीरों आदि के विषय मे यदि हमें उनकी साहित्यिक कृतियों के अतिरिक्त उनके निजी जीवन का साहित्य भी मिलता तो हम उस सर्जक के अनेक मानवीय पक्षों को अधिक गहराई से जान पाते। यह सत्य है कि कृतिकार को उसकी कृतियों में ही देखना चाहिए, किन्तु हमारी जिज्ञासा महापुरुषों के वैयक्तिक जीवन के प्रति भी विशेष होती है। यह जिज्ञासा अनुचित नहीं है। इसका एक पक्ष नितान्त मानवीय सह-अनुभूति की खोज भी है। जीवनी, डायरी, जर्नल, पत्र आदि ही वह माध्यम हैं जिनसे हम किसी साहित्यकार के निजी जीवन के सहभागी हो सकते हैं। प्राचीन काल में हम इन विधाओं को आवश्यक नही समझते थे किन्तु आधुनिक युग में यह महत्त्वपूर्ण तथ्यपरक ज्ञान के साथ भावनात्मक संगतियों को तादात्म्य कराने में विशेष सहायक है। यह सही है कि इन माध्यमों के उजागर होने से वर्ड्सवर्थ जैसा महान् कवि जो जीवन भर सन्त के रूप में पूजा गया, मृत्यु के बाद कुछ तथ्यों के मालूम होने से केवल कवि मात्र रह गया। किन्तु मिर्जा गालिब के खतों को पढ़ने पर हमे गालिब जितना मानवीय उष्णता के प्रतिनिधि लगते हैं, वह अमूल्य है। जानसन के पत्र, कीट्स के पत्र, बायरन के पत्र, आस्करवाइल्ड की डायरी, कामू के जर्नल, हेमिङ्वे के नोट्स, मायकोवस्की और दास्तोवस्की के पत्र, चेखव के कुछ निजी नोट्स हमें

उन्हें समझने में कितनी सहायता देते हैं यह तो उन्हें पढ़कर ही जाना जा सकता है। मार्क्स और एङ्गिल्स के कुछ पत्र हैं जो मार्क्स के व्यक्तिगत मानवीय पक्षों से हमारा परिचय कराते हैं। अभी तक भारतीय मनीषा ने इस पक्ष पर ध्यान नहीं दिया है। भारतीय परम्परा मे ऐसी बातो के प्रति सहज उदासीनता रहती आयी है, आज भी है। परिणाम है कि हमारे पास साहित्य है, साहित्यकारों के नाम हैं, किन्तु उनके माध्यम से देश-काल, जाति, समाज, इतिहास और संस्कृति के वे सन्दर्भ नही हैं जिन्होंने सम्पूर्ण राष्ट्र के जीवन को प्रभावित किया होगा। आधुनिक युग में भी हमारा ध्यान इस दिशा की ओर गम्भीरता के साथ नहीं जा रहा है। अब भी हमारे साहित्य मे जीवनी, डायरी आदि विधाओं का विकास नहीं हुआ है। पाश्चात्य साहित्यकारों की निजी कापियो मे अंकित नोट्स भी कितने महत्त्वपूर्ण होते हैं और लेखक की मानसिकता के कितने मार्मिक आयाम प्रस्तुत करते हैं, यह तो उन लेखको के प्रकाशित समग्र साहित्य से पता चलता है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन से प्रकाशित कुँवर सुरेश सिंह और श्री सुमित्रानन्दन पंत के बीच हुए पत्राचार से पंत जी के जीवन पर जो प्रकाश पडता है, उनके साहित्यिक जीवन के सघर्ष, आर्थिक विपन्नता का चित्र अपनी अस्मिता को बनाये रखने के लिए उनकी इच्छाशक्ति का जो परिचय मिलता है वह मानवीय दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है।

जातीय अस्मिता की अभिव्यक्ति—यही नही, साहित्य, साहित्य-शास्त्र मे अनुशासित होने के नाते, सीमित मर्यादा मे बँधकर व्यक्त होता है। किन्तु उस मर्यादा से भी मुक्त लेखक का सामान्य जीवन होता है। उस सामान्य जीवन मे जातीय अस्मिता किन-किन आयामो से अभिव्यक्ति पाती है, चेतन और अचेतन स्तर पर वह हमे कहाँ नियमित करती है और कहाँ हम उसको नियमित करते है, तोडते हैं और नये सन्दर्भ से जोडते है, यह सारे निजी सन्दर्भ होते हैं जो प्रकारात्मक रूप में साहित्यकार और उसके पर्यावरण, सन्दर्भ अथवा आस-पास को अंकित करते हैं। इसी मे हमारी वैयक्तिक और सामूहिक चेतना भी प्रदर्शित होती है। इसी मे हमारी जातीय अस्मिता, व्यक्तित्व का विराटत्व और उसकी सीमा भी देखने को मिलती है। टालसटाय की कहानियो मे जो मानवीय करुणा है, 'वार एण्ड पीस' के व्यापक विस्तार में जो मानवीय चेतना के स्फुरण हैं और साथ ही, जो उसकी ट्रेजेडी है, उन सब का गहरा अर्थ तब समझ मे आता है जब हम टालसटाय के जीवन-संघर्ष और निजी व्यक्तिगत आचरण की हलकी सी झलक भी पा लेते हैं। यद्यपि साहित्यिक आलोचना और सौन्दर्यात्मक स्तर पर उसके मूल्यांकन पर इन तथ्यो का कोई प्रभाव नही पडना चाहिए, फिर भी यदि हमे यह निजी तथ्य भी मालूम हो तो हमारी अपनी समझदारी अधिक सम्पन्न और सुरुचिपूर्ण हो सकती है। रूसी जीवन, उसके चरित्र को समझने के लिए यह अतिरिक्त ज्ञान बडा सहायक होता है। यह सही है कि सम्भ्रान्त और आभिजात्य दोनो की समझदारी होने से टालसटाय के भीतर छिपे मनुष्य की झाँकी वह सब कुछ कह देती है। जातीय अस्मिता कोई आरोपित कृत्रिम वस्तु नही है। वह सब के भीतर अलग-अलग और सब के साथ सामूहिक रूप में देखने को मिल सकती है।

निजकीय युग और उसके स्रोत—मनुष्य जन्मजात ही समाज पर आश्रित होता है। समाज मानव समूह से बनता है और उस समूह की इकाई मनुष्य ही है। एक इकाई का दूसरी इकाई के साथ निजी स्तर पर क्या राग-द्वेष होता है, कौन-सी कमजोरियो की घड़ी उन इकाइयों के बीच कैसे गुजरती है, उस गुजरने की धड़कनो में कौन-कौन-से तत्त्व उभरते हैं, इनकी जानकारी भी हमे संस्कारित करती है। इन इकाइयो के जीवन-स्तर और उनकी शक्ति तथा उनकी दुर्बलताएँ दोनो ही महत्त्वपूर्ण है। नेपोलियन बहुत बड़ा सैनिक जनरल था, उसकी जीवनी का सैनिक संगठन और जनरल का पक्ष अद्वितीय है, किन्तु उसने जो पत्र अपनी प्रेमिका जोजिफ़ीन को लिखे हैं उसमें नेपोलियन के उदात्त कवि-मन का जो परिचय मिलता है, वह इतना मूल्यवान् है कि आज यद्यपि उसके सैनिक अनुशासन के प्रमाण उन पत्रों से कही अधिक हैं, किन्तु उन व्यक्तिगत पत्रो को पढ़कर लगता है कि यदि उसकी सैनिक प्रतिभा को प्रमाणित करने वाले सारे दस्तावेज नष्ट हो जायँ और केवल वे पत्र ही बच रहे, तो भी नेपोलियन के समग्र व्यक्तित्व की मार्मिकता और उसकी मानवीय विशेषता मे कमी नही आयेगी। एक बहुत ही भावुक मन भी एक जनरल के मन मे छिपा होता है और वह इतना कोमल और मधुर संवेदनशील हो सकता है, शायद इसका आभास भी हमे न मिलता यदि नेपोलियन ने वे पत्र न लिखे होते। उन पत्रो मे पूरे फ्रान्सीसी मिजाज मे छिपी ललित मानसिकता उजागर होती है। स्त्री-पुरुष के वे सम्बन्ध और उस नितान्त मांसलता से सूक्ष्म उदात्त के भावबोध, केवल नेपोलियन को नही पूरे युग को प्रतिबिम्बित करते है। आज भी वे इस बात को प्रमाणित करते हैं कि मनुष्य केवल वह नही होता जो कर्म अनुशासित होकर करता है, वह समग्र सम्पूर्ण होता है, जो नित्य के जीवन मे जीता है, और वह नित्य वाला सन्दर्भ ही उसके युग को दर्शाता है, उस युग के लोगो की झाँकियाँ प्रस्तुत करता है। युग की सीमाओ और उसकी सतत गतिशील शक्तियो का व्यक्तिगत स्तर पर क्या प्रभाव पड़ता है, क्या प्रतिक्रियाएँ होती हैं, उनका अकन करता चलता है।

द्विवेदी जी के पत्र—आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के पत्र इस सन्दर्भ मे बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। उनका महत्त्व इसलिए और भी बढ़ जाता है क्योकि आचार्य द्विवेदी जी ने अपने युग में हिन्दी भाषा का स्वरूप निखारा है, साहित्य को एक दिशा दी है और अपनी मानसिकता के बल पर एक युग की साहित्यिक विधा को निर्मित किया है। दूर से देखने और उनके साहित्य को पढने से जो दृढ संकल्प, लक्ष्य-निष्ठ एवं नितान्त समर्पित व्यक्तित्व उभरता है उससे आदर, भय, आतंक का बोध होता है। ऐसा लगता है कि द्विवेदी जी कहीं दृढ़ चट्टान सरीखे व्यक्ति होगे जिनमे रागात्मक स्तर पर भी वही निःस्पृह तटस्थता और एक कठोर अनुशासित व्यक्ति की कठोरता होगी। किन्तु द्विवेदी जी के पत्रो को पढ़कर ऐसा नही लगता। उन पत्रों मे द्विवेदी जी का एक दूसरा चित्र मिलता है। व्यक्तिगत

जीवन में वह कितने सरल थे, व्यवहार में कितने मधुर थे, सम्बन्धों को बनाने में कितने मानवीय थे, साथ ही, समाज के प्रति कितने निष्ठावान् थे इन सबका एक महत्त्वपूर्ण अंश इन पत्रों में छिपा है। एक लडकी के पिता के रूप में उनकी बेचैनी, विवाह, दहेज, विधुर होने के नाते परेशानी, पुत्र न होने का एक अन्तर्निहित अवसाद, भाञ्जे-भाञ्जियों के प्रति लगाव, उनके व्यवहार से असन्तुष्ट होने पर भी उनको साथ रखने की विवशता, दामाद के प्रति कुछ कटु सत्यो का वर्णन, बीमारी और उसमें भी दो-दो पैसों की दवा के लिए इधर-उधर से मँगवाने की विवशता आदि अनेक पहलू हैं जिन पर प्रकाश पड़ता है। इन पत्रों मे बहुत-से तो ऐसे हैं जिनमें बरेली में अवकाशप्राप्त होने के बाद रहने से एक कस्बई गन्ध आती है जो उस युग के पूरे धर्माचरण और वातावरण को उजागर करती है। एक-एक कैलेण्डर और रेलवे टाइमटेबुल के लिए गाँव वाले व्यक्ति को कितना प्रयास करना पड़ता था, और जिसके पास यह चीजें रहती थीं, वह आसपास के दस-बीस गाँवो में कितनी महत्त्वपूर्ण सेवाएँ करता था, इसका परोक्ष विवरण ये पत्र प्रस्तुत करते हैं। साथ ही, उस युग के समाज मे प्रचलित तथ्यों को भी उजागर करते हैं। द्विवेदी जी के इन पत्रों में ये सभी बातें अपने आप उभर कर सामने आयी हैं। दहेज, रूढ़ियाँ और उनकी विषमता कितनी गहरी थी, और महान्-से-महान् व्यक्ति को पुत्री का पिता होने के नाते कितना कुछ सहना पड़ता था, यह उन पत्रों में स्पष्ट दिखता है। लोकाचार के प्रति उनकी दृष्टि, उनको मानने की विवशता, कई प्रकार के स्वप्न-भंग और उनसे संघर्ष करने की विवशता भी स्पष्ट होती है। यद्यपि ये पत्र केवल सरस्वती सम्पादक पण्डित देवीदत्त शुक्ल, कुछ पत्र पण्डित किशोरीदास वाजपेयी, कुछ पत्र पण्डित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी (भूतपूर्व अध्यक्ष, हिन्दी साहित्य सम्मेलन) के नाम लिखे गये हैं फिर भी विषय की दृष्टि से निजी व्यथा से लेकर सम्पूर्ण परिवेश टुकड़े-टुकड़े में अंकित होकर उभरा है। श्री शुक्ल जी को लिखे गये पत्रो में घरेलू बातें अधिक हैं। किशोरीदास वाजपेयी के पत्रो मे उनके लेखकीय व्यक्तित्व और प्रतिभा की प्रशंसा है। श्री चतुर्वेदी के पत्रो मे उनकी भावनाओं और उद्‌गारो को लेकर हिन्दी साहित्य के प्रति बहुमूल्य चिन्तन है।

द्विवेदी-युग की मानसिकता—वस्तुतः द्विवेदी-युग मध्यकालीन मानसिकताओ और आधुनिक युग की विकसित मान्यताओ का युग है। द्विवेदी जी उन दोनो की सन्धि-रेखा पर उस यथार्थवेत्ता की तरह चट्टान-से लगते हैं। उनका राग विसर्जित होते हुए युग के प्रति भी है; साथ ही, वह उस काल-देवता का स्वागत भी करना चाहते हैं जो सर्वथा नये रूप मे अवतरित होने के लिए आतुर है। इन पत्रों मे उन दोनों मनःस्थितियों की झलक मिलती है। कहीं वह मध्यकालीन प्रवृत्तियों के प्रति निर्मम लगते हैं और कहीं वर्तमान के प्रति आशान्वित। कहीं आधुनिकता के प्रति निर्मम और मध्यकाल के प्रति मोहित लगते हैं। विशेषता यह है कि इनका द्वन्द्व उनमें नही है। जिस इतिवृत्तात्मकता के वे पक्षधर थे उसी के अनुरूप वह उन दोनों मूल्यों को दो खानों में रखकर व्यवहार करते थे। लेकिन काल का प्रवाह तो बारीक होता है। वह सब कुछ अंकित करता चलता है। हमको आपको पता नही चलता किन्तु

हमारे समूचे व्यक्तित्व को नितान्त पारदर्शी बनाकर प्रस्तुत करने में वह नहीं चूकता। पहले तो हमें वह फाँक-फाँक में विभाजित कर देता है, और फिर समूचे पिण्ड को उसकी समग्रता में रख देता है। बड़े-बड़े युग-प्रवर्तकों के जीवन को कालान्तर में जब इतिहास उन्हें प्रस्तुत करता है, तो जिस काल में वे महापुरुष होते हैं, उसकी सीमाबद्धता और मजबूरियाँ भी स्पष्ट दिखती हैं और उन मजबूरियों से ऊपर उठकर बढ़ने का संघर्ष भी दिखता है। द्विवेदी जी के इन थोड़े-से पत्रों का विवेचन यदि किया जाय तो यह दोनों पक्ष उसमें उजागर होते हैं। इन पत्रों की सीमा यह है कि यह उनके कार्यरत जीवन के पत्र नही हैं। यह सारे पत्र सरस्वती के सम्पादन से अवकाश प्राप्त करने के बाद के हैं। इसलिए इनमे कहीं-कहीं थकान का भी आभास है और वृद्धावस्था, जरा से उद्विग्न ऐसे व्यक्ति की मानसिकता है जो जीवन भर एक सर्जक और प्रवर्तक के रूप में कार्यरत रहा है लेकिन अवकाश प्राप्त करने के बाद जो प्रतिक्षण अपनी पराश्रितता से व्याकुल भी है। इन पत्रों मे प्रायः नींद न आने की शिकायत है। यह शिकायत मात्र इस कारण है कि नितान्त कार्यरत व्यक्ति को जब कुछ नहीं करने को मिलता और मजबूर होकर बैठना पड़ता है, तब कुछ विगत स्मृतियाँ तेज होती हैं और वर्तमान की मजबूरियाँ परेशान करती हैं। इन दोनो के तनावों का आभास मात्र मिलता है। द्विवेदी जी का संयम उनको प्रदर्शित नही होने देता किन्तु (शब्दो की मजबूरी) यह स्पष्टतः झलका देते हैं कि जो पत्र लिख रहा है उसकी मानसिक स्थिति क्या है। पत्रो मे भी द्विवेदी जी एक संयम रखते हैं और अपना दुःख-दर्द उतना ही कहते हैं जितना वह कह सकते हैं या जितना कहे बिना, शायद जिसको पत्र सम्बोधित है, उसे तुष्टि नही मिलेगी। द्विवेदी-युग की यह सरलता उस युग के सभी साहित्यकारो मे समान रूप से मिलती है और यही उसे प्राणवान् निष्ठा भी प्रदान करती है। यही मध्यकालीन मर्यादा भी है, आधुनिक होने की विवशता भी है।

एक महान् सम्पादक की आर्थिक विपन्नता—इन पत्रो को पढ़कर एक विषाद मन में उत्पन्न होता है और वह विषाद द्विवेदी जी की आर्थिक स्थिति का है। वह पं० देवीदत्त शुक्ल को बराबर अपनी ५० रुपये पेन्शन के लिए लिखते रहे और हमेशा इस बात की चर्चा करते रहे कि पहली तारीख के पूर्व ही वह राशि उन्हें मिल जाय। पत्रों मे इण्डियन प्रेस द्वारा पेन्शन दिये जाने के प्रति वह आजीवन कृतज्ञ थे। साथ ही, वृद्धावस्था मे भी वह बराबर सरस्वती मे छद्म नाम से कुछ-न-कुछ लिखते रहे। यह सही है कि उसका भी पारिश्रमिक उनको मिलता था, किन्तु कुल मिलाकर जो तस्वीर बनती है वह यही कि आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। साथ ही, यह कि वह किसी की कृपा भी नही लेना चाहते थे। शायद उनकी जिजीविषा अन्त तक कलम चला कर ही जीना चाहती थी। समाज का उस समय का स्वरूप भी विचित्र था। हिन्दी का काम करना यद्यपि राष्ट्र-सेवा का काम था फिर भी इस राष्ट्र-सेवा को करने के लिए कुछ आर्थिक आधार आवश्यक था। वह आधार समाज देने में अक्षम नहीं था, पर उसके पास इतनी गहरी समझ नहीं थी। स्वयं लेखक या साहित्यकार [भले ही वह महावीरप्रसाद द्विवेदी जैसा व्यक्तित्व क्यों न हो] स्पष्ट रूप से

अभाव को व्यक्त भी नहीं करना चाहता था। शायद इस आर्थिक विपन्नता का कारण उनकी स्वयं की अपनी निरन्तर बीमारी ही थी। भाञ्जे कमलाकिशोर का राष्ट्रीय आन्दोलन में जेल जाना-आना उनके लिए कष्टदायक था। भाञ्जे के परिवार का संरक्षण और पुत्री एवं जामाता का बराबर यह भ्रम कि द्विवेदी जी के पास संग्रह किया हुआ धन काफी है और उसे ले लेना चाहिये, उनको त्रस्त करते थे। कुल मिलाकर वृद्धावस्था मे द्विवेदी जी निश्चिन्त नही थे। उनको तेहरी-चौथी चिन्ताएँ करनी पड़ती थी। स्वयं अपनी ही नही अपने भाञ्जे के परिवार की जिसे वह अपने पास ही रखते थे और जिसके माध्यम से वह अपने खाने-पीने की व्यवस्था करते थे क्योकि द्विवेदी जी का कोई अपना पुत्र नही था, चिन्ता करनी पड़ती थी। पत्नी भी स्वर्ग सिधार चुकी थी। वृद्धावस्था में आश्रित होना ही पड़ता था। वह आश्रित थे।

पुत्री की शादी और दहेज—द्विवेदी जी ने कुछ पत्रों मे अपनी पुत्री के विवाह की चिन्ता व्यक्त की है। प० देवीदत्त शुक्ल के किसी सम्बन्धी के यहाँ विवाह भी निश्चित होता है किन्तु वही दहेज, लेन-देन और उनकी भावना। विवाह के उपरान्त उन्होने एक पत्र में जो विवाह सम्बन्धी विवरण लिखा है वह बड़ा ही मार्मिक है। इसी प्रकार अपनी भाञ्जी के विवाह के विषय मे उन्हे चिन्ता थी। द्विवेदी जी ने विवाह तय करने के सिलसिले में जो वर पक्ष के घर-द्वार, जमीन-जायदाद का विवरण और परिवार की आर्थिक स्थिति के बारे मे लिखा है वह एक अच्छा दस्तावेज है। द्विवेदी जी का मोह कान्यकुब्ज के प्रति था। कई पत्रो मे इसका सन्दर्भ मिलता है जैसे अमुक व्यक्ति सकट मे है, कान्यकुब्ज भी है आदि का उल्लेख यह स्पष्ट करता है कि वास्तविक मोह कहाँ था। वह युग भी ऐसा था जिसमे जातीय स्वाभिमान, गरिमा और उसके साथ-साथ राष्ट्रीय सन्दर्भ मे जुड़ रहना दोनो का निर्वाह होता था। द्विवेदी जी का जातीय वर्णन जहाँ भी आया है वहाँ ऐसा नही लगता कि वह साम्प्रदायिक है। इसके विपरीत उस अस्मिता का सकेत मिलता है जिसमे उनकी निष्ठा होना स्वाभाविक है। जो बात इन सारे सन्दर्भों मे खटकती है वह यह कि दहेज आदि के विषय मे वह यथास्थितिवादी लगते हैं। आर्यसमाज इस अर्थ मे अधिक जागरूक और प्रगतिशील था। सनातनी होने के नाते शायद द्विवेदी जी यथास्थिति को स्वीकार करते थे और वर पक्ष की प्रताड़नाओ से दु.खी अवश्य थे किन्तु आक्रोश इस पर था कि यथासामर्थ्य, तय करार होने के बाद अतिरिक्त की माँग क्यो की गयी। यह मन:-स्थिति शायद उस समय के समस्त जागरूक व्यक्तियो मे समान रूप से थी। आदर्श की स्थापना को व्यवहार मे नीचे उतार कर स्थितियो के व्यग्य को भोगना बड़ा कठिन होता है। किन्तु यथार्थ इतना कटु होता है कि वह किसी को नही छोडता। विचारो मे हम चाहे जितना उदात्त हो, यथार्थ वस्तुस्थिति उन भावो, विचारो की परवाह नही करती। वह अपना दाँव ले ही लेती है।

पञ्च के रूप में कार्य—इन पत्रो मे कुछ पत्र ऐसे भी हैं जिनमे पण्डित देवीदत्त के पारिवारिक विवादो में द्विवेदी जी ने एक वयोवृद्ध सम्मानित व्यक्ति की हैसियत से झगड़े

का समझौता कराया था। उन पत्रों के पढ़ने से पता चलता है कि द्विवेदी जी के काम करने का तरीका क्या था। विवाद को समाप्त करने के लिए, व्यक्ति को अपनी निष्पक्षता निभाने के लिए, कैसा आचरण करना चाहिए, इसका भी सन्दर्भ महत्त्वपूर्ण है। साथ ही, द्विवेदी जी हिसाब-किताब के बारे में कितने निपुण थे इसका भी प्रमाण मिलता है। रुपये-आने-पाई तक में शुद्ध रहना और उसके लेन-देन में विरोधी के प्रति भी न्यायोचित रहना व्यक्तित्व के व्यावहारिक रूप को उजागर करता है। इस समझौता कराने में द्विवेदी जी को अपने खर्चे से तीन-चार बार शुक्ल जी के घर गाँव जाना पडा था। इस आने-जाने में, कचहरी से मुकदमा हटवाने मे उन्हें क्या-क्या करना पडा, इसका विवरण सक्षेप, साकेतिक और अल्प शब्दों में ही उन्होंने लिखा है। वह भी द्विवेदी जी की शैली को उजागर करते हैं। साथ ही, धर्मभीरुता एवं नैतिक बोध मे वह संयमी, संवेदनशील होते हुए दृढ धारणाओं के व्यक्ति थे। आज जिस समाज में हम रह रहे हैं वहाँ व्यावहारिकता मे निर्मल पारदर्शिता प्राय: लुप्त होती जा रही है। विवाद को निबटाने मे हम प्राय. निष्पक्षता के स्थान पर रणनीति का पालन करके और पटु होने का परिचय देना अधिक श्रेयस्कर समझते है, और धर्म-भीरुता या नैतिक पक्ष के प्रति कम ध्यान देते हैं। द्विवेदी जी का युग नैतिकता प्रधान था और उसमे उन मूल्यों का महत्त्व था। एक ओर गाधी थे दूसरी ओर टैगोर, प्रेमचन्द ऐसे लेखक जो सर्वथा नये मूल्य-मर्यादाओ को प्रोत्साहित करना चाहते थे। द्विवेदी जी भी उसी युग के थे इसलिए लाख सनातनी एवं धर्म की जकडबन्दियो मे जीने के साथ-साथ वह नैतिक त्वरा और निर्लिप्त वस्तुपरकता उनके भी व्यक्तित्व मे थी।

साहित्यिक अभिरुचि की सीमाएँ—जो जितना महान् होता है उसकी उतनी ही सीमाएँ भी होती हैं। यह एक विचित्र बात है कि द्विवेदी जी ऐसा यशस्वी सम्पादक, खड़ी बोली का समर्थक, हिन्दी गद्य-शैली का प्रतिष्ठापक अपनी साहित्यिक अभिरुचि में उदार नही हो सका। यदि सही रूप में देखा जाय तो द्विवेदी जी युग-प्रवर्तक होते हुए भी मैथिली-शरण गुप्त, रामचरित उपाध्याय, रामनरेश त्रिपाठी की काव्य-शैलियो के आगे नहीं बढ़ सके। बहुत प्रयास करने पर उन्होने ठाकुर गोपालशरण सिह को स्वीकार किया था। उन्ही दिनो चाँद जैसी पत्रिका मे महादेवी वर्मा, डॉ० रामकुमार वर्मा आदि छपते थे, प्रसाद को इन्दु जैसा पत्र निकालना पडा था किन्तु सरस्वती में इन लोगो को स्थान नही मिल पाता था। यह कमी सरस्वती की नही द्विवेदी जी की थी। द्विवेदी जी के बाद ही सरस्वती मे निराला की भी रचनाएँ छपने लगी थीं। उसके बाद छायावाद की गति-प्रगति जो हुई उसका साक्षी हिन्दी साहित्य का इतिहास है। महावीर प्रसाद द्विवेदी के साहित्यिक विचार समय-समय पर सगृहीत होकर अन्य पत्रों में भी आये हैं। लगता है वह जीवन के अन्तिम काल मे पुन कवित्त-सवैया-घनाक्षरी आदि छन्दों मे रस लेने लगे थे। यही नहीं, ब्रजभाषा की रीति-परम्परा भी जैसे कुछ अधिक रुचने लगी थी। अधिक प्रमाण तो इन पत्रों में नहीं है किन्तु कुछ पत्रो मे इसका संकेत अवश्य है। इससे यह निष्कर्ष लगाना अनुचित न होगा कि सम्पादन-कार्य छोड़कर दौलतपुर रहने में ज्यों-ज्यों

उनका सम्पर्क प्रचलित साहित्य से छूटता गया त्यों-त्यों वह एक प्रकार से पुनः अपनी पुरानी निष्ठा की ओर वापस होने लगे।

पंत जी के प्रति उनके विचार ?—प्रस्तुत विचारों की सम्पुष्टि एक पत्र से स्पष्ट होती है। अपनी साहित्यिक रुचि का संकेत उन्होंने स्पष्ट दे दिया है। घटना है, उनकी बीमारी की। उसी सिलसिले में वह कानपुर गये थे। वहाँ उनकी भेंट हितैषी जी से हुई। उस समय के तरुण कवियों में हितैषी जी भी थे। द्विवेदी जी ने जिस प्रकार हितैषी जी की कविता की प्रशंसा और लम्बे बालो वाले पहाड़ी लड़के पंत की कविता के प्रति अपने विचार व्यक्त किये हैं, उनसे उनकी मानसिकता और अपने युग के बाद के आनेवाले युग के प्रति भाव स्वतः स्पष्ट हो जाते हैं। पंत के प्रति यदि उनकी यह भावना थी, तो निश्चय ही यह उस समय के जीवन और छायावादी आन्दोलन के प्रति भी लागू हो सकती थी। हितैषी जी निश्चय ही अपने समय के प्रतिभासम्पन्न कवि थे और कानपुर में गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' के समकालीन थे। पंत निश्चय ही दूसरी शैली और मानसिकता के कवि थे। द्विवेदी जी ने अपने पत्र में जिस प्रकार पंत जी को याद किया है, उसमे तिहरे संकेत व्यञ्जित होते हैं। पहला तो यह कि वह हितैषी की कविता को अधिक महत्त्वपूर्ण मानते थे, दूसरे यह कि पंत की कविता को वह स्तरीय रचना नही मानते थे, तीसरे यह कि स्वयं देवीदत्त शुक्ल पंत की कविताओं को छाप कर सरस्वती के स्तर को क्षति पहुँचा रहे हैं। इसका प्रमाण तो मैंने ढूँढ़ने की कोशिश की कि हितैषी जी की वह कविता सरस्वती मे छपी या नही, किन्तु पंत जी की कविताएँ इस टिप्पणी के बाद भी छपती रही इसके प्रमाण हमारे पास ही नही, हिन्दी-जगत् के पास हैं। इसमें द्विवेदी जी का दोष नही है। कभी-कभी आने वाली पीढ़ी की प्रतिभा का मूल्यांकन करने मे पिछली पीढ़ी चूक करती रही है। उदारता द्विवेदी जी की इसमें थी कि वह स्पष्ट रूप से अपने विचार शुक्ल जी पर लादना नहीं चाहते थे। अपनी रुचि का संकेत करके उन्होने उनके विवेक और उनकी स्वतन्त्रता को सुरक्षित रखा है। पुरुषार्थ नाम की पत्रिका मे द्विवेदी जी के नाम से छपे एक लेख पर विवाद का सन्दर्भ भी इन पत्रों में आया है।

एक सफल अनुवादक एवं रूपान्तरकार— इन पत्रों से यह भी पता चलता है कि अवकाश प्राप्त करने के बाद भी द्विवेदी जी सरस्वती की टिप्पणियाँ आदि लिखा करते थे। इन टिप्पणियों में कभी-कभी विभिन्न ज्ञान-विज्ञान की पुस्तको, पत्रिकाओं से अनुवाद कर देते थे। कुछ में सन्दर्भ ग्रन्थो का नाम दिया जाता था, कुछ मे नही दिया जाता था। ऐसे ही किसी आलेख को लेकर पुरुषार्थ नामक पत्रिका में कोई विवाद खड़ा कर दिया था। भारत पत्रिका में भी सरस्वती के विरुद्ध कुछ छपा था। उस विवाद से द्विवेदी जी चिन्तित थे। उन पत्रों से यह भी ज्ञात होता है कि प्रायः इस प्रकार के आलेख दूसरों से भी लिखवाये जाते थे। द्विवेदी जी ने बार-बार अपने पत्रों मे ऐसे आलेखो मे सन्दर्भ देने का आग्रह किया है, किन्तु ऐसा लगता है कि किन्हीं कारणों से सरस्वती का सम्पादकीय विभाग वह सन्दर्भ नहीं देता था। द्विवेदी-युग की पत्रकारिता मे हिन्दी में विभिन्न विषयों पर लेख इसी प्रकार

छपे हैं। इसके पीछे दृष्टि किसी छद्म को मौलिक घोषित करना नही होता था। केवल हिन्दी को सम्पन्न और समृद्ध बनाने की दृष्टि से ही ऐसा किया जाता था। द्विवेदी जी के सम्पादकत्व तक तो यह चल जाता था, किन्तु पुरुषार्थ एवं अन्य पत्रों में इस प्रकार के अनुवादों या रूपान्तरों के प्रति जागरूकता अधिक बढ़ गयी थी और अब ऐसी कृतियो की आलोचना भी शुरू हो गयी थी। इससे यह भी पता चलता है कि हिन्दी के लेखक और आलोचक मूल स्रोतों के प्रति अधिक जागरूक हो गये थे और वह उसका अध्ययन-मनन भी करने लगे थे। द्विवेदी जी मौलिक चिन्तक के साथ-साथ एक कुशल अनुवादक भी थे। अनुवादक की कुशलता और दक्षता तभी देखने को मिलती है जब वह दोनों भाषाओं का मर्मज्ञ विद्वान् होता है। द्विवेदी जी संस्कृत के विद्वान् तो थे ही, साथ ही, हिन्दी के व्याकरण, वर्तनी और विराम, अर्द्धविराम आदि चिह्नों के भी शोधक थे। संस्कृत के श्लोकों और पदो का सटीक उदाहरण तो इन पत्रों में भी कही-कहीं मिलेगा। साथ ही, यह भी कि वह हिन्दी छन्दो और पदो के रसिक मर्मज्ञ थे। भाषा के प्रति सतर्क थे। उन्होंने एक पत्र में प्रतिष्ठित व्यक्ति और प्रतिष्ठा आदि के सन्दर्भ मे बडा अच्छा विवेचन भी किया है। साथ ही, वह सरल भाषा के भी पक्षधर थे क्योंकि कुछ लोगो के सन्दर्भ में चर्चा करते हुए जो सुझाव द्विवेदी जी ने दिये हैं वह सरलता के पक्ष के हैं। हमे पढ़ाया भी जाता है और बताया भी जाता है कि द्विवेदी जी संस्कृतनिष्ठ भाषा के अनुयायी थे, किन्तु उनके पत्रो और आलेखो को देखने से यह नहीं पता चलता। विषय के अनुकूल भाषा के वह समर्थक अवश्य लगते है। पत्रकारिता मे तत्सम और तद्भव शब्दो का विकल्प है और यह विकल्प तीन दृष्टियों से किया जाना चाहिए। मात्र सूचनात्मक आलेख की भाषा तो सरल होगी किन्तु विषय-ज्ञान और विषय की विशिष्टता के सन्दर्भ में भाषा भी पारिभाषिक होगी। पारिभाषिक होने के नाते उतनी सरल नही होगी। द्विवेदी जी इसी विचार के थे किन्तु भाषा को संस्कार-निष्ठ बनाने के लिए अधिक आग्रहशील थे। हिन्दी मे उन दिनो उर्दू के मुहावरो से लैस भाषा के प्रति एक वर्ग आग्रहशील था और उसके सन्दर्भ मे द्विवेदी जी उनके इस बात से सहमत नहीं दिखते। ऐसा लगता है कि उनकी संस्कारनिष्ठा को लोगो ने संस्कृतनिष्ठा के रूप मे प्रचलित कर दिया। स्वयं द्विवेदी जी के आलेखों की भाषा संस्कृतिनिष्ठ है, संस्कृत-निष्ठ नही।

रेलवे टाइमटेबुल, पत्रा और कैलेण्डर—पं० देवीदत्त शुक्ल से प्रायः तीन चीजो की माँग द्विवेदी जी निरन्तर करते रहे हैं। पहली चीज रेलवे का टाइमटेबुल, दूसरी चीज कैलेण्डर एवं पंचाग तथा तीसरी चीज पेन्शन एवं पारिश्रमिक। रेलवे टाइमटेबुल माँगने के पीछे द्विवेदी जी ने तर्क दिया है कि इनके गाँव में रहने से लोग प्रायः गाड़ियो के आने-जाने के समय पूछने आते हैं, समय-समय पर रेल विभाग द्वारा समयसारिणी में परिवर्तनों के कारण भी लोग चले आते हैं। दो पैसे के टाइमटेबुल से उनका तो काम चलेगा ही, साथ ही, आस-पास के गाँव वालों का भी काम चलेगा। पंचाग भी जरूरी है क्योंकि साइत और भद्रा जानने के लिए भी गाँव के लोग प्रायः उनके पास आते थे। कैलेण्डर तिथियों की निजी

जानकारी के लिए आवश्यक था ही । द्विवेदी जी के युग मे जिसके पास यह सुविधाएँ रहती थी वह आधुनिक भी माना जाता था । आसपास के गाँवो मे द्विवेदी जी की प्रतिष्ठा तो थी ही, साथ ही, गाँव वालों को यह भी अपेक्षा थी कि यह सारी जानकारी उनके पास जाने से सहज ही मे सुलभ हो सकती है । पेन्शन और पारिश्रमिक का तकाजा तो हर लेखक सम्पादक से करता ही है । फिर देवीदत्त शुक्ल जी तो उनके अपने आदमी थे । इस सम्बन्ध में शुक्ल जी को कैसे उन्होने अपने सहायक के रूप मे चुना, नियुक्ति के पूर्व उनको जो पत्र लिखा है उससे पता चलता है । वह पत्र अग्रेजी मे है । और ज्यो-का-त्यो यहाँ उद्धृत है । उस पत्र में भी भाषा, सम्पादकीय दायित्व, वेतन, पारिश्रमिक आदि के विषय में जो संक्षेप मे आर्हताओ का उल्लेख किया है उससे भी द्विवेदी जी की सम्पादकीय कुशलता का पता चलता है ।

ब्राह्मी तेल : सिर दर्द—श्री किशोरीदास वाजपेयी के पत्रों मे केवल लेखन द्वारा कोई सम्पादक किसी लेखक से कैसे एक रागात्मक सम्बन्ध स्थापित कर लेता है, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण मिलता है । पत्राचार का प्रारम्भ स्वयं द्विवेदी जी श्री वाजपेयी जी के किसी लेख को पढ कर करते है । इसीलिए उनको लिखे समस्त पत्रों मे प्रकारान्तर से एक उभरती हुई प्रतिभा को सरक्षण देने का भाव उभर कर आया है । प्रतिभा की प्रशंसा के साथ-साथ श्री द्विवेदी जी ने इन पत्रो में जो स्नेह श्री वाजपेयी जी को दिखलाया वह उनके भावुक पक्ष पर प्रकाश डालता है । इसी सिलसिले मे द्विवेदी जी ने श्री वाजपेयी से आग्रह भी किया है कि शुद्ध ब्राह्मी-तेल वह उनके उपयोग के लिए भेजें । कैसे भेजें, कैसे उसे पैक करे, और कैसे वह उसका भुगतान करे, इसका भी विवरण है । कई पत्रो में इसका सिलसिला चला है । वाजपेयी जी के इस आग्रह पर कि वह उनसे स्वयं मिलने के लिए आना चाहते हैं, द्विवेदी जी ने गाँव तक पहुँचने मे उन्हे जो कष्ट होगा उसका विवरण लिखा है । उस विवरण में इतने छोटे-छोटे निर्देश-सन्देश है कि पढ कर लगता है कि वह घर बैठे ही वाजपेयी जी को अपने गाँव का दर्शन करा देगे । फिर यह भी लिखा है कि बरसात और गर्मी मे न आये क्योकि उनके घर तक पहुँचने में गर्मी मे धूप और बरसात मे नदी-नालो की बाधा रहेगी । वाजपेयी जी को इन पत्रो को पढ कर इसका ज्ञान तो हो ही गया होगा कि कितने संचारहीन प्रदेश मे रहते है, साथ हो, द्विवेदी जी अतिथि की कितनी चिन्ता करते थे इसका भी परिचय मिला होगा । सामान्यत: हम अतिथि की चिन्ता तब करते हैं जब वह पहुँच जाता है, किन्तु संस्कारो मे गहरे पैठने वाले द्विवेदी जी को अतिथि के मार्ग-कष्ट की भी चिन्ता रहती थी । वाजपेयी जी ने ब्राह्मी तेल भेजा हो या न भेजा हो, पत्र पढ़ने से लगता है कि उसके मूल्य और पैकिङ्ग से लेकर स्वयं उनकी प्रस्तावित यात्रा में सम्भावित कष्टों एवं उससे बचने के लिए द्विवेदी जी का मार्ग-निदर्शन पूर्ण था । इतने डिटेल्स का व्यक्तित्व था द्विवेदी जी का ।

व्यक्तित्व की सरलता—इन पत्रो के अध्ययन से मैं जिस निष्कर्ष पर पहुँचा वह यह है कि द्विवेदी जी बड़े सरल व्यक्तित्व के आदमी थे । उनमें छल-प्रपञ्च नहीं था । व्यवहार की

सरलता के कारण भी उन्हें कष्ट था । अपने भाञ्जे के कई प्रकार के व्यवहार से वह सन्तुष्ट नहीं थे किन्तु उन्हे उसके परिवार की इतनी चिन्ता थी कि उसकी पत्नी और बच्चे की बीमारी में दवा और तीमारदारी का उल्लेख पढकर मन द्रवित हो जाता है । इस सन्दर्भ में उनके विचार भी राष्ट्रीय आन्दोलन और कांग्रेस के प्रति प्रकारान्तर से व्यक्त हुए हैं । वह कहीं कांग्रेस आन्दोलन से पूर्णतया सहमत नहीं थे । असहयोग आन्दोलन, सत्याग्रह मे जो नवयुवक भाग ले रहे थे उनके प्रति भी वह कुछ चिन्तित ही थे। शायद भावना यही थी कि घर-गृहस्थी का दायित्व न निभा कर या घर को निराश्रित छोडकर जो लोग आन्दोलन में भाग ले रहे हैं, वह नैतिक दृष्टि से ठीक नही कर रहे हैं । वह युग भी उसी नैतिकता का था । गाधी जी ने अपने घर को ही आश्रम रूप दे दिया था और इसीलिए राष्ट्रीय आन्दोलन मे हर खतरे को मोल भी ले लेते थे । सामान्य जन का घर, घर ही रहता था, परम्पराएँ और रूढ़ियाँ वर्तमान ही रहती थी, समस्याएँ पालन-पोषण की भी होती थी । ऐसी स्थिति मे परिवार के वृद्ध जनो का खिन्न होना स्वाभाविक था । लेकिन द्विवेदी जी के व्यक्तित्व की विशिष्टता यह थी कि भाञ्जे कमलाकिशोर के राष्ट्रीय आन्दोलन मे जेल जाने से जो आन्तरिक परेशानियाँ उन्हे उठानी पडी, उसे उन्होने झेला, किन्तु भाञ्जे को रोका नही । ऐसा लगता है कि यदि वह चाहते तो रोक सकते थे किन्तु ऐसा उन्होने नही किया । वस्तुतः वह भी उस समय के अन्य वृद्ध जनो की भाँति दोहरी नैतिकता निभाने मे क्षुब्ध भी थे और साथ-ही-साथ उसके भोक्ता भी थे । पत्रकार होने के नाते वह आन्दोलन को अनैतिक तो नही कह सकते थे, किन्तु पुत्र न होने के नाते भाञ्जे के प्रति पूर्ण पुत्रवत् भाव होने के कारण, वह क्षुब्ध अवश्य थे । भावुक इतने थे कि बराबर शुक्ल जी को आदेश देते थे कि गाँव मे उनकी पत्नी और बच्चे रहते हैं, इसलिए उनको नियमित रूप से अपने गाँव जाना चाहिए । वह स्वय उनके परिवार की भी देख-रेख करते थे । शुक्ल जी के बच्चे की बीमारी के विषय मे भी कई पत्र हैं । शुक्ल जी के भाई के एक लडके की मृत्यु पर उनका एक पत्र बड़ा ही संवेदनशील है । ऐसा निर्मल और पारदर्शी व्यक्तित्व था द्विवेदी जी का जिसमे शहरी बनावट कम, ग्रामीण सरलता अधिक थी ।

लम्बी बीमारी . आर्थिक सहायता—इन पत्रों मे दो घटनाओ का भी उल्लेख है जिनमे उन्होने अपनी लम्बी बीमारियो का भी हवाला दिया है। उन्होने इन बीमारियों मे दौलतपुर (रायबरेली) से जुही कानपुर मे जाकर चिकित्सा करने का उल्लेख किया है । पहली बीमारी में तो उन्होने कोई सहायता नही ली और अपनी ही आर्थिक शक्ति पर अपना उपचार करवाया किन्तु दूसरी बार बीमार होने पर हिन्दी-जगत् ने अनुदान राशि की व्यवस्था की और तब काफी लम्बी बीमारी के बाद वह स्वस्थ हो सके । इसी सम्बन्ध में शायद लोगों ने द्विवेदी जी की जीवनी लिखने की चर्चा की थी । अपनी व्यक्तिगत जीवनी लिखने या लिखवाने के प्रति वह प्राय. प्राचीन परम्परा के अनुसार, अधिक विनयी और शीलवान् थे । उन्होने लिखा भी है कि इस दृष्टि से कभी उन्होने कुछ लिखा था किन्तु अन्त मे वह सब उन्होंने नष्ट कर डाला तथा इस काम को स्वयं करना उचित नही समझा ।

उन्होंने अपने विषय में यह भी लिखा है कि जीवन में ऐसा कुछ महत्त्वपूर्ण उन्होंने नहीं किया जो जीवनी का अंग बन सके। यह उनका संकोच भारतीय मानसिकता की संस्कारगत मनःस्थिति का परिचय देता है। बीमारी में भी इसीलिए हिन्दी भाषाभाषी की चिन्ता से वह इतने कृतज्ञ थे कि उस विषय मे भी लिखना-पढ़ना उन्हें उचित नही लगा।

पत्रों के निजी सन्दर्भ—द्विवेदी जी के प्रस्तुत पत्रों का विश्लेषण करने के साथ जब उनके वर्गीकरण करने की बात आती है तो यही कहा जा सकता है कि ये पत्र किसी साहित्यिक, सांस्कृतिक आन्दोलन के पक्ष या विपक्ष में नही लिखे गये हैं, न इनमे यह भावना ही है कि यह कभी छपेंगे और चर्चा के विषय बनेंगे। फिर भी मनुष्य होने के नाते आमने-सामने होने पर वार्ता, और दूर होने पर पत्राचार स्वाभाविक है। आज के युग मे तो बहुत-से साहित्यकार योजना बनाकर पत्राचार करते हैं, जिससे उनमें निजीपन नही आ पाता—एक प्रकार की आरोपित कृत्रिमता ही व्यक्त होती है। द्विवेदी जी के पत्र सहजाभिव्यक्ति के प्रतीक हैं। उनमें मन की निर्मलता ही स्पष्ट होती है। भले ही उनमे पहाड़ी लड़के की रचनाओ के प्रति उनकी अपनी समझदारी की सीमा ही क्यों न व्यञ्जित होती हो। इसी प्रकार द्विवेदी जी के पत्रो मे दैनन्दिन घटनाओ का सहज वर्णन है, चाहे वह लड़की के घर वालो के निवास के वर्णन-रूप मे हो या अपने भाञ्जे की पत्नी की बीमारी के विषय मे। एक अन्य पक्ष से देखा जाय तो यह ऐसे निजी पत्र हैं कि यदि प्राप्तकर्ता मर्यादा न निभाये तो, घर में ही वैमनस्य फैल सकता है, जैसे अपने ही जामाता के विषय में उनकी राय या भाञ्जे के राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने की बात है। एक दूसरी दृष्टि से ये पत्र एक नितान्त ग्रामीण संस्कृति को व्यञ्जित करते हैं, जिनमे 'थोड़ा लिखना बहुत समझना' की ध्वनि निहित है। द्विवेदी जी के सभी पत्र प्रायः पोस्ट कार्ड पर ही लिखे गये हैं और ऐसा लगता है कि तात्कालिक प्रेषणीयता के दबाव मे जी हल्का करने के लिए लिखे गये हैं। अनेक प्रसंग हैं जिनमे आक्रोश की केवल अभिव्यक्ति हो सकती थी, किन्तु अप्रिय-से-अप्रिय घटना के उल्लेख में न भावावेश है, न आक्रोश। एक अन्य विशेषता इनकी यह है कि ये शैली मे टेलीग्राफिक हैं। सन्दर्भ प्रेषक और प्राप्तकर्ता दोनो के पास हैं केवल संकेत मात्र से अर्थ व्यञ्जित हो जाता है।

पत्रों की प्रतिष्ठा—इन पत्रो की प्रतिष्ठा होनी चाहिए। सम्मेलन में तो केवल वही पत्र हैं जो द्विवेदी जी ने या तो निजी काम के लिए या एक लम्बी अवधि तक इण्डियन प्रेस से सम्बन्धित होने के नाते लिखे हैं। दूसरे, यह पत्र एक निवर्तमान सम्पादक द्वारा वर्तमान सम्पादक को भी लिखे गये हैं। इसलिए उनका विषय-विस्तार सीमित है। इन पत्रों के अतिरिक्त अपने सम्पादन-काल में हजारो पत्र उन्होंने लिखे होंगे, जो पूरे देश में जाने किन-किन के पास पडे होंगे। यदि उनका संग्रह हुआ होता या वे उपलब्ध होते तो निश्चय ही उससे उनके व्यक्तित्व के बहु-आयामी सन्दर्भों का भी परिचय मिलता। फिर भी एक और संग्रह द्विवेदी जी के पत्रो का उपलब्ध है और इस समस्त पत्र साहित्य के आधार पर हम उस युग के बुद्धिजीवियों की मानसिकता आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश का पूरा

ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। मिसाल के लिए यही लीजिये कि द्विवेदी जी के समय में दो पैसे का पोस्टकार्ड मिलता था, दो पैसे का रेलवे टाइमटेबुल मिलता था, मुकदमे के खर्चे का विवरण (जिसे द्विवेदी जी ने शुक्ल जी के पारिवारिक झगडे मे पंच बनकर तय कराया था)। पूरे खर्च के ब्यौरे मे बहुत कम ऐसे मद हैं जो एक रुपये से अधिक हों। स्वयं द्विवेदी जी ने उस मद में अपने पास से तीन रुपये कुछ पैसे और खर्च किये थे। आज पोस्टकार्ड की कीमत, रेलवे टाइमटेबुल की कीमत, रेल के किराये की कीमत, कचहरी-अदालत के खर्चे का हालत यदि लिखने बैठें तो जमीन-आसमान का अन्तर दिखेगा। पुत्री के विवाह मे १५००) खर्च करने मे शुक्ल जी खिन्न थे। आज कोई शादी ५०००० से कम में शायद ही होती हो। रस्म-रसूमात मे जहाँ बीस आने मे काम चलता था आज कितना लगता है इसका तुलनात्मक अध्ययन एक दिलचस्प विषय है। इसी प्रकार सामाजिक आचार-विचार-व्यवहार की भी बात है। इसी प्रकार आज सामाजिक सौहार्द और नि स्वार्थ भाव, पारस्परिक सम्बन्ध, सेवा आदि के भाव एक-दूसरे स्तर के दिखते हैं। कई पत्रों में द्विवेदी जी ने लोगो की नौकरियो की सिफारिश की बात लिखी है। साथ ही, उसको पढ़कर पता लगता है कि सिफारिश यो ही नही की गयी है वरन् उसके पीछे भी परख और कुछ मूल्यगत आधार है। श्री देवीदत्त शुक्ल के परिवार मे कोई विवाह पड़ता है जिसमे शामिल होने की द्विवेदी जी की प्रबल इच्छा थी और शुक्ल जी के परिवार का आग्रह भी था लेकिन वह उस विवाह मे नही सम्मिलित हो सके क्योकि उनके गाँव के मदरसे के पण्डित जी की मृत्यु हो गयी थी। मित्र के परिवार का निमन्त्रण अस्वीकार करके अपने मदरसे के पण्डित जी की शव-यात्रा मे चले गये। आज ऐसा करने वाले बिरले ही होंगे। आज तो कोई इस बहाने को स्वीकार भी नही करेगा। आज यह बहाना या तथ्य न तो कोई लिखेगा और न कोई मित्र इस तथ्य को इतना मूल्यवान् समझेगा कि वह निमन्त्रण की अनुपस्थिति को क्षमा कर सके। ऐसे कई मार्मिक स्थल और सन्दर्भ आपको इस पत्र-संग्रह में मिलेंगे जो उस काल-विशेष की जीवन-पद्धति और उससे जुड़े हुए मूल्यों को तत्काल प्रकट करके हमको आपको यह सोचने के लिए विवश करेंगे कि वह युग कैसा था? वह लोग कैसे थे? और उस पराधीन भारत मे सब खो चुकने के बाद भी क्या शेष था जिस आधार पर एक बार पुन. यह देश अपनी अस्मिता को लेकर खड़ा हो गया। हमे आशा है कि इन पत्रो के ऐसे जागरूक पाठक होगे जो इनके अध्ययन के साथ-साथ वह अपने युग की सापेक्ष तुलना भी करते चलेंगे। जैसा मैंने पहले भी कहा द्विवेदी-युग विश्राम लेते हुए सामन्ती युग और अवतरित होने के लिए बेचैन आधुनिक युग का सन्धि-काल है। आचार्य द्विवेदी जी उसी युग के व्यक्ति हैं। इसलिए उनमे भी आधुनिकता का स्वागत करने की बेचैनी है लेकिन कुछ इतिहास, परम्परा, पुराण, मिथक द्वारा प्रदत्त सीमाएँ और कमजोरियाँ भी हैं। यह कमजोरियाँ मूल्यगत हैं, लेकिन हैं। ये जीवन की जटिलता को चरितार्थ करने मे भी सहायक हैं। आज जब लगभग चार पीढ़ियों का अन्तर हमारे और द्विवेदी जी के बीच में है, हम उस युग की बहुत-सी घटनाओं को एक विशिष्ट सन्दर्भ

में और एक सौन्दर्यपरक दूरी (Aesthetic Distance) के साथ देख सकते हैं। इसे समझने मे हो सकता है हमसे बहुत गम्भीर वैज्ञानिकता का निर्वाह न हुआ हो, लेकिन मानव-मूल्यों की प्रासंगिकता और उसमे साझेदारी आज के व्यक्ति की उतनी ही होगी जितनी द्विवेदी जी की उनके पूर्ववर्ती लेखकों के साथ थी। वास्तव मे साहित्य एवं सांस्कृतिक स्तर पर यह साझेदारी का भाव ही निरन्तरता का प्रवाह पैदा करता है। हम आज जो कुछ भी हैं वह इसलिए हैं कि हमारे पूर्व जो लोग थे वह हममे जुड़ने की तैयारी कर रहे थे। ऐसी स्थिति मे छोटे-से-छोटे दस्तावेज का मूल्य बढ़ जाता है। यह पत्र-संग्रह भी उसी का प्रमाण है।

अन्य लेखकों के पत्र

धनपत राय (प्रेमचन्द) के पत्र—धनपत राय उर्फ प्रेमचन्द के पत्र अधिकांशत हिन्दुस्तानी एकेडमी के तत्कालीन सहायक सचिव श्री रामचन्द्र टण्डन के नाम लिखे गये हैं। अधिकांश पत्र अंग्रेजी भाषा मे है जिनको नागरी लिपि मे रूपान्तरित करके जैसा-का-तैसा इस सग्रह मे छाप दिया गया है। मुशी धनपत राय के ये पत्र कई दृष्टियो से ऐतिहासिक महत्त्व रखते हैं। सर्वप्रथम तो यह कि इन पत्रो के सन्दर्भ हिन्दी के विरोध मे उठते हुए हिन्दुस्तानी आन्दोलन की गतिविधियो के मापक है। दूसरे यह कि उस युग के प्रतिष्ठित हिन्दी लेखक मुशी प्रेमचन्द को विशुद्ध हिन्दी आन्दोलन से सम्बद्ध होने मे कौन-कौन-सी कठिनाइयाँ थी और तीसरा यह कि उनकी स्वयं की समझदारी हिन्दुस्तानी के प्रति क्या थी और हिन्दुस्तानी एकेडमी की रीति-नीति से वह कितनी सहमत थी और कितनी असहमत थी। प्रेमचन्द जी मूलत: उर्दू के लेखक थे और राष्ट्रीय आन्दोलन से सम्बद्ध होने के नाते हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए हिन्दुस्तानी जैसी भाषा को ईजाद करने के लिए उत्सुक थे। वह समय हिन्दी और हिन्दुस्तानी को लेकर गम्भीर बहस चलाने का था। उर्दू लेखकों में से असगर गोंडवी तो एकेडमी मे सम्पादन-कार्य ही कर रहे थे। उनके अतिरिक्त हसरत मुहानी, जगन्नारायण खाँ, चकबस्त, शिबली नौमानी आदि का भी सहयोग प्राप्त था। प्रेमचन्द जी भी एकेडमी से सम्बद्ध थे और उर्दू-हिन्दी मे तद्भव और तत्सम शब्दो के व्यावहारिक कोश बनाने की योजना तैयार करने का दायित्व इन्हे दिया गया था। अंग्रेजी मे जो पत्राचार श्री प्रेमचन्द जी का श्री रामचन्द्र टण्डन से हुआ उसमें इन समस्त विषयो पर समुचित प्रकाश पडता है।

इन पत्रो मे एक बात और खुलकर स्पष्ट होती है कि हिन्दुस्तानी एकेडमी की मानसिकता मे कही यह बात थी कि जब तक हिन्दुओ और मुसलमानों को जोडने वाली हिन्दुस्तानी भाषा का स्वरूप नही बनता तब तक हिन्दुस्तानी एकेडमी की कार्यवाही अंग्रेजी

मे चलती रहे। यद्यपि यह घोषित नीति नही है फिर भी उस समय के पत्राचार से यह निष्कर्ष निकालना स्वाभाविक है।

मुंशी धनपत राय के पत्रो से यह भी पता चलता है कि प्रेमचन्द जी की मानसिक बुनावट में संस्थाओं की संगठन सम्बन्धी व्यवस्थापिका बुद्धि कितनी सश्लिष्ट और वैज्ञानिक थी। जो-जो निर्देश पत्रों द्वारा उन्होने स्व० श्री रामचन्द्र टण्डन को दिये है और कार्यालयीय प्रतिभा के जो-जो पक्ष इसमे वर्णित हैं उनका अध्ययन भी कम दिलचस्प नही है।

इन पत्रो को पढ़कर सबसे दिलचस्प बात यह मालूम पडती है कि हिन्दुस्तानी आन्दोलन के समर्थकों के दिमाग मे हिन्दुस्तानी का स्वरूप अनुवादो द्वारा ही प्रतिष्ठित किये जाने की दृढ धारणा थी। मुंशी प्रेमचन्द के अंग्रेजी पत्रों मे जगह-जगह इसकी झलक मिलती है। अन्तर इतना है कि स्व० महावीरप्रसाद द्विवेदी संस्कृति के आधार पर विषयानुकूल भाषा के समर्थक थे और हिन्दुस्तानी के समर्थक लोग इन दो महत्त्वपूर्ण तत्वों को भाषा को सरल बनाने के लिए छोड भी सकते थे।

हरिऔध जी के पत्र—प्रस्तुत संकलन मे श्री हरिऔध जी के भी चौदह पत्र संगृहीत है। ये पत्र श्री हरिऔध जी ने समय-समय पर सरस्वती के सम्पादक श्री देवीदत्त शुक्ल को लिखे हैं। इसके पढने से यह पता चलता है कि उस समय हिन्दी लेखक, हिन्दी लेखन, हिन्दी प्रकाशन की क्या स्थिति थी। साथ ही, इन पत्रो के अध्ययन से यह भी पता चलता है कि हरिऔध जी ऐसे लेखक और कवि को हिन्दी-लेखन के क्षेत्र मे कितने कष्ट उठाने पडे हैं। आज तो हिन्दी प्रकाशन काफी विकसित हो चुका है और प्रकाशन की सुविधाएँ अपेक्षाकृत अधिक सुलभ हैं। किन्तु उस समय स्थितियाँ भिन्न थी। हिन्दी-लेखन अपने विकास-चरण मे था तथा परम्परागत ब्रजभाषा को छोड कर खडी बोली मे व्यक्त हो रहा था। ब्रजभाषा काव्य के प्रकाशन में उतनी कठिनाई नही थी किन्तु खडी बोली के साहित्य के प्रकाशन में न तो प्रकाशक खतरा मोल लेने का साहस करता था और न ही कोई पत्रिका डके की चोट पर खडी बोली की हर कृति को छापने के लिए प्रस्तुत था। हरिऔध जी के अधिकांश पत्रो मे इसकी व्यथा वर्तमान है।

दूसरी विशेषता इन पत्रो की यह है कि इनमे तात्कालिक रचना साहित्यिक पत्रिकाओं में स्थान पा सके इसकी चेष्टा लेखक को करनी पडती थी। सरस्वती ने आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के सम्पादकत्व मे एवं उच्चस्तरीय प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली थी। 'सरस्वती' मे किसी रचना के प्रकशित होने का अर्थ होना था स्तरीय साहित्य होने का प्रमाण। हरिऔध जी ने भी आचार्य द्विवेदी जी के विचारों से प्रभावित हो कर ब्रजभाषा के खडी-बोली मे लिखने का संकल्प लिया था। स्व० मैथिलीशरण का वर्चस्व इस क्षेत्र मे सबसे अधिक था। हरिऔध जी यद्यपि छन्दशास्त्र और काव्य-कथ्य मे अधिक शास्त्रीय और प्रौढ़ थे फिर भी उनको अपनी प्रतिष्ठा के लिए संघर्ष करना पडा था। शायद उन्हे सरस्वती सम्पादक द्वारा किया गया संशोधन परिवर्तन भी रुचिकर नही था इसीलिए प्रकाशनार्थ कविता भेजते समय वह बार-बार कविता मे प्रयोग किये गये दृष्टिकोण का उपयोग करते थे। हरिऔध

जी के पत्रों में लेखक, उसमें भी कवि की दयनीय स्थिति की झलक मिलती है। रचना लिख-कर प्रकाशित कराने मे कितने पैतरे बदलने पडते थे और कितना लिखना-पढ़ना पडता था इसका स्पष्ट उल्लेख इन पत्रों मे मिलता है।

पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से रचनाओ को प्रकाशित कराने मे हमें एक लम्बी यात्रा का इतिहास मिलता है। सरस्वती ही पहली पत्रिका थी; जिसने लेखक और उसकी कृति को समसामयिक सन्दर्भ दिया था। उसके पूर्व की परम्परा या रचनाओं की पाण्डुलिपि बनाकर सुरक्षित रखने की परम्परा थी या सरस्वती के पूर्व जो 'समाचार-पत्र' छपते थे उनमे अति भोंड़े तरीके से छापे जाने की प्रवृत्ति थी। दूसरे शब्दो मे हम यह कह सकते हैं कि रचना, रचनाकार और प्रकाशन को एक सम्मान और गौरव देने की परम्परा सरस्वती से ही शुरू होती है। हरिऔध जी जैसे कवि के लिए यह अनुभव सर्वथा नया था क्योकि जिस ब्रजभाषा मे वह लिख रहे थे उसमे प्रकाशन का कोई प्रश्न ही नहीं था। यदि हरि-औध जी ब्रजभाषा मे ही लिखते रहते तो उनका सम्पूर्ण कृतित्व हमारे पास आज केवल पाण्डुलिपि के रूप मे उपलब्ध रहता।

हरिऔध जी की उत्सुकता और व्यग्रता खड़ी बोली के रूप मे रचनाओ को प्रकाश में लाने का था। स्थिति उनके प्रतिकूल थी क्योकि वे ब्रजभाषा के रीति-आचार्य के रूप मे प्रतिष्ठित हो चुके थे और उनकी रीति-परम्परा की कविताओ और छन्दो का वातावरण ही दूसरा था। इन पत्रो के पढ़ने से ऐसा पता चलता है कि हरिऔध जी अपनी प्रतिष्ठित आचार्य-परम्परा को तोड़कर नयी काव्य-शैली का अनुसरण करना चाह रहे हैं लेकिन बाद में खड़ी बोली मे भी अपनी कुलीन परम्परा की पुनरावृत्ति बार-बार देखने को मिलती है जैसे चोखे चौपदे या वैदेही वनवास या रस कलश खड़ी बोली की होते हुए भी उनकी रीति-परम्परा को ही उजागर करती है।

निराला जी के पत्र—प्रस्तुत सग्रह मे निराला जी के पत्र हैं जो उनके एकाकी संघर्ष और तेजस्वी व्यक्तित्व का मार्मिक चित्र प्रस्तुत करते हैं। छायावाद-युग किन संघर्षों से गुजरा है और उस युग के रचनाकारो को किन-किन विसंगतियो और संघर्षों का सामना करना पड़ा है इसका हल्का-फुल्का किन्तु मार्मिक सन्दर्भ इन पत्रो मे छिपा हुआ है।

निराला का विद्रोही व्यक्तित्व व्यंग्यात्मक शैली, शब्दो को हथियार-रूप में इस्तेमाल करने की क्षमता और प्रतिष्ठित सम्पादक और व्यवस्थापक के प्रति दृष्टि—इन सबका विवरण इन पत्रो मे निहित है। लेखक होने के नाते निराला टूट जाना श्रेयस्कर समझते थे किन्तु प्रतिष्ठित व्यवस्था के सामने घुटने टेकने के लिए प्रस्तुत नही थे। अधिकांश पत्र सरस्वती सम्पादक पं० देवीदत्त शुक्ल को लिखे गये हैं जिनमे विषय, कथ्य और शैली से लेकर पारिश्रमिक तक की चर्चाएँ हैं। इसी के साथ मध्य व्यक्ति (Middle Man) के रूप मे सम्पादक को किस तरह लेखक और व्यवस्थापक के बीच यातनाएँ भुगतनी पड़ती हैं इसके भी प्रकरण हैं। दु.ख की बात यह है कि इन पत्रों के साथ 'सरस्वती' के

सम्पादक पं० देवीदत्त शुक्ल के उत्तर उपलब्ध नहीं हैं। यदि कहीं वे भी उपलब्ध होते तो उस समय के इतिहास पर नयी रोशनी पड़ती।

निराला जी एक नितान्त स्वाभिमानी व्यक्ति थे किन्तु परिस्थितिवश उन्हें कुछ समझौतों के लिए मजबूर होना पड़ता था। कई पत्रों मे इसका त्रासदीपूर्ण सन्दर्भ है। कहीं-कहीं आर्थिक सुरक्षा के लिए उन्होने लिखकर जीविकोपार्जन करना चाहा है और उस प्रयास मे अयाचित रूप से कहानियाँ आदि भेजी किन्तु उनकी तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओ मे क्या दुर्दशा हुई है इन पत्रो मे स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यह मर्म एक युग-प्रवर्तक कवि के जीवन का मर्म है जिसे 'माधुरी' और 'सुधा' जैसी पत्रिका के सम्पादकीय विभाग में काम करते हुए भोगनी पड़ी थी। निराला जी की भावित संवेदना इन पत्रों मे बड़ी मनोवैज्ञानिक सामग्री प्रदान करती है। एक पत्र मे बड़े व्यग्यात्मक शैली में निराला ने लिखा है कि सम्पादक और व्यवस्थापक को पारिश्रमिक देते समय यह नही देखना चाहिए कि वह इन पैसों का क्या करेगा। उसे पारिश्रमिक देना चाहिए लेखक चाहे इस पैसे से अपनी प्रेमिका के गहनें बनवाये या कुछ और करे। इसी प्रकार एक दूसरे पत्र में उन्होंने आवेश मे आकर सम्पादक को आदेश दिया है कि वह उनकी रचना न छापे। यह भी मामूली बात नही है। खासकर ऐसे युग मे जबकि लोग अपनी रचना छपवाने के लिए कुछ भी करने को तैयार रहते थे।

यह सब होते हुए भी निराला का व्यक्तित्व इतना उदार था कि उन्होंने सरस्वती की प्रति जो उन्हे भेंट-स्वरूप भेजी जाती थी रामकृष्ण मिशन के पुस्तकालय में दान-स्वरूप दे दिया करते थे और बड़े विनम्र स्वरो मे उन्होने सरस्वती के व्यवस्थापको से इस बात की माँग की थी कि वे उन्हें दो प्रतियाँ भेजा करें—एक पुस्तकालय के नाम जिसका चन्दा उनके पारिश्रमिक मे काट लें और दूसरी उनके नाम, लेकिन सरस्वती की व्यवस्था इतनी लचर थी कि पारिश्रमिक से चन्दा काटने के बावजूद भी वह प्रति पुस्तकालय को नहीं भेजते थे और निराला की व्यक्तिगत प्रति भी कट गयी थी। इन सभी सन्दर्भों से उस समय की पत्रकारिता, लेखक-सम्पादक और व्यवस्थापक के सम्बन्ध पर अच्छा प्रकाश पड़ता है।

राहुल जी के पत्र— निराला से राहुल जी के पत्रो में जो मौलिक भेद है वह पूर्णतया आधुनिक और छायावाद की भावुक संवेदना का अन्तर है। निराला छायावादी रचनाकार है। राहुल जी बौद्ध भिक्षु से लेकर मार्क्सवाद तक के यात्रा-अनुभवों से सम्पन्न व्यक्ति हैं। निराला कवि और साहित्यकार हैं। राहुल जी भाषाविद्, दार्शनिक एवं घुमक्कड पत्रकार है। इसलिए राहुल जी की भाषा यथार्थ और अपने व्यवसाय-कुशल प्रकृति का परिचायक है। राहुल जी ने सरस्वती के सम्पादक के लिए जिस लेख को लिखने का अनुबन्ध किया था उसका उल्लेख जगह-जगह पर बड़े सटीक ढंग से उनके पत्रों मे आया है और उन्होने बराबर इस बात का उल्लेख किया है कि यदि ऐसा नहीं होगा तो ऐसा होगा। अर्थात् राहुल जी निरीह नहीं लगते बल्कि इसके विपरीत अपने शर्तनामो की शर्तों पर अपनी व्यावसायिक बुद्धि और प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं। निराला की भावुकता जहाँ प्रतिरोध

करती है वहाँ ऐसा लगता है कि जैसे वह उनकी विवशता है किन्तु राहुल जब कहते हैं कि आप मेरा लेख मत छापिये या यदि आप कैमरा के लिए फिल्म और नया कैमरा नहीं भेजेंगे तब आप तिब्बत पर लिखे गये लेख के अधिकारी नही होगे, इसे मैं दूसरी पत्रिका को दे दूँगा। दोनों को पढकर लगता है कि राहुल पत्रिका और सम्पादक तथा व्यवस्थापक तीनो को हानि पहुँचा रहे हैं और निराला के पत्र मे लगता है कि एक ईमानदार कवि मात्र विरोध कर रहा है।

राहुल जी के पत्रों की भाषा एक पत्रकार की भाषा है जिसमे स्थितियो और सूचनाओ का अनुशासित विवरण है; व्यक्तिगत कुछ भी नही। जहाँ कही भी कमला साकृत्यायन या बच्चो का विवरण आया भी है तो उसमे भावुकता की अपेक्षा स्थितियो की सूचना मात्र है। छायावादी संवेदना और यथार्थवादी सवेदना के स्तरो को इन पत्रों मे भली-भाँति देखा जा सकता है। यथार्थ की सवेदनशीलता, आत्मविश्वास के माध्यम मे व्यक्त होती है और छायावाद की संवेदना आत्मोत्सर्ग की शहादत मे उत्पन्न होती है। यदि निराला और राहुल के पत्रों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाय तो एक ही युग मे दो भाव-बोध के व्यक्ति एक ही स्थिति का कैसे सामना करते हैं इसका सफल उदाहरण मिल जायगा।

राहुल जी के पत्र जो किशोरीदास वाजपेयी के नाम लिखे गये है, उनमे भाषा-विज्ञान सम्बन्धी छोटे-छोटे मार्मिक सन्दर्भ उभर कर आये हैं और वे हिन्दी भाषा की प्रकृति, उसकी वर्तनी और उसके मुहावरे आदि पर प्रकाश डालते हैं जिससे यह पता चलता है कि उस युग के मनीषी हिन्दी भाषा के स्वरूप को स्थिर करने मे कितनी व्यग्रता के साथ संलग्न थे।

दिनकर जी के पत्र—दिनकर जी के ८ पत्रो में मे केवल १ पत्र मे अपने समकालीन लेखको के विषय मे उनकी क्या धारणा थी, इसकी झलक मिलती है। श्री प्रभात शास्त्री के एक पत्र के उत्तर मे उन्होने पारिश्रमिक की माँग करते हुए लिखा है कि पंत और महादेवी अर्द्ध-सन्यासी हैं इसलिए गृहस्थ उनकी नकल नही कर सकता। अर्थात् पारिश्रमिक के प्रति सिद्धान्तत दृढ रहने की बात दिनकर जी के पत्र मे झलकती है जो निश्चय ही स्वातन्त्र्योत्तरकालीन साहित्यिक चेतना और यथार्थ का द्योतक है। स्वतन्त्रता के पूर्व प्राय: सभी लेखक पारिश्रमिक माँगते समय ऐसी भाव-मुद्रा बनाते थे जैसे पारिश्रमिक की माँग उन्हे नही करनी चाहिए किन्तु दिनकर जी ने जिस प्रकार कम-से-कम शब्दों का प्रयोग करके अधिक-से-अधिक सारगर्भित बात नितान्त यथार्थवादी दृष्टि से लिख दी है वह प्रशसनीय है।

दिनकर जी के सभी पत्र एक पंक्ति से लेकर पाँच पंक्ति के भीतर समाप्त होते हैं। अर्थात् पत्र शैली की दृष्टि मे प्रस्तुत पत्र श्री दिनकर की व्यावसायिक बुद्धि को प्रकाशित करते हैं। आचार्य किशोरीदास वाजपेयी जी को दिनकर जी ने जो पत्र लिखे हैं उनमें कहीं-कहीं अपने व्यक्तिगत जीवन और स्वास्थ्य सम्बन्धी चर्चा की गयी है।

इस संग्रह मे दिनकर जी के और पत्र नही है नही तो उनके इस यथार्थवादी शैली और तथ्यात्मक कथ्यो के प्रति जागरूकता के कुछ और प्रमाण मिलते।

सियारामशरण गुप्त के पत्र—इस संग्रह में ४ पत्र श्री सियारामशरण गुप्त के हैं जिन्हें जिन्होने पं० देवीदत्त शुक्ल सम्पादक सरस्वती को लिखे हैं। इन पत्रों में 'साकेत' के प्रकाशन और उसके प्रति पं० देवीदत्त शुक्ल तथा इण्डियन प्रेस के व्यवस्थापक की सद्-सम्मति के प्रति आभार ज्ञापित किया गया है, साथ ही, साकेत सम्बन्धी समीक्षा के प्रति उनका आग्रह एवं समीक्षार्थ प्रतियो का उल्लेख मात्र है। इन पत्रो मे यह भी ज्ञात होता है कि सियारामशरण गुप्त जी का व्यक्तित्व कितना निश्छल और सरल था।

भगवतीप्रसाद वाजपेयी के पत्र—श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी के १५ पत्रो मे से अधिकाश पत्र इलाहाबाद छोड़कर जब वे कानपुर चले गये थे और वही रहने लगे थे तब के हैं। श्री वाजपेयी जी प्रधान जी के पडोसी और मुहल्ले के थे इसलिए उन्होंने जितनी सरलता और निश्छलता के साथ अपने घरेलू बातो का हवाला देते हुए प्रकाशन सम्बन्धी कृतियों और उनसे सम्भावित आर्थिक अपेक्षाओ की चर्चा की है वह बहुत मार्मिक है और इस बात का स्पष्ट संकेत देती है कि स्वतन्त्र लेखन और उसकी विषम स्थितियो का सामना करने के लिए कितने धैर्य और साहस की आवश्यकता होती है।

लेखक-प्रकाशक सम्बन्धो पर भी इन पत्रो से प्रकाश पडता है। पुरानी परम्परा के अनुसार लेखक-प्रकाशक सम्बन्ध एक मर्यादित सदाशयता पर आधारित होते थे। लेकिन उसके बाद उन सम्बन्धो मे व्यावसायिकता आने लगी। लेखक भी व्यावसायिक दृष्टि अपनाने लगा और किञ्चित् प्रकाशक भी। क्योकि जहाँ प्रकाशक ने मर्यादाएँ तोडी थी वही कतिपय लेखकों ने भी मर्यादाओ का उल्लंघन किया था। इन स्थितियो का कशमकश दो मित्रो के बीच तनाव पैदा करता है जिनमे से एक लेखक है दूसरा प्रकाशक। स्वतन्त्र्यो-त्तर काल अर्थात् १९४८ से १९६२ तक के काल की लेखक-प्रकाशक मानसिकता के अध्ययन मे इन पत्रो से विशेष सहायता मिल सकती है।

आचार्य शिवपूजन सहाय के पत्र—आचार्य शिवपूजन सहाय के दो प्रकार के पत्र है पहला पं० रामगोविन्द त्रिवेदी के नाम और दूसरा पं० देवीदत्त शुक्ल के नाम। इनके अतिरिक्त एक पत्र पं० किशोरीदास वाजपेयी के नाम भी है। आचार्य शिवपूजन सहाय ने बिहार प्रदेश मे हिन्दी के लिए छोटे पैमाने पर वही काम किया है जो उत्तर प्रदेश मे आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने किया है। अन्तर इतना है कि आचार्य द्विवेदी एक ठोस, व्यवस्थित सस्थान से सम्बद्ध थे, परिवार छोटा था और घर के भी खुशहाल व्यक्ति थे। इसके विपरीत आचार्य शिवपूजन सहाय को न तो उतना व्यवस्थित सस्थान ही सुलभ था और न उनकी पारिवारिक स्थिति ही वैसी थी। इसलिए उनका संघर्ष अपेक्षाकृत और गहरा था। उनका कार्य-क्षेत्र भी काशी पटना, कलकत्ता, आरा तथा सस्थान भी 'बालक' पत्रिका, 'हंस', स्वतन्त्र सम्पादन कार्य से लेकर राष्ट्रभाषा सस्थान, पटना तक विस्तृत था। इन पत्रो में ५ बातें स्पष्ट होकर सामने आती हैं। पहली यह कि सन् '३० से लेकर सन् '६० तक हिन्दी-पत्रकारिता मे कार्यरत पत्रकार की कार्य-विधि और संस्थानो की दृष्टि दोनो का द्वन्द्व कैसा था, कितना था और आचार्य शिवपूजन सहाय जैसा सबल इच्छाशक्ति

वाला व्यक्ति उन समस्त स्थितियों के प्रति क्या दृष्टि रखता था, नितान्त मर्मपूर्ण अध्ययन के विषय हैं। दूसरी बात यह कि लेखक को पारिश्रमिक क्या दिया जाता था। मिसाल के लिए सवा रुपया पेज की दर से १० पेज के अनुवाद का पारिश्रमिक साढ़े बारह रुपया कितना दयनीय था, यह अपने में ही पूरी अर्थ-व्यवस्था का रहस्योद्‌घाटन कर देता है। तीसरी बात यह है कि वेतन के नाम पर किसी लेखक या सम्पादक को क्या मिलता था और इसके लिए भी उसे प्राप्त करने मे कितनी कठिनाइयो का सामना करना पडता था। चौथी बात यह कि अंग्रेजी-पत्रकारिता की तुलना मे हिन्दी-पत्रकारिता में मुफ्त काम लेकर हिन्दी की सेवा के नाम पर मठ बनाने वाले लोगो की संख्या कितनी तीव्रता से बढ़ रही थी। पाँचवी बात यह कि लेखक मे पारिश्रमिक लेने के प्रति अनावश्यक सकोच क्यो था? हिन्दी में छापने वाले प्रेस से कोई मात्र सेवा के नाम पर काम नही करवा सकता। ठीक इसी प्रकार पूरी प्रकाशन व्यवस्था मे लगे हुए व्यवसायी अपने पारिश्रमिक का तुरन्त भुगतान चाहते थे जब कि हिन्दी के बडे-से-बडे संस्थान और प्रकाशक लेखक को पारिश्रमिक देना खैरात जैसी बात समझते थे। इन दृष्टियो मे यदि देखा जाय तो आचार्य शिवपूजन सहाय के ये पत्र एक प्रकार से हिन्दी के विकास-क्रम मे हिन्दी-सेवा के नाम पर शोषण करने वालो का सजीव चित्र प्रस्तुत करते है।

आचार्य शिवपूजन सहाय एक कर्मठ मसिजीवी थे। उनके मरणोपरान्त बिहार राष्ट्रभाषा सभा ने उनकी कृतियो को संकलित करके ग्रन्थावली के रूप मे प्रकाशित किया है। उसे देखकर आचार्य शिवपूजन जी के प्रति अगाध श्रद्धा मन मे पैदा होती है। ऐसा लगता है कि इतने बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति को यदि छोटी-छोटी बातो के लिए इतना गहन संघर्ष न करना पडा होता तो निश्चय ही उन्होंने हिन्दी-जगत् को और भी महत्त्वपूर्ण कृतियाँ दी होतीं। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के संग्रहालय मे उनके द्वारा लिखे गये जितने पत्र हैं उन सब का सकलन यहाँ दिया जा रहा है। इनमे कुछ पत्र ऐसे है जिनके आदि के पृष्ठ गायब है और कुछ ऐसे है जिनके अन्तिम पृष्ठ प्राप्त नही हो सके हैं। फिर भी वे अपने विषय-कथ्य मे पूर्ण है। इसलिए उनके अप्राप्य अशो का अभाव नही खटकता। आशा है कि पत्र-रूप मे यह दस्तावेज हिन्दी के लेखको और बुद्धिजीवियो को पसन्द आयेगा।

उदयशकर भट्ट के पत्र—श्री उदयशंकर भट्ट हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार और कवि हैं। उनके पत्रो मे से अधिकाश श्री प्रभात शास्त्री के नाम लिखे गये पत्र हैं और लगभग ६-१० पत्र पं० देवीदत्त शुक्ल के नाम हैं। इन पत्रो की विशेषता यह है कि स्वातन्त्र्योत्तर काल मे प्रकाशन व्यवस्था और पत्रकारिता के जो नये मानदण्ड बन रहे थे उनमें श्री उदयशकर भट्ट जैसा सजग लेखक किस प्रकार संस्कारित हो रहा था। श्री उदयशकर भट्ट ने जो पत्र प० देवीदत्त शुक्ल को लिखे हैं वे स्वतन्त्रता के पूर्व के हैं। वे उस समय के है जब श्री भट्ट जी आकाशवाणी मे प्रोड्यूसर के रूप में कार्यरत नही थे। इसलिए पं० देवीदत्त शुक्ल के पत्रो मे वह आत्म-विश्वास लेखक मे नही मिलता जो बाद मे श्री प्रभात शास्त्री को लिखे गये पत्रो मे मिलता है। एक प्रकार से देखा

जाय तो श्री उदयशंकर भट्ट मूलतः सृजनशील साहित्यकार थे और उनकी सृजनशीलता के मार्मिक सन्दर्भ इन पत्रों में व्यापक रूप से आये हैं। लेकिन उनमें संघर्ष की वह आंच और कठिनाइयों की वह पीड़ा नहीं है जो निराला, भगवतीप्रसाद वाजपेयी और आचार्य शिवपूजन सहाय के पत्रों में है। श्री उदयशंकर भट्ट के पत्रों में सामान्य को विशिष्टता दी गयी है जबकि आचार्य शिवपूजन सहाय जैसे लेखकों के पत्र में विशिष्ट को सामान्य बनाने की कोशिश है। हिन्दी-लेखन और प्रकाशन के ये गहरे आयाम तुलनात्मक ढंग से अध्ययन करने पर अपने-आप स्पष्ट होंगे।

श्री उदयशंकर भट्ट के लेखन में वाक्यों का अधूरा होना और अक्षरों और मात्राओं का विलुप्त होना, लगता है, उनकी लेखन-शैली का एक अंग है जिसे सम्पादक और प्रूफ रीडर को जोड़-गाँठ कर सार्थक बनाना पड़ता है। जिस चित्तवृत्ति की एकाग्रता और एकनिष्ठ भावना के दर्शन हमें शिवपूजन सहाय या भगवतीप्रसाद वाजपेयी के पत्रों में मिलते हैं वह सश्लिष्टता भट्ट जी के पत्रो में नहीं है। भट्ट जी के पत्रों में उनके वैयक्तिक जीवन की भी कोई खास झलक नहीं मिलती। ऐसा लगता है कि या तो अपने उस निजी पक्ष को वह पत्रो में लिखना नही चाहते थे या यह कि निजी पक्ष के क्षेत्र मे कोई संक्रमण था ही नहीं। जो भी हो, इन पत्रो का महत्त्व इन समस्त पत्रो के संग्रह के साथ विशेष रूप से उभर कर आता है क्योकि यह स्वयं भी उसी परम्परा के लेखक हैं जिसके एक छोर पर महावीरप्रसाद द्विवेदी हैं और दूसरे छोर पर आचार्य शिवपूजन सहाय।

यह संग्रह—प्रस्तुत पत्र-संग्रह वह निधि है जिसके आधार पर द्विवेदी-युग के सम्बन्ध मे बहुत-कुछ शोध किया जा सकता है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन मे सग्रहीत ऐसे अनेक साहित्यकारों के पत्र सुरक्षित हैं। सम्मेलन के प्रधान मंत्री श्री प्रभात शास्त्री, साहित्य मंत्री डॉ० प्रेमनारायण शुक्ल और संग्रह मत्री डॉ० सत्यप्रकाश मिश्र ने मुझे इसे सम्पादित करने का कार्य दिया इसके लिए मैं उनका आभारी हूँ। इस कार्य से स्वयं मुझे उस युग के लोगों, उनकी बातों, व्यवहारों, शिष्टाचारो और मूल्यगत आग्रहों का जो दर्शन हुआ वह एक अमूल्य अनुभव है। उपर्युक्त कुछ पंक्तियाँ मेरे मन की वह गूँजें हैं जो इनको सम्पादित करते समय निरन्तर गूँजती रही। यह आवश्यक नहीं कि आपके मन में भी वही प्रतिक्रियाएँ हो क्योकि सत्य यह है कि अतीत को देखने-समझने के अलग-अलग तरीके होते हैं। मुझे अपनी सीमित शिक्षा और संस्कार से जो प्रेरणा इन पत्रों से मिली, उसे आप के सामने रख देना मैंने अपना कर्त्तव्य समझा। यदि इन पत्रों के पठन-पाठन और आस्वादन में इन कुछ पंक्तियों से कुछ मदद मिलेगी तो मैं अपने को कृतार्थ समझूंगा। यदि नहीं भी मिली, तो भी मेरी अपनी आत्माभिव्यक्ति के रूप में यह एक दस्तावेज के रूप में रहेगा। मेरी अपनी समझदारी को विकसित करने में जो सहायता इनसे मिली है उसी की दक्षिणास्वरूप यह भूमिका भी हिन्दी-जगत् के भण्डार में रहेगी। एक बार पुनः हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रति कृतज्ञता के साथ·········

—लक्ष्मीकान्त वर्मा

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
के पत्र
श्री देवोदत्त शुक्ल,
श्री शिवाधार पाण्डेय,
श्री एच० के० घोष
तथा
श्रीमती ऊषा देवी मित्रा के नाम

खण्ड : १

१ | पत्र सं० १२३७
फा० सं० १०

जुही, कानपुर
११-११-१५

नमस्कार,

पोस्ट कार्ड मिला। दोनो लेख भी मिले। आपने बडी दया की। मैं बहुत कृतज्ञ हुआ। इन लेखो को सरस्वती मे निकालने की अवश्य चेष्टा करूँगा। अवकाश मिलने पर कुछ न कुछ लिख भेजा कीजिए। जहाँ तक हो सके भाषा सरल बोल चाल की हो। क्लिष्ट संस्कृत शब्द न आने पावें। मुहावरे का ख्याल रहे। वाक्य छोटे-छोटे हो। सबसे यथायोग्य—

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

२ | पत्र सं० १२३६
फा० स० १०

जुही, कानपुर
१८-३-१७

प्रणाम,

पोस्टकार्ड मिला। 'ज्ञान शक्ति' ने फिर कुछ नही लिखा। शायद लिखें भी नही। उसके सम्पादक एक दिन यहाँ आये थे। उनकी अक्ल कुछ-कुछ ठिकाने आ गई मालूम होती थी।

वह नि सन्देह जुलाब थी। जिन्होने इसकी योजना की थी उन्होने खुद ही कह दिया था। बेचारे बुभुक्षित हैं। कान्यकुब्ज हैं। कहते थे कि सर० मे कुछ लिख दिया जाय। इसी से यह गोलियाँ बना लाये थे। ये अपना काम करती हैं। इसलिए कुछ लिख दूँगा। उनका नाम ही विरेचन बटी है। जब तक और किसी दवा का प्रबन्ध न होगा, या वह मेरा पुराना Mineral Water न मिलने लगेगा तब तक कभी-कभी तीसरे चौथे एक गोली खाऊँगा। आशा है ऐसा करने से विशेष हानि न होगी। भाई साहब मे पूछ देखिएगा।

धृष्टता की आपने खूब कही। श्री हर्ष के जमाने मे नामी विद्वानो को नामी सरदारों की तरह खास जगह बैठने को मिलती रही होगी। इसीलिए उन्होने आसनस्थ लिखा

होगा। अगर कोई विशेषता न होती तो वे ऐसा क्यो लिखते। उनके उस श्लोक मे पहले पीछे का तो कुछ भी जिक्र नहीं। आसन के बाद ही पान मिलता है। श्लोक मे ताम्बूलम् पद का पहले रखा जाना छन्दो नियम पालन के कारण है। आशा है आप सकुटुम्ब अच्छी तरह हैं।

भवदीय
म० प्र० द्विवेदी

३

पत्र सं० १२३८ जुही, कानपुर
फा० सं० १० २०-११-१७

भाई देवीदत्त,

१७ ता० को चिट्ठी मिली। "हमे इस तरह की भेंट न चाहिए"—यह जानकर रज हुआ—

"ददाति प्रतिगृह्णाति गुह्यमाख्याति पृच्छति।
भुङ्क्ते भोजयते चैव षड्विध मित्रलक्षणम्॥

यदि मुझे आप अपना बन्धु बनाना नही चाहते तो क्या मित्र भाव भी रखना नही चाहेंगे।

आप जब जो चाहिए दीजिएगा। मै ले लूंगा। आपको नही चाहिए क्या यह मैं नही जानता ? पर बन्धुत्व और मैत्री भाव क्या चाहने की अपेक्षा रखते हैं।

भवदीय
म० प्र० द्विवेदी

४ | पत्र सं० १२४० / फा० सं० १०

इंडियन प्रेस
फाइन आर्ट प्रिण्टर्स एण्ड पब्लीशर्स
इलाहाबाद
३०-८-१६१६

माई डियर देवीदत्त,

वी इंडियन प्रेस आफर्म यू दी पोस्ट आफ लिटरेरी असिस्टेंट (हिन्दी) आन रुपीज़ फ़िफ्टी ५०) पर मेनसम। प्लीज़ कम टू कानपुर ऐज़ सून ऐज़ पासबुल टू सी मी एण्ड देन्स स्टार्ट फार इलाहाबाद टू ज्वाइन योर पोस्ट। आई शैल गो बैक टू कानपुर आन दी एलेविन्थ सेप्टेम्बर।

योर'स सिन्सीयरली
एम० पी० द्विवेदी

५ | पत्र सं० १२४३ / फा० सं० १०

१४ मई १६२०

भाई शिवाधार जी* को प्रणाम,

मैं आफत में फँस गया। मदरसे के पंडित का शरीर छूट गया। लाश घर पर पड़ी है। उनकी विधवा सिर पीट रही है। अनाथ हो गयी। कोई टुकड़ा तक देने वाला नहीं। यह पंडित १० वर्ष तक मेरे यहाँ रहा। मैं अब लाश को ठिकाने लगाने की फिक्र कर रहा हूँ। उधर कमला किशोर मेरा भान्जा कल आने वाला था। सो नहीं आया। इस कारण भी हृदय व्यथित है। आज फिर आदमी घाट पर

---

*यह पत्र पं० देवीदत्त शुक्ल के नाम प्रेषित न होकर पं० शिवाधार पाण्डेय के नाम प्रेषित है। यहाँ इसलिए दिया जा रहा है क्योंकि इसका संदर्भ इसके पूर्व और बाद के पत्रों में है।

भेज रहा हूँ। कहीं बीमार तो न हो गया। मैं अब हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ। मेरी गैर हाजिरी माफ की जाय। अगर यह पडित कुछ अच्छा रहता तो मैं जरूर बारात चलता। मैंने पडित मातादीन से कह दिया था कि जो आप आज्ञा देंगे तो मैं जरूर चलूँगा। इस चिट्ठी को आप बारात लेते जायें। वहाँ पंडित देवीदत्त को दिखा दीजिएगा जिससे वे समझ जाये कि क्यो मैं नही आया।

विनीत

म० प्र० द्विवेदी

६ | पत्र सं० १२४४ | फा० स० १० — जुही, कानपुर, १३-३-२०

नमस्कार,

× × × वसीयत नामे मे मैंने शिवगोपाल को भी ट्रस्टी बनाया था। अब एक जमीना लिख कर उन्हे हटा दिया। उनकी जगह पर पंडित कालिका प्रसाद को कर दिया है। याद रखिएगा। आप और पाण्डेय जी मेरी मदद किया करे। नोट्स, पुस्तक-परिचय और एक आधे लेख भी लिख दिया करें। प्रूफ मुझे कम भेजें। × × ×

भवदीय

म० प्र० द्विवेदी

७ | पत्र सं० १२४५ | फा० सं० १० — दौलतपुर

नमस्कार,

मुद्राराक्षस पर आपका लेख पढ़ा। बहुत पसन्द आया। बडा अच्छा लेख है। धन्यवाद।

आपके बड़े भाई की कृपा से माधवी बच गई मैं बहुत कृतज्ञ हूँ । बताइये किस तरह कृतज्ञता प्रकट करूँ । पत्र पुष्पवत् कुछ भेजने पर पिछली दफे आप नाराज हुए थे । आप ही अब कोई तदबीर बताइए । जब वह बहुत बीमार थी तब किसी लड़की की शादी में मैंने १००) देने का संकल्प किया था । आपके घर मे भी तो लड़कियाँ हैं । क्या आदेश है ?

कल से कमला की दुलहिन को बुखार है । कल १०४ था । आज १०० है । पर शमन हुआ ही नही । अभी तक न दवा दी न किसी को बुलाया । न उतरा तो कल आपके घर जाऊँगा ।

भवदीय
म० प्र० द्विवेदी

८ | पत्र सं० १२४६ | फा० स० १०

दौलतपुर
१७।६।२०

नमस्कार,

रात को मेरे घर चोरी हो गई । नकद जेवर कपडे लत्ते कोई डेढ दो हजार का माल उठ गया । एक धोती के सिवा मेरे पास पहनने को कोई कपड़ा नही रह गया । घर के और लोगो का भी यही हाल है । पुलिस अभी तक नही आई । आकर भी क्या करेगी । माल मिलने की आशा नही । पडोस के खंडहर मे एक शख्स मिट्टी लगवाए थे । उनकी सीढ़ी पड़ी रह गई उस पर चढकर चोर घर मे उतर पड़े हैं ।

म० प्र० द्विवेदी

९ | पत्र सं० १२४७ | फा० सं० १०

दौलतपुर, रायबरेली
२६-६-२०

प्रणाम,

पोस्टकार्ड मिल गया था। न माल का पता, न चोरी का।

बख्शी जी से कहिएगा जून की सर० के उत्तरार्ध का प्रूफ अभी तक नहीं मिला।

डोकरई नाम का एक गांव यहाँ से पाँच मील है। गिरैया मदनोरा के आगे। यहाँ पंडित मुरलीधर शुक्ल (मकरद के) रहते हैं। एन्जीनियरी महकमे मे नौकर थे। ३५) पेन्शन पाते है। उम्र कोई ५५ साल। उनके छोटे भाई अवध बिहारी लाल डाकखाने में १००) पाते हैं। फैजाबाद मे हैं। आजकल छुट्टी पर है। छोटे भाई का लडका भी डाकखाने मे मुलाजिम है। उनके एक दो बगीचा और जमीन भी है। दोनो भाई एक ही मे रहते हैं। मुरलीधर के एक लडका बडी स्त्री से यज्ञदत्त है उम्र १७½ साल। उसकी माँ मर गई सौतेली माँ से एक लडका (उम्र ८ वर्ष) और दो छोटी-छोटी लडकियाँ है। सौतेली माँ का स्वभाव बुरा नहीं। यज्ञदत्त ने इसी साल एस० एल० सी० Entrance फतेहपुर से पहले डिवीजन मे पास किया है। अब वह कालेज मे पढेगा। रंग गंदुमी है। लोग बहुत तारीफ करते है। शिवगोपाल कल देख आये है। घर भर को अच्छा बताते है। उससे छोटी बिट्टी की शादी करूँ? राजी है। जबाब जल्द।

म० प्र० द्विवेदी

पुनश्च · डोकरई वाले सुमेर पुर के शुक्लो के × × × है।
पर ब्याह उनका लगाया नहीं।

१० | पत्र सं० १२४८ | फा० सं० १०

दौलतपुर, रायबरेली
१-७-२०

नमस्कार,

पोस्टकार्ड मिला। चोरी का जिक्र छोड़िए। पता क्या चले। चोर उन्नाव जिले के

मालूम होते हैं, जिन लोगों के खिलाफ हमने कई फैसले किये हैं। उनके उभाड़ने से शायद उन्होंने चोरी की है। उन्नाव जिले में यहाँ की पुलिस नहीं आ सकी। बारा-वालों को दो दफे बुलाया गया। वे आये हां नही। लड़के लडकियों को कष्ट है। लाला एक धोती के दो टुकड़े किये पहने हैं। अब प्रेस से रुपया मँगाया है। कानपुर से भी आ गया है। ४ जुलाई को रायबरेली जाऊँगा, एक सुनार की रिपोर्ट की थी। सम्मन ले जाने वाले चौकीदार को मारा था। उसके मुकदमे मे शहादत है। अफसरो से मिलना भी है।

कल आपका कार्ड मिला। सबेरे ही ४ बजे डोकरई गया। अभी एक बजे लौटा हूँ। डोकरई अजब उजाड सा मौजा है। छोटा सा है। सौ घर लोग, कुछ कन्नोजिये भी है। मुरली शुकुल हमारे मौजे के है। छोटी खेरा (फंजपुर) पडित रघुनन्दन शर्मा आप शायद जानते हो। अक्षर विज्ञान आदि कई किताबे लिखी है। वे उस लड़के के साथ अपनी लड़की का ब्याह करने गये थे। वे भी ज्योतिष नही मानते। पर औरतो ने उनकी गैरहाजिरी मे विचरवाया। न बना। उससे न किया। लड़के का फूफा उनका मित्र है। उसी ने सिफारिश की थी। लड़का मंगल है। मंगल १२वें है। बिट्टी की कुण्डली नही। इससे मैं तो इसका विचार करता नही।

भाई लडका अपूर्व मेधावी है। अच्छी अग्रेजी बोलता है। लिखता भी अच्छा है। लिपि बडी सुन्दर है। संस्कृत से बड़ा प्रेम है। उच्चारण दुरुस्त है। सस्कृत में एम० ए० पास करने को कहता है। अश्रुत—पूर्व श्लोको का अर्थ लगा सकता है। १७ वर्ष ८ महीने का है। सुन्दर है। एस० एल० सी० मे शायद कुछ विषयो मे डिस्टिंक्शन पाया है। पाँच रुपया मिठाई खाने के लिए दे आया हूँ। वर इच्छा की आज्ञा आपकी न थी। वे लेते भी नही। माह फागुन लगनो मे लेने कहा है। अब क्या ठीक पक्का समझूं। आप अपने गाँव के वाजपेयी जी और पडित मातादीन से पता लगवाकर मुझे लिखिए। मैं उनसे कुछ न कहूँगा।

लड़के का नाम यज्ञदत्त शुक्ल है। म्योर कालेज को भरती होने के लिए लिखा है। इधर मैंने शुक्ल जी को लिखा है। उसको दूसरी अरजी भी शुक्ल जी को भेजी है। उनके बोर्डिंग हाउस मे रहना चाहता है। उसके लिए भी अर्जी भेजी है। आप शुक्ल जी से शीघ्र मिलिए। बोर्डिंग हाउस मे एक कमरा उसके लिए खाली रखाइये। उनके साथ या अलग से कालेज वालों से भी मिलिए। मिलकर भरती का प्रबन्ध करवाइये। हुकुम मिल जाने पर मुझे तुरन्त लिखिए। तो लड़का आवे। अट्ठारह से कालेज खुलेगा। अपने पास रखिए बोर्डिंग हाऊस

× × × घर मे फाटक लगा है। सामने शिवजी का चबूतरा उनके पिता का बनवाया हुआ है। एक छोटी सी बगिया भी है। पक्का कुआँ है। घर मिट्टी का है। है बड़ा। पर अच्छा नही। औरतें पाखाने से लौटी थी। उन्हे भी देख लिया।

पण्डित मुरलीधर एरीगेशन डिपार्टमेंट मे तीन वर्ष से ३४) पेन्शन पाते हैं। भाई फैजाबाद के डाकखाने में क्लर्क हैं ८०) रुपये पर। अभी छुट्टी पर हैं। भाई का लड़का त्रिभुवन नाथ फतेहपुर डाकखाने में क्लर्क है। पर मुअत्तल है। उसकी ड्यूटी में किसी ने जाल करके सेविंग बैंक से रुपया निकाल लिया, पर वो निरपराध जान पडता है। वो भी मिला आदमी सनातन धर्मी और अच्छे मालूम होते हैं। पहले शिवगोपाल गये थे। उन्होने अच्छा बताया फिर बालादीन गया उसने मालियों वगैरा से खुफिया जाँच की उसने भी अच्छा बताया। × × × लडकी यहाँ व्याही थी। × × × भाइयों ने भी अच्छा।

पी० यस० प्रेस मे जो यू० पी० गोवर्नमेंट का बजट आया है। उसके जिस अंक मे एस० एल० मी० का नतीजा आया है उसका अंश चाहिये। लौटार दूँगा शीघ्र।*

११

पत्र सं० १२४६ — दौलतपुर, रायबरेली

फा० म० १० — ३१-१२-२०

नमस्कार,

२७ का कार्ड मिला। टाइम टेबुल मिल गया। शुक्ल जी से भेंट नही हुई तो न सही। शादी तो तै ही हो चुकी।

प्रेस का हाल सुनकर सख्त रंज होता है। ईश्वर करे प्रेस बना रहे, और प्रयाग मे ही रहे।

आज १० बजे काशी आये। रोते विलाप करते रहे। आपको कई चिट्ठियाँ दिखाईं। कई एक पढी। उन्होने आपको भेजने के लिए जो लिखी थीं वह नही पढ़ी। कह दिया मत भेजो। तीन बजे आपके गाँव गया। घण्टे भर बकता झकता रहा। सब लोग हाजिर थे। २१ रु० छै आना काशी के पास रख आया। इस प्रकार :

(१) पण्डित शिवाधार के हिस्से का लगान कटरी का	३-३-०
(२) पण्डित विश्वेश्वर वाजपेयी का लगान कटरी का	१-६-६
(३) ठाकुर बलवन्तसिंह के हिस्से का लगान कटरी का	१-६-६

*तारांकित स्थानों पर लिखावट अस्पष्ट है। संदर्भ पूरा है पत्र भी अपूर्ण है। फिर भी एक दस्तावेज के रूप में इसका महत्त्व है इसलिए दिया जा रहा है।

(४)	काशीप्रसाद ने कटरी में लाही पाई	०-६-०
	,, के हिस्से का बाकी लगान	६-०-०
		१२-१२-०
(५)	नालिश मे काशीप्रसाद का खर्च	९-०-०

(१), (२), (३), का रुपया उन लोगो ने खुद दिया। काशीप्रसाद वहाँ भी रोने लगे। रुपये न लेते थे। मैं उनके सामने रुपया रख आया और कह आया कि जाकर नगर मे दावा खारिज करा आवो। बड़े भैया मे भी कह आया कि समझा दो खारिज करा आवें। बलवन्तसिंह को शरमिन्दा भी किया। १४ जनवरी को पेशी है। काशी को ४ लाइन पो० कार्ड पर लिख भेजो कि मेरा फैसला माने। दावा खारिज करा दें। उनके रुपये सब मिल गये। जिद और बेंमनई न करें। कड़ी बात न लिखें।

भवदीय
म० प्र० द्विवेदी

१२

पत्र सं० १२५१
फा० सं० १०

जुही, कानपुर
१२-११-२०

नमस्कार,

९ नवम्बर का पोस्ट कार्ड मिला। बिदाई की पहुँच लिख चुका हूँ।
मैंने जो बड़े बाबू से खुद ही कहा था कि देवीदत्त को सरस्वती का काम दीजिए, पर उन्होंने आपके लिए बालसखा का स्वतंत्र काम देना ही मुनासिब समझा। मेरी समझ में तो सरस्वती का काम बालसखा से अधिक महत्त्व का है। उन्नति करने के लिए इस काम मे बहुत जरूरत है। योग्यता की बात जाने दीजिए। काम करने से तो अयोग्य भी योग्य हो जाते हैं। आप तो सर्वथा योग्य हैं। मुझे यह जानकर बहुत सन्तोष हुआ कि मेरे बाद सरस्वती से आपका सम्बन्ध हो जायगा। पूरी आशा है, आप और बख्शी जी इस काम को बहुत अच्छी तरह कर लेंगे।

भवदीय
म० प्र० द्विवेदी

१३ | पत्र सं० १२५० | फा० सं० १० — जुही, कानपुर १७-११-२०

नमस्कार,

१३ की चिट्ठी मिली। पेंसिल का लेख भी मिला। कापी किये हुए लेख को मैंने पटल बाबू को भेज दिया। देखना जनवरी के आरंभ मे छपे।

हा प्रेस की चिट्ठी मे अभिनन्दन लिखा और ५०) महीना पेंशन की घोषणा भी।

आज मुझे मालूम हुआ है कि आप बालसखा का भी काम करेंगे और बख्शी जी की मदद भी। यह और भी अच्छा हुआ। वह काम जिम्मेदारी का बना रहेगा। इधर सरस्वती के काम का भी अनुभव होगा पर काम बढेगा। आशा है प्रेस अधिक काम का ख्याल करेगा और जनवरी से ६०) के बदले आपको ६५) देगा।

दिसम्बर की कापी मैं भेज चुका। उसमे एक लेख मकड़ी पर है। उसके नीचे बख्शी जी से लिखा दीजिएगा "ब्रूस साहब की पुस्तक What a spider can do के आधार पर।"

भवदीय

म० प्र० द्विवेदी

१४ | पत्र सं० १२५२ | फा० सं० १० — दौलतपुर ११-१-२१

नमस्कार,

आपकी चिट्ठी ने जादू का सा असर किया। आज सबेरे आपके गांव गया तो काशीप्रसाद "गिलमिला" मिले। बड़ी नम्रता से पेश आये। दूर तक मुझे पहुँचाया। फैसला मंजूर रुपये भी मंजूर। रुपये भैया को सब दे दिया। कुछ कसर रखी है। वह यह कि १४ तारीख को पेशी के दिन कचहरी जाकर अपने दावे को सही साबित करना। बाकी और कुछ नही। सो साबित करने दीजिए। न हरजाना लेंगे न खर्च न कुछ। साबित करने से क्या होगा।

भवदीय

म० प्र० द्विवेदी

१५ | पत्र सं० १२५३ / फा० सं० १०

दौलतपुर, रायबरेली
१-१-२१

नमस्कार,

२८ का कार्ड आज शाम को मिला। सबेरे चिट्ठी लिख चुका।

संस्कृत रीडरो की समालोचना मिल गई। न ढूंढ़िएगा। उन्हीं रीडरो के भीतर Leader का Cutting था। उसी में थी। पास ही थी। याद न आती थी। तबीयत का अजीब हाल है। होश हवास ठीक नही। सासारिक मामलो मे गांठें और भी उलझती जाती हैं। अब जान पडता है वेदान्त सच्चा है। यथार्थ में कोई किसी का नही। सब मतलब के यार हैं। कमजोरी बढ रही है। कब्ज भी आजकल जोर पकड रहा है। पहले आपका अभ्रक खाया था। इससे विशेष लाभ न हुआ। तब अजमेर से दवा मगाई। वही खा रहा हू। बात यह है कि जराजीर्णता की क्या दवा ?

किसी दिन छुट्टी मिले तो मेरे समधी साहब के दर्शन कराइए।

लडके वाले कहने है माह फागुन ही मे शादी करो। मेरी प्रार्थना है कि बैशाख जेठ मे हो।

भवदीय
म० प्र० द्विवेदी

१६ | पत्र सं० १२५४ / फा० सं० १०

दौलतपुर, रायबरेली
४-६-२१

नमस्कार,

छोटी का ब्याह हो गया। कल शाम को बारात बिदा हो गई। अपनी इच्छा के विरुद्ध आपके यहा के ५) ब्योहार में लेने पडे।

यज्ञदत्त के पिता और पितृव्य आदि ने पहले एक दिन-रात मुझे रुलाया। फिर मेरे क्रोध को इतना उद्दीप्त किया कि मैं १) का कटोरा देने की तैयारी करने लगा। बिट्टी के कोंछ मे ४ पैसे की गुड़ की खोंटिया पड़ी, नारियल भी नहीं। कँधावर में २ गज नैनसुख का १२ गिरह अर्ज का एक टुकड़ा। चढ़ाव का लहंगा महज रही।

चादर का अर्ज दुपट्टे से भी छोटा। पहले से लिख देने पर भी परजों के लिए कपडे के नाम एक चिट भी नही। टीका बिट्टी का पुराना-बेजडा हुआ-बरसो का जोता हुआ, तोले भर मैल लगा हुआ। बहुत दु ख हुआ। मैंने आजिज आकर बहुत लानत-मलामत की, बहुत धिक्कारा। उन्हे मेरे कमरे मे आना पडा। पर उनकी मक्खी चूसना और अनुदारता न सुधरी। यज्ञदत्त को भी शायद रज हुआ। इस कारण उनका सैकडो का नुकसान हो गया। माधवी वगैरह ने रो धोकर अपना हाथ खीच लिया। कुछ जेवर और कपडे जो फालतू थे वे भी उन्होने नही दिये। पीछे से दे देंगी। बहुत दबाव डालने और शरमिन्दा करने पर परजो के लिए उन्होने १२३) नकद मण्डप के नीचे दिये। मैंने भी १०१) कटोरे मे दे दिये—उसमें से ५०) उन्हे पहले ही जनवासे भेज चुका था। यज्ञदत्त से हम सब लोग खुश रहे। उन्हे कोई १४५५—१४—० का चिट्ठा दिया। मगर सही टोटल १५००) से कम न होगा।

निवेदक
म० प्र० द्विवेदी

१७ | पत्र स० १२५५ / फा० स० १० | जुही, कानपुर
३१-८-२१

नमस्कार,

कल यहाँ आने पर आपके २० और २५ अगस्त के पोस्ट कार्ड मिले। इधर निरन्तर वर्षा होती रही। इस कारण २३ अगस्त को घर से न चल सका। २६ को चले। फिर भी रात मे बडी तकलीफ हुई। २७ को बकसर गया था। बड़े भैय्या अकबरपुर गये थे। खेद है, उनसे भेंट न हो सकी। वे व्यर्थ ही ज्योतिषियो के जाल मे फँसे हुए हैं। प० मातादीन से मिलकर लौट आया।

नोटो के विषय मे बड़े बाबू से अब कुछ न कहिएगा। आशा है सितबर की सरस्वती समय पर निकालने के कारण वे आप पर प्रसन्न होगे। और कोई नोट मैं नही लिख सका। कृषि विज्ञान की समालोचना भेजी थी। मिल गई होगी। छाप दीजिएगा।

पुस्तक आपको भी भेजी गई है। पेंशन और लेख पुरस्कार यहीं कानपुर मे भेजिएगा।

भवदीय
म० प्र० द्विवेदी

१८

पत्र स० १२५७ — जुही कलाँ, कानपुर

फा० स० १० — २०-३-२४

नमस्कार,

जो पोस्ट कार्ड आपने दौलतपुर के पते पर भेजा था वह भी यहाँ परसो मिल गया। दूसरा भी।

फरवरी की सरस्वती कल मिली। बहुत विलम्ब से निकली। मार्च की कापी के साथ मैने एक नोट भेजा था। 'अफीम की बेरोक टोक बिक्री।' उसे आपने फरवरी मे निकाल दिया, सो बहुत अच्छा किया। फरवरी की कापी मे दो नोट और थे—(१) विज्ञापन विमर्श और (२) देशी भाषाओ की शिक्षा। वे फरवरी मे नही छपे। क्या मिले नही? या खो गये? या छापना ठीक नही समझा गया। अगर सबसे निचली बात हो तो सकोच की जरा सा भी जरूरत नही। न फाडा हो तो फाड फेकिए। किसी आक्षेप योग्य नोट या लेख सरस्वती मे न छपना चाहिए।

कमला किशोर के रोग की इतनी चिकित्सा होने पर भी रुधिर विकार नहीं गया। डाक्टरो की परीक्षा से यह बात मालूम हुई। विकार के चिह्न भी शरीर पर प्रकट हो गये है। अब आज से उन्हे दवा की पिचकारियाँ (Injection) शरीर पर लगती होंगी। × × × लेकिन लाचारी है। इस दुःशक्ति के पीछे बडी हैरानी उठानी पड़ी।

उधर उसकी छोटी बहन असाध्य रोग्य से रुग्ण है। शरीर का फूलना, मासिक धर्म न होना, मूत्र मे शरीरस्थ धातुओ का गल-गल कर गिरना, बड़ा भयंकर है। मूत्र परीक्षा से ये बातें डाक्टरो को ज्ञात हुईं। यह भी एक प्रकार का प्रमेह है—Nethritis कहाता है। दवा करा रहा हूँ। खाना-पीना बन्द है। सिर्फ दूध पर रहती है।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

१९ | पत्र सं० १२५६ | दौलतपुर
| फा० सं० १० | १९-७-२४

नमस्कार,

१६ का कार्ड मिला। सहानुभूतिसूचक शब्द पढकर दिल भर आया। मैंने ही यज्ञदत्त से कहा था कि आपको मेरा हाल लिख दो। अब अच्छा हो रहा हूँ। चलने फिरने की शक्ति नहीं। बंशीधर मेरे पास दो चार दिन और रहना चाहते थे। वे मुझसे खुश थे। मैं उनसे। पर काशीप्रसाद उन्हें जबरदस्ती उनकी इच्छा के खिलाफ, हाथी पर बिठाकर पतौ ले गये। कहा ठाकुर साहब ने बुलाया है।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

२० | पत्र सं० १२६० | दौलतपुर
| फा० सं० १० | १३-८-२४

नमस्कार,

पोस्ट कार्ड मिल गया। कमला किशोर के बारे मे मालिक प्रेस का जवाब मालूम हुआ। यह मेरी कमजोरी है जो इंडियन प्रेस से मैं याचना ही नही करता। उचित अनुचित का विचार भी छोड देता हूँ। बात यह है कि :

"प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहु साधनता।
अवलम्बनाय दिनभर्तुरभून्नपतिष्यत. कर सहस्रमपि।"

उधर छ रोज से मुझे बराबर बुखार १०३ दर्जे का रहा। एक मिनट के लिए भी नही उतरा। पच सिक्त काथ पीने से परसो से उतरा है। प० मातादीन जी आते रहे हैं। कमजोरी का कुछ हाल न पूछिए। मुश्किल से बात मुह से निकलती है।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

२१ | पत्र सं० १२५८ | दौलतपुर, रायबरेली
फा० सं० १० | ५-११-२४

नमस्कार,

३ तारीख का पोस्ट कार्ड मिला। बहुत अच्छा। उन दो सतरों को निकाल दीजिए। उनकी जगह नीचे का मजमून रख दीजिए—

"इस कविता की दो पंक्तियो का आशय है कि न मालूम कब से यह भारत सुनसान मसान हो रहा है। इस कारण हे व्योमकेश जी! झटपट आकर उसे विकराल विपत्ति विघ्न से बचा लीजिए।"

प्रसंग ठीक कर दीजिए। आवश्यकतानुसार शब्दो मे फेरफार कर दीजिए या जो मजमून ऊपर मैंने लिखा है उसे और किसी तरह लिख दीजिए।

उसी नोट मे एक जगह "अफ्रीका का सहारा" है। उसे "अफ्रीका के रेगिस्तान" कर दीजिए।

बख्शी जी के इस्तीफे का हाल मुझे भी मालूम हो गया है। पटल बाबू ने लिखा था। मैंने मुनासिब राय दे दिया है। काम जरूर ज्यादा है। पाण्डेय जी से मदद लेकर किसी तरह निपटाइए। मेहनत जरूर पड़ेगी। मगर योग्यता की परख ऐसे ही समय मे होती है। मेरे पास इस समय कोई लेख या नोट नही। लिख सकूगा तो भेजूगा।

और शिकायतो के सिवा आजकल मेरा उनीद रोग फिर उभड़ा है। वह तंग कर रहा है।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

२२ | पत्र स० १२५९ | दौलतपुर, रायबरेली
फा० स० १० | ६-१२-२४

नमस्कार,

४ दिसंबर का पोस्ट कार्ड मिला। आपको यह सब लिखने की मुतलक़ जरूरत न

थी। बख्शी जी ने जो कैफियत लिख भेजी उसी से मुझे पूर्ण सन्तोष हो गया। इसकी सूचना भी मैं उन्हे दे चुका हूँ। आज ही आपके कार्ड से मालूम हुआ कि बख्शी जी के पिता का देहान्त हो गया। सुनकर दुख हुआ। मेरी हार्दिक सहानुभूति उन पर प्रकट कर दीजिएगा। शेष कुशल।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

२३

पत्र सं० १२६१
फा० सं० १०

दौलतपुर, रायबरेली
३०-११-२५

नमस्कार,

२८ का पोस्ट कार्ड मिला। बडे बाबू की माता का देहान्त हो गया, यह सुनकर मुझे रंज हुआ। वे बड़े मातृ भक्त है। क्यो न हो। इस जीर्ण दशा मे भी तो उन्ही ने सब काम किया। यह उनकी मातृ भक्ति का प्रमाण है।

मैं न तो अब विशेष सोच सकता हूँ न लिख ही। जनवरी की सरस्वती के लिए एक लेख कमला किशोर मे लिखा रहा हूँ। तैयार हो गया तो भेज दूँगा। आशा है आप सरस्वती को अच्छी तरह चला लेगे।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

२४

पत्र सं० १२६२
फा० सं० १०

दौलतपुर, रायबरेली
१३-१२-२५

नमस्कार,

११ तारीख का पोस्ट कार्ड मिला। कोई एक हफ्ते से तबीयत बहुत खराब है।

हाजमा बिलकुल ही नही रहा। दो दिनो से सिर्फ थोडा-थोड़ा दूध पीकर रहता हूँ। सरस्वती के लिए इधर कुछ मानसिक काम किया। उससे और हानि पहुंची। अब और कुछ नही लिख सकता।

बकसर आदमी भेजा था। आपके दोनो भाई साहब वहाँ गये हैं। प० शिवाधार से ता बहुत ही कम सहायता मिल सकती है। क्योकि दो एक जगह छोड़कर और कही वे जा ही नही सकते। दो एक दिन और देखकर कानपुर चले जाने का विचार है। वही इलाज कराऊंगा।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

२५ पत्र स० १२६३ — फा० म० १०

जुही, कानपुर
१३-१-२६

पूज्यवर, प्रणाम,

आपका एक कार्ड आज की डाक से मिला। एक पहले भी मिल चुका था। १७ दिसम्बर से मामा जी की तबियत बहुत खराब है। यहाँ के सभी डाक्टर देख चुके। और देखने आते हैं। पर दवा दो डाक्टरो (सेन और घोष) की होती है। आज चार दिन से कुछ बेहतरी की सूरत नजर आती है। कमजोरी इतनी है कि डाक्टरो से बात करने मे कष्ट होता है। इस समय घर के सभी लोग यही है। यज्ञदत्त जी आठ दिन रहकर कल गये। मामा जी को आपके कार्ड पढकर सुना दिये। कहा, मेरा हाल उन्हे लिख दो।*

सुसेवक
कमलाकिशोर त्रिपाठी

*टिप्पणी : प्रस्तुत पत्र श्री द्विवेदी जी के भाञ्जे श्री कमलाकिशोर ने श्री देवीदत्त शुक्ल के पत्रोत्तर रूप में लिखा है क्योंकि द्विवेदी जी अत्यधिक अस्वस्थ थे और अपनी चिकित्सा के सम्बन्ध में जुही कानपुर आ गये थे।

२६ | पत्र सं० १२६४ | जुही कलाँ, कानपुर
फा० स० १० | २३-१-२६

नमस्कार,

मैं अभी तक महाप्रस्थान की तैयारी मे था। जान पडता है अभी कुछ दिन ठहरना पड़ेगा। होश हवास कुछ कुछ दुरुस्त होने लगे हैं। दवा जारी है। डाक्टर दोनो वक्त आते हैं।

आपकी चिट्ठी मिली। शरीर की इस अवस्था मे मैं अब गाव गिराव के लिए और कुछ कोशिश नही कर सकता। अगर दौलतपुर का नम्बर ३ है और बोर्ड न्याय करना चाहता है, तो वह दौलतपुर को बेच दे, नही तो मै अब और कुछ न लिखूगा। आपने इस विषय मे जो कुछ प्रयत्न किया उसके लिए धन्यवाद।

सरस्वती सम्बन्धी कोई काम अब मुझे न भेजा जाय।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

पत्र सं० १२६५ | दौलतपुर, रायबरेली
फा० सं० १० | १३-४-२६

नमस्कार,

मैं कल यहां आ गया। कमजोर अभी बहुत हू। खेत दो खेत भी मुश्किल से चल सकता हूं। आपके बडे भाई साहब से राह मे मुलाकात हुई। गाड़ी पर नहाने जा रहे थे। इससे आपके मकान पर नही गया।

साथ की अंग्रेजी चिट्ठी पढकर और पटल बाबू को दिखाकर लौटा दीजिए। पं० खड्गजीत मिश्र (मैनपुरी के) नामी आदमी हैं। गवर्नमेंट में उनका बड़ा मान है। advocate हैं। Counsil के Dy. President है। उनके भाई प० चम्पाराम मिश्र कानपुर मे Dy Director of Industries हैं। सरस्वती मे उनके कितने ही लेख मेरे समय मे निकले हैं। पं० खड्गजीत भी सरस्वती मे लिखते रहते हैं। ऐसे लोगो के काम तो प्रेस को खुशी से करना चाहिए। फिर एक पुस्तक Sir

William Moriss को अर्पण होने वाली है। क्या कारण है कि जो बचन देने पर भी काम नहीं शुरू हुआ। पटल बाबू को कृपा करके इनका काम करना चाहिए। प्रेस की पालिसी के लिहाज से भी ऐसा करना ही उचित है। यह चिट्ठी भी पटल बाबू को सुना दीजिएगा।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

२८ | पत्र सं० १२६७ | फा० सं० १०

दौलतपुर, रायबरेली
२२-१०-२६

नमस्कार,

१० तारीख का पोस्ट कार्ड मिला।

भवानी प्रसाद ने सप्रे जी के विषय मे मेरी राय पूछी थी। मैंने लिख दिया था। सरस्वती के उस नोट से मैं सहमत हूँ। आप लिख दीजिए कि वह नोट मुझे दिखा कर मेरे अनुमोदन पर छपा। इसी से वे समझ जायेंगे। नाम बताने की जरूरत न रहेगी। शेष कुशल।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

२६ | पत्र सं० १२६६ | फा० सं० १०

दौलतपुर, रायबरेली
२२-११-२६

नमस्कार,

१६ तारीख का पोस्ट कार्ड मिल गया। अन्डमन वाले लेख के साथ आप चित्र अवश्य

दीजिए। कतरन का हवाला निकाल दीजिए। मैं यह छिपाना नहीं चाहता था कि सामग्री कहाँ से ली, इसलिए उसका उल्लेख कर दिया।

गुजराती की पुस्तकें भेज दीजिए। धीरे-धीरे इन पर नोट लिख दूँगा।

सरस्वती निकालने और छपने मे बहुत देरी हो जाती है। हो सके, इस त्रुटि को दूर कीजिए।

मेरे नोट अगर कम्पोज हो जायं, नवबर की पेंशन के साथ ही भेज दीजिएगा। कुछ पुस्तक परिचय भी अवश्य भेजिए।

भवदीय
म० प्र० द्विवेदी

३० | पत्र सं० १२६६ | फा० स० १० — दौलतपुर, रायबरेली ६-१२-२६

नमो नमः,

विशेषाङ्क के लिए एक लेख, तीन नोट भेज दिया। मिले होंगे।

नये साल का कैलेंडर कोई प्रेस मे आये तो मुझे भेज दीजिए। बालिश्त-सवा-बालिश्त से अधिक लम्बा न हो। दीवार पर टाँगने के लिए चाहिए। पिछली दफा सरस्वती मे जैसा निकला था, वैसा ही फिर निकले तो भेज दीजिएगा। उसी से काम चल जाएगा। सरस्वती के साथ बाँटा जाय तो, चाहे पहले न भेजिएगा।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

३१ पत्र सं० १२७०
फा० सं० १०

दौलतपुर, रायबरेली
६-१२-२६

नमस्कार,

उधर कुछ समय से कुछ अखबार सरस्वती मे मेरे नोट नकल कर रहे हैं। पर नाम सर० का नही देते। गोरखपुर के 'स्वदेश' का अङ्क ५-१२-२६ का इस समय मेरे सामने है। उसमें सितंबर की सर० मे प्रकाशित डिस्ट्रिक्ट बोर्डों पर मेरा नोट नकल कर दिया गया है। उसमें है "(मैं)" स० भी नही। पहले भी यह पत्र कई नोट नकल कर चुका है।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

विशेषाङ्क के लिए लेख मिले ?

३२ पत्र सं० १२७१
फा० स० १०

दौलतपुर, रायबरेली
४-३-२७

नमस्कार,

१ मार्च का पोस्ट कार्ड मिला। विशेषाङ्क की कापिया भी मिल गईं। देखकर चित्त प्रसन्न हुआ। काम तो जरूर ही आपको बहुत करना पडता है, पर सरस्वती अब बहुत अच्छी निकलने लगी है। विशेषाङ्क तो अनेक अच्छे अच्छे लेखो से अलङ्कृत है। आपको बधाई।

अगर हर महीने १ ता० को सरस्वती निकल जाया करे तो क्या ही अच्छा हो। उसकी यह त्रुटि मुझे सदा खलती है।

मार्च की संख्या यदि १० को निकल जाय तो निकल जाने पर उसमें छपे हुए मेरे लेखो का पुरस्कार तभी भिजवा दीजिएगा। नहीं तो १ महीना पिछड जाया करेगा। १ अप्रैल को अप्रैल की सरस्वती और मार्च की पेंशन, साथ ही भिजवाइयेगा। आगे इसी तरह हर महीने।

परसों पं० मातादीन के दर्शन हुए थे। आपके घर में कुशल है। नवरात्रों में घर जरूर आइएगा।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

३३ पत्र सं० १२७२ / फा० सं० १०

दौलतपुर, रायबरेली
२७-३-२७

नमस्कार,

२४ मार्च का पोस्ट कार्ड मिल गया। यह जानकर खुशी हुई कि आप नवरात्र में घर आवेंगे। कम से कम एक हफ्ते की छुट्टी लीजिएगा।
प्रेस को एतराज न हो तो यह कार्ड दिखाकर मेरी मार्च की पेंशन और लिखाई साथ ले आइएगा। इस तरह जल्दी मिल जाएगी। आने के पहले जरा पं० कालिका प्रसाद से भी मिल लीजिएगा।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

३४ पत्र सं० १२७३ / फा० सं० १०

दौलतपुर
५-६-२७

नमस्कार,

कमला किशोर की माई (माधवी) का कल देहान्त हो गया। बड़े भैय्या ने मेरे ही

मकान पर दस बारह रोज रहकर दवा की। पर मृत्यु की दवा कहाँ? मैं उनका अत्यन्त ऋणी हू।

दस बारह रोज बाद सबको लेकर कानपुर चले जाने और वही कुछ दिन रहने का विचार है। यहा जी घबराता है। जी पाया तो शायद इलाहाबाद भी आऊं।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

३५ पत्र सं० १०७४ / फा० स० १० — दौलतपुर, रायबरेली, १३-१-२८

नमस्कार,

आपका पोस्ट कार्ड मिल गया। खुशी हुई। पञ्चाङ्ग की जल्दी नही। जब मिले तब भेजिएगा। आज पेशन और लेख पुरस्कार के रुपयो का बीमा आया। उसके भीतर ४) के इकन्नी टिकट मिले। प्रेस ही से आये हुए २) के टिकट और भी मेरे पास कई महीने से रक्खे थे। मुझे इतने टिकट नही दरकार होते। डाकखाना यहा का छोटा है। वह भी खर्च नही कर सकता। इसलिए ये ६) के टिकट इसी लिफाफे मे लौटा रहा हू। खजानची बाबू को यह चिट्ठी दिखलाकर टिकट उन्हे दे दीजिए और उनमे ६) लेकर ५॥। –) का मनीआर्डर आप मुझे भेज दीजिए। वहा तो रोज ही टिकट लगाने होगे। खर्च हो जाएँगे। उनसे यह भी कह दीजिए कि मेरे रुपये का आखिरी अश जब ५) से कम हुआ करे तब उतना रुपया कृपा करके अलग मनीआर्डर से भेज दिया करें। कमीशन मेरे रुपये से काट लिया करें।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

३६

पत्र सं० १२७५ | दौलतपुर, रायबरेली
फा० स० १० | २७-१-२८

नमस्कार,

सन्तति रहस्य नाम की पुस्तक की एक कापी आपके नाम से भेजता हूं। उसकी उचित समालोचना सरस्वती मे कर दीजिएगा। लेखक ने इसे मेरे पास भेजा है। पर मेरी सम्मति इसके प्रारम्भ मे उन्होने छाप दी है। समालोचना मे मैं अब और क्या लिखू ?

डाक्टर राम नारायण बडे ही प्रवीण डाक्टर और वैद्य हैं। उन्होंने उस साल मुझे मौत से बचाया था। कमला किशोर की छोटी बहन को भी उन्होंने दो दफे अच्छा किया। और डाक्टरो ने उसकी चिकित्सा करने से इनकार कर दिया था। उसका पिछला रोग प्रतिश्याय था। कोई ड़ेढ़ वर्ष से सैकड़ो छीकें रोज आती थी। नाक से पानी की धारा बहा करती थी। डाक्टर साहब ने उसे सिर्फ संजीवनी और कट्फलचूर्ण रत्ती-रत्ती खिलाकर अच्छा कर दिया।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

पत्र स० १२७६ | दौलतपुर
फा० स० १० | १५-६-२८

नमस्कार,

बख्शी जी के पत्र मे मालूम हुआ, आप बहुत बीमार हो गये थे। सुनकर बडा रंज हुआ। आप घर न आ सकते थे तो घर को इत्तिला दे देते। कोई न कोई आपके पास जाता और आपकी सेवा शुश्रूषा का प्रबन्ध करता। इस समय प० मातादीन मेरे पास बैठे है। उन्होंने भी बख्शी जी का कार्ड पढा। उन्हें बंशीधर की चिट्ठी से आपकी बीमारी का हाल पहले ही मालूम हो चुका है। परसो लाला आपके पास गये भी है। आशा है, अब तबीयत अच्छी हो गई होगी। बेहतर होगा छुट्टी बढाकर दस पाँच दिन के लिए घर चले आइए। तबीयत के हाल फौरन लिखिए। हम सब लोग चिन्तित हैं।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

३८ | पत्र सं० १२७७ | दौलतपुर
फा० सं० १० | २७-८-२८

नमस्कार,

१४ का पोस्ट कार्ड मिला। बडे बाबू के परलोकवास का समाचार सुनकर बडा दुःख हुआ। मुझे इस शोकजनक घटना की खबर परसो ही मिल गई थी। मैंने एक लेख पटल बाबू* को भेजा है। उसमे बडे बाबू की कुछ स्मृतिया हैं। वे मंजूर करें तो उसे सरस्वती मे निकाल दीजिए। मेरे लेख बहुत हो जाएं तो पहले भेजा गया एक आध रोक लीजिए।

आपका बच्चा कई रोज से बीमार है। ज्वर उसे नही छोड़ता। आपको खबर मिली ही होगी। उसका हाल वहा डाक्टरो से कहकर कोई दवा लेकर दो एक दिन के लिए आप आ सकें तो आ जाइए। ईश्वर बच्चे को नीरोग करे।

सब लोग बहुत चिन्तित है।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

३९ | पत्र स० १२७६ | दौलतपुर
फा० स० १० | २५-८-२८

नमस्कार,

दोनो पोस्ट कार्ड आपके कल शाम को मिले। बड़े भाई बहुत घबरा गये थे। इस कारण मुझसे तार भिजवाया। मैं पहले ही देख आया था। आज सुबह कमला किशोर को भेजा था। वे अभी १० बजे लौटे है। बच्चा अच्छा हो रहा है। आशा है, शीघ्र ही चंगा हो जाएगा।

बड़े बाबू वाला लेख किस संख्या मे जायेगा और उसको जगह देने के लिए कौन सा नोट निकालना है?

आपका
म० प्र० द्विवेदी

[*टिप्पणी : इण्डियन प्रेस के मालिकों में से एक]

पौष-ज्येष्ठ : शक १९०३-४]

४० | पत्र सं० १२७८ | फा० सं० १० — पुराना वकसर २६-८-२८

साष्टाङ्ग दण्ड प्रणाम

मेरा अभागी महा पापी का स्वीकृत हो। आपका कृपापत्र पाकर धीरज हुआ और मैं महापातकी और घोर अभागी अपनी व्यथा का हाल कहा तक लिखूं। आप स्वयम् ज्ञाता हैं। आप सब जानति है मै इस वक्त ईश्वर से यही प्रार्थना करत हौं कि अब मेरा शरीर छूटि जात तो मैं सुखी हो जात्यो और रात दिन मेरे यही ध्यान है लेकिन मेरे पापी प्राण नही निकलते मैं बहुत कोशिश करत हो मुदा सब वृथा है और अबै यह घाव ताजै है रहा, दूसरा दु ख और पैदा हुआ है काल्हि मे रमादत्त के भी बुखार आ गया है अबै आज महजूद भी है दूसरे उमादत्त के वचन कलेजे को फूंके देति हैं चलते वक्त यह कहा था कि हम तो अब जाइत है बप्पा का न दोख रहा रमादत्त रहे जाति हैं सो वही रोज से शंका सवार होइगै रहै सो जब मे उनके बोखार आवा है तब से किसी तरह धीरज नही धरा रहत है। सो भगवती से यही प्रार्थना है कि इस लड़के की रक्षा करैं रहा महिका लै जायँ मैं बहुत खुशी से कहत हौं और का लिखी और तो मेरे प्राण नही निकलने नही जानित यह शरीर का का बदा है। और कहा तक लिखूँ अब तो मैं जीवन पर्यंत शोक सागर मे पडा हूँ और का लिखूँ यहि साइत मुझे कुछ सूझता नही जो न बनो हो सो माफ कीजिए।

द्विवेदी जी की टिप्पणी

यह चिट्ठी पढ लीजिए वज्रपात सा हो गया। २७ अगस्त को।
मैं आज नही जा सका। कमला किशोर को भेजा था। वही यह चिट्ठी लाये हैं।
छोटे बच्चे को मामूली बुखार है। बडे भाई का दु ख देखा नही जाता। समझाना बुझाना बेकार सा है।

म० प्र० द्विवेदी
२६-८

टिप्पणी उपर्युक्त पत्र पं० देवीदत्त शुक्ल के बड़े भाई का है जो उन्होंने अपने पुत्र की मृत्यु से शोक-विह्वल होकर द्विवेदी जी को लिखा था। उसी पत्र केपृष्ठ पर आचार्य द्विवेदी जी ने अपना नोट लिखकर पं० देवीदत्त जी को अग्रसारित कर दिया था। चूंकि द्विवेदी जी का पत्र उसी पत्र के संदर्भ में है इसलिए दोनों को साथ दिया जा रहा है।

४१ पत्र सं० १२८१ | फा० सं० १०

मेडिकल एडवाइस
प० महावीर प्रसाद द्विवेदी

मस्ट स्टाप आल हिज मेण्टल एक्टीविटीज नाऊ एण्ड फार एवर। इट इज एब्सोल्यूटली निसेसरी फार हिज हेल्थ दैट ही गिव्स अप लिटरेरी वर्क आफ एवरी डिस्क्रिप्शन, फार ही हैज आलमोस्ट टोटली रेकड हिज नरवस सिस्टम बाई ओवर वर्क। फेलोर टू एबाइड बाई दीज इन्स्ट्रक्शन्स इज श्योर टू प्रूव फैटल टू हिज हेल्थ एण्ड इवेन टू हिज लाइफ। दिस इज माई सिनशियर ओपीनियन एण्ड अर्नेस्ट रिकमण्डेशन।*

कविराज डा० राम नारायण
वैद्य शास्त्री
१ सी ए. एस. चैरिटेबुल
डिस्पेन्सरी

कानपुर
१६-११-२८

४२ पत्र सं० | फा० स० १०

कानपुर
१६-१२-२८

नमस्कार,

कुछ विघ्न न हुआ तो मैं २१ दिसंबर को यहा से घर के लिए रवाना हो जाऊगा। २० तारीख से मुझे यहाँ कुछ न भेजा जाय। खजानची बाबू और सरस्वती क्लार्क को भी नोट करा दीजिए।

---

*टिप्पणी : [यह विज्ञप्ति ए० एस० चैरिटेबुल डिस्पेन्सरी के निदेशक कविराज डॉ० राम नारायण वैद्य शास्त्री ने आचार्य द्विवेदी जी की बीमारी के सम्बन्ध में प्रकाशित करवायी थी ताकि स्वयं द्विवेदी जी का उपचार करने वाले भी सावधान होकर उनको चिन्ताओं से मुक्त करें तथा उनके मित्र हितैषी स्थिति की गम्भीरता से परिचित हो सकें।—सं०]

तबीयत तो पहले से अच्छी है। मगर कमजोरी बहुत हो गई है। ४० दिन तक सिर्फ दूध पीकर रहा।*

आपका
म० प्र० द्विवेदी

४३ | पत्र सं० १२८० | फा० सं० १०

दौलतपुर, रायबरेली
२४.१२-२८

नमस्कार,

मैं यहा परसों आ गया। बहुत कमजोर हूँ। चलने फिरने कम पाता हूं। आपके भतीजे लाला ने पौने दो सौ नीबू दिये थे। उन्हे कल आपके मकान भेज दिया। आज शायद बडे भाई और प० मातादीन मुझ पर कृपा करने किसी वक्त आवे। कहला भेजा है।

दिसंबर की सरस्वती के लेखो की लिखाई २ जनवरी को पेंशन के साथ जरूर भेजवा दीजिएगा। लिखकर भेजने वालो को दे दीजिए।

म० प्र० द्विवेदी

*टिप्पणी : [अपनी बीमारी के सिलसिले में कानपुर से प्रस्थान करने के पूर्व आचार्य द्विवेदी जी ने ए० एस० चैरिटेबुल डिस्पेन्सरी के निदेशक के विज्ञप्ति पत्र के पीछे लिखकर श्री देवीदत्त शुक्ल तत्कालीन सम्पादक सरस्वती को भेजा था ताकि उनके कानपुर प्रवास में उनकी पेन्शन तथा डाक आदि उसी पते से भेजे जायें।]

४४ पत्र सं० १२८५ दौलतपुर
फा० सं० १० १-१-२६

नमस्कार,

पोस्ट कार्ड मिला।
कृपा करके कृष्ण प्रेस या और कहीं का एक नया कैलेंडर, छोटा सा, दीवार में टागने के लिए और स० १६८६ का अगला एक पंचांग हो सके तो भेज दीजिए।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

४५ पत्र सं० १२८४ दौलतपुर-रायबरेली
फा० सं० १० २१-१-२६

नमस्कार,

कार्ड मिला। पचांग और कैलेंडर भी मिले। ८ जनवरी से मैं बहुत बीमार हो गया। ११ को हालत नाजुक रही। ३ घंटे मूर्च्छा रही। अब फिर अच्छा हो रहा हूं। चार रोज पं० शिवाधार को यहां रहना पड़ा।
जनवरी की सर० मे यदि मेरा कुछ हो तो लिखाई २ फरवरी को या पहले ही भेजवा दीजिएगा।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

४६ पत्र सं० १२८३ — फा० सं० १०

दौलतपुर
२६-१-२६

नमस्कार,

जनवरी की सरस्वती मे आपने एक अच्छी दिल्लगी कर डाली। मेरे लेख के पहले पृष्ठ के बीच में तो मेरे नाम का इश्तहार दे दिया, पर अन्त में 'द्विरेफ' ही रहने दिया। वहा भी क्यो नाम न दे दिया ? मैं अपना नाम इस लेख मे न देना चाहता था।

भवदीय
म० प्र० द्विवेदी

४७ पत्र सं० १२६८ — फा० सं० १०

दौलतपुर
१८-४-२६

नमस्कार,

बिना माँगे ही आपने टाइम टेबुल भेजकर इस उक्ति को सही साबित कर दिया—

परेङ्गित ज्ञान फला हि बुद्धय.।

मुझे इसकी जरूरत थी। आपने बडी कृपा की। धन्यवाद।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

४८ | पत्र सं० १२८८ / पत्र सं० १० — दौलतपुर, रायबरेली — ६-६-२६

नमस्कार,

पांच का पो० का० मिला।

इतनी कृपा जरूर कीजिए कि अब मेरे नाम से नया-पुराना कोई भी लेख सरस्वती मे न छापिए। अगर यह सम्भव न हो तो वे दोनो लेख फाड फेंकिये। मैं अब भी बहुत तग किया जा रहा हूँ। कल ही सुधा की चिट्ठी आई है। लेखो के लिए सख्त तकाजा है।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

४६ | पत्र सं० १२८७ / फा० सं १० — चौक, कानपुर — ५-६-२६

नमस्कार,

घर पर तबीयत बिगड चली थी। इसमे कुछ दिन के लिए यहा चला आया हूं। सरस्वती और बालसखा वगैरह यहीं भिजवाया कीजिए— चौक, कानपुर। सबसे कह दीजिएगा।

कानपुर के पं० जगदम्बा प्रसाद (हितैषी) बडे अच्छे कवि हैं। सरस्वती के कविता-स्तम्भ चमकाने के लिए मैंने उनसे कहा था कि आपको कभी-कभी कविता भेजा करें। उन्होंने शायद भेजा भी। पर पुरस्कार देना तो दूर आपने उन्हे सरस्वती तक न भेजी। अब भेजिए। पहाडी पंत से उनकी कविता हजार दर्जे अच्छी होती है। उन्हे कुछ निश्चित मासिक पुरस्कार मिले, ता वे हर महीने अच्छी-अच्छी कवितायें भेजे।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

५० | पत्र सं० १२८६ | फा० सं० १० — दौलतपुर १२-७-३०

नमस्कार,

पोस्ट कार्ड मिला।

अत्यानन्द हुआ। आइए।

जरूर मिलिएगा।

नाहर जी का कोई लेख इधर मुझे नही मिला। कई महीने हुए ८४ पर एक लेख उनका आया था। उसे मैंने उसी वक्त आपको भेज दिया था। वह छपा नहीं। शायद उसी से उनका मतलब हो।

आँखो मे मोतियाबिन्द हो रहा है। बाई आख बहुत खराब है।

आपका

म० प्र० द्विवेदी

५१ | पत्र स० १२८६ | फा० सं० १० — दौलतपुर, रायबरेली १२-२-३१

नमस्कार,

कमला किशोर ३ फरवरी को ६ महीने के लिए जेल गये। कांग्रेस का काम करने के कारण। मेरी इच्छा, सलाह, आज्ञा के खिलाफ। निकम्मा रहता ही था। जेल मे कुछ करना ही पडेगा। सुनता हू १००) जुर्माना भी हुआ है। मुझसे तो कई महीने से बोल-चाल बन्द था।

इधर उनकी दुलहिन को बुखार आ गया। तीन दिन तक उतरने की राह देखी। न उतरा तो आपके बडे भैय्या की शरण ली। वे परसो आये। तब से यही है। बीमार की तबीयत पहले से कुछ अच्छी जान पडती है। पर ८ रोज हो गये, बुखार अब तक नही उतरा।

वागीश्वरी का विवाह तय हो गया यह आपको लिखा ही जा चुका है। कल यहा ताराचरण ज्योतिषी ने विचार किया तो वैशाख सुदी १२ बुधवार (२९ अप्रेल) को लग्न निश्चित हुई। फलदान वैशाख वदी १२ को भेजे जायंगे।

वर दीक्षा देने या करने के लिए वंशीधर भेजे गये थे। वे व्यवहार के ४) दे आये हैं। पर वे लोग कहते हैं उनके वंश के २० आदमी वहा हैं। उनका उन्होने खाया है। इसलिए वे इस मद में ४०) मांगते हैं। हालाकि उनके कुटुम्ब मे केवल चार या पाँच ही आदमी हैं। भैय्या पूछते है आपकी क्या राय है?

मिसिर लोगों ने वंशीधर से कहा है कि अपनी हैसियत के मुताबिक हम लोग अच्छी बारात लावेंगे —यानी कोई १०० आदमी, १५-२० पटोहन, १ हाथी वगैरह। वंशीधर इन सबकी सेवा शुश्रूषा करने का वचन भी दे आये हैं। यह सब बातें आपकी जानकारी के लिए लिखी जाती है।

प० मातादीन सैबरसा से कानपुर आये हैं। उनको लिखते हैं कि घर आकर घी वगैरह का बन्दोबस्त करें।

आपके भाई साहब की आज्ञा से यह पत्र लिखा गया है।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

५२

पत्र सं० १२६०
फा० स० १०

दौलतपुर, रायबरेली
२३-६-३१

नमस्कार,

कुछ दिन हुए, ठाकुर गोपालशरण सिंह जी प्रयाग मे थे। किसी मीटिंग या मुशायरे मे शामिल हुए थे। आपको मालूम हो तो लिखिए, अब भी वही है या अपनी गढी (नई गढी) लौट गये। जियादह तरद्दुद न कीजिएगा। यों ही उनकी तन्दुरुस्ती का हाल जानना चाहता हू। बहुत समय से उनकी चिट्ठी नही आई।

पहली सितंबर से ई० आई० आर० की गाडियों का वक्त बदला है। कृपा करके एक आने वाला छोटा टाइम टेबल उस रेल का नया किसी से मगाकर मुझे भेज दीजिए। दो तीन पैसे की संध्योपासन की एक बाजारू पुस्तक भी। एक लड़के को देना है।

मेरा शरीर किसी तरह चला जा रहा है। आशा है, आप अच्छी तरह हैं।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

५३ | पत्र सं० १२६३ — फा० सं० १० | दौलतपुर ३-१०-३१

नमस्कार,

पो० का० मिला। टाइम टेबल आज की डाक से नहीं आया। भेजा है तो आ ही जायगा।

नन्ददुलारे वाजपेयी छोटी बिट्टी के जेठ की लड़की के पति के बड़े भाई हैं। यहां मुझसे मिलने भी आये थे। 'रीडर बाजो' की अक्सर खबर लिया करते हैं। इससे वह लेख उन्हें भेजा। मना किया था कि मेरा नाम प्रेस वालो तक से न बतावें। उन्होने विश्वासघात किया। अपने पेशे पर बट्टा लगाया। एडिटर ऐसा नही करते। दो तीन हफ्ते पास रखकर लेख का अन्तिम अंश काट कर छापा। उसमे पाठकों से यह भी प्रार्थना थी कि कोई उसका अंग्रेजी अनुवाद डाइरेक्टर को भेजे ताकि किताब की गलतियां दूर कर दी जायं।

मुनियां, सात वर्ष की, मदरसे मे वही किताब पढ़ती है। तार वाले सबक की बाते मुझसे पूछने लगी। वह समझी नही। तब मैंने उसे पढा। पढ़ने पर लिखने, छापने और मंजूर करने वालों पर क्रोध आया। इससे वह लेख लिख मारा—क्या एक रद्दी कागज पर घसीटकर भेज दिया। उस भले आदमी ने मेरा नाम प्रकट कर दिया। बताइए अब क्या करूँ।

पं० रामप्रसाद की शकल सूरत तक मैंने नही देखी। कौन कहा के हैं, नही जानता। कभी पत्र व्यवहार तक नही हुआ। भक्त या अभक्त होने की मुझे क्या खबर? कुछ दुश्मनी तो निकाली नही। सर्वसाधारण का लाभ समझकर लेख लिखा। जो प्रायश्चित्त कहिए करू। या उन्ही से पूछिए क्या आज्ञा है। नन्ददुलारे को तो मैं अब कुछ लिखना चाहता नही।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

५४ | पत्र सं० १२६२ — फा० सं० १० | दौलतपुर (रायबरेली) ५-१०-३१

नमस्कार,

रजिस्टरी पैकेट आज मिला। आने ।।) बेकार खर्च किये। रुपया पैसा व्यर्थ

फेंकने की चीज नही। मैंने सिर्फ –) का Time Table मांगा था। आपने ।) का Time Table & Guide भेजा और उसे भी रजिस्टर्ड। आगे कभी मांगूं तो Time Table ही भेजिएगा। लोग अकसर रेलों का वक्त पूछने आते हैं। इससे एक Time Table रखता हूं।

गंगा बाबा की दुलहिन महीनों से जान खाये थीं। इससे सन्ध्या की पुस्तक मंगाई। आपने बड़ी दिव्य पुस्तक भेजी। उसमें और भी बहुत सी बातें हैं। उस दिन की मेरी चिट्ठी मिली होगी।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

५५ | पत्र सं० १२६६ | फा० सं० १० — दौलतपुर, ४-२-३२

नमस्कार,

आज यज्ञदत्त ने आपको एक कार्ड लिखा है। मैं उनसे और उनके कुटुम्बियो से—यहा तक कि बिट्टी तक से प्रसन्न नही। जब से शादी हुई, ये लोग मुझसे रुपया ऐंठने की फिक्र मे रहते है। हालाकि अब तक मैं ६००) के ऊपर नक़द दे चुका। कल कहते थे, मुझे डोकरई मे जमीदारी मोल ले दो। तब मैं जब्त न कर सका। जो कुछ जी मे आया, कह डाला। जीवनी लिखने का ढकोसला सिर्फ पुस्तक बेचकर रुपया कमाने से है। न जनता के लाभ के लिए, न मुझ पर प्रेम के कारण, न हिन्दी साहित्य की हितैषणा से। मैंने लिखने की अनुमति नही दी, सिर्फ यह कहा कि मेरे विषय मे जिसका जो जी चाहे लिख सकता है। मेरी लेख सग्रह की कुछ पुस्तकें मागी। मैने दे दी है। आपकी प्रश्नावली मैंने रख ली है। उत्तर मे कुछ लिखने का वादा नही किया। ये सब बातें आपके जानने के लिए लिखी है। मन मे रखिएगा। इस कार्ड को फाड़ फेंकियेगा। इसकी पहुँच लिख भेजिएगा।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

५६ | पत्र सं० १२६१ / फा० सं० १०

दौलतपुर (रायबरेली)
१५-२-३२

नमस्कार,

चिट्ठी मिली।

कई रोज हुए मै खुद ही बकसर गया था। दरवाजे सन्नाटा था। चंडिका जी वाले गाव मे पं० मातादीन से भेंट हुई। घर की सब बाते उन्होंने बताई। यथार्थ में विरोध भाव बढने के लक्षण है। सब सुनकर मैंने सलाह दी कि जैसा प्रबन्ध पं० देवीदत्त करना उचित समझे वैसा ही किया जाय। उन्होने इसे मंजूर किया। अब आप ऐसा कीजिए जिसमे यथाशक्ति सब कुटुम्बी सन्तुष्ट रहे।

मैंने यज्ञदत्त को अपने विषय मे कुछ लिखने से मना थोड़े ही किया है। मैंने तो माँगने पर अपनी २०-२५ पुस्तकें भी दे दी है। चित्र भी। वे जो चाहे लिखे। पर अपनी पुरानी बातें मुझे खुद ही भूल गई हैं। कोई अन्य लेखक भला क्या लिखेगा।

बहुत आग्रह किये जाने पर कुछ दिन हुए मैने सोचा, थोड़ी थोड़ी कथा कमला किशोर को लिखाता जाऊं। कथा के अंश विभाग किये तो पचास साठ अध्याय हुए। उन्हे घटाने-बढ़ाने और संशोधन करने ही मे मुझे इतना श्रम हुआ कि सिर में दर्द पैदा हो गया। कई दिनो तक नीद नही आई। तब मैने अपने को इस काम के योग्य ही नही समझा। छोड़ दिया।

भारत धर्म महामण्डल एक मासिक पुस्तक निकालता था। नाम महिला या क्या था। शायद अब भी काशी से निकलती हो। सम्पादक की जगह खैरीगढ़ की रानी का नाम था। कई वर्ष हुए। काशी मे मैं राय कृष्णदास के बँगले पर बैठा था। और लोग भी थे। शायद रामगोविन्द त्रिवेदी ने मुझ से उसके लिए लेख मागा। मैंने कहा रानियो के लिए २५) से कम मे एक लेख न दूंगा और वी० पी० पी० से रुपया वसूल करूंगा। उन्होने मंजूर किया। लेख भेजकर मैंने रुपया ले लिया। इस एक घटना को छोडकर और कभी ऐसा व्यवहार किसी के साथ मैंने नही किया।

मेरे मरने के बाद काशी वाले या और कोई मेरे विषय में चाहे जो लिखें क्या मैं सुनने आऊंगा। मुझे उसकी क्या परवा? अब भी जिसका जो जी चाहे लिखे और लोग लिखते ही हैं।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

५७ | पत्र सं० १२६४ / फा० सं० १०

दौलतपुर, रायबरेली
७-६-३२

नमस्कार,

कल्याण के ईश्वराङ्क में ५८१ सफे पर रायबहादुर का लेख पढ़िए। ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण देने में अपनी, अपने लड़कों की, विक्टोरिया फिटन की, घर पर लगी हुई तसवीरों की, अपनी पुस्तकों की भी तारीफ करनी पड़ी है। साथ ही अपने साहित्य-विषयक अपमान का भी उल्लेख करना पड़ा है। ७५ वर्ष की उम्र और यह हाल! जो मनुष्य अपने कुकृत्यो से महाकवियो की कीर्ति को धूल मे मिलावे उसको दण्ड देना अपराध और अपमान समझा जाय। ज़रा पटल बाबू को यह कार्ड सुना देना और कह देना—

"दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययालङ्कृतोऽपि सन्"

आपका
म० प्र० द्विवेदी

५८ | पत्र सं० १२६७ / फा० सं० १०

दौलतपुर (रायबरेली)
५-२-३३

नमस्कार,

पो० का० मिला। सर० की कापिया भी मिल गईं। मुझमे अब कुछ विशेष लिखने की शक्ति नहीं। आपके काम का हो तो नीचे का श्लोक किसी संख्या में दे दीजिएगा। किसी को दिखा लीजिएगा, कोई भूल व्याकरण की न हो।

प्रार्थना

कवीश्वरैर्वेदविदां वरैस्तथा
समर्चिता भक्तिभरेण या सदा।
समस्तविद्याविभवस्य देवता
सरस्वतीं रक्षतु सा सरस्वती॥

आपका
म० प्र० द्विवेदी

५९ | पत्र सं० १३०१ / फा० सं० १०

दौलतपुर
९-४-३३

नमस्कार,

पो० का० मिला। शिवदत्त वाजपेयी अव्यवस्थितचित्त हैं। कई जगह से बरखास्त हुए, कई जगह नौकरी छोड़ी। इसी से पटल बाबू को लिखने मे संकोच है। जाने दीजिए।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

६० | पत्र सं० १२९८ / फा० सं० १०

दौलतपुर (रायबरेली)
१६-४-३३

शुभाशिष· सन्तु

अप्रेल की सरस्वती के "नये आयोजन" मे सम्पादको ने जो मेरा अभिनन्दन किया है वह सीमा से आगे निकल गया है। तथापि उसे पढ़कर मेरी आँखो से आनन्दाश्रु टपक पडे। अभिनन्दन जो गैरो ही के द्वारा किया गया अच्छा लगता है। मैं तो इंडियन प्रेस को अपना अन्नदाता समझता हूं। वह मुझे अपना आश्रित समझे रहे। यही मेरी प्रार्थना है।

कृतज्ञ
म० प्र० द्विवेदी

६१ | पत्र सं० १३०२ / फा० सं० १०

दौलतपुर (रायबरेली)
४ जून १६३३

देवी जी

चिट्ठी मिली। उसमे यह पढ़कर कि मैं निःसहाय विधवाओं का सहायक हूं मैं विकल हो उठा; मेरी आंखो से आंसू निकल पड़े।

आपकी चिट्ठी से प्रकट है कि आप अभी हिन्दी अच्छी तरह नहीं लिख सकती। शायद आप वङ्ग देशीया हैं। तथापि आप एक छोटी सी कहानी हिन्दी मे लिखकर पडित देवीदत्त जी शुक्ल, सम्पादक, सरस्वती, प्रयाग को भेज दीजिए। उसी के साथ यह पोस्ट कार्ड भी नत्थी कर दीजिए। यदि उसमें कुछ भी तत्त्व या मनोरञ्जकता होगी तो भाषा का संशोधन करके वे उसे सरस्वती मे छाप देंगे।*

निवेदक
म० प्र० द्विवेदी

६२ | पत्र सं० १३०० / फा० सं० १०

दौलतपुर, रायबरेली
१०-६-३३

नमस्कार,

६ जून के लीडर के पृष्ठ ७, कालम ५ मे छपा मेरा लेख पढ़ लीजिएगा।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

---

*टिप्पणी : ऐसा लगता है कि यह उषादेवी मिश्र के किसी उत्तर में लिखा गया है। चूंकि इसका संदर्भ सरस्वती और देवीदत्त शुक्ल से है इसलिए इसे सम्मिलित कर लिया गया है।

६३ | पत्र सं० १३०४ | दौलतपुर, रायबरेली
| फा० सं० १० | १७-६-३३

नमस्कार,

चिट्ठी मिली। पं० कृष्णकान्त मालवीय के पत्र का जवाब मैंने दे दिया है। और उनसे माफी माँग ली है।

मुनिया को क्रास्थवेट कालेज ही मे रखूगा। मालूम हो सके तो पूछकर मुझे लिखिएगा, कब कालेज खुलेगा और कब तक उसे वहा हाजिर हो जाना चाहिए जिसमे बोर्ड मे जगह मिल जाय।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

६४ | पत्र सं० १३०५ | दौलतपुर
| फा० स० १० | २२-७-३३

नमस्कार,

कृपा करके जरा पण्डित कालिका प्रसाद दुबे के घर चले जाइए। सन्त दयाल से मिलिए। मेरे कुटुम्बी वही हैं। दस बारह रोज से चिट्ठी नही। क्या कर रहे हैं। कब तक लौटेगे। सब लोग कैसे है। यही जानना चाहता हू। मुनियां को पढ़ाने के मास्टर न मिले तो न सही। यही कही ढूढेगे।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

६५ | पत्र सं० १२६६ | दौलतपुर
फा० सं० १० | १५-१०-३३

नमस्कार,

पो० का० मिला। टाइम टेबुल मिल गया था। मैं समझ गया था कि आपही ने भेजा होगा।

आपके घर का हाल सुनकर सख्त रंज हुआ। बहुत दिन हुए, पं० मातादीन मिले थे। काशीप्रसाद वगैरह की शरारतो का हाल बताते थे। खेतवानों पर अपना ही नाम चढवाना चाहते हैं। मैंने कानूनी बातें बता दी थी। एक चिट्ठी भी मुझसे लिखा ले गये थे। एक दफे घर आकर विरोध शान्त करने की कोशिश कर देखो। मुझसे अगर कोई काम निकल सके तो लिखो। मैं तैयार हूं।

१ आक्टोबर को कमला किशोर अपनी लडकी को छोडने इलाहाबाद गये थे। आपसे नही मिले। फ़ुरसत न मिली होगी। मुनिया, बाई के बाग मे लखनऊ के शिवदत्त वाजपेयी की दुलहिन के साथ रहती है और महिला विद्यालय में पढती है। शिवदत्त वाजपेयी पहले Excise Inspector थे। बीमारी के कारण नौकरी से अलग होना पडा। आजकल इंदोर मे सर हुकुम चन्द के लडके का कुछ काम करते हैं। जरा मेरी तरफ से पटल बाबू से पूछिए। इन्हे तीस चालीस महीने पर कोई काम दे सकें तो यही बुला लें।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

६६ | पत्र स० १३०३ | कमर्शल प्रेस, कानपुर
फा० सं० १० | १३-१२-३४

नमस्कार,

आपका पो० का० मिला। पटल बाबू का पत्र भी आ गया। कुछ कारण बाधक है। इससे वे इस समय जनन-विज्ञान के प्रकाशन में असमर्थ हैं।

कष्ट न हो तो मेरी प्रार्थना पर आप कुछ और कोशिश कर देखिए।

लीडर के मैनेजर बाबू विश्वनाथ प्रसाद को मेरे अभिवादनपूर्वक वह पुस्तक दिखाइए और उनसे वही सब बाते कहिए जो मैंने पटल बाबू को अपने पत्र मे लिखी थी। देखिए, वे क्या कहते है। इडियन प्रेस क्यो नही छापता, यह जो पूछे तो कहिए कि कुछ समय के लिए प्रकाशन कार्य बन्द है, क्योकि बहुत सी पुस्तकें अभी छापने को पडी हैं। उनसे काम न हो तो पं० रामनरेश त्रिपाठी से पूछ देखिए। बाबू शालग्राम भी शायद यह काम करने लगे हैं। जरा उनसे भी पूछिए। ठाकुर श्रीनाथ सिंह को यह काडं दिखाकर उनसे भी कहिए, मदद करने की कृपा करें।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

६७ | पत्र स० १३०६ / फा० सं० १०

दौलतपुर (रायबरेली)
१८-६-३४

नमस्कार,

आपने अभ्युदय मे बड़ा लंबा लेख लिखा। क्या जरूरत थी? लोग न मालूम उसका क्या अर्थ लगावे। यह आपकी उदारता और मुझ पर निर्व्याज प्रेम की प्रेरणा है जिसने वह सब लिख डाला।

१५ ता० का पो० का० मिला। जुलाई मे जरूर घर आइए मेरी कमजोरी बढ़ रही है। नीद का वही हाल है।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

६८ | पत्र सं० १३०७ | दौलतपुर
फा० सं० १० | २७-२-३४

नमस्कार,

पो० का० मिला। बीमारी का हाल सुनकर दु:ख हुआ। ईश्वर आपको चिरायु करे और नीरोग रखे।

मैं किसी तरह अपने दिन काट रहा हूँ। एक न एक शिकायत बनी ही रहती है।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

६९ | पत्र स० १३०८ | दौलतपुर
फा० सं० १० | ८-१-३४

नमस्कार,

राधा कृष्ण के विषय मे यदि विशेष जानकारी प्राप्त करना हो तो ब्रह्मवैवर्त पुराण का श्रीकृष्णजन्म खण्ड पढ़िए—उसमें भी विशेष करके पन्द्रहवा अध्याय।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

७० | पत्र सं० १३१० | दौलतपुर (रायबरेली)
फा० सं० १० | २-३-३४

नमस्कार,

पो० का० आज मिला। पञ्चाङ्ग और पुस्तक कलही मिल गई थी। वाम मार्ग की सैर कर ली। आपने यह पुस्तक खूब ही लिखी। हिन्दी में इसे मैं

अद्वितीय समझता हूं। इससे इस सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखने वाले कितने ही भ्रम दूर हो सकते है।

फरवरी की माधुरी मे मैंने वेंकटेश जी का लेख देख लिया। मैं उनका पहले ही से कृतज्ञ था। अब तो पूछना ही क्या है। लेख में मेरी आलोचना कम, ग्रन्थ की और सभा के कर्णधार महाशयो ही की अधिक है। तिवारी जी ने अपनी छात्रावस्था मे मेरी बहुत मदद की है। उसका ख़याल जब आता है तब मैं उनके उपकार के भार से दब सा जाता हूं। मिले तो उनसे कहना, मुझ पर झूठे लाञ्छन न लगाया करें। कुमार सभव मे कालिदास ने अनुचित शृङ्गार वर्णन किया है। इस कारण मैंने कवि की खबर "कालिदास की निरङ्कुशता" के शुरू ही मे ली है। पर मुझे स्मरण होता है कि वेकटेश जी ने अपने किसी लेख मे मुझ पर यह इल्जाम लगाया है, कि मैने उस पर कुछ कहा ही नही।

मेरी तबीयत की हाल आप क्या पूछते हैं। अच्छे रहने पर भी आप मुझे बीमार ही समझिए। पटल बाबू की कृपा से भोजन-वस्त्र की कमी नहो, इस सुख को मैं थोड़ा नहो समझता।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

७१ | पत्र सं० १३११ | फा० सं० १०

दौलतपुर
रायबरेली
१६-२-३४

नमस्कार,

अगले साल, सं० १९९१ का एक पञ्चाङ्ग मेरे लिए भेज दीजिए। बहुत कम कीमत का।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

७२ | पत्र सं० १३०६ | दौलतपुर
फा० सं० १० | २-२-३५

नमस्कार,

बाबू रामेश्वर प्रसाद वर्म्मा नामी चित्रकार हैं। सरस्वती के काम मे उन्होने मेरी बड़ी ममद की है। ५ वर्ष विलायत मे रहकर उन्होने चित्र विद्या सीखकर और भी उन्नति की है। अभी स्वदेश लौटे हैं। उनकी प्राइवेट चिट्ठी, फोटो अँगरेजी में उनका परिचयात्मक लेख सब आपको भेज रहा हूँ। मुनासिब समझिए तो उनके विषय मे एक नोट सरस्वती मे दे दीजिएगा। आपका काम हो जाने पर मेरी अँगरेजी चिट्ठी और वर्म्मा जी के विषय का टाइप रिटिन परिचय, सम्पादक लीडर को भेज दीजिएगा। शायद वे उसे छाप दें। फिर उनका फोटो और चिट्ठी मुझे वापस भेज दीजिएगा।

जरूरत हो तो वर्म्मा जी से सरस्वती के लिए चित्र आदि माँगिएगा। वे ख़ुशी से देंगे। बड़े सज्जन हैं।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

७३ | पत्र सं० १३१२ | दौलतपुर
फा० सं० १० | १०-५-३५

नमस्कार,

१२ बायो-केमिकल ओषधियों के सम्बन्ध में इंडियन प्रेस से यदि कोई पुस्तक हिन्दी मे निकली हो तो उसकी एक कापी कमला किशोर के हाथ मुझे भिजवा दीजिए। मैनेजर साहब से कह दीजिए, दान कर दें।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

७४ | पत्र सं० १३१४ / फा० सं० १०

दौलतपुर
रायबरेली
१०-३-३५

नमस्कार,

मार्च के १० दिन गुजर गये। मेरी पेंशन अब तक नहीं मिली। जरा ख़ज़ानची साहब को याद दिलाकर भिजवा दीजिए। उनसे प्रार्थना कर दीजिए कि जरा जल्दी भेज दिया करें।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

७५ | पत्र सं० १३१७ / फा० सं० १०

दौलतपुर
रायबरेली
२७-१-३५

नमस्कार,

पो० का० मिला। डाक्टर साहब की पुस्तक का फैसला जल्दी हो जाय तो अच्छा।

प० वेंकटेश नारायण तिवारी की पुस्तक चारु चरितावली—की कोई कापी सरस्वती के लिए या प्रेस मे आई हो तो एक दिन के लिए मुझे भेज दीजिए।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

७६ | पत्र सं० १३१३ / फा० सं० १०

दौलतपुर
२३-११-३५

नमस्कार,

१६ ता० का पत्र मिला। मल्ल चन्द्रोदय का आज ही नाम सुना। कहां

मिलेगा, लिखिए। मैं मंगा लूगा। खाने की विधि वगैरह भी पूछकर लिखिएगा। आजकल उन्निद्रता बहुत बढ़ गई है। तकलीफ है।

हिन्दी मन्दिर ने हिन्दी कुसुमाजलि भाग २ भेज दिया। उसकी कीमत और डाक खर्च के हिसाब मे मैंने १) का मनीआर्डर उन्हे भेजा है। मगर इस रीडर से मेरा काम न निकला। किसी रीडर मे मिश्र बधुओ ने लिखा है कि मैंने बहुत से कन्नौजियो को पढ़ाया है। उसे पढकर मुझे बाहरी लडके तंग कर रहे हैं। वे बातें इस रीडर मे नही।

अनोपान भी लिखता है। 'मल्ल सिंदूर' अलीगढ़ के किसी औषधालय की ब्राच हैं।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

७७ | पत्र सं० १३१६
| फा० स० १०

दौलतपुर-रायबरेली
२-१२-३५

नमस्कार,

मल्ल-चन्द्रोदय सखिया के योग से बनता है। लखनऊ के पं० शालग्राम शास्त्री की राय है कि वह मुझे न खाना चाहिए, क्योकि उससे नेत्र विकार बढेगा। अब आप इस दवा की प्राप्ति के लिए चेष्टा न कीजिएगा। वह मुझे बबई से सहज ही प्राप्त हो सकती है।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

७८ | पत्र सं० १३१८ | फा० स० १०

दौलतपुर
रायबरेली
२६-१२-३५

नमस्कार,

दीवार पर टागने के लिए नये साल ३६ का एक कैलडर अगर आपके पास कोई आ जाए तो मुझे भेज दीजिएगा। माप मे १५ इंच X १० इंच या इससे एक दो इंच घट बढ हो। बहुत बडा न हो। शेष कुशल।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

७९ | पत्र सं० १३२० | फा० स० १०

दौलतपुर
रायबरेली
२८-१-३६

नमस्कार,

आपका पोस्ट कार्ड मिल गया था। अनाथ विद्यार्थी गृह, पूना, का कैलडर भी आज मिला। धन्यवाद। मगर इंडियन प्रेस का कैलेडर जो आपने भेजा था, नही मिला। शायद डाक मे खो गया। अब उसकी जरूरत भी नही।

सवत् १९९३ का नया पञ्चाङ्ग भी एक कापी बाजार से लेकर भेज दीजिए। निर्णय सागर का चण्ड मार्तण्ड ब्रह्म पक्षीय पञ्चाङ्ग मिल जाय तो वही भेजिएगा।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

८० | पत्र सं० १३२२ | दौलतपुर
| फा० सं० १० | १०-२-३६

नमस्कार,

आपका पोस्ट कार्ड और पंचाग मिल गया। पचांग मेरे बड़े काम का है। मुझे ज्योतिष-विषयक सूक्ष्म गणना या विचार नही करना।

कैलंडर और न चाहिए। आपने जो भेजा है उसी से काम निकल जायगा।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

८१ | पत्र स० १३२३ | दौलतपुर (रायबरेली)
| फा० स० १० | १७-२-३६

नमस्कार,

१२ ता० का पोस्टकार्ड आया। किसी ने कही से मुझे कोई कैलंडर नही भेजा। मुझे अब कोई कैलंडर दरकार नही। आप नाहक तंग होते हैं। पूने का जो कैलंडर आपने दिया है वही काफी है।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

८२ | पत्र सं० १३२१ | दौलतपुर (रायबरेली)
| फा० सं० १० | २४-७-३६

नमस्कार,

कमला किशोर की लडकी मनोरमा अब १४ वर्ष की हुई। अँगरेजी मिडिल तक पढ़ा

दिया है। अब घर ही पर रखने का विचार है। आप शहर मे हैं। बहुत लोगों से मिलते जुलते होंगे। यों भी आपकी जानकारी बहुत है। उसके लिए कोई योग्य वर बताइए। कृपा होगी।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

८३ | पत्र सं० १३१६ — फा० सं० १०

दौलतपुर
२८-११-३६

नमस्कार,

मैं अब बहुत कुछ अच्छा हूं। पर कमजोर इतना हो गया हूं कि बिना छड़ी के सहारे दस कदम भी नहीं चल सकता। मैं आपका और पं० मातादीन का परम कृतज्ञ हूं। पं० मातादीन कई रोज दिनरात मेरे घर रहे और मेरी चिकित्सा मे मदद दी।

ओवलटीन की अपेक्षा भी अच्छी एक और दवा डाक्टरों ने मंगा दी है। उसे दूध में खाता हूं।

पता लगाकर लिखिए ठाकुर गोपालशरण सिंह जी ३ कैनिंग रोड, प्रयाग मे इस समय है या अपने स्थान नई गढ़ी मे।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

८४ | पत्र सं० १३२८ — फा० सं० १०

दौलतपुर,
१६-१-३७

नमस्कार,

कमला किशोर की लड़की की शादी ६ मार्च को होने वाली है। रायबरेली के

डाक्टर शकरदत्त शर्मा के लड़के के साथ तै हुई है। कई भाई है। उनको, शादी के मौके पर, मैं कुछ पुस्तके देना चाहता हूं। पुस्तकों की सूची और मैनेजर साहब के नाम चिट्ठी इसी लिफाफे मे है। अगर आप समझें कि मैनेजर साहब प्रसन्नतापूर्वक ये पुस्तकें भेज देगे तो उनका पत्र उनको दे दीजिएगा। नही तो फाडकर फेंक दीजिएगा।

मेरा शरीर किसी तरह चला जाता है। आशा है आप अच्छी तरह है।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

८५

पत्र स० १३२७ दौलतपुर (रायबरेली)
फा० स० १० २६-१-३७

नमस्कार,

आपके और पटल बाबू के पत्र मिले। पुस्तके भी मिल गई। धन्यवाद। पटल बाबू पर मेरी कृतज्ञता प्रकट कर दीजिएगा। उन्होंने बडी कृपा की।

कैलडर मिला। अब और न भेजिएगा। जो आपने भेजे वही बहुत हैं।

डाक्टर शकरदत्त कब आपसे मिले थे। क्या प्रेस मे कुछ काम था? आपसे घर पर मिले थे या प्रेस मे। वे बडे सज्जन है। मेरे साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया और कर रहे है।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

८६

पत्र स० १३२५ दौलतपुर
फा० सं० १० ६-४-३७

नमस्कार,

ई० आई० आर० के नये Provincial Time Table, U P की एक कापी मैं रखना चाहता हू। आप भेज सकें तो बडी कृपा हो।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

८७ | पत्र सं० १३३३
| फा० सं० १०

दौलतपुर (रायबरेली)
२०-४-३७

नमस्कार,

आपके भेजे हुए इंडियन प्रेस के २ कैलेंडर और टाइम टेबुल की कापी मिली। थैंक्स।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

८८ पत्र सं० १३३७
| फा० सं० १०

दौलतपुर (रायबरेली)
१७-४-३७

नमस्कार,

१२ अप्रेल का पोस्ट कार्ड मिला। टाइम टेबुल की एक कापी सन्तदयाल ने मुझे बिना मांगे ही भेज दी है। न भेजा हो तो अब आप भेजने का कष्ट न उठाइएगा।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

८९ | पत्र सं० १३२८
| फा० सं० १०

दौलतपुर
रायबरेली
११-६-३७

नमस्कार,

पटल बाबू बीमार हैं, यह सुनकर बहुत दुःख हुआ। भगवान् करे वे नीरोग होकर

घर जल्द लौट आवें। मैंने यदि कुछ पुण्य किया हो तो उसका फल उन्हें आरोग्य के रूप में मिले। पहुँच सके तो मेरी यह कामना उन तक पहुँचवा दीजिए।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

९० पत्र सं० १३२६ / फा० स० १०

दौलतपुर
रायबरेली
२६-९-३७

नमस्कार,

ई० आई० आर० का नया टाइम टेबल १ आक्टोबर से निकलेगा। उसके पाकेट एडिशन की एक कापी कृपा करके मुझे भेज दीजिए। "Provincial Time Table, United Provinces" से मतलब है। शेष कुशल।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

९१ पत्र सं० १३२९ / फा० सं० १०

दौलतपुर (रायबरेली)
३-१०-३७

नमस्कार,

पोस्टकार्ड मिला। टाइम टेबुल भी पहुँच गया। धन्यवाद। इसी से काम चल जायगा। यही चाहिए था।

मैनेजर साहब की तबीयत अच्छी है, यह जानकर बड़ी खुशी हुई। ईश्वर उन्हें सदा नीरोग रखे। मेरा शुभाशीर्वाद उनसे कह दीजिएगा।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

९२ | पत्र स० १३३४ | दौलतपुर (रायबरेली)
| फा० स० १० | ३-१२-३७

नमस्कार,

कल प्रताप में पढा, आपके प्रेस मे हड़ताल हो गया। चिन्ता हुई। क्या बात है, लिखिए। किन लोगो ने हड़ताल किया है। कितने आदमी शामिल हैं। क्या शिकायत है। कब तक समझौता हो जाने की उम्मेद है—इत्यादि।

शेष कुशल।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

९३ | पत्र स० १३३१ | दौलतपुर
| फा० स० १० | १२-१२-३७

नमस्कार,

पो० का० मिला। यह जानकर खुशी हुई कि हडताल नही हुआ।
१५ दिसबर से ई० आई० आर० का नया टाइम टेबुल निकलने वाला है। उसकी एक कापी कृपा करके मुझे भेज दीजिएगा। मैं आपको बहुधा कष्ट भी देता हूं और कुछ खर्च भी कराता हूँ। क्षम्यताम्—

आपका
म० प्र० द्विवेदी

६४ | पत्र सं० १३३०
फा० सं० १०

दौलतपुर (रायबरेली)
२४-१२-३७

नमस्कार,

आपके दोनो पोस्ट कार्ड मिल गये। पहले पोस्ट कार्ड मे तो आपने सौजन्य-प्रदर्शन की पराकाष्ठा कर दी।

बडे टाइम टेबल की कोई वैसी जरूरत नही। जब छोटा २ आने वाला मिले तब भेजिएगा। न मिले तो न सही।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

६५ | पत्र स० १३३२
फा० सं० १०

दौलतपुर
२८-१२-३७

नमस्कार,

सन् ३७ खतम होने पर है। दीवार पर टागने के लिए अगले साल ३८ का एक कैलेंडर मिले तो भेज दीजिएगा। बालिश्त डेढ बालिश्त मे जियादह चौडा न हो। दीवार उतनी ही है।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

६६ | पत्र स० १३३५
फा० सं० १०

दौलतपुर
रायबरेली
७-१-३८

नमस्कार,

पूने का कैलेंडर मिल गया। अनेक धन्यवाद।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

६७ | पत्र सं० १३३६ / फा० सं० १०

दौलतपुर
२०-१०-३८

नमस्कार,

बहुत समय हुआ, मैंने सरस्वती में स्तुति कुसुमाञ्जलि पर एक या दो लेख लिखे थे। उन्हें देखकर काशी के प्रेम वल्लभ शास्त्री मुग्ध हो गये। उन्होंने समस्त पुस्तक का हिन्दी भावार्थ लिखा-सान्वय। वह इंडियन प्रेस, काशी मे, मूलसमेत छप रहा है। अद्‌भुत पुस्तक है। शास्त्री जी अल्पवयस्क पर बड़े अच्छे कवि और पण्डित हैं। गरीब हैं। माँग जाँचकर किसी तरह छपाई का खर्च दे रहे है। अभी देना बाकी है। पुस्तक की छपाई समाप्त-प्राय है। जरा एक कापी मँगाकर देखिए। इंडियन प्रेस कापी राइट लेना चाहे तो थोड़े ही खर्च से मिल सकता है। जरा पूछिए। उत्तर दीजिए। मेरे पास के छपे फार्म पं० मातादीन ले गये है।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

६८ | पत्र सं० १३१५ / फा० सं १०

दौलतपुर (रायबरेली)
२९-३-३८

नमस्कार,

आपका पोस्टकार्ड यथा समय मिला। पं० सन्तदयाल ने नया टाइम टेवल बिन माँगे ही भेज दिया है। अब आप मेरे लिए सिर्फ नया पंचाग लाइएगा।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

९९ | पत्र सं० १२८२ | दौलतपुर
| फा० सं० १० | ३-१०-३८

प्रियवर पं० देवीदत्त जी शुक्ल

नमस्कार। पं० त्रिभुवननाथ शुक्ल मेरे रिश्तेदार हैं। यज्ञदत्त के चचेरे भाई हैं। आजकल बेकार हैं। आपसे मिलेंगे। अगर इनके भोजनवस्त्र का प्रबन्ध प्रेस में हो सके तो करा दीजिए। अपना सब हाल ये ख़ुद ही आपसे कहेंगे।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
के पत्र
श्री किशोरी दास वाजपेयी के नाम

खण्ड . २

१०० | पत्र सं० १५०७ / फा० सं० १३

दौलतपुर (रायबरेली)

१५ मई १९३२

श्रीयुत वाजपेयी जी महराज,

इधर आपके कई लेख मुझे देखने को मिले। कुछ मैंने खुद पढ़े, कुछ पढ़ाकर सुने। आपके पाण्डित्य ने मुझे मोह लिया। आप बड़े सरस हृदय, काव्य मर्म्मज्ञ और सत्समालोचक है। कुछ-कुछ कालिदास के शब्दों मे परमात्मा से मेरी प्रार्थना है—

उदन्वदाकाश महीतलेषु
न रोधमाप्नोतु यशः मदीयम्

प्रणत
महावीरप्रसाद द्विवेदी

१०१ | पत्र सं० १५०८ / फा० सं० १३

दौलतपुर (रायबरेली)

२१-३-३३

नमोनमः,

आप मेरा लेख खुशी से कल्याण को भेज सकते हैं। पर वह साहित्यसन्दर्भ नामक पुस्तक मे निविष्ट हो चुका है। उसका कापीराइट मैंने बेच दिया है। अतएव गंगा पुस्तक माला वालो को कुछ एतराज़ हो तो मैं नहीं जानता।

सदाचार का विघात तो होता है, पर आपकी तकलीफों का खयाल मुझे उससे ज़ियादह है। यह गाँव बड़ी दुर्गम जगह पर है। सवारी मिलती नहीं। गंगा का कछार कोसो पार करना पड़ता है। जब मैं कानपुर या काशी वगैरह आऊँ तब आप मुझे दर्शन दें तो अच्छा। यों तो मैंने आपको अपने हृदय में रख लिया है। जवाबी कार्ड न भेजा कीजिए।

कृपापात्र
म० प्र० द्विवेदी

१०२ पत्र सं० १५०६ / फा० सं० १०

दौलतपुर (रायबरेली)

६-४-३३

नमोनमः,

३ अप्रैल का पो० का० मिल गया। आप तो संस्कृतज्ञ ही नहीं, शास्त्रज्ञ भी हैं। फिर भी न मालूम आपने क्या-क्या लिख मारा। नमस्कार ही नहीं, आप मिलें तो मैं आपके पैरों पर अपना सिर रख दूं—मैं सेवक सचराचर रूपराशि भगवन्त—मेरे मनोभावों पर किसी का क्या जोर ?

साथ की चिट्ठी यथा स्थान भेज दीजिए और उस लेख का यथेच्छ उपयोग कीजिए।

प्रणत

म० प्र० द्विवेदी

१०३ पत्र सं० १५१० / फा० स० १३

दौलतपुर

१५-४-३३

नमस्कार,

कार्ड मिला। आप मेरा वह लेख, चाहे तो, पूरा ले सकते या उद्धृत कर सकते हैं।

तबीयत अच्छी नहीं।

भवदीय

म० प्र० द्विवेदी

१०४ | पत्र सं० १५११ | फा० सं० १३

दौलतपुर
रायबरेली
२६-७-३३

भैय्या किशोरी दास,

चिरञ्जीवी भया । १ जुलाई की माधुरी मे आपका लेख पढे बिना मुझसे न रहा गया । मनोमुकुल खिल उठा । आप सहृदय ही नही, काव्यज्ञ और साहित्य शास्त्रज्ञ भी है । कभी-कभी इसी तरह इन लोगो को खटखटा दिया करो । इनकी हरकते देखकर यदा-कदा मेरा जी जल उठता है । कविता—कविकर्म्म—के आप विशेषज्ञ हैं और—

विना न साहित्यविदां परत्र
गुण कथञ्चित्प्रथते कवीनाम्
आलम्बते तत्क्षणमम्भसीव
विस्तारमन्यत्र न तैलबिन्दुः

आप कभी-कभी ऐसे वाक्य लिख देते है—

"पहले सम्पूर्ण मनोभावों को दो श्रेणियो मे विभक्त कर दिया गया है ।"

सँभले रहिए, महा वैय्याकरण प० कामताप्रसाद गुरु कहीं खफा न हो जायें ।

मेरी तबीयत आजकल अच्छी नहीं—उन्निद्रता

शुभाकांक्षी
म० प्र० द्विवेदी

१०५ | पत्र सं० १५१२ | फा० सं० १३

दौलतपुर, रायबरेली
५-८-३३

आशीष,

श्रावण शुक्ल ११ की चिट्ठी मिली ।

उस वाक्य मे कोई वैसी गलती नही जो गलती कही जा सके । पर मुझे

"सम्पूर्ण मनोभावों को दो शैलियो में विभक्त कर दिया गया है" की अपेक्षा

"सम्पूर्ण मनोभाव दो श्रेणियों मे विभक्त कर दिये गये हैं।" जियादह अच्छा मालूम होता है। सम्पूर्ण की जगह 'सब' हो तो और भी अच्छा।

आप वहाँ क्या काम करते हैं।
सनातन धर्म का कोई काम ?
आमदनी का क्या जरिया है ?
मैं किसी तरह जी रहा हूँ। शरीर से अधिक दुर्बल
हो रहा हूँ।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

१०६ | पत्र सं० १५१३ | फा० सं० १३

दौलतपुर, रायबरेली
१२-८-३३

शुभाशिषः सन्तु,

८ अगस्त का पो० का० मिला। आपकी कौटुम्बिक व्यवस्था ज्ञात हुई। मेरा भी हाल कुछ-कुछ वैसा ही है। अपना निज का कोई नही। दूर-दूर की चिड़ियाँ जमा हुई हैं। खूब चुगती हैं। पुरस्कारस्वरूप दिन-रात पीडित किये रहती हैं।

प्रयाग मे वहीं कहीं के राजा साहब या उनके भाई मुझसे मिलने आये थे। साथ मे, शायद उनके प्राइवेट सेक्रेटरी, एक ग्राजुएट भी थे। नाम भगवतीचरण या कुछ ऐसा ही था। सारे पुराणो का हिन्दी अनुवाद निकालने वाले हैं। मुझसे किसी योग्य सहायक का नाम पूछते थे, जो उनके यहाँ रह कर वह काम करे। इसी से मैंने आपसे आपकी आमदनी पूछी। मगर आप जहाँ हैं वहीं रहे। वहाँ सब तरह का सुभीता है। ये राजे देहात मे रहते हैं। इनकी बातों का कुछ ठिकाना भी नहीं।

पं० देवी दत्त के नाम चिट्ठी भेजता हूं। जी चाहे भेज दीजिएगा। नही तो फाड़ डालिएगा। मेरी राय तो है—न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्।

स्तुतिकुसुमाञ्जलि में एक स्तुति है—कवि काव्य प्रशंसास्तोत्र। आपको भी पसन्द हो तो उसके चुने हुए श्लोकों को सानुवाद कहीं प्रकाशित करा दीजिए। जिनमें शिवजी का जिक्र है, उनको छोड़ दीजिएगा। लोग देखे—अच्छे कवि और अच्छी

कविता किसे कहते है, कल्याण वाले स्तुति कु० का अनुवाद मुझसे कराना चाहते हैं। एक लेखक भी देने को तैयार हैं। पर मुझमे इतनी शक्ति नही। किसी ने अनुवाद उन्हे भेजा भी है। पर वह उन्हे पसन्द नही।

मैं ज्वालापुर मे महीनो सपत्नीक रह चुका हू। वहाँ के गुरुकुल में। कनखल, हरद्वार सब देखे हुए हैं। अब कही जाने लायक नही हूँ। शरीर शिथिल और जर्जर है।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

१०७ पत्र स० १५१४ दौलतपुर (रायबरेली)
फा० म० १३ २१-६-३३

शुभाशिष सन्तु,

पो० का० मिला। मैने सरस्वती वालो को कुछ नही लिखा। देखा होगा कि आपके अच्छे अच्छे लेख इधर उधर निकल रहे हैं। आपसे अनबन करने पर पछताये होगे। उसी भूल का निरसन सरस्वती की कापियो का भेजा जाना जान पडता है।

मेरे गाव का पता यह है—कानपुर से बिंदकी रोड स्टेशन, ई० आई० आर०। वहा सुबह पहुँचकर किराये की बैलगाडी पर बकसर घाट के लिए रवाना होना चाहिए। गाडिया सबेरे ही मिलती है। स्टेशन से मौजा गुनीर ६, ७ मील है। वही से गगा का कछार शुरू होता है। दो धारायें नाव से पार करना पडता है। बीच मे कई सोते पडने हैं। उनको हिलकर पैदल उस पार जाना पडता है। कछार कोई ३ मील है। मेरी तरफ मौजा बकसर मे नाव लगती है। वही गगा महरानी से पिंड छूटता है। बकसर से दौलतपुर ३ मील कुली के साथ आना पडता है।

आप मेरा कहना मानिए। अभी वर्षा मे न आइए। बहुत कष्ट मिलेगा। बडे दिन की छुट्टियो मे आइएगा। तब पानी मे न हिलना पड़ेगा। गगा की धारा भी एक ही रह जायगी। सो भी छोटी सी। कछार मे बैलगाडी भी चल सकेगी।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

१०८ | पत्र सं० १५१५ / फा० सं० १३

दौलतपुर—रायबरेली
१७-११-३३

आशीष,

मुकुलित वगैरह के साथ स्फुट को आप भूल गये। हिन्दी के कोविद उसे फुटकर के अर्थ मे लिखते है।

जिसने लघुकौमुदी के भी दर्शन नही किये उसे वाच्यों का तारतम्य आप सिखलाना चाहते हैं।

आपके लेख देखकर मुझे बडी खुशी होती है। आप खूब लिखते हैं। खेद है, मैं बहुत ही कम पढ सकता हू। मेरा उन्निद्र रोग आजकल बहुत बढ गया है। व्याकुल रहता हू। एक कार्ड लिखने से भी गश आ जाता है। स्मृति का यह हाल है कि आपका पता भूल गया।

शुभेच्छु
म० प्र० द्विवेदी

१०९ | पत्र स० १५१६ / फा० स० १३

दौलतपुर
रायबरेली
२५-१२-३३

शुभाशिषो विलसन्तु,

२२ का पो० का० मिला। मेरी राय है कि आप वसन्त मे नही, गरमियो ही मे यहा आवें। उस समय राह मे कम कष्ट होगा। मेरे घर मे मेरे भानजे की पत्नीमात्र एक स्त्री है। वह अपने पिता के घर प्रयाग जानेवाली है। उसके भतीजे का अन्नप्राशन है। उसकी गैरहाजिरी मे मेहमानो को चना चबेनी ही पर गुजर करनी पड़ेगी।

शुभानुध्यायी
म० प्र० द्विवेदी

११० | पत्र सं० १५१७ | फा० सं० १३

दौलतपुर
रायबरेली
२२-२-३४

शुभाशिष· सन्तु,

आपका भेजा हुआ ब्राह्मीतैल एक हफ्ते से लगा रहा हूं। फल कुछ समय बाद शायद मालूम हो।

मेरी आँखो मे मोतियाबिन्द का प्रारम्भ हो गया है। एक अमेरिकन दवा आँखो मे अब तक डालता रहा हू। लाभ नदारद। अब एक देशी दवा शुरू की है। पंडित श्रीराम शर्म्मा ने कमलमधु भेजा है। यह नुसखा पं० शालग्राम शास्त्री का है। बड़ी तारीफ सुनी है। इसे भी आँखो मे डालूगा।

आजकल मेरा घर सूना सा है। भानजे साहब और उनकी पत्नी कानपुर में हैं। दोनो को कुछ शिकायत थी। दवा कराने गये हैं।

हिन्दी के पत्रों और पत्रिकाओ को कुछ समय से एक संक्रामक रोग हो रहा है। इनके सम्पादक उर्दू की नई पुरानी दूषित कवितायें छाप रहे है। कुछ हिन्दी के कवि भी उर्दू की बहरो मे कातकृत करने लगे हैं। उधर उर्दू वाले हिन्दी के दोहो और चौपाइयो तक को दाद नही देते। वही अरबी, फारसी की बहरे और एक ही छन्द मे वही बेतुकी कई तरह की बातें। बिस्मिल* जी भी खूब जोर बाँध रहे हैं। पुराने उर्दू-कवि तो हिन्दी मे, कोई कोई, कुछ लिख भी गये हैं। पर आजकल के शायर हिन्दी को अछूत समझ रहे हैं। आपको भी ये बातें खटके तो कभी कभी हिन्दी के गुमराह लिक्खाडो की खबर तो ले लिया कीजिए। आशा है आप सकुटुम्ब अच्छी तरह हैं।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

---

*इलाहाबाद के उस समय के प्रख्यात उर्दू के कवि। नाम सुखदेव प्रसाद सिन्हा बिस्मिल। नूह नारवी के शागिर्द। गजल के साथ राष्ट्रीय भावनाओं की नज्में भी लिखी हैं।

पौष-ज्येष्ठ : शक १८०३-४]

१११ | पत्र सं० १५२६ | फा० सं० १३

दौलतपुर (रायबरेली)
१-६-३४

शुभाशिष सन्तु,

भारत मे वीरभद्र के दर्शन हुए। ये लोग सर्वथा उपेक्षा के पात्र है। मेरी एक पुस्तक है—वाग्विलास। उसमे एक लेख है—आर्य समाज का कोप। उसमे इन लोगो की चित्तवृत्ति का निदर्शन है और अन्त मे लिखा है—

येषा चेतसि मोहमत्सरमदभ्रान्ति ममुज्जृम्भते
तेऽप्येते दयया दयाधन विभो सन्तारणीयास्त्वया

न देखी हो तो लहरिया-सराय से एक कापी भिजवाऊँ। आशा है आप अच्छी तरह है। मेरा हाल वही यथापूर्व।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

११२ | पत्र स० १५१६ | फा० सं० १३

दौलतपुर,
१६-४-३४

आशिषा राशयो विलसन्तु,

१४ तारीख के पो० का० का उत्तर है कि आप खुशी से आइए। आपसे बाते करने से स्वास्थ्य सुधरेगा, बिगडेगा नही। यह पहले से बहुत पहले से—लिख भेजिएगा कि किस तारीख को किस वक्त आप बिदकीरोड पहुँचेगे और वहाँ से रवाना होगे। मेरे भानजे साहब की लडको इलाहाबाद मे पढती है। उसे घर लाने के लिए वे १३, १४ मई तक वहाँ जायगे। सुभीता हुआ तो लौटते वक्त वे बिदकीरोड से आपके साथ ही आवेगे। नही तो गंगा के इस पार बकसर मे मेरा आदमी आपको मिलेगा। वह आपको ले आवेगा। वहा कुली या सवारी कभी-कभी नही मिलती। घर पर भोजन के लिए पक्वान्न तैयार रहेगा।

शुभेच्छु
म० प्र० द्विवेदी

११३ पत्र सं० १५१८ / फा० सं० १३

दौलतपुर

७-५-३४

शुभाशिष सन्तु,

२१ अप्रैल का पो० का० यथासमय मिल गया था।

मेरे भानजे की लड़की का स्कूल कल ६ ता० से बन्द हो गया। भानजे साहब कल ८ ता० को उसे लाने इलाहाबाद जायगे। इस दशा मे वे आपको लौटते वक्त स्टेशन पर न मिल सकेंगे। ११ ही ता० को वे लौट आवेंगे।

आप १६ मई को सुबह चार पाँच बजे तडके बिदकीरोड से चल दीजिएगा। बकसर घाट जाने वाली बैलगाड़ी किराये पर कर लीजिएगा। पूरी गाडी का किराया आठ दस आने होगा। और सवारियाँ बैठे तो किराया बँट जायगा। नौ बजे के करीब गंगा के इस पार नाव से उतरते ही आपको मेरा आदमी मिलेगा। उसी के साथ चले आइएगा। बकसर मे इस पार गगा तट पर चण्डिका देवी का प्रसिद्ध मन्दिर है। सुनते है सप्तशती वाले राजा सुरथ और वैश्य ने वही देवाराधन किया था। आप मूर्तिपूजक हो तो देवी के दर्शन कर आइएगा। दर्शनोत्तर मेरी तरफ से हाथ जोडकर कहिएगा "देव्या यया ततमिदं" इत्यादि दुर्गा सप्तशती के श्लोक।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

११४ पत्र सं० १५२१ / फा० स० १३

दौलतपुर (रायबरेली)

१७-६-३४

शुभाशिषो विलसन्तु,

मैंने आपसे कह दिया था कि मथुरा पहुँचकर चिट्ठी भेजना। जब से आप गये मैं चिट्ठी की राह देखता रहा। नही आई। चिन्ता हुई कि कही प्रवास में आप बीमार तो नही हो गये। यह चिन्ता कल शाम को दूर हुई। ३ जून का पो० का० मिला।

पं० क्षेत्रपाल जी शर्म्मा बहुत बड़े व्यवसायी ही नहीं, बहुत बड़े विद्वान् भी हैं। उनमें सगुण को निर्गुण और निर्गुण को सगुण बना डालने की शक्ति हो सकती है। मैं तो उनका पुराना गाहक हूं। १-६-१६३१ का अपना ८॥।=) का बीजक नं० ५७११ देखें। मैंने उनके विज्ञापनों में द्राक्षासव के गुण पढे हैं। पर उन्हें महत्त्व नही दिया। अब चूकि वे विश्वास दिलाते हैं, इसलिए उसका सेवन परीक्षार्थ करूंगा। १) वाली छोटी शीशी उनसे वी० पी० पी० द्वारा भिजवा दीजिए।

यह कार्ड शर्म्मा जी को दिखाकर मेरा प्रणाम उनसे कहिएगा।

मथुरा मे कब तक रहने का विचार है। पोद्दार जी से मेरी तरफ से कहिए। हरिस्ते वितनोतु शम्।

शुभेच्छु
म० प्र० द्विवेदी

११५ | पत्र सं० १५२२ / फा० सं० १३

दौलतपुर
३०-६-३४

शुभशिषो विलसन्तु,

भारत मे प्रकाशित आपके लेख राधा ने पढकर सुनाये। आपने खूब लिखा।

बहुत छोटी उम्र मे मैं बंबई गया था। वही महाराष्ट्र मित्रो के सम्पर्क मे आकर चाय पीना सीखा। उससे कभी निद्रा की कमी नही हुई। जब से दिमाग कमजोर हुआ तभी से यह शिकायत पैदा हुई है। बहुत कम मात्रा में पीता हूँ। ३ छटांक पानी, ३ ही छटाक दूध—सिर्फ सुबह चाय यों ही नाम मात्र को रहती है। उससे मेरा पेट साफ हो जाता है। वह दवा का काम देती है। अब यह आदत छूट नही सकती—वही दशा है.

प्रताडितोऽपि मार्जारस्तमाखुं नैव मुञ्चति
बहुधा बोधितो मूर्खस्तं चायं नैव मुञ्चति

शुभेच्छु
म० प्र० द्विवेदी

११६ पत्र सं० १५२३ — फा० सं० १३

दौलतपुर, रायबरेली
७-७-३४

शुभाशिषः सन्तु,

४ ता० का पोस्ट कार्ड मिला। प० क्षेत्रपाल जी बडे सज्जन हैं। उनकी दो तीन चिट्ठियाँ आईं। उन्होने जाडों मे मुझे नीरोग कर देने की गारटी की है। द्राक्षासव आ गया है। दोनो वक्त भोजनोत्तर पीता हू। उसमे कुछ मादकता है। उससे जरा देर के लिए आँखे झपक जाती हैं। उन्निद्रता को वह नही दूर कर सकता। उसके लिए वह है भी नही। एक बोतल जो उन्होंने भेजा है उसे खतम करके फल उन्हे लिख भेजूंगा। मेरा रोग दिमागी है। चिन्तन मे वह बढता है। खुश रहने और कुछ भी न पढने से जोर नहीं करता। अब वह शरीर के साथ ही जायगा।

आशा है, चि० मधुसूदन वगैरह को आपने सानन्द पाया होगा।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

११७ पत्र सं० १५२५ — फा० सं० १३

दौलतपुर
रायबरेली
२६-७-३४

शुभाशिषो विलसन्तु,

आपका पिछला कार्ड पढने पर मुझे आपका अनुरोध मानना पड़ा। सुबह चाय पीना छोड दिया। सिर्फ पाव डेढ पाव दूध पी लेता हूँ। अखबार देखने मे भी कमी कर दी। इससे कुछ लाभ होता मालूम होता है। उचित परामर्श के लिए आपको धन्यवाद।

अजी वह भूमिका नही, प्रस्तावना है जिसकी आपने खबर ली है। बाबू श्यामसुन्दर दास की लिखी प्रस्तावना में और किस बात की आशा की जा सकती थी? अफसोस है, रायकृष्णदास ने भी उस पर दस्तखत कर दिये। बाबू साहब के कोश मे नन्द धातु और अभिनन्दन शब्द का अर्थ है—

भली बुरी आलोचना करना।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

११८ पत्र सं० १५२४ | फा० स० १३

दौलतपुर
रायबरेली
३-८-३४

शुभाशिष सन्तु,

चिट्ठी मिली। ब्राह्मी अभी न भेजिए। शर्म्मा जी ने च्यवनप्राश तज-बीज किया है। जरा सर्दी पड़ने लगे तो मगाकर उसका सेवन करूंगा। शरीर बहुत पुराना हो गया। अब तो उसकी एकमात्र दवा हरिहर स्मरण मालूम होती है।

एजिनियर साहब को मेरे अनेक आशीर्वचन।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

११९ पत्र स० १५२७ | फा० सं० १३

दौलतपुर (रायबरेली)

७-९-३४

शुभाशीष,

आपने खूब कविता की। पढ़कर बेहद मनोविनोद हुआ। आप तो अच्छे कवि भी है। कभी-कभी लिखा कीजिए।

भारत मे किसने मेरे खिलाफ क्या लिखा, यह मेरी निगाह मे नही पडा। पढ़ता बहुत कम हू।

पुरुषार्थ वालों ने मुझे बहुत तग किया। तब आपका नाम देकर अपना बचाव किया। वे शकर के भक्त हैं। स्तुतिकुसुमाञ्जलि उन्हे खूब याद है।

मेरा शरीर किसी तरह चला जाता है। मेरी बहन अब अच्छी है। बहुत बूढी हो गई। उस पर मेरा वैसा ही प्रेम है जैसा माँ पर होता है।

शुभेच्छु
म० प्र० द्विवेदी

१२० | पत्र सं० १५२८ | फा० सं० १३

दौलतपुर

८-६-३४

शुभाशिष: सन्तु,

४ ता० का पो० का० मिला। कविता की पहुँच शायद कल ही लिख चुका हूं।

हिन्दी पुस्तक भाण्डार, लहेरियासराय को लिख दिया कि एक कापी वाग्विलास की आपको भेज दें।

चाय छूट गई। अब उसकी याद भी नहीं आती। मगर नींद का करीब-करीब वही पुराना हाल है। वर्षा मे अतिसार-संग्रहणी अकसर हो जाती है। कुपथ्य से बचिए। सुपथ्य भोजन मे शिकायत जाती रहती है।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

१२१ | पत्र स० १५२९ | फा० सं० १३

दौलतपुर (रायबरेली)

१५-६-३४

शुभाशिष सन्तु,

पद्यात्मक पत्र और पो० का० दोनो मिले। आप कविता भी अच्छी लिख लेते है, यह देखकर मुझे बडी खुशी हुई। पत्रों और मासिक पुस्तको मे जो कालकूत छपा करती है, उससे आपकी रचना सौगुनी अधिक मनोरम होती है। अब आप अपनी रचनायें छपाया कीजिए।

'वाग्विलास' की कापी प्रकाशको ने भेज दी है। मिली होगी।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

१२२ | पत्र स० १५३० / फा० स० १०

दौलतपुर, रायबरेली
२३-६-३४

शुभाशीर्वाद,

आपने तो पद्यपरक पत्रो का ताता बाँध दिया। १७ ता० का भी पत्र मिला। आप भावमयी कविता कर सकते हैं। आजकल के कितने ही तुक्कड आपके सामने कोई चीज नही। कविता का प्रकाशन अब शुरू कर दीजिए। मगर मुझे जब कभी अब लिखना गद्य ही मे लिखना। गद्य मे बिना प्रयास जी खोलकर लिखने को मिलता है। वाग्विलास मे आपको मेरे झगडालूपन के नमूने मिले होगे। मेरी पूर्वचर्य्या विलक्षण थी। विवाद कर बैठना था। सहनशीलता का अभाव सा मुझमे था। वह पुस्तक पढने पर कही आप मुझसे विरक्त या उदासीन न हो जायँ, यह डर मुझे था। वह अब दूर हो गया।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

१२३ | पत्र स० १५३१ / फा० स० १३

कमर्शल प्रेस
कानपुर
२५-११-३४

शुभाशीष,

चिट्ठी मिली। हमदर्दी के लिए अनेक धन्यवाद।

भारत मे जो कुछ निकला है उसमे अत्युक्ति है। तबीयत अच्छी नही, पर चिन्ता की बात नही जान पडती।

मोतियाबिन्द एक दवा से पहले रुक गया था। वही फिर डालने का विचार है। मोगा जाने की जरूरत नही। मोतियाबिंद पकने पर वहाँ आपरेशन होता है।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

१२४ | पत्र सं० १५३३ | फा० सं० १३

कमर्शल प्रेस, कानपुर

६-१२-३४

शुभाशिषो विलसन्तु,

६ ता० का पोस्ट कार्ड मिला। आपकी पत्नी की बीमारी का हाल सुनकर बहुत दुःख हुआ। उपाय भर इलाज और शुश्रूषा में त्रुटि न होने पावे। परमात्मा से प्रार्थना है कि वह उन्हें शीघ्र ही नीरोग कर दे।

मैं २५ दिसंबर के पहले ही घर लौट जाना चाहता हूं—छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति— वाली बात हुई है। यहां सख्त जुकाम हो गया। एक हफ्ते से तंग हूं। कल से कुछ हलका हुआ है। यहां रहना बेकार है। उन्निद्रता दूर करने के जो उपचार यहाँ होते है वे घर पर भी हो सकते है।

शुभैषी

म० प्र० द्विवेदी

१२५ | पत्र सं० १५३२ | फा० सं० १३

कमर्शल प्रेस,
कानपुर
१३-१२-३४

शुभाशिष. सन्तु,

११ का पो० का० मिला। आपकी गृहिणी धीरे-धीरे स्वस्थ हो रही हैं, यह जानकर खुशी हुई।

मेरी भी तबीयत पहले से अच्छी है। ऐसी ही रही तो २४, २५ तक घर चला जाऊंगा। आप सिर्फ मुझसे मिलने के लिए यहां आने का कष्ट और खर्च न उठावें। हां, और किसी काम से आना हो तो आइए।

हरिद्वार और कनखल के वैद्य ब्राह्मी का रोजगार करते है। अगर सच्ची ब्राह्मी का घृत, आसव, सिरप या अरिष्ट मिलता हो तो फी बोतल दाम पूछ लीजिए। अगर कभी जरूरत होगी तो मंगा लूंगा। दिमागी कमजोरी उससे दूर होती है।

शुभैषी

म० प्र० द्विवेदी

१२६ | पत्र सं० १५३४ | फा० सं० १३

कानपुर
१७-१२-३४

आशीष,

१५ ता० का पोस्ट कार्ड मिला।

यहाँ मैंने अपने डाक्टर की सलाह से बंगाल केमिकल वर्कस का अश्वान द्राक्षासव और मकरध्वज ले लिया है। वह सब दो तीन महीने चलेगा। फिर यदि वे कहेंगे, तो ब्राह्मीघृत आपसे मंगाऊंगा। अभी आप मत भेजिएगा।

बच्चों को और रुग्ण पत्नी को छोडकर आप इस तरफ या और कहीं जाने का हरगिज इरादा न करें—मेरी तो यही राय है।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

१२७ | पत्र सं० १५३६ | फा० सं० १३

दौलतपुर
रायबरेली
५-१-३५

शुभाशिष सन्तु,

२२ दिसंबर का पो० का० यथासमय मिल गया था।

मैं यहाँ २४ दिसंबर को मोटर से लौट आया। तबीयत कुछ अच्छी है।

न भेज चुके हो तो ब्राह्मीतैल अभी न भेजिएगा। जरूरत महसूस होने पर मैं माँग लूगा। आपका मुझ पर इतना प्रेम है कि शायद भाई का भी न होता होगा। भगवान् आपका कल्याण करे।

आशा है आपकी पत्नी का स्वास्थ्य अब तक ठीक हो गया होगा। ये 'गङ्गा डिपो' वाले ब्राह्मी के जो घृत, तैल आदि बेचते हैं उनसे किसी को कुछ फायदा भी होता है या नहीं, इसकी जरा जाँच कीजिएगा।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

१२८ पत्र सं० १५३५ / फा० स० १३

दौलतपुर
रायबरेली
६-१-३५

शुभाशिषो विलसन्तु,

३ तारीख का पो० का० मिला। ब्राह्मीतेल की ३ शीशियाँ कानपुर पहुँच गई हैं। कमर्शल प्रेस मे रक्खी हैं। मेरा भानजा कमलाकिशोर वहीं है। वह जब आवेगा तब लेता आवेगा। आप मेरे लिए बहुत कष्ट उठा रहे हैं। मैं आपका परम कृतज्ञ हूँ।

कल एक पोस्ट कार्ड मैं आपको भेज चुका हूँ।

शुभाकांक्षी
म० प्र० द्विवेदी

१२९ पत्र स० १६३७ / फा० स० १३

दौलतपुर, रायबरेली
१०-५-३५

शुभाशिष. सन्तु,

सा० समिति की ओर से भेजा गया पो० का० मिला। मैंने अपने को धन्य समझा।

ब्राह्मीतैल आपने बडी कृपा करके भेजा था। उससे लाभ नही हुआ। अब सिर पर रोगन बादाम और पैरो मे अडी का तेल लगाता हू। कुछ यूनानी दवाये भी अजमेर से एक वैद्य ने भेजी है। उनका भी सेवन करता हूं। शरीर रोग का घर हो रहा है। दवा किस किस मर्ज की की जाय। उन्निद्रता थी ही। अब आखो मे मोतियाबिन्द ने पदार्पण किया है। पं० शालग्राम शास्त्री की सलाह से कमल मधु डालता हू।

आशा है आप सकुटुम्ब अच्छी तरह हैं।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

१३० | पत्र सं० १५२० | दौलतपुर
फा० स० १३ | १६-५-३४

आशीष,

आज आपकी प्रतीक्षा मे था। इतने मे १३ ता० का कार्ड मिला। बहुत अच्छा।

इस महीने के अन्तिम सप्ताह मे बक्सर पहुँचने की सूचना पहले से दीजिएगा।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

१३१ | पत्र सं० १५३८ | दौलतपुर (रायबरेली)
फा० सं० १३ | १८-५-३५

शुभाशिष. सन्तु,

कोई ५ वर्ष हुए, मेरी आखो मे मोतियाबिन्द शुरू हुआ था। तब Succus Ceniraria Inaretina नाम की अमेरिकन दवा २ महीने डाली। अच्छा हो गया। पिछले नवबर मे मैं कानपुर गया। ऐनक बदलाने के लिए अपने एक डाक्टर मित्र को आखे दिखाई। उसने यन्त्र से जो परीक्षा की तो बतलाया कि मोतियाबिन्द फिर शुरू हुआ है। बाई ऑख मे अधिक है, दाहनी मे कम। इससे सूचित हुआ कि दौरा अभी नया है और बाई आँख मे ही पहले आरम्भ हुआ है। मगर दाहनी आँख बन्द कर लेने पर भी अभी बाई से नजदीक की चीजें सब देख पडती है। खुजली नही होती। पढने से कष्ट होता है। आँखो मे पानी आ जाता है। वैद्य जी को पत्र कार्ड सुना दीजिए।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

१३२ | पत्र सं० १५३६ / फा० सं० १३

दौलतपुर (रायबरेली)
३१-५-३५

शुभाशिषो विलसन्तु,

२८ मई की चिट्ठी मिली। मृत्युञ्जय—औषधालय, लखनऊ के पं० शालग्राम शास्त्री की सलाह से मैं आँखो मे कमल मधु डाल रहा हू। यह मधु समरा बगाल के G. H. Seller नाम के एक महाशय भेजते हैं। परसों उनका पत्र आया है। उसमे उन्होने विश्वास दिलाया है कि कुछ दिन और डालने मे मोतिया-बिन्द अवश्य जाता रहेगा। इस कारण मैंने दवा और मंगा ली है। एक महीना और उसे डालूंगा। उधर शास्त्री जी महाराज भी कोई दवा तैयार कर रहे हैं। अतएव अभी आप अपने यहा के वैद्य को भेजना मुल्तवी रखिए। फायदा न हुआ तो महीने डेढ महीने बाद फिर उन्हे बुला लूंगा। कानपुर की तरफ आना हो तो मुझे देख जाइएगा। अभी तो यहाँ ११०° दरजे की गरमी पडती है। लू चलती है। आने लायक नही।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

१३३ | पत्र स० १५४० / पत्र स० १३

दौलतपुर
८-८-३५

आशीष,

स्वराज्य मे आपकी कहानी पढते पढते मैं कई दफे रोया।

आयुष्मान् भव—

यशस्विनस्ते विजयोऽस्तु सर्वदा

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

१३४ | पत्र सं० १५४१ — फा० सं० १३

दौलतपुर, रायबरेली

१५-८-३५

शुभाशिषा राशयो विलसन्तु,

११ अगस्त का पो० का० मिला। खुशी हुई। आँखो का वही हाल है। कमल मधु ने कुछ फायदा नहीं किया। जान पडता है, जैसे और इन्द्रिया शिथिल हो रही है वैसे ही दष्टि भी। दवादारू व्यर्थ है।

शीत काल मे इधर आना हो तो मुझसे जरूर मिलना।

गगा पहले तो दर्शन देती थी। अब कई महीने से नही। जरूरत भी नही। पढ नही सकता।

उस कहानी मे लछिमनपुर के एक महाशय का जिक्र है। वे शायद प० शिवपाल अग्निहोत्री थे। डाकखाने के सुपरिंटेंडेंट थे। झासी मे हम दोनों अकसर मिलते थे। एक बार उनके घर भी मै हो आया हूँ।

आदर्श के पिछले अङ्क में सम्पादक महाशय ने कुछ पत्र-पत्रिकाओं को फटकार बताई है। एक फटकार मुझ पर भी पडी है—लिखा है, मैं बदले मे आये हुए पत्र-Refused लिखकर-लौटा देता था। पर बात ऐसी नही—

किसी आर्यसमाजी ने एक पुस्तक समालोचना के लिए भेजी। उसमे लिखा था—स्वामी दयानन्द के गुरु भट्टो जी के चित्र या नाम पर जूते लगवाते थे। इस पर मैंने कडी टिप्पणी की। आर्यसमाजी बिगडे। एक सरकुलर निकाला कि कोई समाजी मुझे पुस्तकें न भेजा करे। जवाब मैंने सरस्वती मे दिया—"आर्य समाज का कोप"। उसमे शायद मैंने लिखा कि अगर कोई भेजेगा भी तो मैं न लूंगा—लौटा दूंगा। इसी प्रतिज्ञा की पूर्ति में मैंने शायद कुछ पुस्तकें लौटाई हो। बदले के पत्र-पत्रिकाएँ नही लौटाईं। सम्पादक रामचन्द्र जी महाशय आप ही के शहर मे हैं। इससे मैने यह कैफियत दे दी।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

१३५ | पत्र सं० १५४२ | फा० स० १३

दौलतपुर (रायबरेली)
२४-८-३५

शुभाशिष सन्तु,

२० अगस्त का पत्र मिला। आपके कुछ दोहे कहीं छपे हुए मैने देखे हैं। मुझे बहुत अच्छे लगे। उनम प्रसाद गुण बहुत काफी जान पडा। जरूर छपाइए। नाम भी पुस्तक का आपने अच्छा रक्खा। मै होता तो मुकुल, मञ्जरी, मानसी, मनोविनोद आदि नाम रखता।

मै सुरमा न लगाऊगा। जाने दीजिए। भगवान् के भरोसे पडा रहूगा।

शुभानुध्यायी
म० प्र० द्विवेदी

१३६ | पत्र स० १५३६ (ब) | फा० स० १३

वाजपेयी जी,

तबीयत आजकल अच्छी नही। उन्निद्रता उग्र हो रही है। घर भी खाली सा है। बहन और भानजी अपने अपने घोसले मे पहुँच गई। सिर्फ कमलाकि० की पत्नी और लडकी है। कमलाकि० भी हैं। गरमी गजब की है। लू चलती है।

म० प्र० द्विवेदी

१३७ पत्र स० १५४३ / फा० सं० १३

दौलतपुर (रायबरेली)
१८-४-३६

शुभाशिष सन्तु,

पोस्टकार्ड मिला। हम लोगो को इस बात का अब तक ज्ञान नही कि जो आदमी आपके साथ गया था, उसे कोई संक्रामक रोग है। वह मौजे मे सबका काम करता है। मवेशी भी चराता है। मैंने तो अपने आदमी सूधू से जाने को कहा था, मगर अपनी दौड़-धूप बचाने के लिए वह उस ले आया। खैर माफ कीजिए। बे जाने गलती हुई है।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

१३८ पत्र सं० १५४४ / फा० स० १३

सम्मति

तरङ्गिणी की तरङ्गो ने मेरे हृदय को हिला दिया। इसमे बहुत सी विशेषतायें हैं। पहली विशेषता यह है कि इसकी भाषा प्रकृत ब्रज भाषा है- यह भाषा जो ब्रजमण्डल मे बोली जाती है। दूसरी यह है कि इसके कितने ही दोहो मे साहित्य, साहित्य-सेवी, देशदशा, राजनीति आदि पर कवि ने अपने विचार अनोखे ढँग से प्रकट किये है। तीसरी यह कि इसमे व्यर्थ शब्दाडम्बर नही, दोनो मे कवि-जनोचित भावो की अच्छी अभिव्यक्ति है। चौथी और सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसकी कोई कोई उक्ति हृदय पर चोट करने वाली है। इसकी कविता मे सर-सता काफी मात्रा मे पाई जाती है और सरसता की बड़ी महिमा है। इसी से एक महाकवि ने कहा है—

"व्यर्थं विना रसमहो गहन कवित्वम्।

आशा है, साहित्य सागर मे अवगाहन किये हुए सरस हृदय सज्जनों को इसके इन अनेक गुणों का अनुभव हुए बिना न रहेगा । क्योकि—

विना न साहित्य विदा परत्र
गुण कथञ्चित्प्रथते कवीनाम् ।
आलम्बने तत्क्षणमम्भसीव
विस्तारमत्यव न तैलबिन्दु. ।।

दौलतपुर (रायबरेली)
९ जून १९३६

आपका
महावीर प्रसाद द्विवेदी

१३९

पत्र सं० १५४५
फा० स० १३

दौलतपुर
रायबरेली
७-७-३६

शुभाशिष सन्तु,

तरङ्गिणी की कापी मिली । देखकर चित्त प्रसन्न हुआ । बहुत अच्छी छपी । कागज जिल्द सभी सुन्दर है ।

भूमिका तो अनेक ज्ञातव्य बातो से पूर्ण है—यथेष्ट पण्डित्य प्रदर्शक है ।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

१४०

पत्र स० १५४६
फा० स० १३

दौलतपुर
१९-९-३६

शतायुर्भव,

कार्ड मिला । मनोरमा के विवाह का अभी कुछ ठीक नही । आप भी उसके लिए कोई योग्य लडका तलाश कीजिए ।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

१४१ पत्र सं० १५४७ दौलतपुर (रायबरेली)
फा० सं० १३ १७-२-३७

शुभाशिष सन्तु,

मेरी बिमारी मे आपने कमलाकिशोर को लिखा था कि बिटिया के विवाह की सूचना आपको जरूर दी जाय। आपकी इच्छा का विघात मैं नही करना चाहता, परन्तु तीन भानजियो के विवाह मै कर चुका, मान्यो को छोडकर और किसी को सूचना तक नही दी, निमंत्रण तो दूर की बात, निमंत्रण देना मानो कुछ माँगना है। इस दफे भी निमंत्रण पत्र तक नही छपाया, यद्यपि लग्न पत्रिका तक छपाई है। अच्छा, तो विवाह ६ मार्च ३७ को है--रायबरेली के डाक्टर शंकर दत्त शर्मा के लडके के साथ होगा। लडका बदायूं मे Electrician (बिजली का इंजीनियर) है। आप आशीर्वाद के सिवा और कुछ भेजिएगा नही।

अब कभी कोई पुस्तक प्रतियोगिता मे न भेजिएगा। बडी बेइज्जती होती है—

रे गन्धी मति अन्ध तू इतर दिखावत काहि ?

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

१४२ पत्र सं० १५४८ दौलतपुर (रायबरेली)
फा० स० १३ २४-२-३७

शुभाशिषो विलसन्तु,

पो० का० मिला। बच्चो की और उनकी माँ की भी बीमारी का हाल सुनकर दु ख हुआ। ईश्वर करे सब शीघ्र चंगे हो जायँ। ऐसी दशा मे आप यहा आने का हरगिज साहस न करें।

शुभानुध्यायी
म० प्र० द्विवेदी

विनय-पत्रक १

रीति-भाँति मैं नही जानता,
नही जानता लोकाचार
कुल कुटुम्ब, सन्तति का भी है
मुझे नही कुछ भी आधार।
इसमे जो बन पडा बन्धुवर
प्रेम समेत परोसा है।
भोग लगावोगे इसका अब
मुझको यही भरोसा है॥

महावीर प्रसाद द्विवेदी

१४३ पत्र स० १५४६ — फा० स० १३

फाल्गुन कृष्ण १०
साहित्य प्रेस, चिरगाँव।
सं० १९९३

वाजपेयी जी,

ये पत्रक आदि आपकी सूचना के लिए भेजता हूँ। बारात कल बिदा हो गई।

म० प्र० द्विवेदी

१४४ पत्र स० १५५० — फा० स० १३

दौलतपुर (रायबरेली)
७-२-३७

शुभाशिषो विलसन्तु,

४ ता० का कार्ड मिला।

आपको पुत्र की प्राप्ति हुई, यह सुनकर बडी खुशी हुई। मधुसूदन के

जोड का कोई अच्छा नाम नही सूझ पडता। मेरी बुद्धि की जडता बढ गई है। नीचे के नामो मे से कोई पसन्द हो तो चुन लीजिए—

मुकुन्द माधव	मयंक मोहन	राधिका रमण
श्रीकान्त	शशाक सुंदर	राधिका रंजन
रजनी कान्त	शशि शेखर	
कमला कान्त	राजीवलोचन	
चारुचन्द्र		

मनोरमा का विवाह कल रात को हो गया। बडी भीड घर मे भी बाहर भी है।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

१४५ पत्र सं० १५५१ — फा० स० १३ दौलतपुर १५-३-३७

शुभाशीष

१२ का पो० का० आज मिला। आपके बालबच्चे अच्छी तरह है यह जानकर खुशी हुई।

पुस्तको का समर्पण बिलकुल ही बेकार है। मैंने भी अपनी दो एक पुस्तको का समर्पण पहले किया था। मगर फिर वैसी भूल नही की। आपके प्रेम-पाश मे मैं यो ही फँसा हूँ। समर्पण से क्या होगा। पर यदि आपका कुछ काम निकलता हो या आपको किसी प्रकार की सन्तुष्टि होती हो तो कीजिए। मुझे कोई आपत्ति नही।

आप विवाह मे आते तो कष्ट पाते। बडी भीड थी। बाराती तो २३ ही थे। पर मेरे माननीय आमन्त्रित जनो की सख्या ६०, ७० तक हो गई थी। सब गये, सिर्फ ३ बाकी है।

आना तो मधुसूदन को जरूर लाना।

मुकुन्द माधव बडा अच्छा नाम आपने बच्चे का रक्खा।

न हस्तलिखित, न प्रूफ। छपने पर नाटक भेजिएगा।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

१४६ | पत्र स० १५५२ | फा० स० १३

दौलतपुर
३-५-३७

आशीष,

सौन्दरनन्द को इस देश मे छपे मुद्दते हो गईं। मेरी कापी कहा गई, पता नही। शायद ना० प्र० सभा के 'भवन" मे हो। बबई या कलकत्ते मे छपा था—

तरन् तरङ्गे रिव राजहंस

मुझे अक्सर याद आया करता है। बुद्ध चरित भी पढने की चीज है।

नेत्र दृष्टि मेरी दिन पर दिन कम होती जाती है। शायद शीघ्र ही धृतराष्ट्रता के पद पर पहुच जाऊ।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

१४७ | पत्र स० १५५३ | फा० स० १३

दौलतपुर (रायबरेली)
१६-५ ३७

शुभाशिष सन्तु,

जन्म दिन सम्बन्धी बधाई का तार मिला। अनेक धन्यवाद। आपके इस आत्मीय भाव प्रदर्शन को मैं बड़े गौरव की चीज समझता हूँ।

पिछली चिट्ठी मिल गई है।

शुभानुध्यायी
म० प्र० द्विवेदी

१४८ | पत्र सं० १५५४ दौलतपुर (रायबरेली)
फा० सं० १३ ३०-५-३७

शुभशिषां राशयो विलसन्तु,

मैं सोचता था, आप दो चार रोज मे आवेंगे। पर आप मंसूरी पधार गये। अबके गरमिया वही बिताइए। यहा की लू लपट से बच गये। अच्छा ही हुआ।

अजी, उन लोगो की लीला अपरपार है। एक लडके का मरसिया मैंने सरस्वती में न छापा था। नतीजा यह हुआ कि अब तक ऐंठे है।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

१४६ | पत्र सं० १५५५ दौलतपुर (रायबरेली)
फा० स० १३ ५-६-३७

शुभाशिष सन्तु,

२ जून का पो० का० मिला। गरमी गजब की पड रही है। कल मेरे थर्मामीटर का पारा १०५ पर था। फिर कभी यहाँ आइएगा। गरमियाँ वही बिताइए।

विवाह के १५ दिन बाद मनोरमा यहा आ गई थी। १३ जून को उसकी ननद का विवाह है। इससे कल वह फिर बिदा हो गई।

इस साल आम यहाँ बहुत कम है। मेरे कई बाग है। पर सिर्फ ५, ७ पेड़ो मे कुछ फल हैं। अभी पकते हैं नही।

सेठिया जी को आशीष।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

१५० | पत्र सं० १५५६ | फा० सं० १३

दौलतपुर (रायबरेली)
१८-१०-३७

शुभाशिष: सन्तु,

१५ का पोस्ट कार्ड मिला। आपके कुशल समाचार जानकर प्रसन्नता हुई। वर्षा मे आने से अवश्य कष्ट मिलता। बहुत अच्छा, फिर कभी सही।

बुढापे मे जो हाल होता है वही हाल मेरा है। चल फिर कम सकता हूँ। दृष्टि भी बहुत मन्द हो गई है।

शुभैषी
म० प्र० द्विवेदी

१५१ | पत्र सं० १५५८ | फा० स० १३

दौलतपुर (रायबरेली)
२६-३-३८

चिरंजीव,

आपका पोस्ट कार्ड क्या मिला, वज्रपात सा हुआ। शिव शिव, सवा साल का होकर ही बच्चा चल बसा। किन शब्दो मे आपको सान्त्वना दूँ। एक पुराना श्लोक याद आ गया

पुत्र: स्यादिति दु खित सति सुते तस्यामये दु खित: इत्यादि

आपकी पत्नी तो और भी व्याकुल होगी, यह दु ख तो अब धीरे ही धीरे कम होगा। मैं और क्या लिखूँ—आप स्वयं ही समझदार हैं।

मैं किसी तरह जिन्दा हूँ। दिन पर दिन कमजोर होता जाता हूँ। शारीरिक कष्ट बढ रहे हैं।

हितेच्छु
म० प्र० द्विवेदी

१५२ पत्र सं० १५५७ — फा० सं० १३

दौलतपुर

५-५-३८

शुभाशिषो विलसन्तु,

जयन्ती की बधाई का पोस्ट कार्ड मिला। धन्यवाद। आपने मुझे मेरे जन्म-दिन की याद दिला दी। मुझे ही भूल गया था। कुटुम्बियो को कैसे याद रहता।

किसी ने कढी तक बनाकर नही चाटी। मेरे कुटुम्बी तो आपही के सदृश सन्मित्र हैं। उन्ही का भरोसा है—चिरञ्जीवी भूया.

शुभैषी

म० प्र० द्विवेदी

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
के पत्र
पं० रामगोविन्द त्रिवेदी
तथा
श्रीमती निहालचन्द के नाम

खण्ड : ३

रामगोविन्द त्रिवेदी के नाम

१५३ | पत्र सं० १६८७ / फा० सं० १५

दौलतपुर, रायबरेली
१३-७-२४

सादर प्रणाम,

आपका लंबा पत्र मिला। मैं कोई १५ रोज से बीमार हूँ। चारपाई पर पड़े पड़े यह पोस्ट कार्ड लिख रहा हूँ। असमर्थ हूँ। मेरा यह राम नाम लेने का समय है, समालोचना लिखने का नहीं। क्षमा कीजिए। कृपा रखिए। मेरे लिए भगवान् से प्रार्थना कीजिए कि मेरा अन्तिम समय विशेष कष्टकर न हो।

विनीत
म० प्र० द्विवेदी

श्री निहाल चन्द के नाम

१५४ | पत्र सं० १६८८ / फा० सं० १५

दौलतपुर, रायबरेली
७ मई १६२४

श्रीमन्महोदया',

आपके भेजे हुए 'दर्शन-परिचय' की कापी मिली। कृतज्ञ हुआ। अनेक धन्यवाद।

पुस्तक देखकर ही चित्त प्रसन्न हो गया। चित्र, छपाई, कागज सभी सुन्दर है। बड़े महत्त्व की है, यह बात नाम से ही सूचित है। ऐसी पुस्तकों को हिन्दी मे बड़ी आवश्यकता है। मैं इसे बड़े प्रेम से अपने संग्रह में रक्खूंगा और इसके पाठ से अपनी ज्ञान वृद्धि करूँगा। मैं दर्शन शास्त्रों का ज्ञाता नहीं। इस कारण समालोचना करने मे असमर्थ हूँ।

कृतज्ञ
महावीर प्र० द्विवेदी

१५५ | पत्र सं० १७३४ / फा० सं० १५

दौलतपुर
रायबरेली
१६-३-३३

नमोऽस्तु तुभ्यम्,

१५ मार्च की चिट्ठी मिली।
एक हफ्ता हुआ, मैं पुरातत्त्वाङ्क पर सम्मति भेज चुका।

प्रणत
म० प्र० द्विवेदी

राम गोविन्द त्रिवेदी के नाम

१५६ | पत्र सं० १७४५ / फा० सं० १५

दौलतपुर
रायबरेली
१४-६-३३

नमो नमस्तेऽस्तु मम निवेदिने

पत्र मिला। पुरातत्त्वाङ्क भी। त्रिवेदी जी, मेरी स्मरणशक्ति नष्टप्राय है। दिमाग ख़ाली हो गया है, पुरातत्त्वाङ्क पहले ही मिल चुका था। आपको मैंने नाहक ही कष्ट दिया। आप याद दिला देते तो दुबारा अङ्क न मँगाता।

मैं अब कुछ भी लिखने लायक नहीं। मुझे माफ कीजिए। अब तो हरिहर स्मरण के दिन आ गये।

प्रणत
म० प्र० द्विवेदी

१५७ पत्र सं० १७७० दौलतपुर (रायबरेली)

फा० स० १५ २१-६-३७

श्री म० सु सादरं निवेदनमिदम्

ईश्वरसिद्धि की कापी भेजकर आपने मुझे कृतार्थ कर दिया। आपने मुझे उसके पाने का अधिकारी समझा यह आपकी बहुत बड़ी उदारता है।

पुस्तक क्या है, एक रत्न है। सभी धर्म्मों, शास्त्रों, भक्तो और विद्वानो के ईश्वर विषयक सिद्धान्तो का खजाना है। गीता का जो श्लोक प्राय सदा ही मेरी जिह्वा पर रहता है उसे पुस्तक के आरम्भ ही मे देखकर मेरे तो आनन्द का ठिकाना न रहा।

भगवान् आप महाशयो का कल्याण करे।

उपकृत

महावीर प्र० द्विवेदी

———

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

के पत्र

पं॰ जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी के नाम

खण्ड : ४

[पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी के नाम द्विवेदी जी का पत्र]

१५८ पत्र सं० १६५६ / फा० सं० १४

झांसी
१-१-२०

प्रिय महाशय,

आज कांग्रेस से लौटने पर आपका पोस्ट कार्ड और आपके दोनो उपन्यास मिले। अत्यानन्द हुआ।

आपके वसन्त और आपकी मजरी से तो हमारा परिचय हो गया। हमने उनका चरित्र आज ही दोपहर को पढ डाला परन्तु संसार चक्र को पढ़ते डर लगता है, कौन जाने कहीं हम चक्कर मे न आ जावै—भाई हम घर गृहस्थी के आदमी है इसी से फूंक फूंक पैर रखना पडता है।

ससार चक्र को पढने के पहले अभी दो तीन दिन हम आपकी मुग्ध मनोहर मूर्ति ही देखकर अपने नेत्रो को तृप्त करेंगे। सब लोग मन की सत्ता को और इन्द्रियो से प्रबल मानते है परन्तु इस समय हमारे नेत्रो ने मन को पूर्णतया जीत लिया है। मन चाहता है कि वह पढना आरम्भ करे परन्तु नेत्र उसकी एक नही सुनते। क्या ही अच्छा होता यदि हम आपको प्रत्यक्ष देखते। इस समय हमको आपका चित्र देखकर रामनाथ कवि की यह पक्तियां याद आई हैं।

अति अभिराम कामहू मोहन मूरति देखि तिहारी
कैसे बची होहिगी तुमसो × × × की × × ×

इसे गुस्ताखी न समझिएगा। यही प्रार्थना है। हमने यूँ ही विनोदवश लिख दिया है।

इस पत्र मे आपका साहित्यप्रेम देखकर हमको बहुत सन्तोष हुआ। मालती का ढंग बहुत अच्छा है। छापेखाने की भूलो ने बडी गडबड की है। प्रथम परिच्छेद के हेडिंग मे 'हँसी' को 'हँसि' न करिए तभी अच्छा है। हँसी के रखने से लाइन मे अधिक Force आ जाता है और विशेष मजा मिलता है। 'धूप' के अर्थ मे रौद्र शब्द का प्रयोग हिन्दी मे नही होता बँगला ही मे होता है। इसी तरह अदने इत्यादि शब्दो का भी विचार पुनर्मुद्रण के समय कर लीजिएगा। महादेव के मन्दिर में मालती का कागज लेकर जाना भी खटकता है। यह बातें हम शुद्ध अन्तः-करण से लिखते है। अत. उसी भाव मे आप ग्रहण कीजिएगा। आपका उद्योग और भाषा की अभिरुचि प्रशंसा के योग्य है।

हम भी डाक द्वारा आपकी भेंट मे पत्र पुष्पं फलं तोयं भेजते हैं। स्वीकार कीजिएगा।

भवदीय
महावीर प्रसाद द्विवेदी

[पं० जगन्नाथ प्रसाद]

१५६ पत्र सं० १६६२ / फा० सं० १४

दौलतपुर (रायबरेली)

५-५-३६

नमो नम:

निमन्त्रण-पत्र मिला। धन्यवाद। वार्धक्य के कारण वहाँ उतनी दूर आने मे मैं समर्थ नहीं। इससे यही से मंगल-कामना करता हूँ—

चकास्ति यस्योरसि दिव्यमाला
तथा च पाणौ मुरली रसाला।
विघ्नस्वरूपासुरवृन्दकालो
वधूवरौ सोऽवतु नन्दबाल: ॥

कृपापात्र
म० प्र० द्विवेदी

श्री धनपतराय (प्रेमचन्द)

के पत्र

पं० देवीदत्त शुक्ल

तथा

श्री रामचन्द्र टण्डन के नाम

जागरण-कार्यालय,

सरस्वती-प्रेस, काशी

[श्री धनपतराय (प्रेमचन्द) का पत्र पं० देवीदत्त शुक्ल के नाम]

१६० | पत्र सं० १६४ / फा० सं० २

भार्गव पुस्तकालय,
गायघाट, बनारस सिटी।
१-६-१६२६

श्रीमान्, संपादक
सरस्वती
प्रयाग

प्रिय शुक्ल जी।

'काया कल्प' और 'प्रेम-प्रतिमा' की एक एक प्रति सेवा मे भेज रहा हूँ और आशा करता हूँ कि निकट के किसी अक मे इनकी आलोचना कराने की कृपा करेगे।

उपाध्याय जी का लेख तो अभी चखा जा रहा। क्या सचमुच उन्होने किताब ही लिख डाली है क्या ? खैर, अगर रबिन्द्र बाबू उसी पाप के अपराधी हैं जिसका मैं हूँ तो मुझे कुछ सतोष है।

एक कहानी आपके लिये लिख रहा हूँ।

भवदीय
धनपतराय

१६१ | पत्र स० १६५ / फा० स० २

2, Hewett Road
Lucknow
28.2.29

प्रिय देवीदत्त जी,

वंदे।

यह मुझ पर क्या खफगी है कि विशेषाक की कापी मेरे पास नही भेजी गई ? इतने दिनो तक उसकी प्रतीक्षा करके तब यह तकाज़ा कर रहा हूँ। क्षमा कीजिएगा।

सेवक
धनपतराय

१६२ | पत्र सं० १६६ / फा० सं० २

सरस्वती प्रेस, काशी

१२-१२-१९३२ ई०

सं० १२७६ **जागरण-कार्यालय**

प्रिय देवीदत्त जी

बंदे ।

आशा है कर्मभूमि और अन्य पुस्तकों की आलोचना सरस्वती मे अबकी निकलेगी। किसी योग्य आलोचक को दीजिएगा।

मैंने अपनी पुस्तकों का एक पृष्ठ का विज्ञापन बनाकर सरस्वती के लिए भेजा था। पहुँचा होगा। कृपया उसे सरस्वती मे दें। जो छप रहा है उसमे कई पुस्तके नही हैं और न आकर्षक है। आशा है, आप प्रसन्न है।

भवदीय

धनपतराय

१६३ | पत्र सं० १६७ / फा० सं० २

लखनऊ

२३-६-३१

प्रिय शुक्ल जी।

बंदे।

क्या 'गबन' की आलोचना सरस्वती मे न निकालियेगा। अब तो लगभग दो महीने हो गए। मुझे तो आशा थी पहले ही महीने मे आचोलना हो जायगी। पर दिन गुजरते चले जाते हैं। हिन्दी लेखकों के लिये यो ही क्या कम बाधाएँ है फिर आप लोग भी हतोत्साह करने लगे।

आशा है आप प्रसन्न हैं।

भवदीय

धनपतराय

१६४ | पत्र सं० ५८५
| फा० स० ५

Lucknow
ता० २१-७-१९३१ ई०

प्रिय बधुवर
बदे

फिर याद दिहायी कर रहा हूँ। जरा फिर खटखटाइए।

मेरी कहानियो की एक वृहद आलोचना किसी सज्जन ने कलकत्ता के Liberty मे की थी। उसके अनुवाद का एक अग सरस्वती में प्रकाशनार्थ सेवा मे भेजता हूँ। यदि स्वीकार करेगे तो कृपा होगी। मगर बहुत इन्तजार न कराइएगा।

आपके यहाँ तो साहित्य सम्मेलन के विषय पर झगडा खूब चल रहा है।

भवदीय
धनपतराय

१६५ | पत्र सं० ७१५८
| फा० स० १३

'जागरण' कार्यालय
सरस्वती प्रेस, बनारस
१८-५-३३

माइ डियर रामचन्द्र जी

थैंक्स। हियर इज दि सजेशन आई मेड थ्रू अर्जुन। इफ इट कैन बी रिक्टेड अपान, इट वुड सर्टेन्ली रेज दि टोन आफ अपर पेपर्स। देयर इज मच अपहेल्ड वर्क टु डू। इफ यू कैन रजिस्टर सब्सक्राइबर्स एनफ, दि स्टार्ट कैन बी मेड। मेन आर अवेलेबुल। दि पेपर्स आर मोर आर लेस इन क्रोनिक डिप्रेशन, ऐण्ड मे नाट ऐग्री टु एनी न्यू इण्टरप्राइज। बट दि अटैम्प्ट शुड बी मेड। इफ दि इन्फेक्शन कैचेज, समथिंग मे कम आउट।

होप यू आर आलराइट। गिव माइ 'सलाम्स' टु मौलाना असगर साहब।

योर्स सिन्सियर्ली
धनपतराय

१६६ | पत्र सं० २०७८
| फा० म० १८

'जागरण' कार्यालय
सरस्वती प्रेस, काशी
3/7

2209/P

माइ डियर ब्रदर

योर लेटर। थैंक्स। योर स्कीम सीम्स टू बी आल राइट। ओन्ली आई डोण्ट वाण्ट प्राविन्शियल ब्राञ्चेज ? दि हेड आफिस ऑट टू बी ऐट ए सेण्ट्रल प्लेस व्हेयर इंग्लिश मैगज़ीन्स एण्ड पेपर्स कैन बी अवेलबुल इजिली। इलाहाबाद इज़ आइडियल फार दि परपज। देयर शुड बी ए हेड आफिस विद वन आर टू क्लार्क्स एण्ड ए डायरेक्टर। ह्वाट वुड अर्जुन एण्ड चतुर्वेदी ड फ्राम...... ''दि डायरेक्टर शुड बी ए मैन हू कैन बी रिलाइड अपान टु सेलेक्ट रीडेबुल, इन्फार्मेटिव, थाट-प्रोवोकिंग मैटीरियल ही विल डिमाइड टु म शुड दि मैटीरियल बी सप्लाइड फार ट्रान्सलेशन। ही विल मेण्टेन ए रिकर्ड एज़ टू दि रिस्पेक्टिव मेरिटस एण्ड सिम्पेथीज़ आफ दि ट्रान्सलेटर्स। दिस विल बी दि बेसिस आफ सेलेक्शन। टू अवाइड एनी फेवरिटिज्म, देयर आर टू बी सम सच थिंग ऐज रोटेशन। दि रेस्ट इज़ आल-राइट। इफ देयर आर टू मेनी डायरेक्टर्स, दि इनीशियल बर्डेन विल बी अनमैने-जेबुल। इनीशियल आफिस चार्जेज़ शुड नाट एक्सीड से 50+30+20+40+10 × × × × × रूपीज 50 फार डायरेक्टर। ट क्लार्क्स आन 30+20 ईच। × × × × × × × × × रूपीज़ 10/ पीयोन, 15/- लाइट एटसट्रा। रूपीज 100/- × × × × × × पेपर्स रफली। इट कम्स टू एबाउट रूपीज़ 30 × × ×। दि रेस्ट इज़ टु बी डिवाइडेड एमग ट्रान्सलेटर्स अकार्डिङ्ग टू योर स्कीम। दि ट्रान्सलेटर्स शुड बी रिलायबुल मैन हू कैन कैरी सम कान्फिडेन्स। इन योर सरक्यूलर लेटर दि नेम्स ऑफ ट्रान्सलेटर्स शुड बी मेन्शण्ड। इफ वी इन्क्लूड उर्दू ऐज़ वेल, दि स्कीम विल हैव वाइडर स्कोप। वन्स ए थिंग इज ट्रान्सलेटेड इन हिन्दी, इट कैन बी वेरी इजिली उर्दूवाइज्ड। आई ऐम सेण्डिङ्ग दि लिस्ट यू काल्ड फार। इट इज नाट कम्प्लीट, बट फेयर्ली कम्प्लीट। इफ दि पीपुल रेसपाण्ड, आल राइट। आल डिपेण्ड्स आन रेसपान्स। ह्वेन आफिस एक्सपेन्स इज़ रूपीज़ 300/- दि ट्रान्सलेटर्स रिम्यूनरेशन शुड बी इन प्रोपोर्शन आफ 1 टू 5। इफ वी कैन सीक्योर इवेन 1000/ पर मन्थ दि स्कीम कैन बी लाञ्च्ड। आई से 500/- टू वुड नाट बी होपलेस फीगर, ओन्ली आफिस चार्जेज विल हैव टु बी रिड्यूस्ड। देयर वुड बी नो हाउस रेण्ट फार दि प्रेजेण्ट। ह्वाई नाट हैव ए टाक विद सम पीपुल देयर ऐज मिस्टर के० आर० मेहता आर मिस्टर विश्वनाथ प्रसाद। वन आर

टु जेण्टिलमेन हैव रिटेन टु मी इन दि सेम कनेक्शन। दि सर्क्यूलर लेटर शुड बी सच ऐज़ माइट इम्प्रेस ऐण्ड अपील ऐण्ड कनविन्स। दि पीपुल शुड फील दैट दे शुड सब्सक्राइब इन देयर ओन इण्टरेस्ट। देयर इज़ नथिंग सर्विस आर सेवा। टु स्टार्ट विद ऐट फर्स्ट दि फालोइंग जेण्टिलमेन विल हैव टु बी × × × × × कान्फिडेन्स।

1 प्रोफेसर इन्द्र 4 × × × × × ×

2 बनारसीदास जी 5. × × × × आफ आगरा

3. हेमचन्द्र जोशी वन × × × हूम यू मे × × ×

इन दि प्रिलिमिनरी स्टेजेज़ मच स्पेट वर्क हैज टू बी डन। सम एक्सपेन्सेज़ टु, ए गुड डील इन दिस स्टेज। ह्वेन हाफ ए डज़न थाटफुल मेन हैव बीन साउण्डेड देन दि सर्क्यूलर लेटर शुड बी ड्रान ऐण्ड सेण्ट टु आल दि एडिटर्स ऐण्ड प्रोप्राइटर्स विद दि डिटेल्ड स्कीम एण्ड आर्गानिजम्स। इफ दि स्कीम इज़ वेलकम्ड, दि बैटल इज़ वन अदरवाइज़ लास्ट। आई डोण्ट माइण्ड इवेन ए हम्बुल बिगनिंग। दि लिस्ट आफ उर्दू पेपर्स म बी आस्क्ड फाम मुंशी दया नारायण निगम। आई थिंक मिस्टर अगरवाल हैज़ नॉट गाट देम इन हिज माइण्ड। मुंशी डी० एन० म आल्सो बी साउण्डेड ऐण्ड वन आर टु अदर्स। उर्दू इज़ ए बिग एफील्ड ऐण्ड इफ दे पार्टिसिपेट वेल इट विल बी ए मैटर आफ कांग्रेचुलेशन। ऐज फार इनीशियल इक्सपेन्सेज़ यू म ड्रा आन माई कमीशन ड्यू आन एकेडमी। इट इज़ अबाउट रुपीज 20/-। वेल आई होप इट विल सफाइस फार दि बिगनिंग। दिस एमाउण्ट कैन नाट बी पुट टू ए × × × × × × ×। इन ए फोर्टनाइट यू शुड × × × × × × × स्टेज। इन सर्क्यूलर दि बोर्ड × × × × × × ट्रान्सलेटर्स विद देयर डिफरेण्ट सब्जेक्ट्स × × × × बी पुट टु एराउज़ कान्फिडेन्स। इफ यू हैव टाइम, देयर कैन बी नो बेटर डाइरेक्टर। ए कामपिटेण्ट मैन कैन नाट बी इम्प्लायड होल टाइम फार दि प्रेजेण्ट। यू फर्स्ट डिस्कस दि प्रपोज़ल देयर। देन काल मी। आई शैल डाइन ऐट योर हाउस म्यूटमोट्स ऐण्ड डिस्कस दि डिटेल्स विद यू। वन डे आई कैन फोरगो।

दि रेस्ट इज़ आल राइट।

योर्स ब्रदर्ली

डी० राय

१६७ | पत्र सं० २०७५
| फा० सं० १८
2165P

'जागरण' कार्यालय
सरस्वती-प्रेस बनारस
२३-५-३३

माई डियर ब्रदर,

थैंक्स, दि प्रपोज़ल वाज मेड इन दि इण्टरेस्ट्स आफ 'वीक्लीज' ऐण्ड 'डेलीज' इन हिन्दी टू इन्क्रीज देयर यूटीलिटी, सरक्युलेशन एण्ड इम्पार्टेन्स। देयर वाज नो क्लियर आईडिया आफ डिटेल्स इन माई माइण्ड, बट वी शैल हैव फर्स्ट टू साउण्ड अवर पासबिलिटीज—ए सेन्सेप विल हैव टु बी टेकन टु सी ह्वाट पेपर्स एण्ड मैगजीन्स वुड बी विलिंग टु फाल इन विद अवर स्कीम दि एमाउण्ट आफ मैटीरियल दे वुड एप्रोक्सिमट्ली रिक्वायर एव्री डे, वीक आर मन्थ। ए सर्क्यूलर लेटर टु दैट इफेक्ट मे क्रियेट ऐन इण्टरेस्ट। देयर आर सो मेनी पपर्स, आलदो मोस्ट आफ देम आर लैंग्यूशिंग फार वाण्ट आफ प्रापर रिकगनीशन, बट इट माइट बी एक्सपेक्टेड दैट दे वुड एलाट सम एमाउण्ट प्यार्ली फ्राम बिजिनेस प्वाइण्ट आफ व्यू टु मेक देयर पेपर ब्राइटर, वन्स दिस सेन्सेस इज सक्सेसफुली टकेन, यू विल हैव टु क्रियेट ए बोर्ड, से आफ थ्री इण्टरेस्टेड मेन, टू म कलेक्ट दि मेटीरियल फार ट्रान्स-लेशन, ए नम्बर आफ पपर्स ऐण्ड मैगजीन्स विल हैव टु बी आइदर सब्सक्राइब्ड आर सीक्योर्ड इन सम अदर वे ऐन इण्टरेस्टिंग ऐण्ड इन्फारमेटिव मेटीरियल विल हैव टु सार्टेड आउट। देन देयर आर टु बी ए बोर्ड आफ ट्रान्सलेटर्स, इच इण्टरेस्टेड इन ए पर्टीकुलर सब्जेक्ट। दि मैनेजिंग बोर्ड वुड एलाट प्रोपोशनट एमाउण्ट आफ वर्क टु दि ट्रान्सलेटर्स ऐण्ड सेन्ड देम टु दि पेपर्स टू वुड बी विलिंग टु एक्सेप्ट देम। दि मैनेजिंग बोर्ड विल हैव टू डू ए लाट टू ग्लान्स एट ए नम्बर आफ पेपर्स एण्ड क्विक आउट थिंग्स आफ अवर इण्टरेस्ट फ्राम देम वुड बी नो ईजी जाब, बट प्रैक्टिस वुड मेक देम फेमिलियर। इफ देयर बी १०० पेपर्स एण्ड मैगजीन्स विलिंग टु सब्सक्राइब रूपीज १०/—पर मन्थ, यू हैव सफीशियेण्ट बासिस टु स्टार्ट .... । दि बोर्ड आफ सेलेक्शन विल बी पेड आफकोर्स दो × × अ ह्म्ब्रुन स्केल। वी कुड एम्प्लाय ५० ट्रान्सलेटर्स पेइंग देम आन सो मेनी लाइन्स ए रूपी। देयर माइट एराइज सम कन्फ्यूज़न ह्वेन दि सेम पेपर्स गो इन फार दि सेम मेटीरियल। इन दैट केस दि पेपर्स कन्सर्ण्ड विल हैव टु लीव च्वायस इन अवर हैण्ड्स आर देयर माइट बी सम अदर वे आउट। आई बिलीव दि स्कीम इज कैपेबुल आफ डेवलपमेण्ट ऐण्ड इफ समवन स्टिक्स टु इट, ही मे हैव दि सैटिस्फैक्शन आफ रेज़िंग दि स्टेटस आफ अवर जर्नलिज्म। यू आर दि मैन टु डू इट। आई ऐम ए हरकारा, आलवेज अटेम्प्टिंग ह्वाट आई वाज नाट मेड टु डू, मेडलिंग विद जर्नलिज्म ह्विच इज़ फारेन टु नेचर, बट फोसृड बाई सरकमस्टान्ज़ टु गो इन फार इट इनस्पाइट आफ माइसेल्फ।

इन्फीरिआरिटी काम्प्लेक्स आफकोर्स। दि कान्सेसनेस दैट आई ऐम इनकैपेबुल आफ मेकिंग ए मार्क एग्ज मी आन टू फुलिश अण्डरटेकिंग्स, बट देयर इज़ ए सेइंग "लिव ऐण्ड लर्न"।

आई होप आई शैल देयर फ्राम यू एबाउट दि मैटर। नथिंग वुड गिव मी दि ग्रेटर प्लेज़र दैन सी दैट दि स्कीम हैज बीन टेकेनअप बाई कैपेबुल हैण्ड्स।

योर्स श्वर्ली
डी० राय

———

श्री हरिऔध

के पत्र

श्री देवीदत्त शुक्ल

तथा

श्री किशोरी दास वाजपेयी के नाम

खण्ड . ६

[illegible]

[श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का पत्र पं० देवीदत्त शुक्ल के नाम]

१६८ पत्र सं० ११०४
फा० सं० ६

ॐ आजमगढ़

श्रीमान् पण्डित जी ! ११-१२-२०

प्रणाम ।

आपका कृपा कार्ड मिला, कृपा के लिये धन्यवाद । आज मैं बाबू पुन्नालाल पदुमलाल जी को भी पत्र लिख रहा हूं, आप उद्योग अवश्य कीजिये, मैं यदि पुस्तक दूंगा तो इस नियम के साथ दूंगा कि वह तीन चार महीने के भीतर छाप दी जावे । प्रोप्राइटर महोदय जी से कह दीजिएगा मेरी ही बनाई × × × कुसुम, नामक पुस्तक है, जो उन्ही के प्रेस मे छपी है और इतना बिकी है, जितना उनके प्रेस की कोई पुस्तक नही बिकी। उसका चौथा या पाँचवा एडीशन हो चुका है, आशा है यह पुस्तक भी खूब बिकेगी । यदि वह जल्द छापना स्वीकार न करेंगे और पर्याप्त पुरस्कार न देंगे तो मैं स्वयं पुस्तक न दूंगा । आप उद्योग कीजिये यदि सफलता न होगी तो भी कोई चिन्ता नही, बक्शी जी भी आशा है कि आपका साथ देंगे और पूरा उद्योग पुस्तक छापने के विषय मे करेंगे । पत्र का उत्तर शीघ्र दीजिएगा ।

भवदीय
हरिऔध

१६९ पत्र सं० ११०५
फा० स० ६

ॐ बनारस

श्रीमान् पण्डित जी ! ८-८-२६

प्रणाम ।

आज अपनी दो कविता सेवा मे भेजता हूं, यथासमय कोई गद्य भी सेवा में भेजूंगा । आज पण्डित जनार्दन प्रसाद झा की एक कविता और एक आख्यायिका भी सेवा मे जाती है । आशा है उसे पढ़कर आप प्रसन्न होंगे, मैं चाहता हूँ कि आप

इनको भी प्रकाशित करें। यदि इस प्रकार की कविता और आख्यायिका आप पसद करेंगे, तो उनके द्वारा इस प्रकार की और कवितायें एवम् आख्यायिकायें मैं आपके पास भेजवाता रहूंगा। प्रिय पं० जनार्दन प्रसाद झा सेकेंडियर क्लास का एक होनहार और उत्साही युवक है उसकी प्रतिभा भी विलक्षण है, आशा है आप उसे उत्साह प्रदान करते रहेंगे। विशेष विनय।

भवदीय
अयोध्या सिंह उपाध्याय

१७० पत्र स० ११०६
फा० स० ६

ॐ

आजमगढ़
१७-५-२६

श्रीमान् पण्डित जी !

प्रणाम।

आशा है आप सकुशल होंगे। प्राय कहा जाता है कि हिन्दी भाषा मे स्वाभाविक दृश्यो के वर्णन का अभाव है। ग्रामीण दृश्य तो हिन्दी रचनाओ मे मिलते ही नही। इन्ही बातो पर दृष्टि रखकर कुछ कविता की गई हैं, उन्हें आज आपकी सेवा म भेजता हूं। यदि आप इन्हें पसद करेंगे, तो यथावकाश इस प्रकार की और कवितायें भी भेजूंगा।

भवदीय
हरिऔध

१७१ | पत्र सं० ११०७
| फा० सं० ६

ॐ

आजमगढ़

श्रीमान् पण्डित जी ! 	८-७-२६

प्रणाम ।

आशा है आप सकुशल होंगे । आज 'बोलचाल' नामक पुस्तक सेवा में जाती है, स्वीकार करने की कृपा कीजियेगा । ग्रंथ में उर्दू बहरो एवम् मुहावरा के विषय में जो कुछ लिखा गया है उधर मैं आपकी दृष्टि विशेषतया आकृष्ट करता हूं । मुख्य पद्य भाग को भी उसी दृष्टि से देखने की प्रार्थना करता हूं ।

भवदीय
हरिऔध

१७२ | पत्र सं० ११०६
| फा० सं० ६

ॐ

बनारस

श्रीमान् पण्डित जी ! 	२५-११-२६

प्रणाम ।

आशा है आप सपरिवार सकुशल होंगे । आपका कृपापत्र मिला, कवितायें जाती हैं । इधर महीनों से मैं देखता हूं कि प्रथम पृष्ठ पर साधारण कवितायें ही प्राय. प्रकाशित होती है, यह वाञ्छनीय नही । यदि आपको पसद आवे, तो इस न्यूनता को प्रेषित कविताओ द्वारा दूर कीजिये . चार-पाच महीने का सामान मैंने इकट्ठा ही भेजा है. यथासमय और कवितायें भी भेजूगा । उपयोगिता के विचार से मैंने भाषा भी बहुत सरल रखी है । एक कविता 'माई का लाल' शीर्षक भी जाती है, उसे बाबू श्रीनाथ सिंह जी को दे दीजियेगा । उनका पत्र भी आया था ।

आजकल प्रिय गिरीश कहाँ हैं ? मैंने उनको एक आवश्यक पत्र लिखा था, उनको एक दिन के लिये बनारस बुलाया भी था, मगर न तो पत्र का उत्तर आया, न वे आये । इससे ख्याल होता है कि या तो वे इलाहाबाद हैं नही, या रुग्न (रुग्ण) अथवा कार्य व्यस्त हैं । मुझको इसकी चिन्ता है, जो वास्तव (वास्तविक) समाचार हो, बतलाने की कृपा कीजियेगा ।

भवदीय
हरिऔध

१७३ | पत्र सं० ११०८ | फा० सं० ६

ॐ

बनारस
२५-१२-२६

श्रीमान् पण्डित जी !

प्रणाम ।

आशा है आप सपरिवार सकुशल होंगे। आपका पत्र यथासमय मिल गया था, उत्तर अब तक नहीं गया, क्षमा चाहता हूँ, विशेष कारणों से ही ऐसा हुआ ।

कविताओं के निर्देश के विषय में आपने जो लिखा है, उसके बारे में मेरा इतना ही निवेदन है कि आप कृपया ऐसा करने के लिये मुझे बाध्य न करें, और न उनका दोष मुझसे पूछें। ऐसा मैंने कभी नहीं किया, मैं इसको अच्छा नहीं समझता। मैंने जो कुछ आपको लिखा था, स्नेहवश लिखा था, वे निज की बातें थीं। किम्बहुना।

भवदीय
हरिऔध

१७४ | पत्र सं० ११११ | फा० सं० ६

ॐ

बनारस
२८-६-३०

श्रीमान् पण्डित जी !

प्रणाम ।

आशा है आप सपरिवार सकुशल होंगे। दो कृपापत्र मिले, कविता जाती है। विलम्ब के लिये क्षमा चाहता हूं। कृपा करके यह कभी न सोचिये कि आपने कोई अपराध किया है, जिससे मैं कविता नहीं भेज रहा हूं। आपसे अपराध हो नहीं सकता। आप ही लोग कुछ इने गिने बंधु तो रह गये हैं, नहीं तो समय ऐसा है कि कौन किसका है। प्रिय गिरीश कष्ट में हैं, गृह कार्य में व्यस्त रहते हैं। जीविका न रहने से कष्ट और बढ़ गया है। यदि आप उनसे आलोचना आग्रहपूर्वक न लिखा लेंगे तो, यह कार्य टलता ही रहेगा।

भवदीय
हरिऔध

१७५ | पत्र सं० १११०
फा० सं० ६

ॐ

बनारस
३-२-३३

श्रीमान् पण्डित जी !

प्रणाम ।

आशा है आप सपरिवार सकुशल होंगे । मैं सहर्ष, 'सरस्वती' के नववर्ष के विशेषांक की प्राप्ति सादर स्वीकार करता हूं । अब भी आपकी मुझ पर कृपा है, और आप मुझको भूल नहीं गये, यह जानकर मुझे बड़ा सतोष हुआ । मुझको इसका खेद था, कि आपका स्नेहमय हृदय मुझको कैसे भूल गया । मुझसे भूल हो सकती है, मै बूढा हूं, परन्तु आपकी स्नेहधारा को बन्द न होना चाहिये । मेरी कविता यथासमय न पहुँचे, तो जैसे, आप पहले माग लिया करते थे, वैसे ही सदा याद दिलाते रहिये, माग लिया कीजिये, परन्तु याद बनाये रखिये ।

भवदीय
हरिऔध

१७६ | पत्र सं० १११२
फा० स० ६

ॐ

बनारस
१६-३-३३

श्रीमान् पण्डित जी !

प्रणाम ।

आपका पत्र यथासमय मिल गया था, आज वह लेख भेजता हू । यह लेख पण्डित श्रीनाथ पाण्डेय एम० ए० का लिखा हुआ है । वे हिन्दू यूनिवर्सिटी के रिसर्च स्कालर है । वे यथासमय आपकी बहुमूल्य पत्रिका की और सेवा भी करते रहेगे । परिचय के लिये ही मैं इस लेख को स्वयं आपकी सेवा मे भेजता हूं । आगे मे वे ही अपने लेख आपकी सेवा मे भेजते रहेगे । आशा है यह लेख सरस्वती के पाच पृष्ठ से अधिक न होगा । यदि स्थान के अभाव के कारण इसे अप्रैल के अंक मे स्थान न दे सकें तो मई के अंक में स्थान प्रदान की कृपा कीजियेगा ।

भवदीय
हरिऔध

१७७ | पत्र सं० १५८३
| फा० सं० १३

ॐ

बनारस
४-१०-३३

श्रीमान् पण्डित जी !

प्रणाम ।

'भारत' मे आपका ब्रजभाषा विषयक लेख मैंने देखा । आपका 'ब्रजभाषा' नही वरन 'सत्यता' का प्रेम देखकर मुझको बडा हर्ष हुआ। आपने जो उत्तर दिया है, उससे आपकी विद्वत्ता और निष्पक्षपातिता प्रकट होती है। मैं चिरकाल से आपकी लेखमालाओ को पत्रो मे पढता आता हूं । आपकी विचार स्वतंत्रता आदरणीय ही नही उल्लेखनीय भी है। जिस समय पार्टीबन्दियो का बोलबाला है, उस समय आप जैसे निष्पक्ष हिन्दी लेखको की बडी आवश्यकता है, आप ही जैसे सहृदय और विचारशील विद्वानो द्वारा ही हिन्दी भाषा के समुचित परिमार्जन की आशा है। अपने लेख मे आपने मुझको जिन शब्दो मे स्मरण किया है, और जो कुछ मेरे विषय मे लिखा है, उसके लिये मैं आपका विशेष कृतज्ञ हूँ ।

भवदीय

अ० सिं० उपाध्याय 'हरिऔध'

१७८ | पत्र सं० १५८५
फा० सं० १३

ॐ

डा० अजमतगढ़ पैलेस
बनारस
१३-१-३४

श्रीमान् पण्डित जी !

प्रणाम ।

आशा है आप सकुशल होगे । हाल मे ब्रजभाषा पर एक बडा सुन्दर लेख आपका देखने में आया । उस लेख के लिये मैं आपकी हृदय से प्रशंसा करता हूं । आप खड़ी बोली के विरोधी नही हैं, परन्तु सत्य को छिपाना भी नही चाहते, आपकी यह बडी निर्भीकता, सत्यप्रियता, और तत्वग्राहिता है, इसमें सन्देह नही । विद्वान् को ऐसा ही महान हृदय होना चाहिये ।

आज मैं आपकी सेवा मे अपना 'रस कलश' नामक ग्रंथ भेजता हूं। यह ग्रंथ हाल ही मे प्रकाशित हुआ है। ग्रंथ सर्वथा निर्दोष है, यह बात नही कही जा सकती। परन्तु आप देखेंगे कि मैंने इसको कितना सामयिक बनाने की चेष्टा की है। मेरी दृष्टि मे ब्रजभाषा का आदर है, मैं उसको फली-फूली देखना चाहता हूं। अत-एव उसके प्रेमियो को मैंने इस ग्रथ मे वह मार्ग दिखलाने की चेष्टा की है, कि जिससे रस वर्णन मे भी वह सामयिकता की पूर्ण रक्षा कर सकें। आशा है आपके हाथो मे पहुचकर इस ग्रथ की शोभा होगी।

भवदीय
हरिऔध

१७६

पत्र सं० १५८६

फा० सं० १३

ॐ

आजमगढ
१७-६-३४

श्रीमान् पण्डित जी !

प्रणाम।

आशा है आप सपरिवार सकुशल होगे, और अब यात्रा से वापस आ गये होगे। आपका कृपा पत्र मिला, जो कुछ आपने लिखा, उसका विश्वास मुझे भी नही था, परन्तु आप जैसे तेजस्वी का चुप रह जाना मुझे खटकता बहुत था। आशा है आप प्रतिवाद अवश्य करेंगे। आप विश्वास है कि अन्य प्रतिश्रुत बातो का ध्यान भी अवश्य करेगे।

भवदीय
हरिऔध

१८० | पत्र सं० १५८४ / फा० सं० १३

ॐ आजमगढ

श्रीमान् पण्डित जी ! १५-१०-३५

प्रणाम।

आशा है आप सपरिवार सकुशल होंगे। कालेज अक्तूबर भर बन्द है, इसलिये मकान चला आया हूं, आजकल यही हूं। 'तरंगिणी' के आद्योपान्त पढने का अवसर यही मिला। आपने ब्रजभाषा में ऐसी सुन्दर कविता लिखी है, यह देखकर हर्ष हुआ। आप संस्कृत के विद्वान् है, फिर भी ब्रजभाषा से आपको इतनी ममता है, यह उसके लिये गौरव की बात है। मै ब्रजभाषा का प्रेमी हू, यह आपको ज्ञात है। जब तक वह एक प्रान्त की भाषा है तब तक उसको मृत भाषा मैं नही समझता। मेरा तो यह विचार है कि आपने उसकी सेवा करके पुण्य कार्य किया है। मैं आपके दोहो को आदर की दृष्टि मे देखता हू। उनमे नवो रस की छटा है। उनको अवश्य छपाइये, आज पुस्तक को वापस करता हूँ। पात्रो मे उनका आदर होगा। कुपात्रो को जाने दीजिये 'नोलूकोप्यवलोकिने यदि दिवा सूर्य्यस्य किं दूषणम्,' 'पियै रुधिर पय ना पियै लगी पयोधर जोंक।'

भवदीय

हरिऔध

१८१ | पत्र सं० १५८७ / फा० सं० १३

ॐ बनारस

श्रीमान् पण्डित जी ! १२-८-३६

आशा है आप सपरिवार सकुशल होंगे—हृदय मे आपका और आपके परिवार का मंगल चाहता हूं।

'तरंगिणी' मिली, कृपा के लिये धन्यवाद ! आप ब्रजभाषा के प्रेमी हैं, और उसकी सेवा करते ही रहते हैं, यह देखकर हर्ष होता है, ब्रजभाषा के चरणो

मे 'तरंगिणी' का उपहार अमूल्य है, आपकी सहृदयता उसमे पर्याप्त मात्रा मे प्रतिबिम्बित है, यह मैं मुक्त कण्ठ से कहता हूं। अरसिक अरसिक ही है, उसको जाने दीजिये, वह दया का पात्र है, उसकी उपेक्षा ही उसका दण्ड है, उसकी वेदना ही उसको क्षमा का पात्र बनाती है। पार्टीबन्दी की परवा मुझको कभी नही रही। आपको भी न होनी चाहिये। हम लोग ब्राह्मण जाति के हैं, हृदयानन्द ही हम लोगों का सम्बल है। मेरी समस्त रचनायें स्वान्त सुखाय हैं, आपका भी यही भाव होना चाहिये। विश्वास है, सहृदयों मे आपके ग्रंथ का आदर होगा। गुणीगुणम् वेत्ति, अधिक और क्या कहूँ। आप स्वयं सुबोध और विचारवान हैं।

भवदीय
हरिऔध

१८२ पत्र सं० १११५
फा० सं० ६

ॐ

सदावर्त्ती
आजमगढ
१६-७-४२

श्रीमान् पण्डित जी !

प्रणाम।

आशा है आप सपरिवार सकुशल होगे। आज बाबू परमेश्वरी लाल गुप्त आये, उनसे ज्ञात हुआ कि मेरा इतिवृत्त आप 'सरस्वती' मे छापना चाहते है। इस कृपा के लिये मैं अनुगृहीत हूगा, किन्तु निवेदन यह है कि उसके कुछ अश 'कर्मयोगी' मे निकल चुके है। आप शेषाश को छापेंगे या क्या? कृपया बतलाइये। 'कर्मयोगी' बन्द हो चुका है। उसके सम्पादक ने मुझसे वादा किया था कि 'कर्मयोगी' में कुल छप जाने पर उसको वे ग्रंथाकार भी छापेंगे। परन्तु अब इसकी आशा भी नही है। आप जिस रूप मे मेरे इतिवृत्त को छापेंगे मैं उसे स्वीकार करूंगा। द्विवेदी जी के कुछ पत्र मेरे पास हैं, परमेश्वरी लाल से ही मालूम हुआ कि उनकी नकल भी आप चाहते हैं। मैं यथाशीघ्र, उनकी नकल आपकी सेवा मे भेजूगा।

भवदीय
हरिऔध

'इतिवृत्त' के विषय मे अपना विचार शीघ्र लिख भेजने की कृपा कीजियेगा।

पौष-ज्येष्ठ : शक १८०३-४]

१८३ | पत्र सं० ११११६
| फा० सं० ६

वितर्क

चतुर्दशपदी

किंशुक की लालिमा कालिमा से न बची है।
कलित-काकली-मयी, कल-मुँही गई रची है।।
रसिक-प्रवर, रसलीन, परम-प्रेमिक, है तो भी।
मधुकर है मद मत्त, महा-चचल, मधु-लोभी।।
लाल लाल-कमनीय-कुसुम-कुल-शोभित-सेमल।
लाता है रस-हीन, विहग-वचक, अरुचिर-फल।।
सरस, मद-गति, मधुर मलय-मारुत है होता।
किन्तु मदन आवेग बीज उर मे है बोता।
चद-चाँदनी चमक-दमक है चारु दिखाती।
पर विधुरा को बार-बार है व्यथित बनाती।।
है कुसुमाकर, रस-निकेतन, नव-जीवन दाता।
किन्तु है महा-मत्त, रुज-भवन, मोह-विधाता।।
यह क्या है ? क्या है विधि-अविधि ? या विधान-स्वाधीनता।
अथवा गुण-अवगुण-गहन-गति या भव अनुभव हीनता।।१।।

प्रियवर,

दो कविता जाती है—एक सरस्वती और दूसरी बालसखा के लिये। प० देवीदत्त जी से मेरा प्रणाम कहियेगा। अब मैं १० तक कविता भेज देने का उद्योग करूँगा।

हरिऔध

"सरस्वती का विशेषाक सुन्दर निकला है, उसमें वे विशेषताये सुरक्षित हैं जो उसका सर्वस्व हैं। लेख और कवितायें सामयिक और उपयोगिनी है, और योग्य हाथो मे लिखी गई हैं। यह देखकर हर्ष होता है कि सरस्वती अपनी प्राप्त प्रतिष्ठा को अक्षुण्ण रखने मे पूर्ववत् परिकरबद्ध है।

हरिऔध

१८४ | पत्र सं० १११८
फा० स० ६

सदावर्त्ती
ॐ आजमगढ़
श्रीमान् पण्डित जी ! ५-८-४२
प्रणाम ।

आशा है आप सपरिवार सकुशल होगे । कृपा पत्र आपका मिला, वह वैसा ही स्नेहपूर्ण है, जैसा प्रेममय मेरे प्रति आपका हृदय है । जब कभी आपका समागम हुआ तब—आपको मैंने अपना अनुरक्त पाया, यह आपकी महत्ता और विशाल हृदयता है, अधिक क्या कहू ।

आपकी इच्छानुसार मैं 'इतिवृत्त' का नवा प्रसंग भेजता हूं, कर्म्मयोगी मे आठ प्रसग छप चुके है । ग्रथ मे सोलह प्रसंग है, क्रमश —शेष सर्गों व प्रसगो को मैं बराबर आपकी सेवा मे भेजता रहूगा । मैंने अपने कागजात मे स्वर्गीय पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी के पाच पत्र पाये हैं । उनकी नकल भी भेजता हूं । मैं खोज रहा हूं यदि उनके और पत्र मिले, तो उनकी नकल भी अवश्य आपकी सेवा में भेजूगा ।

भवदीय
हरिऔध

१८५ | पत्र स० १११९
फा० सं० ६

सदावर्त्ती
ॐ आजमगढ
श्रीमान् पण्डित जी ! २-९-४२
प्रणाम ।

आशा है आप सपरिवार सकुशल होगे । इतिवृत्त का दसवा, ग्यारहवां, बारहवां, प्रसंग आज मैं सेवा में भेज रहा हूं । १३ वा प्रसंग मैं लिख रहा हूं । कुल सोलह प्रसंग ग्रंथ मे होंगे । जब तक प्रेषित प्रसंग सरस्वती में छपेगे, तब तक ग्रथ

तैयार हो जायेगा। पं० उमेश चन्द्र मिश्र का पत्र आया है, जो प्रसंग मैंने भेजा था वह अगस्त मे सरस्वती मे छप गया है। उनके लिखने से यह ज्ञात हुआ है। कृपया अगस्त की सरस्वती भेजवाइये। अब सरस्वती को मेरे पास भेजते रहिये, मैं उसकी सेवा करता ही रहूंगा। मिश्र जी से मेरा आशीर्वाद कह दीजियेगा। प्रेषित प्रसंगों की पहुँच लिखियेगा। और सब कुशल है।

भवदीय
हरिऔध

१८६ पत्र स० १११३
फा० सं० ६

सदावर्त्ती
ॐ
आजमगढ़
२३-११-४२

श्रीमान् पण्डित जी !

प्रणाम।

आशा है आप सपरिवार सकुशल होगे। मैंने सुना है कि 'इतिवृत्त' का कुछ अंश नवम्बर की सरस्वती मे भी निकाला है। परंतु मेरे पास वह अंक नही आया, कृपा करके भेजवाइये। यदि वे यों न भेजें तो वी० पी० से भेजवाइये। विशेष अनुगृहीत हूँगा।

भवदीय
हरिऔध

१८७ पत्र स० १११७
फा० सं० ६

सदावर्त्ती
ॐ
आजमगढ
२३-२-४३

श्रीमान् पण्डित जी !

प्रणाम ।

आशा है आप सपरिवार सकुशल होंगे । आज 'इतिवृत्त' का दो प्रसंग भेजता हूँ, अब एक प्रसंग रह गया, वह भी लिखा गया है, संशोधन शेष है, संशोधन हो जाने पर उसे भी शीघ्र भेजूंगा । जो दो प्रसंग भेज रहा हूँ, उसे भी इधर ही लिखा है, इसीलिये इनके भेजने मे विलम्ब हुआ । स्वास्थ्य अच्छा न रहने के कारण अब कार्य्य यथासमय नही हो सकता है विलम्ब के लिये क्षमा कीजियेगा । सरस्वती का केवल एक अंक मेरे पास आया और अंक नही आये । इतनी कृपा कीजियेगा कि जिन अंको मे इतिवृत्त छपे, उनको अवश्य भेजवा दीजियेगा । विशेष विनय ।

भवदीय
हरिऔध

१८८ पत्र सं० १११४
फा० सं० ६

सदावर्त्ती
ॐ
आजमगढ
२५-४-४३

श्रीमान् पण्डित जी !

प्रणाम ।

आशा है आप सपरिवार सकुशल होंगे । इतिवृत्त १५ प्रसंग तक मैं आपकी सेवा मे भेज चुका हू । आपने अपने पत्र मे प्राप्ति स्वीकार करते हुए लिखा है, मई से इसका छपना आरंभ होगा । कृपया जिन अंको मे वह छपे उनको मेरे पास भेजवाते रहियेगा । सोलहवा प्रसंग अन्तिम है वह भी शीघ्र सेवा में जायेगा । सरस्वती के एक पिछले अंक मे उसका एक प्रसग छप चुका है, कृपया उसको भेजवा दीजियेगा । यदि प्रेस यों भेजना न पसंद करे तो वी० पी० भेजवा दीजियेगा । मुझको कोई आपत्ति न होगी ।

भवदीय
हरिऔध

श्री निराला
के पत्र
श्री देवीदत्त शुक्ल के नाम

खण्ड : ७

Bhargava Majestic Hotel,
Aminabad Road, Lucknow.

17. 3. 33.

[श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का पत्र पं० देवीदत्त शुक्ल के नाम]

१८६ पत्र सं० ४१६
फा० सं० ४

गढाकोला, मगरायर,
उन्नाव
११-१-३२

प्रिय शुक्ल जी,

एक सामाजिक कहानी 'कमला' भेजता हूं। आपकी आज्ञा के अनुसार ५ सफे मे समाप्त न हो सकी। २/२½ सफे बढ गये। सिलसिला है, इतना ही होकर रहा। पढकर अपनी राय दीजिएगा। 'सरस्वती' कम से कम शीघ्र जारी कराइये। इति।

सविनय
सूर्यकान्त त्रिपाठी

भाषा कही कही कुछ क्लिष्ट हो गई है। प्रकरण ही ऐसा हो गया है। नही तो मेरी समझ मे शैथिल्य आ जाता। फिर बिल्कुल सीधी भाषा मे ही आपके लिये लिखा करूंगा, यदि यह पत्रिका के लिए कडी मालूम होगी।

सूर्यकान्त

१६० पत्र स० ४२०
फा० सं० ४

गढाकोला, मगरायर
उन्नाव

प्रिय शुक्ल जी

आपकी सरस्वती मे लेख आदि का कुछ पुरस्कार भी मिलता है या नही लिखने की कृपा करे। हम लिखे तो कुछ मिलेगा ?

एक पत्र हमने प्रेस के मैनेजर को लिखा है। उपन्यास आदि यदि कुछ मौलिक निबन्ध छापना चाहे और आपसे सलाह लें तो कह देने की कृपा करे। आशा है आप प्रसन्न हैं।

आपका सविनय
सूर्यकान्त त्रिपाठी
२०-१२-३१

१८१ पत्र स० ४२१ — फा० सं० ४

भार्गव मैजेस्टिक होटल
हिवेट रोड, लखनऊ
१७-३-३३

प्रिय शुक्ल जी, प्रणाम।

आपका कृपापत्र मिला। पहली सूचना भी मिल चुकी है। आप 'सरस्वती' को पुष्ट साहित्यिक सौन्दर्य से भूषित कर निकालना चाहते हैं पढ कर बड़ी खुशी हुई। मैं यथासाध्य सेवा अवश्य करूँगा। अभी कुछ उलझन है। शीघ्र फुर्सत पा लगा। कृपा रखियें। इति।

सविनय
'निराला'

१८२ पत्र स० ४४२ — फा० स० ४

दि भार्गव मैजेस्टिक होटल
हिवेट रोड, लखनऊ
१७-११-३३

मान्यवर शुक्ल जी प्रणाम।

आपका कृपा पत्र मिला। मैं प्रयत्न करके भी 'सरस्वती' के लिये अब तक कुछ नहीं लिख सका। 'सुधा' अधिक से अधिक समय तो लेती थी। इस बार अवश्य आज्ञापूर्ति करूंगा। पहले एक सामयिक सरस विचारपूर्ण निबन्ध देना चाहता हूं—'नाटक-समस्या' पर। विश्वास है, आप लोग पसन्द करेंगे। फिर कविता, कहानी, जैसी आप आज्ञा करेंगे भेजूंगा। ठाकुर साहब श्रीनाथ सिंह को सप्रेम।

विनीत
'निराला'

सरस्वती आप बहुत सुन्दर निकाल रहे हैं।

—नि०

१६३ | पत्र सं० ४२३ | फा० सं० ४

१७ लाटूश रोड
(अपर स्टोरी)
लखनऊ
२१-३-३४

आदरणीय शुक्ल जी, प्रणाम।

बहुत दिनो मे आपको लिखने की फुर्सत मुझे नही मिली। काम अधिक था, प्रयोजन कम। इस वर्ष के प्रारम्भ से ही मुझे सरस्वती नही मिली। सुना है, इस बार मेरा कोई गीत निकला है। यह भी सुना है कि आप कविता के लिये भी पुरस्कार देते है। यदि सच हो तो सरस्वती और समय पर पुरस्कार भेजवाने की कृपा करे। सविशेष आपका पत्र मिलने पर लिखूगा। मेरा लेख शायद इस महीने मे छप रहा हो ? क्या आप राधा वाले तिवारी जी का शिष्ट तथा युक्तिपूर्ण लेख छापेगे ? और कुछ लिखना है फिर अर्ज करूंगा। श्रीनाथ सिंह ने मुझे पद्य भेजने की आज्ञा की थी। अब लिखूगा तो भेज दूगा।

सविनय
'निराला'

१६४ | पत्र सं० ४२४ | फा० सं० ४

१७ लाटूश रोड
(अपर स्टोरी)
लखनऊ
२५-४-३४

आदरणीय शुक्ल जी,

मुझे अपने पत्रोत्तर मे आपका कृपापत्र मिला था; बहुत दिन हुए, पर लिखने पर भी जनवरी मे मेरी सरस्वती बन्द है, यद्यपि एक गीत भी मेरा छप चुका है।

मैंने अपने उस पत्र मे एक विशेष बात के लिये लिखा था कि आपका उत्तर मिलने पर लिखूगा; वह बात यह है कि प्रयाग मे हिन्दी-साहित्य-भवन या संग्रहालय या ऐसा ही कुछ बनने जा रहा है, आप जानते हैं; उसमे एक द्विवेदी मन्दिर या प्रकोष्ठ बनेगा यदि दो हज़ार रुपये कम से कम मिलें। मेरी इच्छा है, हम लोग इसके लिये प्रयत्न करें—सहायता दें। अभी मैंने अपने मित्रो को नही

लिखा। स्वय कुछ धन देने का उपाय करके लिखूगा। स्वयं भी पुस्तक या लेखो से ही दे सकता हूँ। मैं महाजन नही जो स्वेच्छया चलकर 'गत स पन्था', कह कर दूसरे को पुकारूँ; इसलिये मैं चाहता हूं, सरस्वती मे मेरे जो लेख (३४/३५) दो साल तक निकले उनका पुरस्कार व्यवस्थापक हिन्दी-साहित्य-मन्दिर, प्रयाग को द्विवेदी-मन्दिर की सेवा के रूप मे आप स्वय या श्रीनाथ सिंह जी देकर रसीद ले आया करे या मैनेजर, सरस्वती द्वारा भेजवा दे। मुझे रुपयो को सूचना मिल जानी चाहिये कि इतने गये। मेरी कविता और लेख का पुरस्कार भी इसी प्रकार भेज देने की कृपा करें। अवश्य इसमे मेरे पुरस्कार मे कमी न हो कि पहले की तरह एक सात आठ पृष्ठ की कहानी के ७, ८, भेज दिये। मुझे क्या मिलगा कविता के लिये और लेख के लिये प्रति पृष्ठ कितना, उत्तर मे सूचित कीजिये और यह भी बतलायें कि साल म कम से कम छ बार कविता-कहानी-लेख आदि से सरस्वती स्थान दे सकेगी नही। पन्त जी का पुरस्कार मुझे मालूम है।

सविनय
'निराला'

१९५

पत्र सं० ४२६
फा० स० ४

१७, लाटूश रोड
लखनऊ

मान्यवर शुक्ल जी,

मैंने अभी-अभी एक पत्र लिफाफे मे भेजा है। एक भूल हो गई। मेरी सरस्वती हमेशा नीचे पते पर भेजे। यहा के दरिद्रो के वाचनालय को मैंने अपनी सरस्वती दे दी है। यही से मैं भी पढ लिया करूंगा। हमेशा के लिये पता नोट कर ले। केवल पत्र लाटूश रोड के पते पर लिखे। इति। पता—श्री रामकृष्ण मिशन सेवाश्रम अमीनाबाद, लखनऊ।

आपका
'निराला'

१९६

पत्र सं० ४२७
फा० सं० ४

५८ नारियल वाली गली
लखनऊ
१-६-३४

प्रिय शुक्ल जी,

आपके पत्र का जो इतने दिनो तक उत्तर नही लिखा, इसका कारण आपको अप्रिय सत्य न सुनाना था। मुझे पंत जी के पुरस्कार का हाल उन्ही से मालूम हुआ था, अब आप ही दोनो सत्य का निर्णय कर ले। उन्होने कभी पुरस्कार नही मागा, आप के और लेखक भी सत निहाल सिंह जैसे पुरस्कार न लेते होंगे, तभी इस तरह छप रहे। यह ठीक होगा, पर मैंने जो पुरस्कार मागा, वह अपनी वार्वा को हार बनवाने के लिये—क्यों साहब? खैर, मई निकट थी, इसलिये मैंने कुछ लिखा नही था। अब आपको विनयपूर्वक सूचित करता हू कि मेरा लेख और फोटो ऊपर के पते पर बैरंग भेज दीजिये। छपने पर मै ६ रु० पृष्ठ लूगा। सरस्वती आपके लिखे पते पर अब भी नहीं आई। कही आप भेजते हो तो सदा के लिये बन्द कर दे। आशा है आप जैसे पुष्ट विचारों के मनीषी इन पक्तियो का सीधा अर्थ लेकर क्षमा करेंगे।

आपका
'निराला'

१९७

पत्र सं० ४२८
पत्र सं० ४

५८ नारियल वाली गली
लखनऊ
५-९-३४

प्रिय शुक्ल जी,

अब आपकी भेजी हुई 'सरस्वती' यथासमय रामकृष्ण मिशन मे मुझे देखने को मिल जाती है। इस कृपा के लिये धन्यवाद।

सविनय
'निराला'

१९८ पत्र स० ४२९ | फा० सं० ४

५८ नारियल वाली गली
लखनऊ
१३-१२-३४

प्रिय शुक्ल जी, प्रणाम ।

श्री रामकृष्ण मिशन के पते पर आपकी भेजी 'सरस्वती' यथासमय आती रही । मिशन मे गरीब विद्यार्थी नि:शुल्क पढ़ाये जाते हैं । उन्ही के पढने के लिये मैंने अपनी पत्रिका दी थी । परन्तु चूंकि आपकी कुछ उदासीनता सी देख रहा हू, इसलिये लिखकर जानना चाहता हूं कि आप १२)/२४) का लेख मुझसे मुफ्त लेकर पत्रिका आगे जारी रखने की कृपा करेंगे या नही ?

भवदीय
सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

१९९ पत्र स० ४३० | फा० स० ४

५८ नारियल वाली गली
लखनऊ
१८-१२-३४

प्रणम्य शुक्ल जी,

आपका कृपापत्र मिला । यह आपकी बहुत बडी कृपा है कि पसन्द आने पर आप लेख का पुरस्कार भी देंगे । मैं तो 'सरस्वती' की उस दया के लिये मुफ्त एक लेख सेवा मे भेजना चाहता था । सरस्वती को पढ कर यथासाध्य उसी कोटि का कोई लेख भेजूगा ।

आपकी उदासीनता की कल्पना मिथ्या ही होगी, क्योकि आपकी भाषा जोरदार है । आप भी मेरे प्रणम्य, अग्रज, समर्थ और मुझसे कई गुण बडे हैं ।

डलमऊ का इतिहास मेरे कोई सम्बन्धी लिख रहे हैं, मुझे पता नही । मैं एक उपन्यास अलबत्ता लिख रहा हूं जिसमे वहाँ का जिक्र है । उपन्यास ऐतिहासिक पृथ्वीराज के समय का है । नाम है 'प्रभावती', समाप्त होने को है । छपने पर सेवा मे भेजूगा । 'समन्वय' की फाइल यहाँ नही । अद्वैत आश्रम,

४ वेलिंटन लेन, कलकत्ता, पहला ठिकाना शायद था। वहीं विवेकानन्द जी की अँगरेजी किताबों मे से देख लीजिये, मुमकिन इण्डियन प्रेस या लाइब्रेरी मे मिल जाय। फिर लिखकर मंगा लीजिये।

शक्ति पर आपके लेख अच्छे और संग्रह योग्य हैं। मैंने सोचा था किताब छप चुकी होगी। कृपाभाव।

सविनय
'निराला'

२०० पत्र स० ४२५ / फा० सं० ४

११२ मकबूलगंज
लखनऊ
२४-१०-३७

स० सरस्वती
आदरणीय शुक्ल जी,

मेरी कविता के साथ सम्भव हो तो मेरा चित्र अवश्य देने की कृपा करे, देखने मे कुछ अच्छा हो जायगा। इति।

सविनय
निराला

२०१ पत्र स० ४३१ / फा० स० ४

द्वारा/पण्डित रामधनी द्विवेदी इस्क्वायर
शेरन्दाजपुर
पो० आ० डलमऊ
(रायबरेली)
१५-११-३७

आदरणीय शुक्ल जी,

प्रणाम।

सरस्वती मे छपे मेरे गीत का पुरस्कार ऊपर के पते पर भेजवाने की कृपा करें। और सब कुशल है। आप लोग सानन्द होंगे। इति शुभम्।

कृपाभिलाषी
सविनय
'निराला'

२०२ | पत्र सं० ४३२
| फा० सं० ४

आदरणीय शुक्ल जी,

आपके पत्र का उत्तर इसलिये नहीं दिया कि मैं अपने पहले पत्र में अर्ज कर चुका था कि आप जो पुरस्कार उचित समझें, दें, फिर मुझे बहुत खला तो आपको लिखूंगा, यो यह कहानी मैं आपकी आज्ञा पर भेज रहा हूं।

दुःख है, कहानी अधलिखी ही रह गई और आपके समय पर मैं नहीं भेज सका। इधर कलकत्ता विद्यासागर कालेज गया था। आज लौटा हूं। लखनऊ से कहानी पूरी करके भेजूंगा, जनवरी में न सही, दूसरे महीने में निकाल दीजियेगा, अगर आपको पसन्द आये।

आचार्य द्विवेदी जी के स्वर्गवास से हार्दिक दुःख है। हमारा सर्वश्रेष्ठ जीवित स्तम्भ गिरा, अक्षय कीर्ति स्तम्भ ही रहा।

सविनय
निराला

२०३ पत्र सं० ४३३ भूसामण्डी, हाथीखाना, लखनऊ
फा० सं० ४ ४-११-३८

आदरणीय शुक्ल जी,

कृपापत्र मिला। लिख लेने पर कहानी भेजूंगा। जो कुछ आप अधिक से अधिक दे सकें, जिससे कष्ट भी न हो, देने की कृपा करें। कष्ट झेलना तो मेरा ही धर्म रहा है। आप तो जानते हैं, मैंने केवल कलाकार के रूप में साहित्य सेवा की है और बदले में लाछन पाया है। रुपये मुझे मिले या कौड़ियों मोल मैंने मिहनत की। लिखी चीजें गुजर के लिये बेच दीं, आप जानते ही हैं। रही बात बिक्री की सो इसका रास्ता सम्मेलन, विश्वविद्यालय और साहित्यिकों ने भी रोक रक्खा था। अब तक आप जैसे कृपालु जनों के आशीर्वाद से ही जैसे चलता गया। 'सरस्वती' की कीमत लोक-प्रसिद्ध है। मेरे न चुकाने से अटकी नहीं रहती। मैं इतना ही कहना चाहता हूँ। मैंने सरस्वती से ही हिन्दी सीखी है। प्रणाम।

सविनय
सूर्यकान्त

श्री राहुल

के पत्र

श्री देवीदत्त शुक्ल

श्री रामगोविन्द त्रिवेदी

तथा

श्री किशोरी दास वाजपेयी के नाम

खण्ड : ८

प्रिय शुक्ल जी,

[illegible]

आपका

राहुल सांकृत्यायन

[महापण्डित राहुल सांकृत्यायन का पत्र पं० देवीदत्त शुक्ल के नाम]

२०४ | पत्र सं० १८६०
| फा० सं० १६

काशी विद्यापीठ
बनारस छावनी
१७-८-३१

प्रिय शुक्ल जी,

एक जगह न रहने, तथा अवकाशाभाव से आपको पत्र न लिख सका। मैं एक बार आपसे मिलने इलाहाबाद गया था, किंतु उस दिन प्रेस मे छुट्टी थी। 'सरस्वती' मे मेरी सारी तिब्बत यात्रा का निकलना कठिन था। समय भी कई वर्ष का लग जाता, इसीलिये पूरी यात्रा तो 'विद्यापीठ' मे निकालने को दे दिया। लेकिन आपके पत्र के लिखे अनुसार खास खास लेख चित्र सहित मैं 'सरस्वती' को दूंगा। अपका पत्र मिलने पर तिब्बत नेपाल की युद्ध की तैयारी पर, जो कि पिछले साल हुई थी, एक सचित्र लेख भेजूगा। कृपया जनवरी से लेकर जितनी प्रतियों मे मेरे लेख छपे हैं, उनकी कुछ कुछ प्रतिया मेरे पास भेज दें। लेख मात्र भेजें तो अच्छा। चौरासी सिद्धो वाला मूल लेख (चित्रों सहित) भी अवश्य भेज दें। मैं वर्षावास के लिये यहा ठहरा हूं। आश्विन पूर्णिमा तक यही रहूंगा।

आपका
राहुल सांकृत्यायन

२०५ | पत्र सं० २५६३
| फा० सं० २४

लन्दन
२६-१०-३२

प्रिय त्रिवेदी जी,

वैमानिक डाक द्वारा लेख मिल गये। मैंने यहा से जो लेख भेजा था, आशा है, मिल गया होगा। यहां सर्दी शुरू हो गयी है। मैं भी लौटने की बात सोच रहा हूं। दिसम्बर या जनवरी तक लंका लौटने की आशा रखता हूं। मैंने अपने से संगृहीत तिब्बती चित्रो को पटना म्यूजियम को देना तै कर लिया है। इसके लिये श्री जायसवाल जी को पत्र भी लिख दिया है। साथ मे चित्रपटो के कुछ फोटो भी भेज दिये हैं, और लिख दिया है, कि देखकर उन फोटुओ को आपके

पास भेज दें। आशा है आपने पुरातत्त्वांक की छपाई शुरू कर दी होगी। यहाँ से रवाना होते वक्त मैं वैमानिक डाक से सूचना दे दूंगा। यूरोप के कौन-कौन से देशों में जा सकूगा, इसका अभी निश्चय नही कर पाया है (हूँ)। आशा है, श्री निवासाचार एम० ए० का लेख आपको मिला होगा। उनका पता स्कूल आफ ओरियण्टा (ओरियण्टल) स्टडीज, लन्दन यूनिवर्सिटी (School of Orienta Studies, London University) है। पता नोट कर लीजिये। छपने पर एक प्रति विशेषाक की उन्ही (उन्हे) भेज देनी होगी। श्री मोतीचन्द जी का लेख अभी नही आया। आने पर भेज दूंगा।

आपका
राहुल सांकृत्यायन

पुनश्च : भेजे लेख छप जायं, तो एक दो सचित्र लेख यहां के बारे मे भी दूंगा। रा० सा० मधुवनी के के पडित शिवशंकर झा के सुपुत्र पास होके आई० सी० एस० मे ले लिये गये है। एक साल उन्हे और पढना होगा। यह शायद प्रथम मैथिल आई० सी० एस० होंगे।

२०६ | पत्र सं० २१४७
शो-केस

द्वारा/पोस्टमास्टर
लेह-लद्दाख
(कश्मीर स्टेट)
१-६-३३

प्रिय शुक्ल जी,

'सरस्वती' को उपरोक्त पते पर भेजियेगा। आपने लेखो के पारितोषिक के बारे मे कहा था। मुझे तो इच्छा है, न आवश्यकता, किन्तु मै अपने साथ एक लिखने वाले को ले जा रहा हूँ। जिसके खर्च के लिये आवश्यकता होगी। यदि आप वैसा प्रबंध कर सकें तो अच्छा। यदि पहिले लेख को भी शामिल कर लें तो और अच्छा। ४-५ तारीख को मैं वहाँ के लिये यहाँ श्रीनगर से रवाना होता हूँ, दो सप्ताह मे पहुंच जाऊंगा, फिर तीन मास लद्दाख मे ही बिताना है। दूसरा लेख वहाँ पहुँच कर।

आपका—राहुल सांकृत्यायन

२०७ | पत्र सं० १८६२ | फा० सं० १६

द्वारा/पोस्टमास्टर
लेह-लद्दाख
कश्मीर
७-६-३३

प्रिय शुक्ल जी,

परसो मैं यहा पहुंचा। दो मास, प्राय., यही रहूंगा। मेरा लेख छप गया हो, तो सरस्वती को भेज दीजिये। तिब्बत के बारे मे एक लेख भेजने वाला हूं। मेरी तिब्बत यात्रा को पं० जयचंद विद्यालंकार पुस्तकाकार छपवा रहे है, कृपया लेखो मे उपयुक्त ब्लाक उन्हें दे दें। छपाई वह वही प्रयाग मे ही करायेंगे।

मैं अपने साथ एक हिन्दी लेख लाना चाहता था। किन्तु नही ला सका। मैं अबकी कोडक का केमरा साथ लाया हूं। किन्तु इसमे उतना अच्छा काम नही होता। मैंने अपने एक साथी के पास रोली फ्लेक्स (Rollie flex) केमरा देखा। वह बडे काम का है। यदि आप उसके खरीदने मे आधा रुपया दे सके, तो यहा के सुन्दर चित्रों को लेने म बडी सहायता हो। आधा रुपया मैं दे सकता हूं। इसके कहने की आवश्यकता नही, कि मेरी यात्राओ मे आपको उससे लिये चित्र मिलेंगे। लेखो के लिये पृथक् देने की आवश्यकता न होगी। दर्याफ्त करके यह तो लिखने का कष्ट करे (करें) होंगे, कि रोली फ्लेक्स (Rollie flex) जर्मन (German) केमरे की कीमत क्या है?

आपका
राहुल सांकृत्यायन

२०८ | पत्र सं० १८८८ | फा० सं० १६

लेह लद्दाख
(कश्मीर)
२७-७-३३

प्रिय शुक्ल जी,

अलग पैकट में अपनी तिब्बत यात्रा का अवशिष्ट अंश भेज रहा हूं। पंडित जयचद विद्यालंकार मेरी सम्पूर्ण यात्रा को पुस्तकाकार छपवाने जा रहे हैं। उन्ही के आग्रह पर अभी को लिखकर भेज रहा हू। वह दारागंज मे रहते हैं। इसे

कृपया उनके पास भिजवा देंगे। यदि इसमें कोई अध्याय पसन्द आवे, तो आप खुशी से छाप सकते हैं। पीछे एक लेख मैंने तिब्बत नेपाल युद्ध के बारे मे भेजा था, वह मिला कि नहीं ? लिखेंगे, तो लद्दाख के बारे मे एक सचित्र लेख भेजूंगा।

आपका

राहुल सांकृत्यायन

आशा है मेरे लेखों मे छपे ब्लाको को आप पंडित जयचंद जी को देने की कृपा करेंगे।

रा० सा०

२०६ पत्र सं० १८८७
फा० सं० १६

द्वारा/पोस्टमास्टर
कलिम्पोंग (बंगाल)
७-४-३४

प्रिय शुक्ल जी,

तिब्बत जाने के लिये यहाँ पहुँच गया हूँ। एक सप्ताह मे यहाँ से आगे चला जाऊँगा। तो भी जब तक दूसरा पता न लिखूं, ऊपर का ही पता रहेगा। मैंने चम्पारन, सारन, मुगेर के जिलो के भूकम्प प्रभावित स्थानो के बहुत फोटो लिये थे। लिखना भी चाहता था, किन्तु अब न समय है, न यहाँ सामग्री। यदि आप चाहें तो एक कालम की भूमिका के साथ मैं उन्हे भेज दूँ, जितने छापने चाहे, छाप लेंगे। श्रीनाथ जी को भी मेरी मंगलकामना कहे।

आपका

राहुल सांकृत्यायन

२१० पत्र सं० १८८६
फा० स० १६

ल्हासा २७ मई १६३४

प्रिय शुक्ल जी,

१६ मई को राजनाथ के साथ मैं ल्हासा पहुँच गया। अबकी वह पहिले की कठिनाई कहाँ, साथ में इस वक्त कैमेरा भी है और फोटो (Photo) ले भी

रहा हूँ। तिब्बत यात्रा लिख चुका हूँ, लेकिन लिखने की चीजे और भी मिल सकती हैं। सरस्वती के लिये एक दो सचित्र लेख भेजने की इच्छा तो है, किन्तु तब जब आप मेरे कैमरे के लिये कुछ भोजन भेज दें और वह भोजन यह है कि एग्फा, बाम्बे (Agfa, Bombay) को पैसा भेजकर उनसे :—

एग्फा, बी १ ६ (Agfa, B 1 6)

बी. १७ (B. 17)

२ $\frac{१}{४}$ × २ $\frac{१}{४}$ इन (In) आइसोक्रोम अल्ट्रा-रैपिड

(Isochrom, Ultra-Rapid)

के दो दर्जन फिल्म रोल (Film Roll) [प्रत्येक रोल मे ६ एक्सपोजर होते है] मुझे नीचे के पते पर भेजवा दीजिये। यह फिल्म एग्फा (Film Agfa) के कलकत्ता की शाखा से भी नही मिलेंगे और दूसरे शहरो से मिलना तो बहुत ही मुश्किल है। मेरे कमरे (कैमरे) का नाम है रोली-फ्लेक्स (Rollie-flex) है। सीधा बबई लिखकर भेजवायेगे तभी मुझे वक्त पर मिलेगा। मैं दो महीना ल्हासा मे रहूँगा। फिर ३ महीने अन्य जगहो मे घूमने मे लगेंगे। चिट्ठी और ४ महीने की सरस्वती भेजने को पता यह है—

राहुल सांकृत्यायन

द्वारा/मिसर्स धर्ममैन एण्ड सन्स

ग्यालिग-छोगपा

ग्यान्त्से (तिब्बत)

शेष सब आनद है—

आपका—

राहुल सांकृत्यायन

२११ | प० सं० २५६० / फा० सं० २४

ल्हासा

६-६-३४

प्रिय शास्त्री जी,

सानंद १६ मई को ल्हासा पहुँच गया। इन बीस-बाईस दिनों को विनय-

पिटक के हिन्दी अनुवाद मे लगाया है, अभी ५, ६ दिन मे समाप्त होगा । बुद्धचर्या से बड़ा ही ग्रन्थ होगा । अबकी बार लौटकर उसे छपवाना होगा ।

अभी संस्कृत के दर्शन-ग्रन्थों की खोज के काम (में) समय नही दे सका हूँ । तब भी एक ताल पत्र की पुरानी पुस्तक जो एक दर्शन ग्रन्थ की टीका है, मिली है ।

अभी प्रायः दो मास यही रहना है, फिर यहाँ से पुराने मठो की खाक छानने को निकलूंगा ।

"गगा" नही आई । यदि यूरोपयात्रा अभी नही छपी, तो उसको लेखरूप मे "गंगा" मे निकाल दें । अच्छा हो यदि पुस्तकाकार निकाल दे, तो भी आपकी दिक्कतो का मुझे ख्याल है पंडित जी स पूछें न, आशा है वह स्वीकार कर लेगे । देर होने मे बातें बासी हो जायेगी । हाँ १९३३-१९३४ की गंगा मे मेरे जितने लेख छपे हैं, उन्हे काटकर भेज दें । सब भेजने मे व्यर्थ का बोझ हो जायेगा । एक पुरातत्त्वाक को भी भेज दे ।

तहसीलदार साहेब और यदि घूपनाथ हो तो उन्हे भी मेरी मगल कामना सुनावें और सब आनंद ।

तुम्हारा
राहुल साकृत्यायन
द्वारा/मिसर्स धर्ममैन एण्ड सन्स
ग्यालिग छोगपा
पो० ग्यान्त्से (तिब्बत)

२१२

पत्र सं० २५९१ — फा० सं० २४

ल्हासा
९-८-३४

प्रिय त्रिवेदी जी,

१९-७-३४ का पत्र मिला । पंडित रामदहिन मिश्र ने मेरी पुस्तके छापने की इच्छा प्रकट की है । "कुरानसार" और 'मेरी तिब्बत यात्रा" को

उनके पास बांकीपुर भेज दें (ग्रथमाला कार्यालय, बाकरगंज, बाकीपुर)। कटिंग और "पुरातत्वांक" पहुँच गये।

अभी मैं दस दिन के लिये उत्तर दिशा के कुछ पुराने मठों को देखने गया था। उधर कोई संस्कृत हस्तलिखित ग्रथ नही मिला।

सप्ताह बाद ब्रह्मपुत्र की उपत्यका के मठो मे तीन सप्ताह के लिये जाऊँगा।

जिस यात्रा से अभी-अभी लौटा, बडी खतरनाक रही। वैसे तिब्बत की यात्रा तो सभी खतरनाक है।

धूपनाथ को उनके घर पर पत्र लिख रहा हूँ।

आशा है आप सानंद होगे।

आपका
राहुल सांकृत्यायन

२१३ | पत्र सं० २५६२ — फा० रा० २४ ल्हासा ८-७-३४

प्रिय शास्त्री जी,

पिछले उत्तर नही मिला (मिले)। इधर "गंगा" भी नहीं आ रही है, जिससे अब चित्त सन्दिग्ध हो चला है। मेरे (यूरोप यात्रा एव लद्दाख यात्रा सबंधी) लेखो को न हो तो दूसरे पत्र मे भेज दें। और कुरानसार को धूपनाथ को दे दे, या किसी दूसरे प्रकाशक द्वारा छपवावें। यह तभी जब कि आप 'गंगा' से अलग हो गये हो, या वहा उनका शीघ्र छपना संभव न हो। मैंने विनय पिटक का हिन्दी अनुवाद समाप्त कर डाला है। मज्झिम निकाय से कुछ बडा होगा। प्रकाशक तैयार ही है, प्रेस में भेज दूंगा। यहाँ १६ मई को आने के बाद तो अधिक समय उसी अनुवाद ही में गया। अब न्याय के संस्कृत ग्रंथों की खोज मे लगा हूं। यद्यपि भारत से लाई पुरानी तालपत्र की पुस्तकें दूर के मठो मे हैं, जहा की यात्रा मैं एक मास बाद करने वाला हूं, किन्तु यहाँ से भी खाली हाथ नहीं जाना होगा। नालन्दा

के महान न्यायायिक धर्मकीर्ति के वाद-न्याय पर आचार्य शातरक्षित विरचित टीका दसवी शताब्दी के अक्षर मे यहा एक मठ मे है। मैंने सारी पुस्तक के ६० पत्रों के फोटो लिवा लिये है। आशा तो बहुत है। अब की बार राज्याधिकारी भी कुछ मेरे काम मे मदद दे रहे हैं। आशा है कि तिब्बत के मठो से नालन्दा विक्रम-शिला के महान विद्वानो की कुछ कृतियो के उद्धार करने मे सफल हो जाऊँगा।

भारत नवम्बर ही मे लौट सकूंगा। सभी को मेरी मंगल कामना कहियेगा।

अपना और धूपनाथ का समाचार विशेषतया लिखना।

द्वारा / धर्ममैन एण्ड सन्स
ग्यालिंग-छोगपा
ग्यान्त्से (तिब्बत)

तुम्हारा
राहुल सांकृत्यायन

२१४ | पत्र सं० १८८५ | फा० सं० १६

ल्हासा
६-८-३४

प्रिय शुक्ल जी,

पत्र मिला, कल मै दस दिन के बाद उत्तरदिशा से कितने ही पुराने मठो को देखकर लौटा हूँ। मैंने उधर बहुत से फोटो भी लिये है, और विस्तृत वर्णन भी अपने मित्र के लिये लिखे जाते पत्रो मे करता गया हूं। सारा वर्णन सैंकडो चित्रो के साथ फुलस्केप साइज के १०० पृष्ठो से ऊपर में समाप्त होगा। एकाध लेख तो "सरस्वती" को जरूर मिलेंगे, किन्तु पूरी यात्रा के लिये एक काम की बात है। बात यह है कि मेरा रोली फ्लेक्स (Rollie flex) केमरा पिछली यात्रा मे नाव से उतरते वक्त एक दिन गिर गया; जिससे फिल्म रखने के स्थान मे खराबी आ गई है। चार दर्जन से ऊपर फिल्म रील (जिनमे दो दर्जन आपको भेज दी हैं) पडे हैं। एक कैमरे की मुझे अत्यन्त आवश्यकता है। वैसे भी रोली फ्लेक्स (Rollie flex) न्यू मॉडल (New Model) लेने का मेरा विचार था। इसलिये यदि 'सरस्वती' भाई

(न्यू मॉडल) (New model) रोली फ्लेक्स (Rollie flex)+पाकेट स्टैण्ड (Pocket stand)+फिल्टर (Filter)+रिलीज थ्रेड (Release Thread) के साथ प्रदान करें, तो उन्हे घाटा नही रहेगा। मेरी इस बार की यात्रा के सचित्र लेख (जो १०-११ अंकों मे निकल सकेगे) मिलेंगे, और अगली गर्मियो मे जापान जाने पर वहाँ के भी सचित्र लेख मिलेगे। यदि संभव हो तो तार द्वारा अर्डर (आर्डर) देकर केमरे को भिजवा दें। आप प्रबध न कर सकेंगे, तो कोई चिन्ता की बात नही। मैंने बेतकल्लुफी से अपनी इस आवश्यकता को लिखा है। हाँ, यदि प्रबंध न हो सकता हो, तो वैसा तार दे दे, ताकि मैं दूसरे को इस बारे में पत्र लिख सकू।

आपका
राहुल सांकृत्यायन
द्वारा/मिसर्स धर्ममैन एण्ड सन्स
ग्यालिग छोगपा
पो० ग्यान्त्से (तिब्बत)

२१५ | पत्र सं० १८८४ 	लहासा
फा० सं० १६ 	१४-८-३४

प्रिय शुक्ल जी,

पहिले एक पत्र भेज चुका हूं। इस पत्र में विशेष यह लिखना है। मैंने 'विनय पिटक' का हिन्दी अनुवाद समाप्त कर दिया है, और उसे भारत भेज भी दिया। पहिले महाबोधि सोसायटी वाले छापना चाहते थे, किन्तु अब वह असमर्थता प्रकट करते हैं। पुस्तक सुपर रॉयल (Super Royal) सात सौ पृष्ठो की होगी। 'मज्झिम निकाय' से छोटी न होगी। आप इडियन प्रेस से बात करें, यदि वह छापने के लिये तय्यार हैं तो अच्छा है। मैं अक्तूबर के बाद ही लौट सकूंगा, ऐसी अवस्था मे प्रकाशक के पहिले न तय्यार होने पर शायद पुस्तक १९३४ में न निकल सकेगी। आप उचित समझें, तो किसी दूसरे प्रकाशक से भी बात कर सकते हैं,

किन्तु छपाई सफाई अच्छी होनी चाहिये। पारिश्रमिक के बारे में अड़चन न होगी, आप स्वयं तै कर सकते है।

आपका

राहुल सांकृत्यायन

पुनश्च प्रबंध हो जाने पर ग्यान्त्से (Gyantse) के पते पर तारद्वारा सूचित करें।

२१६ | पत्र स० २५८६ | फा० स० २४

ग्यानी

१६-६-३४

प्रिय त्रिवेदी जी,

'गंगा' के दोनो अंक मिले और कार्ड भी। महतो जी के लेख और आपकी टिप्पणियो मे खूब सुपरलेटिव (Superlative) हाकी गई है। अच्छा व्यक्ति और उसकी प्रशसा कितने दिन तक रहेगी? मैं(ने) साम्यवाद पर दो लेख भेजे हैं। आशा है, मिले होगे। उन्हे शीघ्र छाप देगे। "यूरोप यात्रा" को तुरन्त छापना हो तो ठीक, नही तो भेज दे, मिश्र जी के पास। कही फिर साल भर खटाई मे न पडी रहे। लेख जब तब 'गगा" को मिल ही रहे हैं। "गगा" को अपनी थाली परसी होने पर दूसरे के भोजन से ईर्ष्या नहीं करनी चाहिये। केमरा देने का हर्गिज यह मतलब नही कि लेखक की कलम खरीद ली गई। ऐसा ख्याल होने पर- तुम्हारे रहते तक तो नही--शायद कलम कर दे, केमरे के मूल्य से अधिक के लेख दिये जा चुके। और सब आनद।

नवबर के प्रथम सप्ताह मे पटना पहुँचूंगा। अभी ४-५ और मठों की खाक छाननी है, जरा संस्कृत पुस्तको का पता लगा लूं।

द्वारा/साज भाजू रत्न
गुप्त कोठी, कलिम्पोङ,

तुम्हारा

राहुल

२१७ | पत्र सं० १८९३ 	ग्यानी
| फा० सं० १६ 	१६-६-३४

प्रिय शुक्ल जी,

आपके दोनो कार्ड और तार मिले। मैं आज ल्हासा से यहाँ पहुँचा। कुछ ज्वर आ गया था, और शायद अब भी है। ३-४ दिन मे यहाँ से दूसरे मठों मे जाऊँगा, जरा सस्कृत पुस्तको का पता लगाना है। संभव है वहाँ सिद्धो की कोई पुस्तक मिल जाये।

पुस्तक और कॅमरे के लिये कोई बात नही। पुस्तक वही ला जर्नल प्रेस मे पहुँच गई है। एकेडमी के सभापति से मेरा परिचय नही, इसलिये पत्र नही लिख रहा हूँ। राजनाथ को लिखा है, पुस्तक को लेकर मिले।

अबकी चित्रो का संग्रह प्रयाग म्यूजियम के लिये हुआ है। कल व्यास जी के नाम पार्सल जा रहे है। अधिकतर चित्र है, व कुछ मूर्तियाँ भी है।

नवबर के प्रथम सप्ताह पटना पहुँचूंगा। प्रयाग में कब ? नही कह सकता। "साम्यवाद ही क्यो" के दो अध्याय सरस्वती के लिये भेजे है।

आपका
राहुल सांकृत्यायन

द्वारा/साज माजू रत्न
गुप्त कोठी, कलिम्पोङ

२१८ | पत्र सं० २५६४ 	द्वारा/पडित ब्रजमोहन व्यास
| फा० सं २४ 	म्यूनिसिपल आफिस
इलाहाबाद
३१-१२-३४

प्रिय शास्त्री जी,

२६ तारीख से ही हम यहीं हैं। डेढ़ मास तक यही रहना होगा। विनय पिटक हिन्दी का प्रूफ देखा जा रहा है। तीनो संस्कृत ग्रन्थ भी प्रेस मे दे दिये गये। वह बी० एण्ड ओ० आर० (B & O. R) सोसायटी की ओर से छपेगे। नई तिब्बत

यात्रा, यूरोप यात्रा, साम्यवाद ही क्यो, और बीसवी सदी के प्रकाशक ढूंढे जा रहे हैं। यूरोप यात्रा का काफी भाग आपने नही भेजा, और न मूल चित्र ही भेजे। आपके पास आदमी भी हैं। अधिक बैठकबाजी के दोष के साथ व्यवहार कुशलता का गुण भी है। प्रकाशक कार्य कर सकते हैं। और पत्रों के फेर मे न पड़ने पर दो एक वर्ष मे विहार मे सफल भी हो सकते है। लग जाइये इधर देख क्या रहे है ? पंडित जी जब तक गंगा निकालेंगे तब तक उसका भी काम करते रहियेगा।

यूरोप यात्रा की सभी कटिंग्स (Cuttings) जरूर भेजिये। अब तो डेढ मास तक हम प्रूफ के चक्कर मे पडे। आनन्द जी का मन न लगा, इसलिये उन्हे सारनाथ जाने दिया। अधिक काम होने पर बुला लेंगे।

आपका
राहुल सांकृत्यायन

२१८ | पत्र सं० २५६५ | पटना
फा० स० २४ | २५-३-३५

प्रिय त्रिवेदी जी,

मैं २७ मार्च को १ बजे वाली गाडी से आ रहा हूँ। शाम को सुल्तानगंज पहुँचूंगा। ब्लाक तैयार रक्खेगे, जिसमे देर न हो। जल्दी कलकत्ता पहुँचना है, और आगे के लिये रवाना हो जाना है।

विशेष आ ही रहा हूँ।

आपका
राहुल सांकृत्यायन

२२० | पत्र सं० १८८२ | फा० सं० १६

नोक्कुण्डी (NOKKUNDI)

२२-६-३७

प्रिय महाशय,

दिल्ली में पाच सौ रुपये मिल गये थे। पुरातत्व-निबन्धावली और ओीरान के छप जाने पर मेरे पास अेक-अेक प्रति भेज देंगे। मेरा पता रहेगा C/o INTOURIST, LENINGRAD, U. S. S. R. (द्वारा/इनटूरिस्ट, लेनिनग्राड, यू० एस० एस० आर०)।

आपका
राहुल सांकृत्यायन

२२१ | पत्र स० १८८० | फा० सं० १६

प्रो० राहुल साकृत्यायन
द्वारा/इनटूरिस्ट
लेनिनग्राड
यू० एस० एस० आर०
३-१२-३७

पंडित देवीदत्त शुक्ल

पृरिय शुक्ल जी,

१७ नवंबर को मैं यहाँ पहुँचा। "सरस्वती" के दर्शन हुअे। क्या बात है? अिस मास में भी अेक लेख लिखना है, और आगे प्रति मास अेक लेख लिखता रहूंगा। अभी कामों का बोझ कुछ बढ सा गया है अुन्हें सँभाल लूं तब। लेकिन दक्षिणा पूरी चाहिये, क्योंकि भारत से मँगाअी जानेवाली चीजो के लिये यहाँ से दाम नही भेजा जा सकता। हिंदी के सभी प्रकाशको के सूची पत्रों को भिजवा दें। जिन पुस्तकों को मैं वहाँ दे आया हूँ, अुनमें से कौन-कौन छप चुकी और कौन प्रेस में हैं। "सतमी के बच्चे" (कहानियाँ) की अेक कापी शीघ्र

चाहिये। श्रीराम और पुरातत्व निबंधावली यदि छप गये हो तो अुनकी भी अेक अेक परति।

आपका
राहुल सांकृत्यायन

२२२ पत्र स० १८८१ — फा० स० १६

सारनाथ
२६-३-३८

प्रिय शुक्ल जी,

आपका पत्र मिला। "सरस्वती" के लिये अुस दिन जो लेख दिये थे, अुनको कापी करके शीघ्र भेजने की कृपा करे। पुस्तक मे अुसे देखकर यथा स्थान लगाने तथा नकशा आदि तैयार करने मे अुसकी बहुत जरूरत है। ५, ६ दिन मे मुझे मैजिक लैंटर्न के साथ बनारस मे व्याख्यान देना है, अुसके लिये मुझे चित्रो की जरूरत होगी। आप अुन चित्रो के ब्लाक बनवा कर या बिना बनवाये ही मेरे पास भेजने की कृपा करें। यदि 'अीरान' मे दिये गये मैटर को वहा से कम्पोज करके नही भेजा, तो अुसका मतलब है, वह मेरे तिब्बत में चले जाने के बाद तय्यार होगा। अैसी अवस्था मे खुद शुद्ध करने पर बहुत सी गलतिया रह जायेंगी।

आपका
राहुल सां०

२२३ | पत्र सं० १८६१ / फा० सं० १६

"लोकयुद्ध"

(हिन्दुस्तान की कम्युनिस्ट पार्टी
का साप्ताहिक पत्र)
१६०—बी, खेतवाड़ी मेन रोड
बम्बई—४
५-१२-४३

प्रिय सम्पादक जी,

"लोक युद्ध" आपके पास भेजवा रहा हूँ कृपया इसे अपने पत्र के परिवर्तन में स्वीकार करें और पत्र भेजवाया करें।

आपका
राहुल सांकृत्यायन

२२४ | पत्र सं० २४८१ / फा० सं० २४

दार्जिलिंग
३-६-५१

प्रिय वाजपेयी जी,

३०-८ की चिट्ठी मिली। लंका जाना तो मज्बूर (मजबूर) होकर होगा। काम बहुत नहीं कर रहा हूँ। शायद कमला को यहां कालेज में जगह मिल जाये तब निश्चित होऊंगा। आवेदन पत्र आज भेज रही है। मेरा रहना प्रयाग या लंका या दार्जिलिंग में होगा, कह नहीं सकता। उड़ने की बात अनिश्चित। इसलिये संदेह है। सब अच्छे हैं।

आपका
राहुल

२२५ | पत्र सं० २४८२ | फा० सं० २४

ग्रीन रिजेज
२१, कएहरी रोड
दार्जिलिंग (इण्डिया)
२६-९-५१

प्रिय वाजपेयी जी,

२१-९ का पत्र मिला। स्वास्थ्य के मारे चलना मुश्किल है। नवंबर में शायद मुझे प्रयाग मे काम न होने मे, फिर लंका जाना पड़े। दोनों तरह से नवंबर में कलकत्ता जाना संभव नही। कमला और बच्चे अच्छी तरह हैं।

आपका
राहुल

२२६ | पत्र सं० २५३६ | फा० सं० २४

हैपीवेली, मसूरी
२२-२-५५

महाशय,

मैंने अपने अेक पोस्टकार्ड मे लिख दिया था, कि 'पूर्वपीठिका' के बारे में सुझाव वाजपेयी जी को सीधे दे दिया था, इसलिये आपके पास नही भेजा।

"हिन्दी शब्दानुशासन" के पहिले १०२ पृष्ठों के बारे मे निम्न बाते रखता हूँ:

(१) नाम "हिन्दी व्याकरण" रहना चाहिये, क्योकि शब्दानुशासन हिन्दी वालों के लिये अपरिचित है, ब्रैकट मे रहे, तो कोई हरज नही।

(२) संस्कृत मे की हुई व्युत्पत्ति फुटनोट में रक्खी जाये, नही तो कितने ही पाठकों को डर लगेगा।

(३) कोई भी संस्कृत का वाक्य अैसा नही होना चाहिये, जिसका अर्थ हिन्दी में वही या फुटनोट में न हो।

(४) उदाहरण देते जाना चाहिये, पृष्ठ ४ पंक्ति १० मे वह आवश्यक है।

(५) भाषातत्त्व के ज्ञाताओ की सुविधा तथा अेक वाक्यता के लिये उसके पारिभाषिक शब्दो को भी दे देना चाहिये, जैसे ७/२२-२३ में संस्कृत (आद्य भारतीय आर्य भाषा या (आभाआ) प्रथम या द्वितीय।

(६) छापते वक्त स्थान-प्रयत्न आदि की तालिका और उच्चारण यंत्र-चित्र देना होगा।

(७) १४/७ ह्रस्व अे और ओ के संकेत का भी सुझाव रखना चाहिये, क्यो न उलटे टाइपो से उनका काम लिया जाये।

(८) १८/४ (पृष्ठ/पंक्ति) पर "''अयोगवाह" का अर्थ देना चाहिये।

(९) २९/२० पठत और पठति दोनो का अपभ्रंश पठइ है।

(१०) ५२/७—प्राकृतो और अपभ्रंशो मे।

(११) परिभाषाओं की अेकता के ख्याल से आद्य भारतीय आर्यभाषा (आभाआ), मध्य भारतीय आर्य भाषा (मभाआ) और नव्य भारतीय आर्यभाषा (नभाआ) भी कहना चाहिये। मैं अपभ्रंश का नभाआ मे मानता हूँ, यद्यपि उसकी उच्चारण प्रक्रिया द्वितीय मभाआ (प्राकृत) की है।

प्रिय वाजपेयी जी,

ऊपर का पत्र मैने शब्दानुशासन के पहिले आये हुये भाग के संबंध मे बनारस भेजा है। पुस्तके मिल गईं। बहुत-बहुत धन्यवाद। आशा है, व्याकरण का काम आगे बढ़ रहा होगा। बहुत अच्छा बन रहा है। परिशिष्ट मे धातुओ, प्रत्ययो और साधे शब्दों—वाक्यों की सूची देनी होगी।

जाडा बीतने पर अेक बार यहाँ आइये।

डाक्टर सुनीति कुमार की हाल मे निकली पुस्तक "भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी" (राजकमल प्रकाशन, १ फैजबाजार, दिल्ली) पठनीय है।

सब अच्छी तरह हैं। कमला परीक्षा के लिये अेक सप्ताह पहिले ७ मार्च को शुक्ल जी के यहा चली जायेंगी।

आपका

राहुल सांकृत्यायन

२२७ | पत्र सं० २५०२ / फा० सं० २४

हैपीवेली
मसूरी
१७-२-५५

प्रिय वाजपेयी जी,

चिट्ठी दिल्ली में ही मिल गई थी। कल हम लोग यहाँ चले आये। जया और जेता स्वस्थ हैं और उनके जनक-जननी भी। जननी ७ मार्च को देहरा चली आयेंगी। १४ से उनकी परीक्षा (अेम्० अे० १) है। मैं अब यहीं रहूंगा। आशा है व्याकरण का काम आगे बढ़ा होगा। मौसम जरा गर्म हो जाये, तो सप्ताह-दो-सप्ताह के लिये बुलाऊं। चाय लोटों से नहीं घड़ो से पी सकते हैं।

सारे परिवार का नमस्कार अपने दुर्वासा को पहुँचे।

आपका
राहुल

२२८ | पत्र सं० २५८८ / फा० सं० २४

राहुल प्रकाशन
हैपीवेली,
मसूरी
२२-३-५५

प्रिय त्रिवेदी जी,

पत्र के लिये धन्यवाद। "वैदिक साहित्य" प्रकाशक ने भेज दिया था। आपका ऋग्वेद का अनुवाद (पुराना) न जाने कैसे मेरे पास पड़ा रहा।

आप आइये। गर्मियो में भीड़ होती है, थोड़ा कष्ट होगा ही। यहाँ तो छुआछूत और भक्ष्याभक्ष्य का कोई ख्याल नहीं है, पर आपके साथ तो नौकर रहेगा।

आपका
राहुल

२२९ | पत्र सं० २५०६ | फा० सं० २४

मसूरी
१९-९-५५

प्रिय वाजपेयी जी,

प्राचीन पांच जनों के भी अनेक उपजन ऋग्वेद के समय हो गये थे, खास कर पुरुजन के तो भरत और तृत्सु तथा कुशिक भी उपजन हो गये थे। तृत्सु के राजा दिवोदास और सुदास भरतजन के थे। भरतों ने दस जनों को दासराज्ञ युद्ध मे परास्त किया। पर, ऋग्वेद की टूटी इतिहास शृंखला को उपनिषद् के कुरु-पाचालो से जोड़ने की सामग्री अप्राप्य है। महाभारत, रामायण आदि तो उस समय के इतिहास का जबर्दस्त गड़बड़घोटाला करते हैं। ऋग्वेद के काल पर केवल ऋग्वेद ही शब्द प्रमाण है। मैं उसकी सामग्री पर १८-२० लेख लिख रहा हूँ। 'आजकल' में दो छप चुके, तीसरा छप रहा है। और भी छपेंगे। लेख लिखे जा चुके हैं। १. सप्तसिन्धु (भूमि), २. सप्तसिन्धु के आर्यजन, ३. सप्तसिन्धु के ऋषि। आगे लिखना है—४. सप्तसिन्धु के ऋषि, ५. सप्तसिन्धु के राजा और नेता, इत्यादि।

राहुल

२३० | पत्र सं० २५११ | फा० सं० २४

मसूरी
१०-१२-५५

प्रिय वाजपेयी जी,

चिट्ठी मिली और कल लेख भी पढ़ा। अच्छा लिखा। भाषाओं का परि-वर्तन प्रचार देश और काल की सीमा लेकर हुआ है। फिर अेक काल में देश के भिन्न-भिन्न भागो में प्रचलित भाषाओं को अेक नाम भी दिया गया, जैसे प्राकृत अपभ्रंश। पतंजलि ने जिसे अपभ्रंश कहा, वह उस समय की पालियां थी। कुरु देश मे भी पालिकाल में कोई पालि, प्राकृतकाल में कौरवी प्राकृत और अपभ्रंश काल में कौरवी अपभ्रंश प्रचलित थी। उसका लिखित नहीं तो

मौखिक लोक साहित्य तो जरूर रहा होगा, जिसको सुरक्षित नहीं रक्खा जा सका। साहित्यिक अपभ्रंश मेरे विचार मे कन्नौज या दक्षिण पाचाल की भाषा थी। इस सारे काल मे कन्नौज ही हमारा राजनीतिक और सास्कृतिक केन्द्र रहा। उसकी भूतकालिक क्रियाये अवधी और ब्रज के बीच मे पड़ती है। कुरु देश बुद्ध के समय तक ज्ञान विज्ञान का देश समझा जाता था, इसे पालि अट्ठकथाओ मे साफ लिखा है। पर, ईसा पूर्व पाँचवी सदी से ईसवी बारही सदी तक प्राय· १७ शताब्दियों तक पिछड गया, इसलिये वहा की पालि, प्राकृत और अपभ्रंश से किसी को लेना देना नही था, मैं तो समझता हू, खडी हिन्दी के सबसे पुराने गद्य-पद्य के नमूने इसके मिल जायेंगे, यदि कुरु देश के जैन मदिरो के छोटे-मोटे पुस्तकालयो मे ढूंढ़ा जाये। गुणाढ्य ने जिस पैशाची मे बृहत्कथा लिखी थी, वह अेक प्राकृत थी। यदि सातवाहन से गुणाढ्य का सबंध और उसके राज्य (महाराष्ट्र) मे जन्मस्थान रहा, तो वह उसी प्रदेश की प्राकृत रही होगी। वैसे कितने ही विद्वान पैशाची को खिचड़ी मिलाप की भाषा मानते हैं।

मै १४ को देहरा जाकर १७ को रात की गाडी से दिल्ली जा रहा हूं। शायद आगे पटना तक जाऊँ, और महीने भर बाद लौटूं। यहाँ सब अच्छी तरह हैं। कमला यही रहेगी।

राहुल

२३१ | पत्र सं० २५०५ | फा० सं० २४

हार्नक्लिफ, हैपीवेली,
मसूरी
३-२-५६

प्रिय वाजपेयी जी,

आपका ४ जनवरी का पत्र डेढ महीने बाद यहा लौटने पर मिला। आपके सत् परामर्श के लिये धन्यवाद देना कोरा शिष्टाचार होगा। मैं स्वास्थ्य का ध्यान रखता हूं, और अभी तक कार्य करने मे कोई बाधा नही है। भोजन का नियमन करता हूं। शारीरिक परिश्रम तो नहीं करता, लेकिन दिमागी परिश्रम छोड़कर मैं रह कैसे सकता हूं। भोजन मे दलिया मुझे पसंद है, यद्यपि उसका

नियम से प्रबंध करना मुश्किल है। मास दुष्पच अधिक घी डालने से होता है, और मैं मांस कभी ही कभी खाता हूं। लहसुन तो खाता ही हूं।

यहां सब ठीक है। आशा है आप स्वस्थ और प्रसन्न होंगे। कमला परीक्षा की तैयारी में व्यस्त हैं।

आपका
राहुल

२३२ | पत्र सं० २५१० | फा० सं० २४

हार्नक्लिफ, हैपीवेली,
मसूरी
३-५-५६

प्रिय वाजपेयी जी,

आपके दोनों पत्र मिले। अकारान्त शब्दों का व्यंजनांत हो जाना आजकल देखा जाता है। अपभ्रंश काल में ऐसा होता था, इसका पता नहीं लगता। बल्कि प्रथमा एकवचन में ह्रस्व उकारान्त का प्रयोग देखने से यही जान पड़ता है, कि वह उस वक्त प्रचलित था। पुरानी अवधी में भी वह देखा जाता है। जान पड़ता है उ के उड़ाने के साथ अ उड़ा। खैर, यह आपके अधिकार का विषय है। जरूर आप तिवारी जी की पुस्तक के सम्बन्ध में अपने विचारों को लिखें, और जब-तब जो भी प्रयोग सामने आये, उनको पत्रों में देते जायें। नहीं तो एक बार चित्तसागर में उद्भूत विचार विलीन होकर जल्दी हाथ नहीं आते। यहां सब अच्छे है।

आपका
राहुल

२३३ | पत्र सं० २५०४ | फा० सं० २४

हार्नक्लिफ, हैपीवेली,
मसूरी
२८-६-५६

प्रिय वाजपेयी जी,

कल देहरादून स्टेशन से टेक्सी में जब मैं मसूरी आ रहा था, तो शुक्ल जी और आपकी युगल मूर्ति को दिलाराम बाजार के पास सड़क पर जाते देखा। टेक्सी जब सामने पहुंची, तब पता लगा, और टेक्सी रुकवा नहीं सका।

कमला ने एम० ए० द्वितीय श्रेणी में पास किया। कलिम्पोंग आकर रहने का अभी पक्का नहीं कर लिया है। चीन-तिब्बत मैं अप्रैल १६५६ में जाना चाहता हूं। सावधानी तो रक्खूंगा ही। डा० तिवारी की पुस्तक की आलोचना के भद्दी होने की पर्वाह् न करें। विचार अपना साफ रखना चाहिये। शब्द की तीक्ष्णता पर ध्यान रखना चाहिये। इस लेख में तो कोई ऐसी बात नही। दो-चार दिन के लिये आ जाइये, तो कैसा रहे। यहां सब अच्छी तरह हैं।

आपका
राहुल

२३४ | पत्र सं० २४७८
फा० सं० २४

हार्नक्लिफ, हैपीवेली,
मसूरी
१४-८-५६

प्रिय वाजपेयी जी,

११ अगस्त का पत्र मिला। बातें आपने ठीक ही लिखी हैं। 'न चैकमपि सत्यं स्यात् पुरुषे बहुभाषिणि' कुछ तो बातें ठीक ही होती हैं। 'उसह' मेरी समझ में 'बसह' का अपभ्रंश रूप है, और 'बसह' वृषभ का।

मैं आज यहा से चलकर देहरादून से कल लखनऊ जा रहा हूं। इलाहाबाद तक जाना है। आठ-दस दिन मे लौट आऊंगा। यहा सब अच्छी तरह हैं। आशा है, आप भी स्वस्थ और प्रसन्न होगे।

चार-साढ़े चार सौ पृष्ठ की 'अकबर' पर एक पुस्तक लिखकर समाप्त की है। उसके पूर्वार्ध में अकबर के सहायकों और विरोधियों की भी जीवनिया हैं, पूर्वपीठिका के तौर पर। उस सर्वतोभद्र महान् स्वप्नद्रष्टा पर मैंने यह पोथी लिखी, जो अशोक और गांधी के बीच मे सबसे बड़ा महापुरुष है।

आपका
राहुल

२३५ | पत्र सं० २६८५ | फा० सं० २४

राहुल प्रकाशन
हैपीवेली,
मसूरी
ता० ७-६-५६

प्रिय वाजपेयी जी,

'अवधी की बेटी हिन्दी' लेख सा० हिन्दुस्तान को भेज रहा हूं। मुझे 'नैषधीय चरित' (संपूर्ण), 'कादवरी' और ऋगवेद-शकानुक्रमणी कुछ समय के लिये चाहिये, वहीं से मिल सकती है, यहाँ सभी मजे से है। कमला साविवी के कुशल क्षेम को जानना चाहती हैं।

आपका
राहुल

२३६ | पत्र सं० २५०१ | फा० सं० २४

द्वारा पोस्टमास्टर
कलिम्पोंग, १२-१०-५६

प्रिय वाजपेयी जी,

आपकी चिट्ठी मिली। ए, ओ के नीचे बिन्दी देकर ह्रस्व नहीं बनाया जा सकता, क्योकि उसमे अरबी भाषा की ऐन का काम लिया जाता है। असंदिग्ध संकेत होना चाहिये। उलटने मे छापे के अक्षरो मे कोई संदेह नही होगा, और लोगो ने ऐसा किया भी है। आप डा० उदयनारायण तिवारी—अलोपीबाग, दारागंज, इलाहाबाद—से भी इस बारे मे परामर्श ले लें। भरठ मैंने भोजपुरी के ख्याल से लिखा है। कौरवी के विचार से भ्रिष्ट या भिष्ट ही ठीक होता। 'नया समाज' का वह लेख मेरा नही है, किन्तु विचार समान तो हो सकते हैं।

आपका
राहुल

२३७ | पत्र सं० २५०६ / फा० सं० २४

हार्नक्लिफ, हैपीवेली,
मसूरी
८-१२-५६

प्रिय वाजपेयी जी,

४ दिसम्बर को देहरादून में पता लगा, कि आप टाइफाइड में फंस गये थे। उसी समय यह भी मालूम हुआ, कि आप अब बहुत कुछ स्वस्थ हो चुके हैं। विषाद और हर्ष दोनो का समाचार एक ही बार मिला। आपकी पुस्तक 'संस्कृति का पांचवा अध्याय' पुस्तक आपने बडे ही विचारोत्तेजक में लिखा है। पढ़ने वालों को ठोकर जरूर लगेगा, और इसकी बड़ी आवश्यकता है। विचारो मे कट्टर नास्तिक पर भारतीय संस्कृति का अनन्य उपासक होने के नाते हमारे विचारो में भी इसी तरह की एकता-अनेकता है। आज के समाज के ढाचे को बिल्कुल बरबाद कर देने पर भी हमारी संस्कृति को कोई हानि नही पहुंचेगा, यह मेरा विश्वास है। यहां बच्चे और कमला जी अच्छी तरह हैं। मैं भी स्वस्थ हूं। शायद अबकी जाडों में यहां से बाहर न जाना पड़े।

आपका
राहुल

२३८ | पत्र सं० २४८० / फा० सं० २४

हार्नक्लिफ, हैपीवेली,
मसूरी
१४-१२-५६

प्रिय वाजपेयी जी,

टाइफाइड का भुक्तभोगी हूं, और जानता हूं, कि उससे उठना मृत्यु के मुख से निकलना है। आशा है यह मुक्ति चिरकाल तक शरीर को स्वस्थ रक्खेगी। शरीर मे बल आये बिना कोई अधिक परिश्रम का काम न करें। हमारा भाग्य है, जो आप फिर से जीवन में पदार्पण कर रहे हैं। द्रविड़ो के बारे मे मेरा मत 'ऋग्-वेदिक आर्य' में आया है, जो आजकल छप रही है। दो-तीन महीने मे निकल जायेगी। फिर एक कापी भेजूगा। हिन्दी वर्णमाला में विशेष संकेत बिंदी के तौर पर व्यंजनो में आ सकते हैं, या ऐन के लिये अ के नीचे बिंदी लगाई जा सकती है। ह्रस्व करने के लिये अक्षर उलटने के सिवा अभी तो कोई दूसरा

उपाय नहीं मालूम होता। इसमें लाभ यह है, कि एक ही टाइप से काम चल जाता है। मैं सपरिवार स्वस्थ और प्रसन्न हूं। आपको शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं। जाड़ों में यहीं रहने की आशा है।

आपका
राहुल

२३६ | पत्र सं० २४७६ | फा० सं० २४

हार्नक्लिफ, हैपीवेली,
मसूरी
१२-१-५७

प्रिय वाजपेयी जी,

आपकी चिट्ठी मिली। बर्फ का आजकल इतना सुन्दर दृश्य चारों तरफ है, कि लोभ होता है आपको आने के लिये कहूं। पर, अभी-अभी आप टाइफाइड से उठे है। सुना है आप अधिक परिश्रम करने लगे हैं। टाइफाइड का मैं भुक्त-भोगी हूं। एक हफ्ते बेहोश भी रहा। नया जन्म होता है। शरीर की सारी शक्ति खतम हो जाती है, और उसे फिर से लेने की आवश्यकता पडती है। आपको शारीरिक परिश्रम तो बिल्कुल नही और मानसिक भी बहुत कम करना चाहिये। पुष्टिकर और सुपच भोजन आवश्यक है। जाडा तो बेहद है ही, पर आने मे सारा कार्य अस्त-व्यस्त हो जायेगा। डाक प्रूफ गड़बडी मे पड जायेंगे। घर भर अच्छी तरह है, और बर्फ देखने का आनन्द ले रहा है। कमला जी डाक्टरेट के लिये कुछ पढ़ने लगी हैं। घर भर का नमस्कार।

आपका
राहुल

२४० पत्र सं० २४७४ / फा० सं० २४

हार्नक्लिफ, हैपीवेली,
मसूरी
१७-६-५७

प्रिय वाजपेयी जी,

आपका १३ जून का पत्र मिला। देहरादून आकर भी यहां न आना अन्याय है। जानते है, इस आयु मे दर्शन का कितना मूल्य होता है ? यहा घर भर अच्छी तरह है। सबके ऊपर इन्फ्लुएजा अभिषेक के कुछ छींटे पड़े हैं। अब सभी स्वस्थ हैं और मौसम भी बहुत अच्छा है। आप बनारस कब लौट रहे हैं ?

आपका
राहुल

२४१ पत्र सं० २४७७ / फा० स० २४

हार्नक्लिफ, हैपीवेली,
मसूरी
२१-६-५७

प्रिय वाजपेयी जी,

आपकी चिट्ठी मिली। यह जानकर हर्ष हुआ, कि २६ को आप यहां पहुँच रहे हैं। हम लोग सब इन्फ्लुएजे से गुजर कर अच्छी तरह हैं। नीचे की गर्मी को पढकर मन ही मन उसके भय का अनुभव करते है। अबके साल तो आम भी नही हैं, कि कोई गर्मी बर्दाश्त करने के लिये निकल जाये।

दर्शनाभिलाषी
राहुल

२४२ | पत्र सं० २५०८ | फा० सं० २४

ग्रीन रिजेज
२१, कचहरी रोड
दार्जिलिंग (इण्डिया)
१७-९-६१

प्रिय वाजपेयी जी,

पत्र मिला। मैं बच्चों के लिये ही विदेश गया। इस वर्ष प्रयाग का काम न मिला तो लंका जाना पड़ेगा, अभी दो तीन मास की छुट्टियों मे हूं। स्वास्थ्य अनिश्चित है। मधुमेह और हृदय का ऊँचा चाप है। यदि अक्तूबर के अंतिम सप्ताह तक निश्चय न हुआ, तो लंका। नही तो नवबर में बच्चों के साथ प्रयाग। आशा है आप स्वस्थ हैं।

आपका
राहुल

२४३ | पत्र सं० २५०७ | फा० सं० २४

दार्जिलिंग
९-११-६१

प्रिय वाजपेयी जी,

चिट्ठी मिली। मैं तभी आ सकता हू जब आप बनारस से यहां आ जाओ और मैं साथ कलकत्ता चलूं। अभी तो मैं चल नही सकता, कमला दिसंबर के प्रथम सप्ताह मे ही यहीं से जा सकती है। जब बच्चो की वार्षिक परीक्षा होगी। यदि ७-१० दिसंबर को कलकत्ता का प्रोग्राम रक्खें, तो वह मेरे साथ जा सकती है। कलकत्ता से दिसंबर—जनवरी—२० फरवरी तक के लिये प्रयाग चली जायेगी। यदि प्रयाग का काम मिल गया या कमला को यहाँ कालेज का फण्ड मिल गया तो मैं जरूर यहीं रह जाऊँगा नही तो फरवरी में लंका ही चला जाऊंगा। आर्थिक निश्चिन्तता का ख्याल रखना जरूरी है। आशा है आप स्वस्थ और प्रसन्न होंगे।

आपका
राहुल

२४४ | पत्र सं० २४६६ | दार्जिलिंग
--- | फा० सं० २४ | ११-११-६१

प्रिय वाजपेयी जी;

लौटती डाक से लिखिये कि किस तारीख को कलकत्ता चला जाऊँ। कलकत्ते से यदि प्रयाग चला जाऊंगा या अगत्या सिंहल को। बच्चे अच्छी तरह हैं।

आपका
राहुल

श्री दिनकर

के पत्र

श्री किशोरी दास वाजपेयी

तथा

श्री प्रभात शास्त्री के नाम

खण्ड : ६

(२८६६) आर्यकुमार रोड, पटना-4
14/10/55.

प्रिय शास्त्रीजी,

[illegible]

आपका
दिनकर

[श्री रामधारी सिंह दिनकर का पत्र श्री प्रभात शास्त्री के नाम]

२४५ | पत्र सं० २८६३ / फा० सं० २८

पटना-६
२६/७

प्रियवर,

कापी तो मिली है, किन्तु, भूमिका लिखने का समय मुझे नहीं मिलेगा।

शेष कुशल है। प्रणाम।

आपका
दिनकर

२४६ | पत्र सं० २८६२ / फा० सं० २८

चौधरी टोला
पटना-६
१५-१-५५

प्रिय शास्त्री जी,

आपके दोनों पत्र मिले। मुझे अब तक ठीक पता नहीं है कि ६ फरवरी तक पटने रहूँगा या नहीं। अतएव, उस दिन प्रयाग आने का वचन देने में डरता हूँ। कृपया क्षमा करेंगे।

आपका
दिनकर

२४७ | पत्र सं० २८६४ / फा० सं० २८

आर्य कुमार रोड, पटना-४
१४-१०-५५

प्रिय शास्त्री जी,

आप का भेजा हुआ आंजनेय नामक एक खंडकाव्य मेरे बस्ते में पड़ा है। मैं भूमिका-रूप में कुछ लिख नहीं पाऊँगा। पुस्तक छपने लगे तब छपे फर्मे देखकर सम्मति भेज दूँगा। पुस्तक लौटा रहा हूँ।

आपका
दिनकर

२४८ | पत्र सं० २८६५ — फा० सं० २८ | पटना-४ १-२-५६

प्रिय शास्त्री जी,

१० फरवरी की दिल्ली एक्सप्रेस से जाने का विचार है। किंतु, पाण्डुलिपि मैं पहले ही भेज दूँगा।

आपका
दिनकर

२४६ | पत्र सं० २८६६ — फा० सं० २८ | पटना ८-२-५६

प्रियवर,

कलकत्ते से लौटने पर आज आपका दूसरा पत्र मिला। मैं १० फरवरी को तूफान एक्सप्रेस से जाता होऊँगा। ६ को आरा मे चढ़ूँगा।

आपका
दिनकर

२५० | पत्र सं० २६४७ — फा० सं० २५ | २, साउथ एवेन्यू लेन
नई दिल्ली-११
६-१०-१९६५

मान्यवर बाजपेयी जी,

आपका ४ अक्टूबर का पत्र आज मिला। स्वास्थ्य कामचलाऊ जैसा ही है। सबसे अधिक ध्यान तो आजकल स्वास्थ्य पर ही देता हूं। किन्तु, अधिक सुधार

की अब सम्भावना नहीं दीखती है। तब भी ठीक ही चल रहा हूं। आपने मेरे चित्र में भी मेरे स्वास्थ्य की ही खोज की, इसके लिए धन्यवाद देता हूं, आशा है, आप मजे में हैं।

आपका
ह० दिनकर
(रामधारी सिंह दिनकर)

२५१ | पत्र सं० २६६८ | फा० सं० २८

पटना—१६
८-५-७२

प्रिय प्रभात जी,

एक लेख के लिए १०१ रु० का आफर त्रिपाठी जी ने भेजा है और मैं ने स्वीकृति भी भेज दी है। तीन कविताओं के बदले तीन सौ तो देना ही चाहिए। पंत और महादेवी अर्ध संन्यासी हैं। गृहस्थ उनकी नकल नहीं कर सकता।

आपका
दिनकर

२५२ | पत्र सं० २८६७ | फा० सं० २८

राजेन्द्रनगर
पटना—१६
१-६-७२

प्रिय भाई प्रभात जी,

आपका २६ अगस्त का पत्र मिला। बड़ी खुशी की बात है कि श्री नरसिंह राव जी इलाहाबाद पधार रहे हैं। मैं १३ सितंबर को ११ अप दिल्ली एक्सप्रेस से इलाहाबाद पहुंचूंगा और सरोजिनी नायडू रोड पर श्री रामावतार शर्मा के पास ठहरूंगा।

आशा है, किराये की व्यवस्था सम्मेलन कर सकेगा।

आपका
दिनकर

श्री सियारामशरण गुप्त
के पत्र
श्री देवोदत्त शुक्ल के नाम

खण्ड : १०

चिरगाँव (झाँसी)
२४-२-३२

प्रिय शुक्ल जी,

प्रणाम। पूज्य भाई मैथिलीशरण जी का "साकेत" सेवा में भेज रहा हूँ। कृपा कर स्वीकार कीजिए।

"साकेत" के सम्बन्ध में आपने कुछ-कुछ उद्गार प्रकट किये थे। इससे मैं समझता हूँ कि इससे आप को हर्ष होगा। यदि इसके सम्बन्ध में आप अपने विस्तृत विचार 'सरस्वती' में प्रकट करने की कृपा करेंगे तो मैं विशेष अनुगृहीत हूँगा।

पहुँच देने की कृपा कीजिएगा। आशा है, आप सानन्द हैं। विशेष, विनय। कृपा रखिएगा।

विनीत
सियारामशरण

[श्री सियारामशरण गुप्त का पत्र पं० देवीदत्त शुक्ल के नाम]

श्री राम : ।

२५३ | पत्र सं० २०६४ | चिरगाँव (झाँसी)
| फा० सं० १८ | १८-१२-२८

प्रिय शुक्ल जी

प्रणाम । मैं इस बात से असन्तुष्ट-सा हुआ करता था कि "सरस्वती" प्राय: देर से प्रकाशित हुआ करती है । अब की बार जब दिसम्बर का अंक कुछ जल्दी मिल गया तो उतना आनन्द नहीं हुआ जितना होना चाहिए था । बात यह है कि मैं समझ रहा था कि अभी तो दिसम्बर का ही अंक कुछ समय लेगा तब कहीं जनवरी का नया अंक छपेगा, जिसके लिए कुछ भेजने के लिए आपने आज्ञा दी थी । मैं चाहता था कि इसी प्रकार मुझे कुछ समय मिल जाय ।

मैं आज कल ज़रा व्यस्त हूँ । तीन चार दिन में कलकत्ते जाने के लिए तैयार हो रहा हूँ । अब तक कुछ-न-कुछ सेवा में भेज चुका होता । परन्तु आपने नव वर्ष सम्बन्धी कविता भेजने के लिए आज्ञा की है । मैं प्रयत्न करूँगा कि कुछ लिख सकूँ । यदि सफल न हो सकूँगा तो और ही कुछ भेजने की चेष्टा करूँगा । आशा है, उस स्थिति मे आप मुझे अवश्य ही क्षमा करेंगे । शेष कुशल ।

आपका
सियाराम श० गुप्त

श्रीः ।

२५४ | पत्र सं० २०६६ | चिरगाँव (झाँसी)
| फा० सं० १८ | २०-१२-२८

प्रिय शुक्ल जी,

प्रणाम । कृपा कार्ड मिला । धन्यवाद । मैं कल कलकत्ते के लिए रवाना हो रहा हूँ । कुछ पंक्तियाँ लिखकर आज ही पूरी की थीं । मैं सोच रहा था, प्रयाग मे विश्राम लेने के लिए उतरूँगा और वहीं उन्हें आपकी सेवा में उपस्थित

कर दूँगा। आप का पत्र पाकर उन्हें आज ही भेज रहा हूँ। सम्भव है; इस प्रकार एक दिन पहले ही वे आप को मिल जायँ।

कविता लिखते समय आपके बताये हुए सूत्र को पूर्ण रूप से रखा नहीं कर सका। यह मेरी असमर्थता का ही दोष है। मुझे तो इतना ही सन्तोष है कि मैं आपकी आज्ञा का पूर्ण नहीं तो आंशिक पालन कर सका।

पूज्य चरण भाई साहब अब कुछ स्वस्थ हैं। प्रेस के मैनेजर साहब जो कुछ लिखना चाहते हों उन्हें सीधे लिखें। "साकेत" का सर्ग वे दो तीन दिन बाद भेज सकेंगे। यदि मेरे प्रयाग उतरने का निश्चय रहा तो मैं ही साथ लाने की चेष्टा करूँगा।

आशा है आप सानन्द हैं।

आपका

सियाराम-शरण गुप्त

श्रीराम

२५५ | पत्र सं० २०९५ | फा० सं० १८

चिरगाँव (झाँसी)

२४-२-३२

प्रिय शुक्ल जी,

प्रणाम। पूज्यपाद भैया जी का "साकेत" सेवा में भेज रहा हूँ। कृपा कर स्वीकार कीजिए।

"साकेत" के सम्बन्ध में आपने कृपा-पूर्ण उद्‌गार प्रकट किये थे। इससे मैं समझता हूँ कि इससे आपको स्नेह है। यदि इसके सम्बन्ध में आप अपने विस्तृत विचार "सरस्वती" में व्यक्त करने की कृपा करेंगे तो मैं विशेष अनुगृहीत हूँगा।

पहुँच देने की कृपा कीजिए। आशा है, आप सानन्द हैं। विशेष विनय। दया रखिए।

विनीत

सियारामशरण

एक पैकट गिरीश जी के लिए भी आप की ही सेवा मे भेज रहा हूँ। कृपा कर उसे उन तक पहुँचा दीजिएगा। कष्ट के लिए क्षमा।

श्री भगवती प्रसाद वाजपेयी

के पत्र

श्री प्रभात शास्त्री के नाम

खण्ड : ११

२५६ | पत्र सं० २७६१
फा० सं० २७

भारत होटल
फ़तेहपुरी, दिल्ली
ता० २६-३-५७

प्रिय शास्त्री जी,

नमस्कार।

नरही वाले मकान में जो भेंट हुई थी, उसके बाद वर्ष भर हो गया। न कहीं भेंट हुई, न पत्र-व्यवहार का ही अवसर आया। आशा है, आप सकुशल और प्रसन्न होंगे।

इस समय आपको एक कष्ट दे रहा हूँ। 'नवीन पद्य-संग्रह' और 'आधुनिक वीर काव्य' की रॉयल्टी की रसीदें सम्मेलन कार्यालय में सहायक मंत्री श्री रामप्रताप जी त्रिपाठी, शास्त्री जी के पास भेजे हुए लगभग पन्द्रह दिन हुए; किन्तु उसका रुपया न मेरे लिखे पते—मंगलपुर जिला कानपुर से भेजा गया, न उन रसीदों में ही लिखे अलीगंज, लखनऊ के पते से। इसके बाद मैंने श्री त्रिपाठी जी को कई पत्र भेजे। एक तो जवाबी भी भेजा। पर उत्तर एक का भी नहीं आया। क्या बात है? मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि त्रिपाठी जी प्रयाग में नही हैं; पर क्या उसका प्रभाव यह पडना चाहिये कि रुपया ही न भेजा जाय? ऐसा तो नही है कि पत्र व्यक्तिगत नाम से होने के कारण उनकी निजी डाक मे रुका रह गया हो और इसी कारण रसीदें कार्यालय में न पहुँची हो। जैसा कुछ हो कृपा करके तुरन्त सूचित करें।···दूसरी बात यह है कि सरकार से मुझे जो आर्थिक सहायता मिलती है सौ रुपये मासिक, वह भी इस बार फरवरी मास की मेरे लखनऊ के पते से नही पहुँची। डायरेक्टर आफ एज्यूकेशन के कार्यालय मे जाकर पता लगाये क्या कारण है जो इतनी देर हो गई है। मै यहाँ से दूसरी अप्रैल को जाऊँगा।

कृपया उत्तर इस पते से दें।
—पो० मंगलपुर
जिला—कानपुर

सदा आपका
भगवतीप्रसाद वाजपेयी

२५७ | पत्र सं० २७६० | फा० सं० २७

मंगलपुर ग्राम
जिला कानपुर
२१-७-५८

प्रिय शास्त्री जी

सादर नमस्कार।

फरवरी में कानपुर स्टेशन पर जो बातें हुई थीं, उनका स्मरण दिलाता हूँ। अब ऐसी सुविधा है कि जैसा चाहें उपन्यास मुझसे लिखवा लें और इस समय थोड़ा-सा रुपया मुझे भेज दें।

सदा आपका
भगवतीप्रसाद बाजपेयी

२५८ | प० सं० २७५६ | फा० सं० २७

३३२/६ बाबू पुरवा, न्यू कालोनी

२४-३-६०

प्रिय प्रभात जी,

नमस्कार।

आपका २२-३-६० का कृपापत्र प्राप्त हुआ। लेकिन रायल्टी का रुपया तो प्राप्त नहीं हुआ, जबकि आप लिखते हैं भिजवा रहा हूँ। आपने ऐतिहासिक उपन्यास के लिये जो उपालम्भ दिया, वह इसलिये ठीक नहीं है कि मैं विधिवत् अनुबंधन करके, निश्चित अवधि के भीतर, उपन्यास की पाण्डुलिपि देने पर विश्वास करता हूँ। बम्बई से लौटने के बाद, जब से आपने स्नातक जी से परिचय करवा दिया था, तब से बराबर अबतक इसी नीति से काम करता हूं। अनुबन्धन के समय कम से कम पाँच सौ रुपये जब अग्रिम ले लेता हूं, तब कलम उठाता हूँ। पांडुलिपि देने पर प्रथम संस्करण की रायल्टी का पूरा रुपया, अग्रिम की निधि काटकर, मिल जाने का वचन प्रकाशक की ओर से आवश्यक रहता है और प्रथम संस्करण भी कम से कम दो हजार प्रतियों का होना ही चाहिये। एक बार आवश्यकता पड़ने पर आपको कुछ रुपया पेशगी भेज देने के लिये लिखा भी था, पर आप उस समय

टाल गये, जवाब तक नहीं दिया। बतलाइये, ऐसी परिस्थिति मे मेरा क्या दोष है ? मैं अब भी सेवा करने के लिये तैयार हूँ, यदि आप तुरंत कुछ रुपया लेकर चले आवें और यही पर अनुबंधन कर जायें। यह न समझें कि मैं पेशगी रुपया लेकर चोंट जाऊँगा।

सदा आपका
भगवतीप्रसाद वाजपेयी

२५६ | प० सं० २७६२ / फा० सं० २७ 		कानपुर
८-६-६०

प्रिय शास्त्री जी,

नमस्कार भाई।

अहोभाग्य कि आपने याद तो किया ! वैसे मैं यही समझ रहा था कि जब लेखक को अग्रिम देना, आपकी दृष्टि में, उस निधि से हाथ धो बैठना है, तब मेरा स्मरण तो आने से रहा !

ऐतिहासिक उपन्यास मैं अवश्य लिखना चाहता हूँ। पर यह कितना उत्तम होगा कि परस्पर विचार-विनिमय करके उसका युग और चरित नायक चुन लिया जाय ! आकार-प्रकार और पृष्ठ-संख्या निश्चित हो जाने पर—फिर—यह बतलाने मे सुविधा होगी कि कब तक तैयार करके दे सकूँगा। यही प्रश्न उठता है कि जब मेरी जीविका का एकमात्र यही आधार है, तब अग्रिम मैं क्यों न लूं ?—कितना, यह बात भी उसी समय तै हो जायगी, जब अन्य बातें तै हो जायँगी।

तो मैं स्वयं आ रहा हूँ इसी रविवार दि० ११ सितम्बर को। स्टेशन के पास, कैलाश होटल में दस बजे, आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

सदा आपका
भगवतीप्रसाद वाजपेयी

२६० | पत्र सं० २७६३ / फा० सं० २७

कानपुर
११-६-६०

प्रिय प्रभात जी,

अचानक कल वाइफ को ज्वर आ गया। इस कारण मुझे अपनी यात्रा स्थगित कर देनी पड़ी। आप कैलाश होटल (निकट स्टेशन) पहुँचे होगे। यहाँ तो इस समय पानी बरस रहा है। अगर वहाँ भी बरसात होगा (होगी), तो आपको अपार कष्ट हुआ होगा। मुझे इसका बड़ा खेद है। आपको कष्ट भी दिया और मैं पहुँच भी न सका। पर मैं एक-आध दिन में आ ही रहा हूँ। आप ६॥-१० बजे प्रातः घर पर ही रहेंगे, तो मिलने में सुविधा रहेगी।

नमस्कार।

सदा आपका
भगवतीप्रसाद वाजपेयी

२६१ | पत्र सं० २७६४ / फा० सं० २७

३३२ बाबू पुरवा
६
न्यू कालोनी
कानपुर
७।१२।६०

प्रिय प्रभात जी,

नमस्कार।

आपके कई पत्र मिले। आजकल वाइफ बीमार हैं, लगभग तीन सप्ताह से। अतः मैं यहीं आ गया हूँ। ज़रा तबियत सम्हले, तो मैं इलाहाबाद ही आकर आपका समाधान करूँ। वैसे मैंने सम्राट अशोक का कार्य्य-काल चुना है। रानी तिष्यरक्षिता का काला पक्ष ही अब तक इतिहास में आया है। मैं उसका स्वाभाविक चित्रण करके यह सिद्ध करने की चेष्टा करूँगा कि उसे किन परिस्थितियों ने इतना प्रतिहिंसक और क्रूर बनने को विवश किया था। कोई विघ्न न उपस्थित हो गया,

तो मैं १५ दिसम्बर तक अवश्य आऊँगा। पत्रोत्तर में विलम्ब हो जाय, तो आप कृपया इतने आतुर न हो जाया करें। मैं बेगार भुगतना नहीं जानता। जो काम करता हूँ अपनी पूरी जिम्मेदारी के साथ उसे निभाता भी हूँ।

सदा आपका
भगवतीप्रसाद बाजपेयी

२६२ | पत्र सं० २७६५ / फा० सं० २७

जे ३ कृष्ण नगर
दिल्ली ३१
२६-१०-६०

प्रिय प्रभात जी,

सोचा था कि महर्षि टंडन जी के अभिनन्दन समारोह मे—प्रयाग में—आपसे भेंट हो ही जायगी। तभी इस विषय में आपको अपना निर्णय बता दूँगा। पर कुछ ऐसे अनिवार्य्य कारण सामने आ गये कि मैं प्रयाग जा पाने के लिए छटपटाता रह गया।...आज यहाँ आपका द्वितीय पत्र भी सामने है।...उपन्यास के लिये मैंने बौद्धकाल ही ले लिया है।

सदा आपका
भगवतीप्रसाद बाजपेयी

२६३ | पत्र सं० २७६६ / फा० स० २७

३३२ बाबू पुरवा
ई
न्यू कालोनी
कानपुर
१४।१२।६०

प्रिय प्रभात जी,

पत्र मिला। यह जानकर बडी प्रसन्नता हुई कि आपको स्टेशन वाले कैलाश होटल तक भटकना नही पड़ा। उपन्यास-लेखन के विषय में अनेक बातें ऐसी

महत्वपूर्ण हैं कि बिना एक बार घंटे-आध-घंटे विचार-विनिमय हुए निश्चयात्मक रूप नहीं धारण कर सकती। इसीलिये मैं आपके यहाँ आने के पक्ष में था। परन्तु श्रीमती जी की तबियत ऐसी नहीं कि मैं दो दिन को भी घर छोड़ सकूँ। अतः कष्ट तो होगा, पर यदि आप ११ अप से (मध्याह्नोत्तर ३.३५ पर ट्रेन में बैठकर) सायंकाल ७.५५ पर कानपुर सेंट्रल आ जायें, तो बड़ी कृपा हो। मुझे एक तार भर दे दीजियेगा। मैं स्टेशन पर इन्क्वायरी आफिस के निकट आपको मिल जाऊँगा। ख़र्चा जो कुछ होगा, उसका आधा मेरी तरफ़ लगा लीजियेगा।

तार की प्रतीक्षा में—

सदा आपका
भगवतीप्रसाद वाजपेयी

२६४ | पत्र सं० २७६७ | फा० सं० २७

कानपुर
२६-१-६१

प्रिय प्रभात जी,

नमस्कार

मेरा पत्र पाकर कुछ नाराज तो नहीं हो गये ?

अब मुझे यह जानने की आवश्यकता है कि मैं वाराणसी किस गाड़ी से, किस समय, पहुँचूँ ? कार्यक्रम क्या है सम्मेलन का ? ११ फ़रवरी शनिवार को तो सम्मेलन की बैठक होगी। उससे पूर्व विषय निर्धारिणी समिति की बैठक हो जानी चाहिये। वह प्राय रात में होती है। इस हिसाब से अगर मैं शुक्रवार ता० १० को, वाराणसी जंकशन पर, हावड़ा-अमृतसर मेल से, ६-५५ रात को पहुँचता हूँ, तो लेट तो न हो जाऊँगा ? इससे पूर्व देहरादून-वाराणसी एक्सप्रेस है, जो वहाँ ४॥ मध्याह्नोत्तर पहुँचती है। आप किस गाडी से पहुँचेंगे ? जँघई में अगर आप से भेंट हो जाय, तो उत्तम होगा।···भाषण, जीवन-परिचय आदि सामग्री बस अब एक-आध दिन में भेजता हूँ। आज बदली बहुत है। रात में पानी भी बरसा था। इस समय १०-४५ बजे हैं। बूंदा-बाँदी अभी बन्द हुई है। पता नहीं यह क्रम कब तक चले !

सदा आपका
भगवतीप्रसाद वाजपेयी

२६५ | पत्र सं० २७६८ — फा० सं० २७ — कानपुर — १७-२-६१

प्रिय प्रभात जी,

मैं यहाँ सकुशल पहुँच गया था। अब तक वाराणसी की स्मृतियाँ नहीं भूल सका हूँ। कुछ पता चला, सम्मेलन से इस वर्ष 'नवीन पद्य-संग्रह' की कुछ रायल्टी मिलेगी?

नमस्कार।

सदा आपका
भगवतीप्रसाद वाजपेयी

मफलर वहाँ मैंने देखा अवश्य था। पर मैं यह न जान सका कि वह आपका है। नये लोग आ गये थे और उन्होंने मेरे स्थान पर अपना बिस्तर बिछा लिया था। दूसरे का मफ़लर मैं कैसे ले लूँ, यह बात भी मेरे मन मे आयी थी। मुझे बडा खेद हो रहा है कि मैंने उसे आपका ही क्यों नही समझा और क्यो नहीं अपने पास रख लिया। उपन्यास के सम्बन्ध की प्रश्नावली मैं तैयार करके शीघ्र आपके पास भेजूंगा।

भ.

२६६ | पत्र सं० २७६९ — फा० स० २७ — कानपुर — २९-१-६१

प्रिय प्रभात जी,

नमस्कार बन्धु। ये दोनो पत्र एक साथ मिले। बड़ी जल्दी राय क़ायम कर लेते हो। पत्र तुम्हारा उस समय मिला, जब मैं लखनऊ वाली बस पकड़ने के लिए आठ नंबर की स्थानीय बस मे बैठ चुका था। लखनऊ में कृष्णा के यहाँ पहुँचते-पहुँचते शाम हो गयी थी। दूसरे दिन मैंने आपको उत्तर दे ही दिया था। इसमे लापरवाही क्या हुई जनाब?...अब काम की बात सुनो। भाषण ३१ जनवरी

तक पहुँचेगा। साथ ही चित्र भी।'' तुम यह जानते हुए भी कि मैं अपने विषय में कभी एक पंक्ति भी लिखना पसन्द नही करता, लिख रहे हो कि मैं स्वयं अपने सम्बन्ध मे लेख लिखकर भेजूँ, बुरी बात है। जैसी मित्रता निभाते हो, मुझे उसका पता है। '' ! कानपुर के किसी व्यक्ति से मैं अपनी जीवनी लिखने के लिए न कहूँगा। जो मुझे नही जानते, या जानना आवश्यक नही समझते, ऐसे व्यक्तियो से मिलना-जुलना मुझे कभी प्रिय नही रहा। आपने स्वयं, दूसरों से लिखवाने की बात करते हुए, कभी सोचा कि यह कार्य तो मैं ही कर सकता हूँ? नही सोचा, तो हरि इच्छा! अपने अभिनन्दन ग्रंथ की एक प्रति आपके पास भिजवा रहा हूँ। साथ मे 'रात और प्रभात' की समीक्षा-पुस्तक भी है। डा० शुक्ल, डा० त्रिवेदी और श्री गुप्त से मैं मिल लूँगा, यद्यपि आजकल व्यस्त बहुत हूँ। सच्ची बात तो यह है कि तुम्हारा दिया हुआ यह सभापतित्व इस समय बहुत खल गया।

भाषण लिखने मे जो समय देना पड रहा है, उसे जिम्मेदारी तो यही कहती है कि—उपन्यास लिखने में ही लगाना चाहिये था।

पुनश्च :—आपका २१ ता: का लिखा हुआ पत्र २३ को पो० लैटर बाक्स के मुँह मे पड़ा है। कहो तो मैं भी कह दूँ कि बडे लापरवाह हो। क्या ख़याल है? शेष फिर। आज पो० आ० बन्द है। अभिनन्दन ग्रंथ आदि कल रजिस्टर्ड पैकेट से भेजूँगा।

सदा आपका
भ० प्र० बाजपेयी

२६७ | पत्र सं० २७७२ | फा० सं० २७

६६/६ बाबू पुरवा, विस्तार पक्ष १
कानपुर
दि० १०-११-६२

प्रिय शास्त्री जी,

आपका पंजीकृत पत्र भी मिला। मेरा यह चौसठवाँ वर्ष चल रहा है। स्वास्थ्य ठीक नही रहता। डायबिटीज का पुराना मरीज हूँ। एक घण्टे से अधिक बैठकर काम करने मे थकान आ जाती है। हाथ से तो लिख ही नही पाता। दाएँ हाथ की तर्जनी और बाएँ हाथ की मध्यमा दर्द के कारण, वर्षों से बेकार हो रही हैं। बाएँ कूल्हे में दर्द रहता है। दोनों पैरो की गाँठो मे भी दर्द बना रहता

है। हाई ब्लड प्रेशर के कारण कभी-कभी चलते-चलते चक्कर भी आ जाते हैं। ऐसी दशा मे सचमुच नया उपन्यास लिखकर देना विशेष रूप से बी० ए० के विद्यार्थियो के लिए, मेरे लिए वर्त्तमान परिस्थिति मे तो सम्भव दिखाई नही देता। मैं सोचता था कि आप मेरा 'पतवार' उपन्यास प्रकाशनार्थ ले लेंगे। लेकिन आपने उसको प्रकाशित करना स्वीकार नही किया। हो सकता है, पढने का अवकाश ही न मिला हो !

वैसे मेरी धारणा है कि यह उपन्यास निर्विवाद रूप से बी० ए० के विद्यार्थियो के लिए उपयोगी है। आप अगर उसे प्रकाशित करते, तो कमेटी के मेम्बर उसे अवश्य पसन्द करते। जैसी आपकी इच्छा !

अब रह गया आपका पाँच-सौ रुपया ! उसे वापस करने की व्यवस्था कर रहा हूँ। एक बार मे न सही, दो-बार मे तो दे ही दूँगा। कष्ट के लिए क्षमा।

पुनश्च :—बड़ी कृपा हो, यदि आप 'पतवार' की वह प्रति पंजीकृत पैकेट से लौटा दें। मेरे पास उसकी अन्य प्रति नही है।

सदा आपका

भगवती प्रसाद वाजपेयी

•

२६८ | पत्र सं० २७७०
--
फा० स० २७

६६/६ किदवई नगर
साइट नं० १, कानपुर
४-७-६३

प्रिय प्रभात जी,

पत्र मिला। मैं तो निराश हो चला था। आज भी प्रातःकाल दायें हाथ में सनसनी व भारीपन के साथ-साथ घबराहट की एक लहर आयी थी। पैसे के अभाव मे आज प्रात.काल इंजेक्शन नही लग पाया था। अतः यदि हो सके, तो पचास रुपये ही तार से भेज दें। इस श्रमिक बस्ती में ऐसा कोई पड़ोसी नही, जिससे अटके पर काम निकल सके।

शेष फिर। नमस्कार भाई।

सदा आपका

भगवती प्रसाद वाजपेयी

आवश्यक

२६६ | पत्र सं० २७७१
| फा० सं० २७

६६/६ किदवई नगर एक्सटेंशन
साइट न० १, कानपुर
दिनाङ्क १६-६-६३

प्रिय प्रभात जी,

तीन सप्ताह से रक्त चाप से बुरी तरह पीड़ित हूँ। इस समय अर्थाभाव ही, अच्छा होने मे, प्रमुख रूप से बाधा डाल रहा है। बड़ी कृपा हो, यदि आप इस समय उपन्यास के हिसाब मे कुछ रुपया भेज दें। अधिक न सही, कम-से-कम सौ ही भेज दें। विश्वास मानिये, अच्छा हो जाने पर आपका काम सबसे पहले करूँगा। बिना सोये दिन-रात उसी में चिपका रहूँगा। आजकल दिन भर मूड हिरन रहता है। आपका स्मरण आते ही मनोविनोद की बातें मूर्तिमान होकर सामने आ गईं तभी ये दो शब्द लिखने का साहस हुआ है। दैन्य मैंने जीवन मे कभी जाना नही बन्धु! पर इस समय ऐसी ही स्थिति है।

सदा आपका
भगवती प्रसाद वाजपेयी

रुपये चेक से न भेजकर ड्राफ्ट से भेजे। पंजाब नेशनल बैंक, मेस्टन रोड ब्रान्च के ड्राफ्ट से।

भ

आचार्य शिवपूजन सहाय

के पत्र

श्री रामगोविन्द त्रिवेदी,

श्री देवोदत्त शुक्ल

तथा

श्री किशोरी दास वाजपेयी के नाम

खण्ड : १२

शिवपूजन सहाय
C/o पुस्तक-मन्दिर

२१६१

पुस्तकालय, बनारस सिटी
ता० १५—८—१९३३

मान्यवर शुक्लजी,

सादर प्रणाम।

आज की डाक से पाँच रुपये मिले। किन्तु तीन पेज का ६ रुपया मिलना चाहिए। एक रुपया कट जाने का कोई कारण नहीं जान पड़ा। दो रुपये पेज से कम में नहीं पोसाएगा। आप स्वयं इस पर विचार करें। यदि आप अब अनावश्यक समझते हों तो मैं आगे न लिखा करूँ। आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा में हूँ। यदि आप न चाहेंगे तो मैं क्यों लिखूँगा। आप ही के अनुरोध का पालन करता था। एक तो दुनिया भर से दुश्मनी मोल लेना, दूसरे पुरस्कार में भी रोक-टोक आने की कमी। कृपया स्पष्ट उत्तर से कृतार्थ करें।

[आचार्य शिवपूजन सहाय का पत्र पं० देवीदत्त शुक्ल के नाम]

२७० | पत्र सं० २६०० | फा० सं० २४

द्वारा/रायल होटल
अमीनाबाद, लखनऊ
२१-११-१६२४

मान्यवर शास्त्री जी,

सादर प्रणाम। पं० ईश्वरी जी का पत्र आरा से आया है। आज वे कलकत्ते पहुँच गए होगे। शीघ्र उनसे मिलिए। मैं उनके डेरे के पते से कलकत्ते उन्हें पत्र लिख चुका हूँ। आप उनसे फौरन से पेश्तर मिल कर सलाह कीजिये और शीघ्र पत्रोत्तर होटल के पते से भेजिए। मैं यहाँ बहुत त्रस्त और चिंतित तथा शंकित रहता हूँ। अवस्था-वैषम्य के कारण असमंजस मे पडा हुआ हूँ। मेरे आने की देर है, देहाती दुनिया का काम हरगिज नही रुकेगा। ग्रंथो की कमी नही होगी, प्रकाशक चाहिए। सब कुछ मेरे गुरु जी की कृपा पर निर्भर है। पंडितजी से मिलकर अपनी और उनकी राय शीघ्र मुझे लिखिए। उनसे भी चिट्ठी लिखवा कर आप अपने ही पत्र में भेजिए। देर न कीजिए। मुन्शीजी का पत्र आया था कि रुपए का प्रबध न हुआ हो, तो लिखिए। मैंने पंडित जी से माँगा है, वह जिस जगह से भिजवाना चाहे, भिजवायें। मैंने जहाँ से रुपए माँगे थे, नहीं आए, उत्तर भी नही मिला, चिंतित हूँ, क्योकि पचास रु० बिना काम न चलेगा और यहाँ ता० १०-१२ के इधर कुछ भी नही मिल सकता और मेरा पिंड भी नही छूट सकता। आप अगर भेजना चाहे तो पडितजी से पूछकर भेजिए या यों भी भेज दीजिए, कृतज्ञ होऊँगा, होटल मे ही आना चाहिए। पंडितजी से जरूर मिलिएगा। मैं शीघ्र कलकत्ते आता हूँ। चिंता न कीजिए। सपत्नीक आऊँगा। वही आने पर देहाती दुनिया में प्रतिभा काम करेगी, यहाँ तो डर के मारे झाडा बंद है, सच मानिए।

शिवपूजन

प्राइवेट

२७१ | पत्र सं० २६२० | फा० सं० २४

विद्यापति प्रेस
लहेरियासराय
बुध २४।६

मान्यवर शास्त्री जी,

सादर सप्रेम प्रणाम।

गत कल एक पत्र भेज चुका हूँ। आज-भर यहाँ रहूँगा। कल गुरुवार को काशी के लिए प्रस्थान करूँगा। शुक्रवार को वहाँ पहुँच जाऊँगा। विजयादशमी

के एक-दो रोज आगे-पीछे आपको लेख भेज दूँगा। मैंने 'बालक' का सम्पादन-कार्य छोड़ दिया। अब काशी में केवल आकाशवृत्ति के सहारे रहूँगा। रहने की इच्छा काशी मे ही है। उपवास करके भी वही रहना है। काशी किसी प्रकार नही छोड सकता। इस दृढ़ संकल्प को विश्वनाथ जी ही निबाहेंगे। काशी के कारण ही यह नौकरी छोडकर निठल्ला बनने जा रहा हूँ। बंधी आमदनी छोडकर आकाशवृत्ति पर ही काशी मे रहूँगा। 'गगा' मे अगर मेरे योग्य कोई काम हो तो काशी भेजियेगा। मैं काशी से अलग कही नही रह सकता। काशी में रहकर मुझसे जो काम लेना चाहे, ले सकते है। यदि आपकी इच्छा होगी तो इसमे कोई अडचन या असुविधा नही है। डाक से बहुत कुछ हो सकता है। यदि संभव न हो तो मेरी ओर से आग्रह भी नही है। मैंने नौकरी छोड दी तो विश्वनाथ जी वही बैठे रोजी देंगे। मगर आप अगर कुछ विशेष सुविधा कर सके तो और अच्छा। मैं काम समझने के लिए, दुतरफा खर्च मिलने पर, आपके पास दो-चार रोज के लिए, आ भी सकता हूँ। फिर काम समझकर मैं काशी लौट जाऊँगा और वही से काम का सिलसिला जारी रहेगा। यदि यह..................................

शिवपूजन

२७२

पत्र सं० २६२३
फा० सं० २४

६।३ बलराम डे स्ट्रीट
पो० बीडन स्ट्रीट
कलकत्ता
६-१२-२५
(डाक मोहर से सन्)

मान्यवर शास्त्री जी,

सादर सप्रेम प्रणाम।

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। धन्यवाद। खेद है कि अभी किसी पुस्तक पर कोई प्रकाशक राजी नही हुआ। देहाती दुनिया पर एक प्रकाशक राजी है। वह दस फर्मे की लिखाई मात्र देना चाहता है। मगर आफ़त है कि उसने असल रेट का पता लगा लिया है। छपे फ़र्मे तो लेगा ही नही। आप जैसा लिखिये। अन्य पुस्तको के लिये अन्यत्र भी लिखा है। आशा है, कुंवर सिंह, गृ० ल० और शा० नि० का कही न कही ठीक हो ही जायगा। सब लोग सस्ते मे लेना चाहते हैं। और कोई नया समाचार नहीं है। पत्रोत्तर दीजियेगा।

भवदीय
शि०

२७३ | पत्र सं० २६२२
फा० सं० २४

६ फरवरी १६२६
(डाक मोहरासे)
६/३ बलराम डे स्ट्रीट,
कलकत्ता

मान्यवर शास्त्री जी,

सादर प्रणाम। आपका कृपापत्र मिला। धन्यवाद। मेरा पत्र आपको मिला ही होगा। उसमे मैंने लिख दिया था कि देहाती दुनिया के लिये मैं लहेरियासराय वाले को पक्का जबान दे चुका हूँ और अगर आप चाहे तो कुंवर सिंह और गृहलक्ष्मी आदि भी उमे दे दे। किन्तु रह गई बात मोल-भाव की। सो तो आपके पास मैं कई बार लिख चुका कि जिम मूल्य पर आप बेचना चाहते है, उस मूल्य पर कोई प्रकाशक नही लेता, आप हिन्दी के प्रकाशन-संसार की शिथिल अवस्था से अनभिज्ञ नही है। जो फर्मे छपे थे उनकी हानि के विषय मे भी मैंने प्रकाशक से कहा था, तो उसने वही भारती पुस्तकमाला का नाम प्रति पृष्ठ मे छप जाने वाली बात पेश की। यदि वह न होती तो फ़र्मे ले लेता। उसने महिला महत्त्व का अधिकार खरीदा है। मेरे ही अनुरोध से, और मैं ने यही वादा किया है कि देहाती दुनिया तुम्हारे सिवा और किसी को न दूँगा। इसलिये मैं बाध्य हूँ। आप पूरा-पूरा मेरा हिसाब लगाकर उससे ले लीजिये और अगर आप अधिक लेंगे तो मेरी लिखाई मे कटेगा, यदि आप न मानेंगे तो मै यह भी स्वीकार कर लूँगा। लाचारी है। कुंवर सिंह भी आप दे दे तो अच्छा है। मैं कदापि यह नही कह सकता कि अपनी प्रकाशित पुस्तके मुफ्त दे दीजिये। कृपा रखियेगा।

एस० पी० सहाय

आजकल काम-धाम छोड़कर बेकार बैठा हूँ।

२७४ | पत्र सं० २६०१
फा० सं० २४

६/३ बलराम डे स्ट्रीट
पो० बीडान स्ट्रीट
कलकत्ता
२८-१२-१६२६
(सन् डाक मोहर से)

मान्यवर शास्त्री जी, सादर प्रणाम। आपका रजिस्टर्ड पत्र मिला। गंगा पुस्तकमाला का पत्र भी मिला। मैं लिख चुका हूँ कि देहाती दुनिया के लिये

लहेरियासराय दरभंगा के हिन्दी पुस्तक भण्डार वाले से बातचीत हो चुकी है। फाइल उसी के पास है। शान्तिनिकेतन के विषय मे यहाँ एक नये प्रकाशक से बातचीत की थी। × × × × यहाँ दीक्षित आये हैं। कुंवर सिंह के बारे में कहते हैं कि मैं कोई प्रकाशक ठीक करूँगा। × × × × लहेरियासराय के प्रकाशक ने दीक्षित से हो पता पाया है कि दस रुपये फार्म लिखाई ठीक हुई थी। मेरे बिहारी मित्रों से भी उसने पता लगाया है। यहाँ उसका काम हनुमान प्रेस मे होता है, यहाँ भी उसके आदमी ने पता लगाया। × × × × मेरे पास फ़ाइल होती, तो मैं लखनऊ भेजता; मगर दुलारेलाल जी भी उससे अधिक नही देंगे, वे कलकत्ते के पाठक जी से पूछे बिना न मानेंगे; क्योकि पाठक जी की मारफत उनका बहुत सा काम यहाँ होता है, सदा का व्यवहार है। × × × × आपने मुझे कितना दिया था, इसका हिसाब ब्यौरेवार लिखिये, ७५) एक मुश्त के अलावे आपने फुटकर क्या दिया था, सब लिखिये, तो मैं सब आपको भिजवा दूँ। वह देहाती दुनिया लेने पर तैयार है और अगर दुनिया उसे दीजियेगा तो हम जोर देकर शान्तिनिकेतन और गृहलक्ष्मी भी लेने के लिये उसे बाध्य करने की चेष्टा करेंगे और आशा है वह मेरा आग्रह मान जायगा। कुँवरसिंह के विषय मे वह हिचकता है। कारण, उसकी स्कूली पुस्तकें बहुत चलती है और वह पुस्तक राजनीतिक दृष्टि से लिखी गई है। यही कारण पड़ता है। नहीं तो वह भी ले लेता। × × × कुँवर सिंह के लिये एक और जगह से बाते कर रहा हूँ। ठीक होने पर लिखूंगा। मैंने वणिक प्रेस की नौकरी छोड दी। झगडा हो गया। अब घर बैठे ही काम करता हूँ। कुछ काम मिल गया है। मतवाला मे अब नौकरी न करूँगा। वे लोग चाहते है। प० ईश्वरी प्रसाद जी अभी नहीं आये। स्त्री की बीमारी से पत्रोत्तर मे देर हुई। क्षमा कीजियेगा। पत्रोत्तर शीघ्र।

एस० पी० सहाय

२७५ | पत्र सं० २१८७
| का० सं० २०

हिन्दी पुस्तक भण्डार
पब्लिशर्स एण्ड बुक-सेलर्स
लहरिया सराय (बिहार)
१६-२-१६३०

दि 'बालक'
चिल्ड्रेन'स ओन इलस्ट्रेटेड
मैगज़ीन
एडीटर—रामलोचन शरण
(बिहारी)

रिफ० नं० १३५४

मान्यवर पण्डितजी,

सादर प्रणाम।

कृपापत्र के साथ ही "सरस्वती" पाकर कृतार्थ हुआ। मेरे विषय में आपके जो उदार विचार है वे आप ही की महत्ता के सूचक हैं। आपका स्नेह-सिक्त पत्र पढ़कर चित्त गद्गद हो गया। मेरा परम सौभाग्य है कि आपकी इतनी ममता मेरे ऊपर है। शर्माजी मेरे मित्र नही, गुरुवर थे। वे आपके मित्र अवश्य थे। इस नाते भी मैं आपके आशीर्वाद का पात्र हूँ।

मेरे कारण "सरस्वती" ने नियम की चिन्ता नही की यह मेरा अहोभाग्य और "सरस्वती" की सहृदयता। सौ बात की एक बात —आपकी विशेष दया है मुझपर, इसे सोच-सोचकर मैं फूला नही समाता। बडो की यही शोभा है।

"सरस्वती" अपने पाणि-पल्लव की छाया मे मुझे शरण देना चाहती है—इस सुयोग को मैं हाथ से न जाने दूँगा। "कभी-कभी 'सरस्वती' के लिये एकाध लेख"—इतना ही मेरे प्रोत्साहन के लिये यथेच्छ है। समय पाते ही सेवा मे पत्र-पुष्प अर्पित करूँगा। शीघ्र।

शुभाशिषाभिलाषी
शिवपूजन

प्राइवेट

२७६ | पत्र सं० २६२४ / फा० सं० २४

काल भैरव, काशी
२७-६-१६३०
(सन् डाक मोहर से)

मान्यवर शास्त्रीजी, सादर प्रणाम ।

मै कल लहेरियासराय से आया तो आपका कृपापत्र मिला, जो बक्सर से लौटा है । मैं अब स्थायी रूप से काशी मे आ गया, कृपया यही के पते से पत्र लिखा करें । लहेरियासराय से मैं पत्र दो-दो भेज चुका हूँ । उससे मेरे मन की बात का पता लगा होगा । आपके स्नेहपूर्ण आग्रह के लिये अतीव कृतज्ञ हूँ । किन्तु विवश हूँ । मैं किसी प्रकार अब काशी छोड नहीं सकता । काशीनिवास के लोभ से ही लहेरियासराय की नौकरी छोडनी पडी है । वैसी नौकरी अब नही मिल सकती । अब ५००) मासिक मिले या एक लाख सालाना मिले, मैं विश्वनाथपुरी नही छोड सकता । दया करके स्नेहपूर्ण आग्रह न कीजिये । मैं यही रहूँगा । कष्ट होगा या जो कुछ भी झेलना पड़ेगा, सब स्वीकार है, पर काशी छोडना सर्वथा असम्भव है नितान्त असम्भव है । किसी प्रकार का प्रलोभन मुझे इस संकल्प से विचलित नही कर सकता । अगर यहाँ रह कर मैं आपकी कुछ सेवा कर सकता हूँ, तो बताइये, मैं करने को तैयार हूं । नहीं तो आप मेरे भरोसे अपना काम न हर्ज करें । मैं यहाँ रहकर भी आपका काम कर सकता हूँ, यदि आप मेरी व्यवस्था स्वीकार करें । मैं आपकी सेवा मे त्रुटि न होने दूँगा । मुझे सौ न दे, पचास ही दें; पर काशी न छुड़ावे, दया कीजिये । मैं दो चार महीने पर १०-१५ रोज के लिये वहाँ आ सकता हूँ । महीने मे दो चार रोज के लिये आकर वहाँ रह सकता हूँ । परन्तु दुतरफा राह खर्च मिलने ही पर ऐसा हो सकता है । राहखर्च मिलने पर मैं इस समय भी आकर वहाँ बातचीत कर सकता हूँ कि किस प्रकार मैं यहाँ से काम करूँगा । मेरे पास रुपये नही है, अन्यथा मैं स्वयं चला आता और बातें तय हो जाती । खैर, उत्तर दीजियेगा ।

शिवपूजन

२७७ पत्र सं० २६१०
फा० सं० २४

मंगलवार
१७-३-३१
(सन् डाक मोहर से)
काशी

मान्यवर शास्त्री जी,

सादर प्रणाम ।

मैं गत रात्रि आया। मकान के मालिक महाशय कानपुर गये हैं । गुरुवार को आयेंगे । मुझे यहाँ तबतक ठहरना पड़ेगा । मैं शुक्रवार को यहाँ से चलूँगा । लाचारी है। तबतक लोगों से मिलकर लेखादि के लिये कहूँगा । रोज पत्र दूँगा कि क्या हाल है । यदि इस बार यो ही छोड़कर लौट आऊँगा तो फिर एक झमेला रह जायगा—एक दो दिन के लिये क्षमाप्रार्थी हूँ ।

शिवपूजन

२७८ पत्र सं० २६१३
फा० सं० २४

१६ मार्च १९३१
(डाक मोहर से)

श्री गणेशाय नम

मान्यवर शास्त्री जी,

सादर प्रणाम ।

मै यहाँ सकुशल पहुँचा । काम ठीक हो गया। विश्वनाथ जी की दया । आप यत्न न करते तो बडी भारी क्षति होती । मैं रात की गाड़ी से काशी जा रहा हूँ । वहाँ मकान छोडना, सामान लाना और कुछ खास लेखको से मिलना है । जल्द ही निबटाकर आऊँगा । वहाँ का हाल वही से लिखूँगा।

शिवपूजन

श्रीमान् मैनेजर साहब,

कृपा करके मेरा काम याद रखकर जल्दी कर दीजियेगा । चिट्ठियाँ रखते जाइयेगा ।

शिव

२७९ पत्र सं० २६१६ / फा० सं० २४

'हंस'-कार्यालय, सरस्वती-प्रेस, काशी
ता० १८-३-१९३१
बुधवार

मान्यवर शास्त्री जी,

सादर प्रणाम ।

आज मै हिन्दू विश्वविद्यालय मे जा रहा हूँ। कल पत्र दे चुका हूँ। व्यास जी ने एक सचित्र लेख गंगा के लिये देने को कहा है। कल उनसे मिला था। 'प्रसाद' जी भी लेख देंगे। विश्वनाथ प्रसाद मिश्र भी देंगे। आपने मशीनमैन और दफ्तरी के लिये कहा था। ज्ञानमण्डल में पराडकरजी से मैंने कहा। एक हिन्दू मशीनमैन वैष्णव है। होशियार और मेहनती है। माननीय पण्डितजी से पूछकर पराडकर जी को पत्र लिख दीजिये। किस मेकर की मशीन है, यह वह पूछता था, मै नही बता सका। आप लिख देंगे। वेतन लगभग ५०) लेगा और राहखर्च भी। ५०) से कम मे नही जायगा। दफ्तरी के बारे मे पराडकरजी कल बतावेंगे। हिन्दू दफ्तरी और दो लडके हिन्दू मिल सकते है। वेतन आदि के बारे में कल लिखूंगा। मकान मालिक कल गुरुवार को जरूर आवेगा। सामान वगैरह बहुत है। सरिया रहा हूँ। गंगालहरी सटीक और काशी के घाट सम्बन्धी चित्र आदि अगर रुपया बचेगा तो ले लूंगा, नही तो वी० पी० का आर्डर दे दूंगा। कई आदमियों की शिकायत है कि 'गंगा' मिलती नही है। वे शिकायत की चिट्ठी नही लिखते; भेंट होने पर ही कहते हैं। यहीं की डाक की गड़बडी मालूम होती है। मैं मशीनमैन और दफ्तरी के बारे में तार ही देता, पर खर्च कम हो जाने के भय से तार न दे सका। आपको कल गुरुवार को यह पत्र मिल जाय तो सरस्वती मे तार दे सकते है। लेकिन जल्दी क्या है, वेतन आदि तय करके ही मशीनमैन दफ्तरी को बुलाना ठीक है। आप जो उचित समझें करें।

शिव०

२८० पत्र सं० २५६८ — काशी

फा० सं० २४ — २५-११-३१

मान्यवर शास्त्री जी

सादर प्रणाम।

आपके कृपापत्र के उत्तर मे विलम्ब हुआ, क्षमा कीजियेगा; मैं घर चला गया था।

श्रीमान् पण्डितजी के कृपापत्र मे आपने लिखा है—"शान्त चित्त से विचार करने पर मुझसे बढ़कर आपको दूसरा हितैषी नही मिलेगा।"

बात तो बिल्कुल ठीक है; किन्तु इसके लिखने या कहने की कोई आवश्यकता नही है। फिर भी आपका कृपापूर्ण आशय मैं समझता हूँ। मैंने किसी से आपकी कोई शिकायत की है या आपके विरुद्ध कोई कार्रवाई की है या आपके खिलाफ कोई नाजायज हरकत की है, आखिर क्या किया है, जिससे खिन्न होकर आपने ऐसा लिखा है!

आप अपने पत्र मे लिखते है—"आपको मालूम है, पण्डितजी की आज्ञा के बिना पत्ता भी नही हिलता। तब आप किसी दूसरे पर सन्देह करे, तो अन्याय है।"

इसका मतलब मेरी समझ मे यह है कि मैंने आप पर कही सन्देह किया है। यह आपने अपनी समझ से ठीक लिखा होगा, परन्तु वास्तव मे यह केवल सन्देह-ही सन्देह है। मे आप पर क्यो सन्देह करने लगा? आप उसी भ्रम से कुपित होकर मेरा 'अन्याय' बताते है। मै एक ही बात कहूँगा। मैंने आपके साथ अब तक अन्याय नही किया, आगे भी नही करूँगा। आप अगर मेरी ओर से दिल साफ रखे तो बेहतर। मैं आपको आदर की दृष्टि से देखता हूँ, आपका सम्मान करता हूँ; आप पर अन्याय मैं नही कर सकता। दया करके यह धारणा अपने मन से निकाल डालिये।

मैं आपको किस तरह विश्वास दिलाऊँ कि मैं आपके ऊपर सन्देह नही रखता, न कभी किया ही है। ईश्वर जाने।

आपका पत्र पढ़कर—आपकी कठिनाइयाँ सुनकर—मै अपना दु:ख भूल जाता हूँ। मगर आपके इस प्रश्न का क्या उत्तर दूँ—"क्या आपको कुछ तरस है?"

तरस होने ही से क्या, जब लाचारी है! आप लिखते हैं—"कम-से-कम १५ दिनो का प्रबन्ध करके यहाँ आइये। किसी प्रकार भी एक सप्ताह मे न लौट सकियेगा।"

यह बडी बेहूद कठिनाई रास्ते में आ पडी। एक सप्ताह भी मुश्किल से रह सकता हूँ, १५ दिनो का पड़ाव तो असम्भव ही है। वहाँ ठहरने में मेरा लाभ-ही-लाभ है; किन्तु इस समय मेरे भाग्य मे हानि-ही-हानि लिखी है। इसमे अधिक क्या कहूँ। चित्त स्थिर नही है।

आप लिखते हैं—"किसे दुखडा सुनाऊँ, और सुनेगा ही कौन ?"—ठीक ही है, ऐसा कोई नजर नहीं आता। मेरा भी यही सवाल है। अगर मेरे साथ यह सवाल न होता तो आपका दुखडा मैं सुन लेता और कुछ सेवा भी कर सकता। मैं नही जानता था कि मैं ऐसे जंजाल मे फँसूँगा कि जीवन ही पलट जायगा। आपका कष्ट, योग्य सहायक मिलते ही, दूर हो जायगा। किन्तु मेरा कष्ट अब कभी दूर न होगा, यह स्थायी है। दुहरा दु ख यही है कि यह कष्ट अनवसर आया।

आपने लिखा है—"यदि आप चाहे तो लेखो के लिये तकाज़ा नही करूँगा।"

मैं ऐसा क्यो चाहूँगा ? मुफ्त का काम तो है नही, पैसा लेता हूँ, फिर काम के लिये तकाज़ा आने पर क्यो बुरा मानूँगा ?

हाँ, सम्पादकीय विभाग मे वहाँ जो आपके सहायक है, वे भी कुछ हाथ बँटावे। आप या मैं, कोई भी अकेला पूरा काम नही कर सकता। मैं यदि निश्चिन्त रह पाता, तो काफी मदद कर सकता; किन्तु मैं करने नही पाता। चिन्ताओ के उलझे जाल मे फँसा रहता हूँ।

आपने फिर लिखा है—"आप कुछ करे या न करे, आपका नाम 'गगा' पर न छपे, असम्भव है।"

मेरे प्रति आपकी यह ममता अत्यन्त हार्दिक-स्नेहपूर्ण है। पर मैंने नाम न छापने के लिये कभी नही लिखा। भागवत ने लिखा था कि पहले भी चार ही लेख आये और 'वेदाक' मे एकदम नही आये। इसी पर मैंने लिखा था कि 'वेदाक' मे मैंने कुछ नही किया है, अतः मेरा नाम न भी रहे तो हर्ज नही—पुरातत्वाक पर भी तो दूसरो ही का नाम रहेगा। वेद आदि का मुझे कुछ भी ज्ञान नही, आप ही दोनो रहे तो अच्छा। आपके पत्र मे मैंने स्पष्ट लिखा था कि दूसरे अंक से नाम छाप सकते है। मेरा कोई दूसरा अभिप्राय नही था। मैं छुट्टी मे रहकर अपना नाम देना नही चाहता था, परन्तु आपकी अनुमति का अनादर भी नही कर सकता—श्रीमान् पण्डित जी की कृपा को भूल भी नही सकता। मैं आप लोगो के स्नेह का वशीभूत हूँ। मेरे नाम पर आपके स्नेह का भी अधिकार है। किन्तु मैं यही सोचकर घबराता रहता हूँ कि अब मेरी वर्तमान स्थिति मे उस अधिकार का कबतक सदुपयोग हो सकेगा। केवल मेरे नाम से 'गगा' का कुछ लाभ नही। मैं जब उसकी सेवा मे तन-मन से लगाकर रहूँ; तभी मेरा नाम कुछ लाभकारी हो सकता है। ईश्वर की जैसी इच्छा।

मेरे घर मे तीनों स्त्रियाँ स्वतंत्र हैं। मैं मार या गाली से काम लेना नही जानता। सताना भी मेरे लिये कठिन है। भाई अपना भविष्य देखते हैं, मैं सबका देखता हूँ। अपने ही हृदय और स्वभाव के कारण मैं दुःखी हूँ।

गाँव का हाल यह है कि पिछले साल की मालगुजारी मे से आधे के क़रीब असामियो के यहाँ बाकी ही था, इस साल भी वही होगा। लक्षण बुरे हैं। देहातों में एक पैसा गिन्नी के बराबर हो रहा है। कोई 'देना' नहीं चाहता। है भी नहीं। अभावो की व्यापकता देखकर भविष्य की चिन्ता बढ जाती है। उधर सरकारी महाल होने से मालगुजारी वसूल करने मे बडी सख़्ती हो रही है—कांग्रेस की लगानबन्दी की अफवाह से सख्ती दिन-दिन बढ रही है, कोई सुविधा या गुंजायश नही—बस नगदनारायण का खेल है, नही तो असह्य अपमान!

देवनन्दन अलग हो गये हैं, नौकरी की तलाश मे हैं। घर का तखडपखड देखकर मैं अपने विषय मे बहुत चिन्तित हूँ। अनाडी होने से और भी चिन्ता है।

वहाँ मैं अब तक आया होता। किन्तु इधर मुकदमे का झमेला, उधर घर का। दोनो के बीच मे जो घबरा उठा है। मुकदमे में अगर सुलह भी हुई, तो उतना लिखना और चुकाना पहाड है। न सुलह हुई, तो और तबाही है। घर पर रहूँ तो एक मकान मे तीनो स्त्रियो का रहना असम्भव-सा नज़र आता है। काशी मे रहूँ तो खर्च नही जुटता। खेतबारी का इन्तजाम करने मे बड़ी तवालत है, छोड देने मे बालबच्चो का भविष्य सन्दिग्ध है। ऐसी दशा मे केवल पेट ही साहित्य-क्षेत्र मे डटाये हुए है, नही तो स्थिति वैसी नही है कि मैं कुछ ठोस काम करूँ। निश्चिन्तता अब स्वप्न जान पडती है। मुकदमे का खर्च भी नही जुटता कि पुष्ट प्रमाणो के रहते हुए भी आगे साहस बढाऊँ। डेरे का खर्च जुटता ही नहीं। चिट्ठीपत्री का खर्च जुटना भी असम्भव हो गया है। घर आने-जाने का खर्च पेट काटकर जुटाना पडता है। जाडे के कपडे वहाँ पडे हैं, ब्योत नही है कि वहाँ आकर वहाँ जल्दी ले आऊँ या यहाँ नया बनवाऊँ। काम मिल सकते है; पर स्थिरता न रहने से कोई काम भी हाथ नही लगता। दिसम्बर मे पचास रुपया मालगुजारी दाखिल करना है, एक पैसा असामी नहीं देंगे, पेट मानेगा नही, गहनों पर भी रुपये नही मिल रहे हैं। सोने की दर और रुपये की दर कम होने का हल्ला देहातो में भयकर भ्रम फैलाये हुए है। कोई पीतल और फूल के बर्तन भी बन्धक नही रखता, सोने चाँदी के गहनों की क्या बिसात है! ईश्वर ही रक्षक है।

मुझे खरीद लेने वाले गाहक कई मिलते हैं, पर अब ऋण के हाथो बिकना मुझे पसन्द नहीं है। एक लडकी भी पैदा हुई है, भविष्य को सम्हालना आवश्यक है। घर की हालत ऐसी है कि कोई किसी का हमदर्द नही है। स्त्री-बच्चों के लिये मैं ही अकेला हूँ, नही तो अन्धकार-ही-अन्धकार है। भाई को मैं क्षतिग्रस्त नहीं होने देना चाहता, खुद चाहे हो जाऊँ तो कोई हर्ज नहीं। राम का भरोसा है। कभी तो दिन फिरेंगे ही। किन्तु रह-रहकर धीरज टूटता है और राम-भरोसे

अभी तक कुछ निश्चय नही कर सका हूँ और डावाँडोल स्थिति में कुछ हो भी नही सकता। फिर भी आपका साथ देने मे यथाशक्ति लगा ही हुआ हूँ और यथासाध्य लगा ही रहूँगा। किसी दशा में रहूँ, कहीं भी रहूँ, मेरे ऊपर आपका स्नेह रहेगा ही, ऐसा विश्वास है, इसका बडा सहारा है।

आपको अब अधिक दुखडा सुनाकर दु खी बनाना नही चाहता। आप स्वयं कठिनाई मे पड़े हैं। आपकी कठिनाई का अनुभव केवल मैं ही कर सकता हूँ; किन्तु अपनी दाढ़ी की आग बुझाने से फ़ुर्सत ही नही मिलती कि सहानुभूति भी प्रकट करूँ।

देवनन्दन के हृदय मे कोई दोष नही है, उनकी स्त्री उनको लाचार कर रही है। मेरी स्त्री अपनी आन पर अडी है। कोई झुकना नहीं चाहता। समझौता असंभव हो गया है। घर की आबरू बचाना जरूरी है। मेरे ऊपर बडी भारी जवाबदेही आ पडी है। यदि मैं शिक्षित न होता, तो बड़ा सुखी रहता। विचार और विवेक प्रायः विपत्ति मे शत्रुवत् प्रतीत होते हैं। ज्ञान भी दु खदायी जान पडता है। मोह का पाश अत्यंत विकट है। घर का मोह, बालबच्चो का मोह, धन का मोह, यश और प्रतिष्ठा का मोह, उत्तरदायित्व का मोह, भविष्य का मोह—अनेक प्रकार के मोहो ने बुद्धि को चाँप लिया है। भगवान् ही उबारे।

मैं दूसरे अक के लेखों का सम्पादन कर रहा हूँ। एक आज नया लेख भेजता हूँ। इधर फिर शीघ्र ही दूसरा भी भेजूँगा। कुछ पहले भेज चुका हूँ। टिप्पणियाँ भी भेजूँगा। अगर वहाँ आ सका, तो एक सप्ताह मे सब समाप्त करके ही आऊँगा। किन्तु प्रूफ देखने के लिये नही ठहर सकूँगा। एक तो जाडे के कपडो के बिना यहाँ एक दिन एक कल्प-सा बीत रहा है, दूसरे घर जाकर और भी बहुत-सा काम सुलझाना है और फिर यहाँ आकर मुकदमे का तस्फिया करना है। खर्च का ब्योंत होते ही आऊँगा। दया करके मुझे एक सप्ताह मे छुट्टी दे दीजियेगा। मैं किसी तरह इससे अधिक समय तक नही ठहर सकता। चित्त मे कहीं शान्ति नही मिलती। लाचारी है।

आपने 'गंगा' निकाला या निकलवाया है। आप अगर साहस छोड़ेंगे तो बिहार से बढकर आप ही को अपयश मिलेगा। आप हिम्मत न हारिये। मेरी सेवा केवल आपके स्नेह पर अवलम्बित है।

आपका
शिव०

महाकवि विहारी की कविता
प्रोफेसर मनोरंजन प्रसाद सिंह एम० ए०
आगे के लेख भी शीघ्र जायँगे।

२८१ | पत्र सं० २६१९
| फा० सं० २४

मान्यवर शास्त्री जी,

सादर प्रणाम—

कृपापत्र पाकर बडा सन्तोष हुआ। साथ ही, बड़ी चिन्ता भी हुई। दो-दो आदमियो के रहते हुए भी आपको सख्त परेशानी उठानी पडती है, यह जानकर बडा दुःख हुआ। मेरे लेखो के पहुँचने से पहले ही पाँच फार्म छप गये, इस तरह तेजी से काम करने पर तो परेशानी होगी ही। दो बार आपके प्रूफ देख लेने पर फर्मा मशीन पर जाने लायक होता है, यह तो बड़ी दयनीय बात है, क्योकि दो-दो आदमी करते क्या हैं; 'मग' जी भी है। उन लोगो से काम लीजिये। कापी-करेक्शन मे भी वे मदद दे सकते हैं। छोटे-मोटे साधारण लेख दे दीजिये। आपको कुछ भी सहायता नही मिलती, तो फिर आप जो चाहे, व्यवस्था करें। मैं तो सहायता और सेवा के लिये लालायित रहकर भी इस समय भाग्य के फेर मे पड़कर भटक रहा हूँ। इसमे कोई शक नही कि आप मेरे सुख-सुबीते के लिये सब तरह की व्यवस्था करने को तैयार हैं, पर मै तो ऐसी दुविधा मे फँसा हूँ कि माया मिली न राम। मैं बनारस के गुरुओ के फेर मे जान नही दे रहा हूँ, अपने दुर्भाग्य के चक्कर मे फँसा हूँ। रुपया मुझे काटता नही, मैं त्यागी भी नही, सुख-सम्मानपूर्ण राजाश्रय का लोभ संवरण करना मेरे लिये असाध्य है; मैं आपकी सेवा से अलग नही हूँ, मुझे समीप जानिये, कृपादृष्टि के दायरे से बाहर न समझिये। मैं इस तरह एकाएक सपरिवार फिर कैसे चला आऊँ। जिस उलझन को सुलझाने के लिये छुट्टी ली है, उसकी तो अभी गाँठ भी ढीली नही हुई, सुलझना दूर की बात है। मैं चाहता था कि अग्रवाल प्रेस के साथ समझौता हो जाता, लेकिन वह अपनी शान मे ही लट्टू-पट्टू हो रहा है। घर के भाई समझते है कि राज-दरबार मे रहकर हीरा-मोती लूटकर अपने बालबच्चों को जिन्दगी भर के लिये अयाची कर डालेंगे, इसलिये अड़गा लगाते हैं कि अपनी खेती-बारी का इन्तजाम कीजिये और अपने दरवाजे की इज्जत आप सम्हालिये। मोर की सारी देह सुन्दर, लेकिन पैरो मे बिवाय फटी हुई। चारों ओर की आशा घर पर जाकर चूर हो जाती है। मैं सिर्फ शिकार वाले लेख का अनुवाद करने को यहाँ रुका हूँ। उसे भेजकर फौरन घर जाऊँगा। ईश्वर की भी ऐसी अकृपा है कि एक बूँद पानी गाँव की ओर नही बरसता। धान सूख रहे हैं। किसान आसमान ताकते हैं। हाय-हाय त्राहि-त्राहि मची है। अगर इस साल भी मालगुजारी न मिली, तो बड़ी भारी बेइज्जती होगी, पनाह मिलना दुश्वार हो जायगा। लेकिन अब तो चाहे जो हो, जमीन-जायदाद का लोभ छोड़ना बड़ा कठिन

है। पैतृक सम्पत्ति का त्याग करना भी असम्भव जान पड़ता है। घर की अन्दरूनी हालत भी आप जानते हैं। स्त्रियों में परस्पर घोर अनबन। घर में कोई मेठ-मालिक नहीं, सुबुद्धि भी नहीं। चित्त चंचल और खिन्न ही रहता है। यहाँ आया, तो जिसके मकान में ठहरने की जगह थी, वह मौके पर गायब था। झीकत-झीकते केदारनाथ के घर पर गया। वहीं दो रोज ठहरा। उस मकान में भी स्थान नहीं था, भड़ैतों से भरा था और गर्भिणी के लिये उसकी पहाड़ी सीढ़ियाँ बड़ी बीहड़ थीं; इसलिये झक मारकर वैद्यजी के मकान के खाली अंश में रहना पड़ा। स्त्री के गर्भ का नवाँ महीना है, उसकी देह टस से मस होना नहीं चाहती। हथुआ में हैजा होने के कारण वहाँ भी नहीं पहुँचा सका। रास्ते के नदी-नाले उमड़ने से घर भी न ले जा सका, आफत के चक्कर में पड़कर यहाँ उठल्लू-चल्लू की भाँति मुकाम देना पड़ा। आज तक कहीं भी स्थावर रहकर भर-पेट निश्चिन्त खाने नहीं पाया, यह मेरा अभाग ही है कि और क्या? मैं जान-बूझकर मारा-मारा नहीं फिरता, मेरा प्रारब्ध ही मुझे चर्खी पर नचा रहा है तो क्या करूँ। सबसे बड़ा माया-जाल गृहस्थी है। इसका मोह-पाश छूट जाने से ही वास्तविक लोकसेवा हो सकती है, ऐसा विचार मेरे मन में जमता जा रहा है। किन्तु इस वेदान्त का तो यहाँ कोई असर ही नहीं है! खैर, मैं अधिक क्या कहूँ, आपके घोर परिश्रम का हाल सुनकर बड़ा कष्ट हुआ है, और मैं ही उस घोर कष्ट का अनुमान भी कर सकता हूँ। खेद है कि दो सहकारी आपका भार कुछ भी हल्का नहीं कर रहे हैं। अगर छ महीनों के लिये रूपनारायणजी आ सकें तो बुला लीजिये। पण्डित जी की जैसी सलाह हो। मैं तो घर का रंग-ढंग अच्छी तरह देखकर ही कुछ निश्चय कर सकूँगा। अभी तक मुझे पूर्ण आशा है कि मैं छ महीने से पूर्व ही अपने घरेलू झमेलों को सुलझाकर आपकी सेवा में आ जाऊँगा, पर भविष्य ईश्वराधीन है। इस समय चारों ओर से खर्चों के झकोरे आकर झकझोर रहे हैं, लेकिन अब तो झेलना ही पड़ेगा। आपके घरेलू झंझटों को सुनकर और वहाँ का घोरतम परिश्रम सोचकर मन में तो जरूर आता है कि मैं चला आऊँ और आपको उबारूँ, पर लाचार हूँ, मन मसोस रहा हूँ। खैर, रुपये २५ आपने जो भेजने की दया की है, उन्हें मेरे पास भेजकर ठीक नहीं किया। मैंने देवनन्दन के पास वहीं से भेजने के लिये लिखा था। कल ही ६ तारीख है। कल रुपया बक्सर कचहरी में दाखिल हो जाना चाहिये। अगर यहाँ आया, तो मुझे तार से बक्सर भेजना पड़ेगा या खुद लेकर, ३-४ रुपये व्यर्थ खर्च करके, बक्सर तक दौड़ना पड़ेगा और फिर लगे हाथों घर तक पहुँचना पड़ेगा। अगर कल यहाँ या वहाँ—कहीं भी—रुपया न आया, तो पीछे आना ही बेकार हो जायगा; क्योंकि कल की तिथि का ही माहात्म्य है। मैं घर गया था, तो मालूम हुआ कि एक खेत हाल की मालगुजारी के बकाये में नीलामी पर चढ़ा है, अगर ६-६ को २५) न दाखिल हुआ तो नीलामी लिस्ट पर चढ़ जायगा। इसीलिये मैंने लिखा था कि रुपये

वही भेजे जायँ और मनीआर्डर फीस मेरे वेतन से काट ली जाय। खैर, अब तो जो हो गया सो हो गया। ता० २५ के पहले वेतन के रुपये न मिल सकेंगे, मैं जानता हूँ; पर विवश होकर वैसा लिखा था। जाने दीजिये, जैसी सुविधा हो, वैसा कीजिये। देहातो की हालत देखकर बड़ी चिन्ता हो रही है कि साधारण नौकरी से भी कैसे काम चलेगा। वर्षा के बिना हाहाकार मचा है। फसल सूख रही है। नहर वाले रुपये चाहते हैं। देहात में एक रुपया तो क्या, एकन्नी भी अशर्फी हो रही है। दशा देखकर दुःख होता है और चिन्ता भी बढ़ती है। किन्तु क्या किया जाय। ईश्वर की मर्जी। कृपा करके २५ के बाद रुपये भिजवाने मे देर न कीजियेगा। मैं इसी सप्ताह मे सब मैटर शेष करके भेज दूँगा, तब घर जाऊँगा।

कृपा रखियेगा। श्रीमान् पण्डितजी की सेवा मे सादर प्रणाम। श्रीमान् सरकार की कविता एक कवि को दी है, मिलते ही भेजूंगा।

शिव०

वेदाङ्क के लेखो के लिये आज्ञानुसार लेखको से मिलूंगा। मराठी के अनुवाद के लिये (१० पेज भूमिका) फी पेज १।), कुल १२॥), अनुवादक महाशय लेगे। स्वीकार हो तो सूचना दीजिये। यदि आज्ञा हो तो अनुवाद कराके भेज दूँ।

२८२ पत्र सं० २६१२ / फा० स० २४ — ३०-१०

मान्यवर शास्त्री जी

सादर प्रणाम।

कृपापत्र मिला। मेरा भी वही हाल है जो आपका। इसी से पत्र नही गया और उत्तर मे देर हुई। क्षमा करें। पुस्तक मिली थी। आधी पुस्तक पढ़ चुका हूँ, आधी अब तक बाकी है। घर के झमेले मे परेशान हूँ। चित्त स्थिर नहीं। पूरी पढकर अपनी राय लिखूंगा। आधी तो बहुत ही अच्छी लगी। मेरे ही योग्य पुस्तक है। आप खूब सफल हुए है। हार्दिक बधाई। 'बालक' मे परिचय

लिखने पर पुस्तक दे देनी पड़ेगी। मैं पुस्तक को छोडना नही चाहता। निहायत अच्छी पुस्तक है। 'बालक' के लिए अलग भेज सकें तो बेहतर। नहीं तो मैं व्यक्तिगत सम्मति भेज दूँगा। एक प्रति देने के लिये कृतज्ञ हूँ। ऐसी ही दया रहे। सिद्धेश्वरी तो पं० रामदहिन मिश्र के प्रेस में काम कर रहे हैं। मैंने विन्ध्येश्वरी को वहाँ जाने के लिये लिख दिया है। वे भी शुद्ध हिन्दी लिखते और प्रूफ पढते हैं। अखबार का काम मजे से करेंगे। आपकी आज्ञा में सदा रहेंगे। उनका अनुभव भी अच्छा है। प्रयाग सम्मेलन और सुधा कार्यालय मे माधुरी के समय काम कर चुके हैं। बालक में भी डेढ दो साल काम किया था। उनको आपके पास जाने के लिये लिख दिया। आप अब जैसा उचित समझें, करें।

शिव—

(आरम्भ के दो पृष्ठ नही हैं)

२८३ | पत्र सं० २६२१ | फा० सं० २४

× × × कई जगहो की बात चली, पर मै यहाँ से तिल भर टलने योग्य नही हूँ। क्योकि मुकदमे के लिये फिर वही आना-जाना और हाय-हाय मुझे पसन्द नहीं। मुकदमा समाप्त होने के बाद ही मैं अपने विषय मे स्पष्ट कह सकूँगा कि अब क्या करने का विचार है? (आप) मेरी प्रतीक्षा मे, आप अपना काम न बिगाडिये।

आपने 'जागरण' मे अपने ऊपर किये गये व्यगो का लक्ष्य मेरी ओर फेका है। यह आपका अनुमान मात्र है। जब तक वह पाक्षिक रहा, मैंने जो कुछ लिखा, उसका जिम्मा मेरा है। साप्ताहिक होने के बाद से मुझसे कोई सम्बन्ध नहीं है। नन्दकिशोर झा उस प्रेस मे थे। पूछ लीजिये। कभी उधर के रास्ते से निकला तो वहाँ गया, नही तो और कोई सम्बन्ध नही।

यहाँ सिर्फ रामदहिन मिश्र और लहेरियासराय का ही काम करता हूँ। बिहार छोड और कही का काम सहारा नही देता। हिन्दुस्तानी प्रेस रामदहिन जी का खुला है। उसमे कुछ काम प्रायः मिल जाता है। बस। 'जागरण' के विषय में

मुझ पर सन्देह करके आप मुझ पर व्यर्थ आरोप कर रहे हैं। पाक्षिक जागरण में भी मैं आपकी ओर से बिल्कुल बचा हुआ था, पर आपने होलिकांक मे यहाँ के वायु-मण्डल को भडका दिया, मुझे सबके दुराग्रह को मानना पड़ा और इसी परतंत्रता में 'जागरण' का अन्त भी हुआ। खैर, आपका लिखना ठीक है कि आप परवा नहीं करते, लेकिन साधारणतः व्यंग-विनोद की परवा कोई भी नहीं करता—करना भी नही चाहिये। साप्ताहिक जागरण मे आपने मेरे ऊपर भी कुछ देखा होगा। 'आज' के 'खैराती खाँ' भी कभी-कभी कृपा कर देते हैं। मगर व्यंगविनोदो की कौन परवा करे? हाँ, लेख होने पर परवा करनी पडेगी, आप भी करेंगे, मैं भी करूँगा। अच्छा, जाने दीजिये, यही जिन्दगी की शोभा है। पडोसी जिले का होने के कारण इतना तो रहने ही दीजिये कि मिलने पर या दूर रहने पर प्रणाम-पाती बनी रहे। बिहार प्रान्तीय सम्मेलन भागलपुर मे होगा। उस समय आपके दर्शन की अभिलाषा है। आगे विश्नाथ (विश्वनाथ) की दया। हाँ, पं० नन्दकिशोर जी जाते हैं। यहाँ सरस्वती प्रेस और हिन्दुस्तानी प्रेस मे काम करते रहे। दोनों जगह इन्हे पसन्द नही। यहाँ का जलवायु भी इन्हे अनुकूल नही जँचता। इसलिये फिर आपकी शरण मे जा रहे हैं। हे ब्रह्मण्य देव! इनके अपराध को क्षमा करके मेरी सिफारिश से इन पर दया कीजिये। आप अपराध क्षमा करने में बडे उदार हैं—मेरी ही तरह इनका भी अपराध क्षमा कीजिये। अगर मुझसे कोई झगडा भी है तो मैं आपसे वही आ मिलूँगा—झगडा करके निबट लीजियेगा। इनको अवश्य शरण दीजिये। निराश न करें।

दया करके श्रीमान् सरकार और पण्डितजी के चरणों में मेरा सादर सविनय प्रणाम पहुँचा दीजियेगा। मैं भागलपुर सम्मेलन के समय आने की चेष्टा करूँगा और उस समय अवश्य ही दर्शन करूँगा। अभी अगर मुकदमा न होता तो एक बार जरूर आता। गाँव पर कुर्की गई है। ईश्वर ही बचा देगा। भविष्य की बड़ी चिन्ता है। भगवान का भरोसा है। आपका आशीर्वाद।

आपको जो यह लम्बा पत्र पहले भेजा था, नही मिला। अब उसकी बातें बहुत पुरानी पड गईं। समय निकल गया। जाने दीजिये। आपके इस पत्र का उत्तर फिर कभी दूँगा। इस समय बडी शीघ्रता में नन्दकिशोर झा जा रहे हैं। समय मिलते ही उत्तर दूँगा। हो सका तो उस खोये हुए पत्र की कुछ बातें भी याद करके नोट कर दूँगा। आपके अनुग्रह से सपरिवार सकुशल हूँ। विश्वनाथ जी का आधार है और कोई अवलम्ब नही है। विशेष नन्दकिशोर झा से पूछ लेंगे।

आपका कृपाकांक्षी
शिवपूजन

२८४ पत्र सं० २६२६ बुलानाला, बनारस सिटी

फा० सं० २४ ता० १२-११-१९३२ ई०

शिवपूजन सहाय
द्वारा/महाशक्ति-मन्दिर

मान्यवर शास्त्री जी,

सादर प्रणाम।

आपका कृपापत्र पाकर बड़ी खुशी हुई। मेरे पाक्षिक 'जागरण' के व्यंगों और समालोचनाओं से पीड़ित होकर भी आप मुझपर इतना स्नेह और इतनी दया रखते है, यह आपके हृदय की विशालता का परिचायक है। फिर, लोगो के यह कहने पर भी कि साप्ताहिक 'जागरण' मे भी मैं ही आप पर छिपे-छिपे वार करता हूँ—आप विश्वास नही करते, यह भी मेरे ऊपर आपकी असीम कृपा ही है। किन्तु मैं भी इन बातो मे कोई सफाई देना नही चाहता; क्योंकि किसी के दिल मे बैठी हुई बात को निकाल फेंकना बड़ा ही दुस्तर कार्य है। मैं इतना ही कह सकता हूँ कि जिन विषम परिस्थितियो मे मैं गुजर रहा हूँ, उनमे रहकर ऐसे काम कर सकना असम्भव-सा है—भले ही आप किसी कारण से उसे सम्भव या सरल समझते रहे। 'मतवाला' के समय मे भी आपका सन्देह दूर नही हुआ था, और अब तो सन्देह के लिये कारण मिल गये हैं। खैर, जो हो, आप मुझसे पक्का वादा करा लेना चाहते है कि मै दो मास के बाद सब झझटो से बरी होकर आपकी सेवा मे अवश्य आ जाऊँगा; तो मैं अत्यन्त नम्रता के साथ निवेदन करूँगा कि पक्का वादा करना मेरी वर्तमान स्थिति के सर्वथा प्रतिकूल है। श्रीमान् सरकार और पण्डितजी की स्नेहशीलता और कृपा का स्मरण करते हुए मैं सहसा निश्चित अभिवचन नही दे सकता, क्योंकि वादा करके फिर उसके खिलाफ काम करना बहुत ही निन्दनीय कर्म है। मैं छ महीने की छुट्टी लेकर आने लगा, तो सब लोगो ने एक स्वर से यही आशीर्वाद दिया कि अब यह नही आवेंगे, हमेशा के लिये जा रहे है। मेरे मन मे यद्यपि वैसी भावना भी नही थी—जिसपर अब कोई विश्वास भी नही करेगा, तथापि 'पंचमुखे परमेश्वर' की उक्ति सत्य निकली। मैंने जहाँ-जहाँ काम किया, अपनी ईमानदारी मे जरा भी कसर नही की, लेकिन फिर भी मेरे ईमान पर सब लोग बराबर शक ही करते रहे। यहाँ चले आने पर भी 'गंगा' के साथ सम्बन्ध बना हुआ था, मगर वह भी मेरी परिस्थितियो के पेट में समा गया। मैंने कभी स्वेच्छा से या आन्तरिक प्रेरणा से त्यागपत्र नही भेजा। मुझे वह बात याद थी कि मैं श्रीमान् सरकार के सामने कह आया हूँ कि फिर जरूर आऊँगा। आपसे और पण्डितजी से झूठ बोलकर निस्तार पा सकता हूँ, पर एक छत्रधारी राजा से झूठ बोलकर

नहीं। किन्तु अब तो इन बातों को भी लोग उज्ज्वल दम्भ ही समझेंगे और वास्तव में अब मेरी सचाई और ईमनादारी स्पष्टरूपेण पाखण्ड बन ही गई है। किन्तु विकट परिस्थितियों के दिये हुए इस क्रूर दण्ड को मैं टाल भी नही सकता, किसी तरह भोगना ही पडेगा—भोगता ही हूँ। अगर यह मैं जोर देकर भी कहूँ कि 'गंगा' से सदा के लिये पिण्ड छुड़ाकर भागने की बात मन में लेकर ही मैं वहाँ से चला आया—यह धारणा निर्मूल है, तो अब ईश्वर को भी शायद ही विश्वास हो। मैं अगर साफ़ जवाब देकर ही चला आता तो श्रीमान् सरकार मुझे 'बंगाल टाइगर' की तरह गोली का निशाना न बनाते और न श्रीमान् पण्डितजी ही मेरा वेतन रोक लेने की अनुदारता दिखाते। दोनो ही श्रीमान् मुझ पर जितना स्नेह और जितनी दया रखते थे, उतना अब शायद ही किसी संयुक्त सम्पादक को नसीब हो तो हो। मगर मैं दुनिया को अपनी लाचारी का सच्चा फोटो किस तरह दिखाऊँ; क्योकि उसका ब्लाक भी कही नही बन सकता। अब तक सिर्फ अपनी सीधाई (सिधाई) या अपने बुद्धूपन के कारण ही मै अपनी उन्नति के खुले दरवाजो मे ताले जडता आया हूँ, और न जाने अभी आगे मेरे लिये कितने ताले इन्तजार कर रहे हैं। ईश्वर की यही इच्छा है।

अन्त मे मैं श्रीमान् सरकार और पण्डितजी के पूज्य चरणो मे कृतज्ञता-कुसुमाञ्जलि अर्पित करता हुआ यही कहना चाहता हूँ कि इस समय किसी तरह का पक्का वादा करना मेरे लिये सर्वथा असम्भव है। ऐसा लिखने को मैं सखेद विवश हो रहा हूँ। मेरी विवशता का कारण सम्प्रति यही है कि मुकदमे के खत्म होने की आशा नजर नही आती। बक्सर में मुद्दई की ओर से इजराय कुर्की गई थी, तो देवनन्दन और नन्दन ने अपने हिस्से की उजरदारी की थी; सो भी खारिज हो गई। अब मेरे साथ साथ उन लोगो की जायदाद भी नीलाम पर चढ़ गई है। इसी ५ नवम्बर को फैसला हुआ है और ५ दिसम्बर के अन्दर अपील करना है; जिसमे काफी खर्च भी है। हम लोग बरसो से अलग हैं, आपस में सादा फाटबन्दी लिखी गई थी, सो रजिस्टर्ड न होने के कारण नाजायज साबित कर दी गई है। अब अपील की आयु कोई नही जानता कि कब तक चलेगी। फिर अन्तिम परिणाम तो ईश्वराधीन है ही। इससे मेरी स्थिति और भी बिगड गई है। मैं ऐसे झमेले मे पडे रहकर कोई भी जवाबदेही का काम नही ले सकता। आप नाहक मेरे स्नेहपाश मे बँधकर अपने हृदय को कष्ट पहुँचा रहे है। मुझे अवकाश मिल जाता तो मैं स्वयं श्रीमान् सरकार की सेवा में उपस्थित होकर आश्रय माँग लेता, मगर राजा लोग तो ईश्वर के अंश माने गये हैं—उनकी कृपा का अधिकारी होना महत्तम सौभाग्य का चिन्ह है, सो चिन्ह भला मैं धारण कर सकूँगा? अभी तो ऐसी आशा नही है, आगे का हाल राम जाने।

अस्तु ! उस खोये हुए पत्र की बातें अब रहने दीजिये । उन्हें कभी अवसर पाकर लिखने की कोशिश करूँगा । इस समय क्षमा ।

अब, एक प्रस्ताव आपके सामने रखता हूँ । इसलिये नही कि महासभाओ के प्रस्तावो की तरह इसे भी फाइल मे डाल रखिये, बल्कि इसलिये कि आप इसे कार्य-रूप मे परिणत कीजिये—केवल पास ही नही; क्योकि केवल पास करके किनारे हो जाने से यह कार्यरूप मे परिणत नही होगा, और आप यदि चाहेगे तो इसे कार्यान्वित कर सकेंगे । प्रस्ताव सुसाध्य है, असाध्य नही । इस पर तुरत विचार होना चाहिये ।

मेरी राय है कि आप प० नन्दकिशोर तिवारी बी० ए० को सहकारी सम्पादक के पद पर नियुक्त करने के लिये श्रीमान् सरकार और श्रीमान् पण्डित जी से निवेदन करे और उन्हे इस नियुक्ति के लिये राजी भी करे ।

अब, आपके सन्तोष के लिये मैं यह जिम्मा ले सकता हूँ कि तिवारीजी आपके साथ मेरी ही तरह रहेगे । आपकी सहायता मे मेरी ही तरह तत्पर रहेंगे । उनकी योग्यता के विषय मे मैं कुछ नही कहूँगा । चाँद, साप्ताहिक भविष्य', दैनिक 'भविष्य' और 'सुधा' का सम्पादन करने के बाद इस समय बिलकुल बेकार होकर अपने घर बैठे हैं । उनकी प्रतिभा और शक्ति का व्यर्थ ही ह्रास हो रहा है । उनके रहने से आप एकदम निश्चिन्त रहेगे । आप समस्त भार छोडकर घूम सकते है । उनसे मैंने वचन ले लिया है कि 'गगा' की नीति का पालन और आपकी आज्ञाओ का पालन अपना कर्त्तव्य समझेंगे । उनमे अच्छा और योग्य तथा सस्ता आदमी आपको नही मिल सकता । इस समय मैंने उनको एक सौ रुपये पर राजी कर लिया है, सिर्फ मकान मुफ्त देना होगा । अगर आप उनकी बेकारी पर दया करके उनके पास खर्च भेजकर वहाँ बुला लें और प्रत्यक्ष बातचीत करके उन्हें समझ लें, तो और अच्छा । उनका पता मैं नीचे लिखता हूँ । उनको मैंने आवेदन पत्र भेजने के लिये लिख दिया था, सो उन्होने भेजा होगा । आप अवश्य उस पर ध्यान देने की उदारता दिखावें । मैं उनके लिये तह दिल से सिफारिश और सविनय अनुरोध करता हूँ कि आप उनको जरूर अपनी सेवा मे रखिये । अगर आपकी कोई दूसरी धारणा हो, तो वह एकदम गलत साबित होगी । तिवारी जी आपको सर्वथा सन्तुष्ट करेंगे । आपको कोई शिकायत करने का मौका नही मिलेगा । अगर उनको थोडी भी आशा की झलक मिलेगी, तो वह आपकी सेवा मे स्वय जायँगे और आपसे बातें करके आपको राजी कर लेंगे । उनको इतना भी अवसर देने की दया कीजिये । मैं उनकी नियुक्ति से बहुत ही सुखी होऊँगा और आप तो पूर्ण सुखी होगे । उनमे जो जौहर है, वह प्रश्रय न पाने से नहीं खुलता । अगर आप सचमुच मेरी बात का कुछ खयाल करते है तो निस्संकोच तिवारीजी को अपनी सेवा मे रखिये । वह आपके लिये अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगे । आप

किसी बात की शंका या सन्देह न करे। बस, तिवारीजी का पता यह है—"मुकाम-तिवारीपुर; डाकघर—चुरामनपुर; जिला—शाहाबाद; वाया बक्सर, ई० आई० आर०।"

आपका कृपापात्र
शिवपूजन

२८५ पत्र सं० २१६७ बुलानाला, बनारस सिटी
फा० सं० २० ता० ७-६-१९३३ ई०

शिवपूजन सहाय
द्वारा/महाशक्ति-मन्दिर

मान्यवर शुक्ल जी,

सादर प्रणाम।

कृपापत्र पाकर कृतार्थ हुआ। इस दया के लिए कृतज्ञ हूँ। मैं ऐसी ही दया का पात्र हूँ।

मई की 'सरस्वती' आज तक नहीं मिली। एक सप्ताह मे हास्यविनोद भेज दूँगा। अवश्य।

हंस' मे फिर इस बार भी लिखूँगा। अभिनदन ग्रथ मे स्त्रियो, बालको और युवको के लिए कहाँ क्या है, यह छाँटकर लेख तैयार करने मे लगा हूँ। अभिनन्दन ग्रंथ की कही चर्चा भी नही देख पडती। 'जागरण' ने भी संक्षिप्त परिचय ही छापा। "अभिनन्दन ग्रथ कैसे तैयार हुआ" नामक लेख जब कही न छपा, तब ग्लानिवश फाड फेका।

श्रीमान् द्विवेदीजी, ठाकुर साहब, मिश्रजी, त्रिपाठी जी, सबको सादर प्रणाम। वर्षा आरम्भ होने पर दर्शन करूँगा। जून के पुरस्कार का रुपया मुन्शीजी को दे दीजिएगा।

आप अभिनन्दन ग्रंथ पर कुछ लिखिये। मेरी चर्चा न रहे, उसका नतीजा बुरा होगा। इस बात पर ध्यान दे। प० सुन्दरलालजी और नरेन्द्रजी को अभिनंदन ग्रंथ मिल गया होगा।

२८६ | पत्र सं० २१९४ | फा० सं० २०

जागरण-कार्यालय
सरस्वती प्रेस, काशी
ता० १२-६-१९३३ ई०

मान्यवर शुक्ल जी,

सादर सविनय प्रणाम।

दोनों कृपापत्र पाकर कृतकृत्य हुआ। इतनी कृपा कहाँ रक्खूँगा? आचार्य द्विवेदी जी वाले लेख 'हंस' को इसलिए दे दिये कि 'सरस्वती' में छपने का विश्वास नही था। क्योंकि वहाँ मैं देख चुका था कि साल भर के लिए खास-खास लेखको की सूची बन चुकी थी। आपका प्रोग्राम देखकर ही साहस न हुआ। लेखमाला शुरू कर देने पर अपनी इच्छा प्रकट करके आपने मुझे अत्यंत अभागा साबित कर दिया। ख़ैर, अभिनन्दन ग्रन्थ का विस्तृत परिचय आपके लिए फिर लिखूँगा। 'जागरण' और 'आज' के न छापने पर ग्लानिवश मैंने फाड़कर मूर्खता की। उस आवेश के लिए अब पछता रहा हूँ। आपका कृपापूर्ण पत्र पाकर वह पश्चात्ताप चौगुना हो गया। दो जगहो से हताश होने पर कहीं तीसरी जगह बिना माँगे भेजने का साहस न हुआ। आपका खयाल ही न रहा, क्योंकि वही धारणा बँधी थी कि वार्षिक कार्यक्रम मे व्याघात होगा। खैर, आप एक ही सप्ताह मे माँगते हैं। अब फिर नये सिर से सब काम करना पड़ा। वह लेख दैनिक या साप्ताहिक के लिये ही उपयुक्त था। 'सरस्वती' के योग्य लिख सकूँगा या नही, इसमे सन्देह है। चित्त अव्यवस्थित है। उस लेख को इस ख़याल से भी नहीं भेजा कि 'सरस्वती' के स्टैंडर्ड के योग्य न था। सिर्फ मुरौवत-मुलाहजे से फायदा उठाना मेरे स्वभाव के विरुद्ध है।

आचार्य द्विवेदीजी के सम्बन्ध मे फिर इस बार 'हंस' मे लिखा है। दो तीन अंको मे और लिखना है। मैं नही जानता था कि आप इसे देखकर 'सरस्वती' के योग्य समझ बहुत पसन्द करेंगे। खैर, अब तो जो होना था सो हो गया। अभिनन्दन ग्रंथ की कहीं कोई चर्चा ही नही नजर आती। मैं लेख, कविता, चित्र आदि सब पर विस्तार से लिखूंगा। आप चाहे कुल छापे या सारा का सारा नष्ट कर दें। सर्वाधिकार आपके हाथ। जून का अंक आज तक नही आया। मई का अंक शायद रास्ते में होगा। जुलाई का हास्यविनोद अगले सप्ताह के आरंभ ही मे भेज दूंगा, मसाला जुटा लिया है।

श्रीमान् ठाकुर साहब को प्रणाम। मिश्रजी, त्रिपाठीजी, द्विवेदीजी, सबको प्रणाम। जून के पुरस्कार के चार रुपये मुन्शीजी को जरूर दे दीजिए, कहीं भूल न जाइए, कह दीजिए कि शिवपूजन जो ले गये थे वही है।

श्रीमान् ठाकुर साहब के पत्र का उत्तर हास्यविनोद के साथ जायगा।

शिवपूजन

२८७ | पत्र सं० २१९६ | फा० सं० २०

काशी, १४-८-३३

मान्यवर शुक्ल जी,

सादर प्रणाम।

सविनय निवेदन है कि जुलाई-अंक का पुरस्कार अभी तक नहीं आया। अब तक आ जाना चाहिए। आगे का मैटर अगले सप्ताह भेज दूँगा।

कहानी के लिए आपका सँदेसा सबसे कह दिया था और प्राय. स्मरण भी करा दिया करता हूँ, परन्तु अभी शायद केवल व्यासजी ने ही कहानी भेजी है।

मेरा लेख और मेरी कहानी दोनो मे सिर्फ लेख ही का ढाँचा तैयार है। चार पेज में कुछ भी लिखने का अवकाश न रहेगा; केवल संक्षिप्त परिचय होगा। चित्र मेरा दुर्लभ हो गया है।

मुन्शी जी से कह दीजियेगा कि यहाँ कन्या ने जन्म लिया है।

श्रीमान् द्विवेदीजी, त्रिपाठीजी, मिश्रजी—सबको सादर सप्रेम प्रणाम।

ठाकुर साहब कलकत्ते से आये हैं? उनका लेख तो बडा हडकम्पी निकला। उसका उत्तर आपने वि० भा० मे देखा होगा। विषम स्थिति है।

वैद्यजी की कनपटी मे भयंकर फोडा हुआ है। सख्त बीमार है। ईश्वर भरोसा।

शिव

२८८ | पत्र सं० २१९१ | फा० सं० २०

बुलानाला, बनारस सिटी

ता० १९-८-१९३३ ई०

शिवपूजन सहाय
द्वारा/महाशक्ति-मन्दिर

मान्यवर शुक्ल जी,

सादर प्रणाम।

आज की डाक से पाँच रुपये मिले। किन्तु तीन पेज का छ रुपया मिलना चाहिए। एक रुपया कट जाने का कोई कारण नही जान पडा। दो रुपये पेज से

कम मे नही पोसाएगा। आप स्वयं इस पर विचार करें। यदि आप अब अनावश्यक समझते हो तो मैं आगे न लिखा करूँ। आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा मे हूँ। यदि आप न चाहेंगे तो मैं क्यो लिखूँगा। आप ही के अनुरोध का पालन करता था। एक तो दुनिया भर से दुश्मनी मोल लेना, दूसरे पुरस्कार मे भी सोलह आने की कमी। कृपया स्पष्ट उत्तर से कृतज्ञ करे।

श्रीमान् द्विवेदीजी, मिश्रजी, त्रिपाठीजी और ठाकुर साहब को सप्रेम प्रणाम। ठाकुर साहब का उत्तर पढने के लिए बहुत लोग उत्सुक है। चतुर्वेदी जी की सफाई पढकर लोग गम्भीर बन गये हैं। 'हंस' ने भी बहुत जोरदार लिखा है। ठा० सा० अब क्या सोच रहे हैं। सोचसमझकर शान्त भाव मे जल्दी कुछ लिखे। मेरा चित्र नही मिलेगा, लेख सादा लेंगे या नही, कृपया उत्तर शीघ्र देने की कृपा करे।

शिव

२८६

पत्र म० २१६२ — काशी

फा० स० २० — १३-६-३३

मान्यवर शुक्ल जी,

सादर प्रणाम।

कृपापत्र मिला था। उसके वाक्यो मे विरक्ति और उदासीनता है। मुझे रुपये से अधिक आपकी कृपा का ही खयाल है। आप प्रसन्न रहे, वह कुछ काम भी मिले तो कोई चिन्ता नही।

अगस्त मे सदानन्द जी पहले से बहुत अच्छे रहे। शायद अब आवश्यकता नही है। किन्तु लेख छपे या न छपे, आप नाराज तो न हो। आप उतना स्नेह उस समय दिखाते थे, अब इधर मैंने क्या अपराध किया? सुना है, विजयानन्द के कारण आप बहुत खफा हो रहे है। तब तो आप अपने सरस स्वभाव के विपरीत जा रहे हैं।

श्री ठाकुर साहब और द्विवेदीजी, मिश्रजी, त्रिपाठी जी को प्रणाम।

शिव

२६० | पत्र सं० २१८८ | फा० सं० २०

बुलानाला, बनारस सिटी
ता० ५-१०-१९३३ ई०

शिवपूजन सहाय
द्वारा/महाशक्ति-मन्दिर

मान्यवर शुक्ल जी,

सादर प्रणाम।

कृपापत्र और वापस किया हुआ मैटर मिला। धन्यवाद। लेख और कहानी की फिक्र मे मैं भी हूँ। आपसे अधिक मुझे ख्‌द उसका ख़याल है। आप कहते हैं कि सरस्वती को मत भूलना। मगर यह उलटी बात है। सरस्वती की बड़ी दया है जो ऐसी बात कहती है। यह आपकी अकारण कृपा ही है, और कुछ नही। अब मैं लहेरियासराय जानेवाला हूँ। यहाँ का झंझट-झमेला निपटा रहा हूँ। वहाँ गये बिना ऋणो से छुटकारा नही मिलेगा। कही रहूँगा, सरस्वती की सेवा न भूलूँगा। आप लोगो के रहते ऐसा नही हो सकता। निश्चिन्त होने पर आप देखेंगे कि कैसी सेवा करता हूँ। यथासमय सूचना दूँगा भावी प्रोग्राम का। दया बनी रहे।

श्रीमान् ठाकुर साहब, द्विवेदीजी, मिश्रजी, त्रिपाठीजी, सबको सप्रेम प्रणाम। सितम्बर अक नही मिला।

शिवपूजन

२६१ | पत्र सं० २१९३ | फा० सं० २०

बुलानाला, बनारस सिटी
ता० १०-१०-१९३३ ई०

शिवपूजन सहाय
द्वारा/महाशक्ति-मन्दिर

मान्यवर शुक्ल जी,

सादर प्रणाम।

अकतूबर की 'सरस्वती' मिली। ३७२ पेज के दूसरे नोट की आखिरी लाइन मे "नत्-मस्तक" होता तो और अच्छा होता। मैंने कापी मे व्यग्यसिद्धयर्थं

अशुद्ध ही लिखा था, किन्तु शुद्ध कर देने से व्यंग्य पंगु हो गया। आशा है, आप ध्यान दिलाने के लिए क्षमा करेंगे। ता० २०-१० तक अवश्य ही नवम्बर का व्यंग्य-विनोद भेज दूँगा। इस बार २० ता० से आगे समय नहीं जायगा। ठाकुर साहब का बमगोला खूब देखा। सदानन्द जी के बडे भैया तो अबकी बडा मजा करेंगे। ठाकुर साहब को सप्रेम वन्दे। श्री द्विवेदीजी, त्रिपाठीजी, मिश्रजी सबको सप्रेम प्रणाम। बचा हुआ विनोद फाड फेंकिए, विजयानन्द ले गए।

शिवपूजन

श्रीः

"बालक"
[सम्पादन-विभाग]
लहेरियासराय

२९२ पत्र स० २१८६
- - -
फा० सं० २०

न०···

ता० ८-१-३४

मान्यवर शुक्ल जी,

सादर सप्रेम प्रणाम।

कल शाम को आपका कृपापत्र पाकर मै स्तब्ध रह गया। नये साल के अच्छे-अच्छे तोहफ़े लुट गये, इसका बड़ा अफसोस है। परिश्रम व्यर्थ, लाभ मे बाधा। ता० २३-१२ को ही मैंने भेज दिया था कि २५ को मिल जाय। पहले लिख भी चुका था। इसी प्रतीक्षा मे था कि 'सरस्वती' आ रही होगी. नववर्षाङ्क के कारण कुछ देर हो रही है। पर बात उलटी हुई। 'सरस्वती' तो आई ही नही, आपकी चिट्ठी भी आई तो हताश और हतोत्साह करने का सामान लेकर। दो दो बार ऐसा हो चुका। यह दूसरा मौका है। काशी से भी ऐसा ही एक बार हुआ था। रहस्य समझ मे नही आता। यहाँ कार्यालय मे उसे कई आदमियों ने देखा और सराहा था। क्या कहूँ। बड़ा अफसोस होता है। बड़ी उमग से बड़ा मजेदार लिखा था। आश्चर्य है। खैर, जी बडा उदास हो गया, मगर फ़रवरी के लिए रजिस्टर्ड या बैरंग भेजूंगा। 'सरस्वती' काशी गई हो तो अब यहाँ न भेजें। वसंत पंचमी मे काशी जाऊँगा, परिवार को यहाँ लाना है; फिर आगे यहाँ भेजें।

श्रीमान् ठाकुर साहब, द्विवेदीजी, त्रिपाठीजी, मिश्रजी, सबको सप्रेम प्रणाम।

अब कब आप लोगों के दर्शन होंगे और कब गहरी छनेगी और कब कहकहा मचेगा, यह राम जाने।

शिवपूजन

२६३ | पत्र सं० २१६० | का० सं० २०

बुलानाला, बनारस सिटी
ता० ८-२-१६३४ ई०

शिवपूजन सहाय
द्वारा/महाशक्ति-मन्दिर

मान्यवर शुक्ल जी,

सादर प्रणाम।

मैं गत रात्रि गाँव से आया। भूकम्प के बाद ग्यारहवें या बारहवें दिन यहाँ आया। तब तक पत्नी ने अन्न-जल छोड़कर अपने को पित्तप्रकोपवश ज्वर-ग्रस्त बना लिया था। उसे सम्हालकर घर गया तो वहाँ भी कुछ क्षति हुई है और घोर पाले से फसल मारी गई है। उधर लहरियासराय नौकरी करने गया तो भूकम्प ने वहाँ सर्वनाश मचा दिया। अपनी आर्थिक स्थिति से विचलित होकर चित्त बेकाबू हो गया है। चौमुखी सकट उपस्थित है। इसी चक्कर मे किसी को कोई पत्र न दे सका और न चित्त अभी स्थिर ही है। आप लोगो के शुभाशीर्वाद से जान बच गई, ईश्वर की दया हुई। जी गया तो सदानन्द कायम रहेगे। बड़ी हलचल और हड़कम्प है। मन उद्विग्न है। मगर कुछ तो करना ही होगा।

फिर लहरियासराय जाना पड़ेगा। और कोई गति नही है। ईश्वर जिस दशा में रक्खे। अवस्था भयकर होने से हाथ और दिल काँपता है। क्षण-भर वह प्रलय नही भूलता और न हृदय शान्त होता है। मैं आपकी सेवा के लिए लालायित हूँ और आपकी दया भी है। भगवान की इतनी कृपा है कि आप लोगों की सहानुभूति से जीने का सहारा पूरा है। ठाकुर साहब को प्रणाम। दयादृष्टि रखियेगा।

शिव

२६४ | पत्र सं० २१८६ | फा० सं० २०

पब्लिशर
पुस्तक भण्डार
लहेरियासराय
१४-४-१६३५

एडिटर
रामलोचनशरण
रिफ.............
चिल्ड्रेन'स ओन मन्थली
बालक

मान्यवर शुक्ल जी,

सादर प्रणाम ।

आपकी सेवा मे एक लेख जा रहा है। इसे 'सरस्वती' मे शीघ्र प्रकाशित करने की कृपा कीजियेगा। यदि यह प्रकाशित हो गया, जैसी कि पूर्ण आशा है, तो इस विषय के और भी दो चार लेख जायँगे। आशा है, आपको वह विषय पसन्द होगा।

हम लोग आपकी 'सरस्वती' का खूब आनन्द लेते हैं। यहाँ 'सरस्वती' बराबर आती है, 'बालक' उसका ग्राहक है। आप लोग उसे इतना आकर्षक बना रहे हैं कि बरबस उसमे लिखने की प्रवृत्ति होती है। उसी का यह परिणाम है कि एक लेख जा रहा है. और भी लेख जायँगे।

यह लेख आपको रुचिकर जँचेगा, क्योकि आपका प्रिय विषय है। मेरे विशेष अनुरोध से श्रीदत्त जी ने यह लेख लिखा है। इस विषय पर उनका बहुत अच्छा अध्ययन है और आप यदि सहारा देंगे तो वे बराबर लिखेंगे। इस कोटि के अन्य विषयो पर भी अधिकार-पूर्वक लिख सकते हैं। आपसे प्रोत्साहन मिलने की आशा है।

श्रीमान् ठाकुर साहब हिन्दी संसार मे खूब हड़कम्प मचा रहे है। उनकी लेखनी का मजा खूब ले रहा हूँ। उनके लेख कही भी छपे, जरूर पढे जाते है। उन्हे मेरी ओर से यह सन्देश सुना देंगे। श्री द्विवेदीजी और त्रिपाठीजी को सादर प्रणाम।

शेष मंगल।

—शिवपूजन

२६५

पत्र सं० २१८५	'बालक'— कार्यालय	सम्पादक और संचालक
फा० सं० २०	पुस्तक-भंडार, लहेरियासराय (बिहार-प्रान्त)	श्री रामलोचनशरण बिहारी (अध्यक्ष, पुस्तक-भंडार)

पत्र-संख्या तारीख १४-६-३६

श्रद्धेय शुक्ल जी,

सादर सविनय प्रणाम।

सूर्यपुराधीश राजा राधिकारमणप्रसाद सिंह एम० ए० की एक कहानी 'सरस्वती' में प्रकाशित करने के लिए भेज रहा हूँ। राजा साहब के क्लर्क ने इसकी कापी की है और उन्होंने स्वयं इसे देख लिया है। आप कृपया इसे ठीक करके छापने का कष्ट करें। उन्होंने मेरे पास भेजा है कि 'सरस्वती' में भेज दीजिये। वे उसके शायद ग्राहक भी हैं इसकी स्वीकृति-सूचना यहाँ भेजने की कृपा करें। मैं उन्हें सूचित कर दूँगा। यदि यह कहानी छप गई तो वे बराबर 'सरस्वती' में कहानियाँ लिखेंगे; क्योंकि उनके पास बहुत-सी कहानियाँ लिखी रक्खी हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इसमें पुरस्कार के लेने-देने का कोई सवाल ही नहीं है। राजा साहब अब राज-काज को कुँवर साहब के सिपुर्द कर स्वयं साहित्यसेवा करना चाहते हैं। यदि आप उन्हें अपनाने की कृपा करेंगे तो वे साहित्यक्षेत्र में फिर उत्साह से काम करेंगे।

आपकी दया से 'सरस्वती' मिलती है। अभी उसकी सेवा न कर सका, इसके लिए बहुत लज्जित हूँ। पर अब उसके लिए यथाशक्ति कुछ लिखने का विचार कर रहा हूँ—शुरू करने पर बीच में बाधा न पड़े, ऐसा ही प्रबन्ध कर रहा हूँ। हास्य-रस वाला स्तम्भ पुनः शुरू करूँगा।

श्रीमान् ठाकुर साहब को सादर प्रणाम। मिश्र जी और द्विवेदी जी को प्रणाम।

—शिव

२९६ | पत्र सं० २६१५ | फा० सं० २४

पुस्तक-भंडार, लहेरियासराय
पत्र-संख्या..............
तारीख १७-१२-३६

'बालक'
सम्पादक एवं संचालक
श्रीरामलोचनशरण बिहारी
(अध्यक्ष, पुस्तक-भंडार)

मान्यवर शास्त्री जी,

सादर प्रणाम।

पूज्य पंडितजी का फोटो मिला। धन्यवाद। ब्लाक बन जायगा। किन्तु चित्र वापस नही जायगा; क्योकि सभी साहित्यिको के चित्रो का संग्रह किया जा रहा है। कृपया अपना और श्रीमान् कुमार साहब बहादुर का चित्र भी शीघ्र भेजिये। साथ ही परिचय भी। 'बालक' मिला होगा। देवनन्दन का पत्र आया है।

शिव

२९७ | पत्र सं० २६११ | फा० सं० २४

'बालक'
२७/६

मान्यवर शास्त्री जी,

सादर प्रणाम।

आप जबसे गये, कोई समाचार न मिला। आपके जाने के बाद छोटे बच्चे को भी शीतला निकली और मुझे भी बुखार आया, छुट्टी लेनी पड़ी। अब सब कुशल है, पूजा हो गई।

सिद्धेश्वरी के कई पत्र आये, मैं उत्तर न दे सका, क्योकि मैं विश्वास किये बैठा था कि आप उनको बुला चुके होगे। मगर इधर उनका पत्र आया है कि आपने अभी तक वहाँ पहुँचने का आदेश नही दिया है। मैंने तो लिख दिया था कि शास्त्री जी के पास चले जाओ, पर वे आपके पत्र की प्रतीक्षा मे रहे। आखिर क्या हुआ? कुछ निर्णय नहीं हो सका? सिद्धेश्वरी पहुँचे या नही? आपकी क्या राय है, स्पष्ट लिखें।

श्रीमान् पंडितजी से अबतक सलाह नहीं हुई ? अथवा और कोई कारण है ? अब आवश्यकता नहीं है क्या ? जो बात हो, कृपया ठीक लिखें। नहीं तो कहीं और भी ठीक करना होगा। आप ही के भरोसे कहीं लिखापढ़ी नहीं करता। आपके साथ रहना नसीब हो तो कहीं और नहीं जायँगे। सिद्धेश्वरी पहुँचे हों तो उन्हे समाचार सुना दे और पत्रोत्तर भी दें।

शिव

२९८ पत्र सं० २६०९
फा० सं० २४

पुस्तक-भंडार, लहेरियासराय
पत्र-संख्या ६८६०६/१
तारीख ४-३-३७

'बालक'
सम्पादक एवं संचालक
श्रीरामलोचनशरण बिहारी
(अध्यक्ष, पुस्तक-भंडार)

मान्यवर शास्त्री जी,

सादर प्रणाम—

आपका कृपापत्र मिला। धन्यवाद। मैं तो जीवनी और चित्रों की पहुँच पहले ही लिख चुका हूँ। 'भग' जी को भी सूचना दे दी है। श्रीमान् कुमार साहब बहादुर की जीवनी जो आपने भेजी है, वह आपके नाम से 'बालक' मे छप सकती है। क्या ब्लाक तैयार मिलेगा ? ग्रंथ के ब्लाक सब छोटे एक ही साइज के बन रहे हैं। 'बालक' के योग्य नहीं हैं। यदि बनैली-राज्य का भी कुछ वर्णन हो जाय तो श्रीमान् राजा साहब बहादुर और श्रीमान् बडे कुमार साहब के चित्र भी आ जायें। छपे तो पूरा ब्योरा रहे। जैसी मर्जी।

शिव

२९९ | पत्र सं० २१९५ | वी. उनवास | घर से
| -- — | पोस्ट-इटारही | पुस्तक-भंडार, लहेरियासराय
| फा० सं० २० | (शाहाबाद) | गाँव-उनवाँस

'बालक' [साउथ बिहार] पत्र-संख्या······
सम्पादक एवं संचालक तारीख १९-१-३८
श्रीरामलोचनशरण बिहारी
(अध्यक्ष, पुस्तक-भंडार)

पूज्य शुक्ल जी,

सादर सविनय प्रणाम। मैं यहाँ घोर देहात मे हूँ। पत्नी की बीमारी के कारण दो महीने से छुट्टी में घर पर हूँ। यहाँ अचानक आचार्य द्विवेदी जी का निधन-सवाद सुनकर चित्त व्याकुल हो गया। सुनकर हृदय मे सन्नाटा छा गया। चित्त ऐसा सुन्न हो गया कि जान पडा—सर्वस्व खो गया हो। अखबारी दुनिया से दूर ठेठ देहात मे हूँ जहाँ सभ्य संसार की एक किरण भी नही झाँकती। कुछ पता नही कि कहाँ कैसे क्या हुआ। कुछ अखबार लहेरियासराय से माँगा है कि उस समय की बाते ठीक-ठीक मालूम हो। कृपया लिखिये यह अनभ्र वज्रपात कहाँ कैसे हुआ। कुछ तो मालूम हो कि चित्त को सान्त्वना मिले। यदि देशदूत के किसी अक मे पूरा विवरण छपा हो तो एक प्रति भेज देने की आज्ञा दीजियेगा।

श्रीमान् ठाकुर साहब को प्रणाम। 'सरस्वती' का स्मृति-अक निकालिये। मैं छुट्टी के बाद जाकर 'बालक' का भी स्मृति-अक निकलवाऊँगा। मै बडे दिन की छुट्टी मे शीतलपुर मिल मे न जा सका। पत्नी की बीमारी के कारण बहुत परेशान हूँ। सारा प्रोग्राम ही बिगडा हुआ है। ईश्वरेच्छा।

आपका कृपाभिलाषी
शिवपूजन सहाय

३०० पत्र सं० २५६६ | फा० सं० २४

पुस्तक भंडार,
लहेरियासराय
पत्र-संख्या ६८४२०
तारीख २७-१-३७

'बालक'
सम्पादक एवं संचालक
श्रीरामलोचनशरण बिहारी
(अध्यक्ष, पुस्तक-भंडार)

मान्यवर शास्त्री जी,

सादर प्रणाम ।

श्रीमान् कुमार साहब बहादुर का सचित्र परिचय मिला । ग्रंथ में समस्त हिन्दी संसार के जीवित व्यक्तियों का परिचय रहेगा । आप अपना कोई चित्र अवश्य भेज दीजिये । विश्वकोष से जीवनी ले ली जायगी । क्या श्रीमान् कुमार साहब की यह जीवनी आपके नाम से 'बालक' में सचित्र छप सकती है ? यदि आप आज्ञा दें तो 'बालक' में भी छाप दूँ । कृपा रखिये ।

स्नेही
शिव०

माननीय कुमार साहब और पूज्य पंडित जी को सादर प्रणाम सविनय यहीं से भेजता हूँ ।

शिव०

३०१ पत्र सं० २१८३ | फा० सं० २०

लहेरियासराय

रविवार, १५-१०-३८

श्रीगणेशाय नम.

श्रद्धेय शुक्ल जी,

सादर सविनय प्रणाम—

आपका कृपापत्र मिला । बड़ी प्रसन्नता हुई । ईश्वर की अनन्त दया है । विश्वनाथ की असीम कृपा से ही ऐसा सौभाग्य प्राप्त हुआ है । आपका कृतज्ञ हूँ ।

श्रीमान् पटल बाबू की सहृदयता और उदारता से मैं भलीभाँति परिचित हूँ । उनका अन्न महीनों खा चुका हूँ ।

'देशदूत' देखा है। प्रथम अंक से ही हॉकर से 'बालक'-कार्यालय मे खरीदता हूँ। अध्यक्षजी के सुपुत्र को ग्राहक भी बना दिया है। खूब पसन्द आया। श्री ठाकुर साहब को पत्र लिखनेवाला था, पर इधर छ महीने से पत्नी की बीमारी से परेशान हूँ—उसी चिन्ता में लगा रह गया। अभी उससे छुटकारा नही मिला।

आपका प्रस्ताव सादर शिरोधार्य है। किन्तु सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि मैं फरवरी-मार्च तक आर्थिक बन्धन मे यहाँ बँधा हुआ हूँ। उसी झंझट की अडचन है। उससे मुक्त होते ही मैं आपका हूँ।

एक बात और। मैं किसी पत्र का सम्पादक बनने से डरता हूँ। मेरा नाम मनहूस माना जाता है। जिस पत्र पर सवारी कसता हूँ, गाडी रुक जाती है। ऐसी दशा मे मैं यही पसन्द करूँगा कि ठाकुर साहब का नाम कायम रखते हुए काम कर सकूँ। अभी तो यह दूर की बात है, पर आपसे कोई दुराव नही, अत. स्पष्ट लिख दिया। मैं काम ही चाहता हूँ, नाम नही।

यदि कोई हानि न हो तो कृपया वेतन और सुविधाओ के विषय मे भी लिखियेगा। तब मैं पहले से ही पिण्ड छुड़ाने और वहाँ आने की आवश्यक व्यवस्था करूँगा। किन्तु मुझे आशा नहीं कि मार्च तक मेरी प्रतीक्षा करना संभव हो सकेगा। यदि असंभव हो, तो भी आप चिन्ता न करें। पत्नी की स्वास्थ्यरक्षा का प्रबन्ध करके मैं आपकी सेवा यही से करता रहूँगा। इस समय तो बहुत ही परेशान हूँ।

श्रीमान् पटल बाबू की कृपा का संवाद सुनकर मैं कृतकृत्य हुआ। उनका औदार्य कभी भूल नही सकता। मैं उनका बहुत ही आभारी हूँ। मेरा करबद्ध प्रणाम कहियेगा।

आपका शुभाशिषाभिलाषी
· शिवपूजन

एक निवेदन अत्यावश्यक है। यहाँ प्राइवेट पत्र भी खोल लिये जाते हैं। इसलिए सादा लिफाफा में, पता दूसरे से लिखाकर नीचे के पते से भेजा करे—

द्वारा/उपेन्द्र महारथी,
शिल्प कुटीर,
एन० जी० गञ्ज, लहरियासराय,

कृपया इस पत्र की बातें अपने ही तक रखें। आपका आफिस साहित्यिकों का अड्डा है। बात फैलेगी, तो काम बिगड जायगा। सब ठीक हो जाने पर तो आप पत्र मे भी छापेंगे।

३०२ | पत्र सं० २१८४ / फा० सं० २० काशी २४/५

मान्यवर शुक्ल जी,

सादर प्रणाम।

आपकी पुस्तक, जून के 'सरस्वती' के लिए हास्य-विनोद और आपका लेख भेजता हूँ। देर हो गई है, इसलिए क्षमाप्रार्थी हूँ। देर होने का कारण और कुछ नहीं, केवल मेरी शोचनीय परिस्थिति है।

आपके दो कृपापत्र मिले थे। मेरा पत्र बैरंग मिला था, यह जानकर पश्चात्ताप हुआ। टिकट भेजने का इरादा था, मगर आपके खफा होने के डर से नहीं भेजा। फिर भी आप खफा तो होंगे ही, क्योंकि द्विवेदी जी की पुस्तकों की सूची नहीं भेज रहा हूँ। वह आपका पत्र मिलने से पहले ही 'हंस' में छप गई थी। मैं नहीं जानता था कि आपको उसकी जरूरत पड़ेगी। अब माफ कीजिये।

आपने अप्रैल की 'सरस्वती' भिजवाई है। वह तो मुझे वहीं मिल गई थी। मई की संख्या पाने का मुस्तहक नहीं हूँ?

आप इसी तरह पुरस्कार के भ्रम में न रहें। अप्रैल अंक का पुरस्कार मैं पा चुका हूँ। मेरा कुछ बाकी नहीं है। आपके लिखने पर ऐसा कह रहा हूँ। सच मानिये।

जून के अंक में यह सामग्री दे दीजियेगा। नापसन्द हो तो फौरन लौटाइयेगा, 'जागरण' में छप जाने से मेरा कुछ उपकार हो जायगा। अगर कहीं सुधारना चाहें तो स्वेच्छानुसार सब कुछ कर डालें। जैसी आपकी मर्जी। आप सर्वतंत्र-स्वतंत्र हो यथोचित कार्य करें, मैं सहर्ष निवेदन करता हूँ।

अब आगे देर न होगी। मास के दूसरे सप्ताह के अंदर ही भेज दूँगा। यदि आपको अनावश्यक प्रतीत हो तो बन्द कर दूँ।

श्रीमान् ठाकुर साहब, श्रीमान् प० सुन्दरलाल जी द्विवेदी, त्रिपाठी जी, मिश्र जी, सबको सप्रेम प्रणाम वन्दे। सबकी याद बनी रहती है। आशा है, सब कृपा-दृष्टि रखेंगे।

अपना हाल क्या लिखूँ, बेकारी का मारा हिन्दी लेखक हूँ। दया-भाव बनाये रहें।

शिव०

श्रीमान् सुन्दरलाल जी और नरेन्द्र जी को अभिनंदन ग्रन्थ मिला होगा। एक दिन कभी आऊँगा।

शिव०

३०३ | पत्र सं० २१८२
| फा० सं० २०

२-११-३८

श्री गणेशाय नमः

श्रद्धेय शुक्ल जी,

सादर सविनय प्रणाम।

मैं अपनी रुग्णा पत्नी को उसके पीहर पहुँचाने गया था। वहाँ से लौटने पर आपका कृपापत्र मिला। पत्नी की दशा अत्यन्त शोचनीय है। भगवान् चारो हाथ से बचावें, तो बच सकती है। बड़ी चिन्ता में हूँ। ईश्वर ही का एकमात्र भरोसा है।

आपने मुझसे पूछा है कि क्या लेंगे? भला श्रीमान् पटल बाबू से मैं मोल-तोल कर सकता हूँ। यह तो मेरा अन्याय होगा। उनकी सहृदयता और उदारता का मेरे हृदय पर जो अमिट प्रभाव है, उसका मूल्य वेतन से कही अधिक है।

आप जानते हैं, ठाकुर साहब जानते है, मै छिपाना भी नही जानता, मुझमे कोई ऐसी योग्यता नही कि पटल बाबू के समान आदर्श सज्जन से मोल-भाव करूँ। मै तो एक परिश्रमी मजदूर हूँ, केवल खटना जानता हूँ। परिश्रम के बल पर चाहे जो कर लूँ, योग्यता नही है, यह स्पष्ट बात आपको लिखने मे मुझे कोई संकोच नही।

मैं कुछ नही लिखूँगा। मैं झूठ मे भी डरता हूँ। इसलिए यह लिख देता हूँ कि १९२६ मे मैं 'मतवाला'-मंडल से यहाँ १००) पर आया और तब से १००) पा रहा हूँ। बारह बरस हो गये, मैंने कभी वेतन वृद्धि की चिन्ता या कोशिश नहीं की। हाँ, काशी मे भी मकान-भाड़ा मिलता था—अतिरिक्त, और यहाँ तो मकान ही मिला है। बीच मे 'गगा'-कार्यालय मे १२५) मिलता था और मकान भी मिला था, जिसका १५) भाड़ा वेतन में ही कट जाता था। इसमें कुछ भी असत्य या बनावटी नही है। अब मेरी स्थिति आप समझ ले। पचीस रुपये मासिक काशी के उस प्रेस को देता हूँ, जिसने मुकदमा चलाकर मुझ पर डिगरी हासिल की थी। चार बच्चे है—दो पुत्र, दो कन्याएँ। एक पत्नी है, तो अधर मे लटक रही है। यही परिवार है। मेरा ही आधार है। हाथ न चले तो उपवास करना पड़े। तीन साल काशी मे बेकारी मे कटे थे, पर राय साहब ने अभिनंदन ग्रन्थ का काम चला कर थोड़ा सहारा दे दिया। उस समय भी मैंने काशी और प्रयाग के कितने ही कुँओं में बाँस डाले थे पर कही ठिकाना न लगा। आज ऐसा दुर्भाग्य कि आपकी दया-दृष्टि भी हुई तो ऐसे दलदल में फँसा हूँ कि जल्दी-से-जल्दी निकलने मे भी एक दो मास लग ही जायँगे। मैंने लिखा था कि मार्च तक मैं यहाँ के आर्थिक बन्धन से मुक्त हो जाऊँगा। पत्नी सख्त बीमार न होती तो इधर भी मुक्त होने की चेष्टा

करता। पर विषम परिस्थिति हमेशा कठोर नियति बनकर मेरे पीछे लगी फिरती है। आप कृपया मेरे लिए अपना शुभ काम न रोकें। मैं दुविधा में रखकर किसी को धोखा देना नहीं जानता। जब मेरा दाना-पानी वहाँ का होगा तो आप-से-आप पहुँचूँगा।

कृपाकांक्षी
शिवपूजन

२०४

पत्र सं० २५६७ — फा० स० २४

'बालक' - कार्यालय
पुस्तक-भंडार लहेरियासराय
(बिहार-प्रान्त)

सम्पादक और संचालक
श्रीरामलोचनशरण बिहारी
(अध्यक्ष, पुस्तक-भंडार)
तारीख ६-५-३६

पत्र-संख्या.........

मान्यवर शास्त्री जी,

सादर सप्रेम प्रणाम—

मै पत्नी की बीमारी के कारण महीनो बाद घर से आया तो भागलपुर के एक सज्जन से सुना कि आपके यहाँ भयंकर चोरी हो गई है—सर्वस्व ही लुट गया है। बडा दु:ख हुआ। कृपया अपना ठीक समाचार लिखिये। आपका पत्र दो बरस से नही मिला है। क्या किसी कारण अप्रसन्न है? आपका पत्र पाने पर विशेष लिखूंगा।

आपका स्नेही
शिवपूजन

सील तार—राष्ट्रभाषा

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् फोन-२६३३

पटना

बिहार-सरकार के शिक्षा-विभाग द्वारा संस्थापित और संचालित

बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद्

३०५ | पत्र सं० २५९६ पटना-३

फा० सं० २४ १२-३-१९५७

पत्रांक—१०४७

सेवा में;

श्रीमान् पं० रामगोविन्द त्रिवेदी

ग्राम—कुशी, पो० दिलदारनगर (गाजीपुर) उ० प्र०

मान्यवर,

बिहार के साहित्यिक इतिहास की पृष्ठभूमि के लिये वैदिक कालीन और मध्यकालीन साहित्य-रचना के सम्बन्ध मे हमे अग्रोलिखित सामग्री की अपेक्षा है। आपसे इस सम्बन्ध मे यदि कोई सहायता मिल सकती हो अथवा जिस ग्रंथ से इस सम्बन्ध में कुछ जानकारी प्राप्त हो सकती हो, उसका उल्लेख लौटती डाक से करके अनुगृहीत करें।

१ – वैदिक ऋचाओ के प्रणेता अथवा द्रष्टा ऋषियो मे क्या किसी ऋषि का बिहार-वासी होना संभव है ?

२—उपनिषद्-कथाओ मे जिन ऋषियों (ऋषियो) अथवा तत्ववेत्ताओ की चर्चा आती है, उनमें कोई बिहार वासी भी थे ?

३—सस्कृत वागमय (वाङ्मय) मे, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष, काव्य आदि विभिन्न विषयो के बिहार वासी प्रणेता कौन थे ? और उनके ग्रन्थो के नाम क्या हैं ?

४—ब्राह्मण ग्रन्थो, स्मृतियो और अनुस्मृतियो मे क्या किसी बिहार निवासी ग्रंथकार अथवा उच्चकोटि के मनीषी का उल्लेख हुआ है ?

आशा है, आप हमारी जिज्ञासाओ का समाधान करके हमे उपकृत करने की उदारता प्रदर्शित करेंगे।

उत्तराभिलाषी

शिवपूजन सहाय

संचालक

११-३-५७

चन्दन/

३०६ | पत्र सं० २५२१
फा० सं० २४

श्री सीताराम
भगवान रोड, मीठापुर, पटना-१
रविवार ६-१२-६२

मान्यवर

सादर प्रणाम ।

आपका कृपापत्र मिला था । श्री राजेन्द्र अभिनन्दन ग्रन्थ के सम्पादन-कार्य में गत तीन-चार महीनों से लगा हुआ था । गत ३।१२ को उनकी ७८वीं जयन्ती पर वह ग्रन्थ उनको विधिवत् समर्पित कर दिया गया । उधर 'साहित्य' का 'नलिन-स्मृति अंक' का काम भी साथ-साथ चलता रहा । इसीलिए पत्रोत्तर में बहुत विलम्ब हो गया । क्षमाप्रार्थी हूँ ।

आपने साहित्यसंसार से संन्यास ले लिया, यह समाचार साप्ताहिक 'हिन्दुस्तान' में प्रकाशित आपके पत्र से भी मिला था । आपने साहित्य को अपना एक-एक बिन्दु रक्त दे डाला है । आपकी हड्डियों ने अपने को घिस-घिस कर हिन्दी माता को जो चन्दन-चर्चित किया है उसका सौरभ आज हिन्दी जगत् के दिग्दिगन्त में फैल रहा है । अब शेष ही क्या है ? आप संन्यासी बनकर हिन्दी वालों के बीच विराजमान रहे, तो भी आपके चरणो से प्रेरणा के स्रोत निकलते रहेंगे । परमात्मा आपको हम लोगो को असीसते रहने भर के लिए भी स्वस्थ रखे तो यह उसका बहुत बड़ा वरदान होगा । स्मृति शक्ति के क्षीण होते जाने की तो यह अवस्था ही है । मैं स्वयं भुक्तभोगी हूँ और दिन-दिन ऐसा अनुभव हो रहा है । आधुनिक युग मे किसी की सेवा-श्रद्धा का विशेष मूल्य नही समझा जा रहा है । किन्तु दुनिया निगोड़ी की निगाह चाहे जैसी भी हो, न्यायी परमात्मा की ओर से किसी को निष्ठापूर्ण सेवा अपुरस्कृत नही रहने पाती । मेरा सविनय चरण वन्दन स्वीकृत हो । कब दर्शन होंगे, राम जानें । कृपा रहे ।

शुभाशिषाभिलाषी
शिवपूजन०

पं० उदयशंकर भट्ट
के पत्र
श्री प्रभात शास्त्री,
श्री प्रभात शुक्ल
तथा
श्री देवोदत्त शुक्ल के नाम

खण्ड : १२

सूरी ब्रदर्स

लाहौर

(222)

६/११/३०

[श्री पं० उदयशंकर भट्ट का पत्र पं० देवीदत्त शुक्ल के नाम]

३०७ | पत्र सं० ३२०६ / फा० सं० ३०

ए० आई० आर०
नई दिल्ली

प्रिय मिश्र जी,

कु० सन्तोष की सदस्यता के १०) रुपये तीन चार दिन हुए सम्मेलन को प्रधानमंत्री के नाम भिजवा दिये हैं। कृपया साहित्यरत्न परीक्षा का पारिश्रमिक तो भिजवाइये, मुझे इन दिनो रुपयो की आवश्यकता है। आशा है आप प्रसन्न हैं।

२-५

आपका
उदयशंकर भट्ट

३०८ | पत्र सं० ३२०७ / फा० सं० ३०

ए० आई० आर०
नई दिल्ली

प्रियवर मिश्र जी,

'विश्वामित्र और दो भावनाट्य' प्रतिभा प्रकाशन द्वारा तथा एक और पुस्तक 'शक विजय' रजिस्ट्रार के पास भेज दी गई है। आपको यथासमय वे दोनो पुस्तकें मिलेगी। आप अब उनके सबन्ध (मे) देखे क्या हो सकता है। मैं चाहता हू भावनाट्य सा० र० में रखी जाय। शेष जहा सभव हो। सूचनार्थ निवेदन है। कृपया यह भी उत्तर मे लिखने की कृपा करें कि निर्वाचन तिथि कब है। आशा है आप प्रसन्न हैं। कृपा भाव के साथ—

१८।६

आपका
उदयशंकर भट्ट

३०९ | पत्र सं० ३२०८ / फा० सं० ३०

ए० आई० आर० नई दिल्ली

बन्धुवर,

आपने श्रीनारायण चतुर्वेदी को पत्र लिखकर मुझसे एक एकाकी नाटक मागा था। मैंने उसकी स्वीकृति आपको उसी के साथ भेज दी थी। परसो भैया

साहब ने मुझे २५) रुपये का एक चेक दिया वह आपका भेजा हुआ है ऐसा उन्होने कहा। मैं नही समझ पाया वह २५) रुपये कैसे हैं। क्या यह उसका Lump Sum (लम्प सम) पुरस्कार है या क्या मैं जानना चाहता हूं। आपको ज्ञात होना चाहिये मैं किसी भी पत्र मे नाटक प्रकाशित करने का पुरस्कार ४० से ६० तक लेता हू। और आपने तो उसे पुस्तक मे लिया है। यह २५) कैसे हैं यदि आप पूर्ण पुरस्कार देना चाहे तो कम से कम १००) (पच्चीस मिलाकर) दीजिये। यदि रायल्टी सिस्टम पर है तो उसका खुलासा लिखिये। आपका वह चेक मेरे पास पड़ा है।

आपका

२१-१०-४५ उदयशंकर भट्ट

३१० पत्र सं० ३२०९ / फा० सं० ३० आल इण्डिया रेडियो, नई दिल्ली

प्रिय मिश्र जी,

प्रणाम। आप उस दिन नही ही आये। और बिना मिले चले गये। अस्तु, साहित्य भवन से प्रकाशन की बाबत जो आप कह गये थे उसका क्या हुआ। मैं विश्वास करता हू वे मेरे तीन भावनाट्य तथा एक कविता संग्रह जरूर छाप देंगे यदि आपने उन पर जोर डाला। और क्या लिखू आपको पुस्तक कराने के संबन्ध मे भी याद होगा। शेष कृपा।

पत्रोत्तर की प्रतीक्षा मे—

आपका

२९-६-४६ उदयशंकर भट्ट

३११ पत्र सं० ३२१० / फा० सं० ३० ए० आई० आर० दिल्ली

बन्धुवर मिश्र जी,

प्रणाम। सन्तोष भट्ट पूछ रही है कि उसका विशारद परीक्षा का प्रमाण

पत्र अभी तक नहीं मिला है। उसने १९४८ मे साहित्य विषय की परीक्षा दी थी। कृपा करके प्रमाण पत्र भिजवा दें। मेरी पुस्तक निर्वाचन का क्या परिणाम हुआ ? आशा है आप हैदराबाद से युद्ध जीतकर लौट आये होंगे। वहां के संबन्ध मे परिचित करावें।

विश्वास है आप प्रसन्न है—

आपका
उदयशंकर भट्ट

१०-१—

३१२ | पत्र सं० ३२११ | फा० स० ३०

ए० आई० आर०
दिल्ली

प्रिय मिश्र जी,

नमस्कार। कु० सन्तोष भट्ट कह रही है कि उसका विशारद प्रमाण पत्र अभी तक नही मिला। हो सके तो उसे भिजवा दें। और आगे भी ध्यान रखे। अभी श्री चतुर्वेदी जी ने कहा कि मेरी पुस्तक सा० २० मे निर्वाचित हुई है, क्या ठीक है ? पत्रोत्तर की प्रतीक्षा मे—

आशा है आप प्रसन्न हैं।

आपका
उदयशंकर भट्ट

१०-२—

३१३ | पत्र सं० ३२१२ | फा० सं० ३०

ए० आई० आर०, नई दिल्ली

प्रिय मिश्र जी,

नमस्कार। आपका कृपा पत्र आया था किन्तु कई कारणो से मैंने स्वयं इस पुस्तक को (राधा, मत्स्य गंधा, विश्वामित्र को) छपवा लिया है। पांच सात दिनों तक

तैयार होते ही मैं पुस्तक भेज दूंगा। किन्तु भेजूं कहां और कितनी कापियाँ। हो सके तो यह निर्देश कर दीजिये। और आपसे कहने की आवश्यकता नही है किस परिस्थिति मे कौन (किसने यह किया है कभी आप दिल्ली आयें तो बताऊंगा। इसलिये विश्वास है आप पूरी तरह मेरी सहायता करेंगे। श्री रामबहोरी जी से भी मुझे यही आशा है उनसे मेरा सदेश कह दीजियेगा। और कोई सूचना हो तो वह भी देने की कृपा करे।

आपका

२४-८-४६ उदयशंकर भट्ट

३१४ पत्र स० ३२१२ / फा० सं० ३०

ए० आई० रेडियो,
नई दिल्ली

प्रिय मिश्र जी,

आपका ४ १२ का पत्र मिला। इससे पूर्व मैंने एक पत्र संग्रह का शेष भाग भी भेज देने को लिखा था यहा एक प्रकाशक तैयार हो रहा है। यदि बनारस का प्रकाशक उचित दामो पर वह छापना चाहता है तो उससे बात कर ले पर यहा दिखाने के लिये एकाकी नाटक भेज दें मै यहाँ भी बातचीत करके देखूगा। कोई भी प्रकाशक हो उसे नाटककारो को १००) के हिसाब से रुपया देना पडेगा और मुझे भी एक रूप।

आप पाण्डुलिपि वैरंग ही पहले की तरह भेजे। मुझे मिल जायगी।

मेरे घर का पता है—

२४५ ई० सरकारी क्वार्टर. करौलबाग।

आशा है आप प्रसन्न है। परीक्षक संबन्धी कोई भी पत्र नही मिला है। मेरा स्वास्थ्य ऐसा ही चल रहा है।

आपका

७-१२ उदयशंकर भट्ट

पुनश्च—मैं १५ की रात को बंबई जा रहा हूं २७ तक लौटूंगा। सौ० संतोष आस्ट्रेलिया जा रही हैं उसे छोड़ने।

३१५ | पत्र सं० ३२१४ — फा० सं० ३०

ए० आई० आर०
दिल्ली

प्रिय बन्धो,

एकांकी नाटकों का जो संकलन मैं(ने) कहीं से प्रकाशित करने के लिए आप को सौंपा था उसकी भूमिका की मुझे अत्यन्त आवश्यकता है। कृपा करके यह भाग लौटती डाक से शीघ्र भेज दें।

आशा है आप प्रसन्न हैं—

आपका
उदयशंकर भट्ट

२५-११—

३१६ | पत्र सं० ३२१५ — फा० सं० ३०

ए० आई० आर०
दिल्ली

प्रिय मिश्र जी,

भूमिका मिल गई। इधर एक प्रकाशक तैयार हो रहा है उस संग्रह को छापने के लिये। क्या कृपा करके वह संग्रह मुझे लौटा देंगे। देखूं शायद काम कुछ बन जाय। कष्ट तो होगा।

आशा है आप प्रसन्न हैं।

बैरंग भेजिये।

आपका
उदयशंकर भट्ट

३-१२-

३१७ | पत्र सं० ३२१६ — फा० सं० ३०

ए० आई० रेडियो
नई दिल्ली

प्रिय प्रभात जी,

नमस्कार। मैं इलाहाबाद न आ सका तो न आ सका। आपके दर्शन और मकान का मामला खटाई मे पड़ गया। "यच्चिन्तितं तदिह दूरतरं प्रयाति"

मेरे नाटक संग्रह का क्या हुआ। कोई छाप रहा है क्या? लिखिये।

७-५-

आपका
उदयशंकर भट्ट

३१८ | पत्र सं० ३२१७ / फा० सं० ३० — नई दिल्ली

प्रिय प्रभात जी,

आपका कृपापत्र मिला था। इधर मैं बाहर था। कल ही लौटा हूं। खेद है वह सामग्री मैं पहले ही भेज चुका हूं मिलेगी।

आपका
उदयशंकर

३१९ | पत्र सं० ३२१८ / फा० सं० ३० — ए० आई० रेडियो, नई दिल्ली

प्रिय मिश्र जी,

नमस्कार। आशा है आप प्रसन्न होंगे। हाँ, मेरे उस नाटक की पाण्डुलिपि का क्या हुआ। आपने बनारस के किसी प्रकाशक के पास भेजा था।

कृपया उसके संबन्ध मे जल्दी ही निर्णय कराकर सूचना दे अन्यथा उसे वापिस लौटा दे इधर एक प्रकाशक माग रहा है।

१९-५-

आपका
उदयशंकर भट्ट

पुनश्च—यदि वहा का प्रकाशक तैयार हो तो ठीक है यहा मै देना नही चाहता।

उदय

३२० | पत्र सं० ३२१९ / फा० सं० ३० — २४५-ई, सरकारी क्वार्टर, करौल बाग, नई दिल्ली-५, २१-११-५८

प्रिय मिश्र जी, नमस्कार,

आपका कृपा पत्र मिला। धन्यवाद। मुझे खेद है कि मैं यत्न करके भी प्रयाग न आ सका। इधर मेरा एक लड़का बी० ए० में फेल हो गया, इसलिये उधर आकर रहने का प्रसंग ही बदल गया। क्या करूं सोचता कुछ और हूं, होता कुछ और है। देखू, यह योगा योग कब बनता है।

मैं पिछले दो तीन महिने (महीने) से मधुमेह से पीडित हो रहा हूं। दवा कर रहा हू, किन्तु अभी तक शक्ति नही आ पाई इसीलिये आपके लिये नाटक भी नही लिख सका उत्साह और अन्तः प्रेरणा के अभाव मे कोई चीज कैसे लिखी जा सकती है। मुझे दुःख है, मैं अभी जल्दी नाटक आपको लिखकर नहीं दे सकूगा। मेरा एक उपन्यास जिसे मैं पूरा करना चाहता हू, वह भी अधूरा पडा है, कब समाप्त होगा नहीं कहा जा सकता। आशा है, आप मुझे क्षमा करेंगे। यदि प्रेरणा हुई तो मै अवश्य अपना वचन पूरा करूंगा। इस बार सबमिट करने के लिए आप कहीं और से पुस्तक ले लीजिये। चाहे तो शक विजय या सगर विजय नाटक आप ले सकते हैं।

आशा है आप प्रसन्न है।

आपका
उदयशंकर भट्ट

३२१ | पत्र सं० ३२२०
फा० स० ३०

प्रिय श्री प्रभात जी,

नमस्कार। पत्र मिला। धन्यवाद। मैं तो पिछले एक मास से संग्रहणी से बीमार हू। इसी बीमारी की दशा मे २० दिन दिल्ली रहकर (तनखा कटने के डर से) लौटा हू।

तबियत बिलकुल ठीक नही है। फिर आजकल तो कुछ लिख भी नही रहा हूं।

इस समय तो क्षमा।

आपका
उदयशंकर भट्ट

२-८-

पौष-ज्येष्ठ : शक १८८३-४]

३२२ पत्र० सं० ३२२१ / फा० सं० ३०

२४५ ई० सरकारी क्वार्टर
करौल बाग, नई दिल्ली-५
१३-३-५६

प्रिय प्रभात जी,

नमस्कार। विजय पथ शुद्ध करके भेज रहा हू। छपाकर कही लगवाने का प्रयत्न करें किन्तु इससे पूर्व अनुबध (Contract) हो जाना चाहिये। २०% रायल्टी तथा अगाऊ मुझे दीजिये। तभी ठीक होगा।

लौटती डाक से पढकर अपने विचार लिखें।

आपका
उदयशकर भट्ट

१. पुस्तक का नाम चाहे तो बदल दें।

२. अत मे शब्दार्थ कोश लगा दे।

पुनश्च—(Final proof) फाइनल प्रूफ मैं देखना चाहूगा। कर्ण पर नाटक लिखना शुरू कर रहा हू।

फार मसिजीवी प्रकाशन
प्रोप्राइटर

३२३ पत्र सं० ३२२२ / फा० स० ३०

दिलशाद कालोनी
शाहदरा, दिल्ली

बन्धुवर,

'विजय पथ' की पाण्डुलिपि भेजी थी। मिली होगी। क्या आप उसे छापना चाहेगे? चाहे तो छाप दीजिये। अच्छी तरह पढकर न्यू कर लीजिये। अभी मैंने एक उपन्यास—'शेष अशेष' लिखा है। साप्ताहिक हिन्दुस्तान, दिल्ली में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हो रहा है। और कुछ भी नही लिख पा रहा हूं। मन भी नही करता। वैसे और आपका क्या हाल है? आशा है कुशल से हैं।

पत्र दें।

आपका
उदयशकर भट्ट
दिलशाद कालोनी
शाहदरा, दिल्ली

२५। ८

३२४ | पत्र सं० ३२२३ / फा० सं० ३०

२४५ ई०, करौल बाग, नई दिल्ली ५
१६-३-५६

प्रिय मिश्र जी,

नमस्कार।

आपका कृपा पत्र मिला। धन्यवाद। यदि 'विजय पथ' के किसी कोर्स मे लगने की सम्भावना नही है तो मेरे विचार में उसे प्रकाशित करने की आवश्यकता नही है। यदि मुझे ठीक से याद है तो आपके कहने पर ही मैंने भेजना स्वीकार किया था। आप सोच ले, यदि आप उसका उपयोग कर सकते है तो व्यय करे। अन्यथा नही। आपकी बात से मुझे आभास हुआ था कि आप पेशगी देने को भी तैयार हैं। अब आपके पत्र आने पर ही मै कुछ और डिटेल (Detail) मे लिख सकूगा।

आशा है आप प्रसन्न हैं।

आपका
उदयशंकर भट्ट

३२५ | पत्र स० ३२२४ / फा० सं० ३०

२४५ ई०, गवर्नमेण्ट क्वार्टर
करौल बाग,
नई दिल्ली-५

प्रिय श्री प्रभात जी,

नमस्कार। मै सकुशल आ गया। कृपा करके मेरे लिये किसी टूटे-फूटे मकान की व्यवस्था का ध्यान रखें। मैं सस्ता मिलने पर उसे ठीक करा लूगा। बसन्तसेना पर उपन्यास लिखने की मैं सोच रहा हूं। पहला (अब जो लिख रहा हूं) उपन्यास के बाद ही लिखूंगा। कभी दिल्ली नही आ रहे (हैं) क्या ?

पत्र देने की कृपा करें। आशा है आप प्रसन्न हैं।

१६-६-५८

आपका
उदयशंकर भट्ट

३२६ | पत्र सं० ३२२५
| फा० स० ३०

फोन नं० ४०८५२
२४५ ई०, सरकारी क्वार्टर,
करौल बाग, दिल्ली-५

प्रिय श्री प्रभात जी,

नमस्कार। आप का पत्र मिला। आपने बहुत स्पष्ट शब्दो मे अपने नियम लिख दिये हैं लगता है बिना नये नाटक के आप और किसी पर पैसा देने वाले नही हैं और नाम भी बदलना चाहते है। पैसे की तो कोई बात नही पर पुस्तक का नाम बदलना मुझे उचित नही लगता। इससे अच्छा हो विजय पथ की पाण्डुलिपि मुझे लौटा दें। मुझे एक प्रकाशक मिल गये हैं जो उसी रूप मे उसे छापने को तैयार है। नया नाटक मैं लिखने के मूड मे आ रहा हूं लिखकर बात करूंगा। पाण्डुलिपि विजयपथ की लौटा दे तत्क्षण। प्रयाग आने को मन कर रहा है। सोचता हू कब चलू। प्रसन्न तो हैं न।

७-६-

आपका
उदयशकर भट्ट

३२७ | पत्र सं० ३२२६
| फा० सं० ३०

प्रिय मिश्र जी,

नमस्कार। क्रमाक विशारद का तो ज्ञात नहीं है वह तो नाम से ही ज्ञात हो सकेगा हा दूसरा है सत्ताइस सौ बाईस। वैसे मेरा खयाल तो यही है। विश्वामित्र दो भाव नाट्य के रहने में निर्धारित होना लेखक के नाते आवश्यक था धन के नाते नही। धन की तो मुझे कभी चाह भी नही रही। वैसे कभी आवश्यकता हुई तो आप ही नही हैं धन कुबेर। वाजपेयी जी आ रहे हैं यह प्रसन्नता की बात है। मेरे यहां ठहरे आप दोनों तो प्रसन्नता हो।

उदयशंकर भट्ट

३२८ | पत्र सं० ३२२७ | फा० सं० ३०

आवश्यक

यू० एस० भट्ट
रूम नं० ४७, सिंगिल रूम कालोनी
साहूपुरी, वाराणसी.

प्रिय प्रभात जी,

नमस्कार। पं० केदारनाथ सारस्वत के निधन पर दिल्ली में आपकी झाकी मिली। किन्तु प्रतिज्ञा करके भी आप नहीं आये। कृपा करके 'विजय पथ' की संशोधित प्रति लौटा दें। एक आदमी छापना चाहता है। बड़ी कृपा हो यदि लौटती डाक से ऊपर के पते पर भेज सकें। यदि २८ तक न भेज सकें तो वहीं रहने दें मैं २६ को प्रयाग मे आकर वहीं ले लूंगा। दो दिन ठहरूंगा, आप मिलेंगे तो न। दोनो हालतों में पत्र दें।

आशा है आप स्वस्थ हैं।

आपका
उदयशंकर भट्ट

२२-४-

ॐ

३२९ | पत्र सं० २२६ | फा० सं० २

वीर मिलाप प्रेस
आउट साइड मोरी गेट, लाहौर
डेटेड १४-१२-३७

प्रिय शुक्ल जी,

वंदे !

सेवा मे दुर्गा-सप्तशती के सारे के सारे प्रूफ भेज दिये है—कृपया इनका प्रिंट आर्डर हमें हर हालत मे २० तारीख़ को पहुँचना चाहिए। मेरी इच्छा है कि यह काम २० को समाप्त हो जाय, इसलिए बहुत-सा टाईप लगा दिया है—२१ को हमारा मासिक अंक शुरू होना है, इसलिए आप इसी (इसका) प्रूफ़ बहुत गौर से देख डालें—वैसे पहले दो प्रूफ़ बहुत एतियात से कापी के मुताबिक पढ़े गये हैं।

दूसरी बात कवर की डिज़ाईन या जो उस पर लिखा जाना है, विषय सूची—

भूमिका, इत्यादि जो कुछ हो, वह भी भेज दें। यह पत्र सूरी ब्रदर्स की ओर से समझा जाय।

आपका
उदयशंकर भट्ट

३३० पत्र स० २२७
फा० सं० २

४ अर्जुन नगर, लाहौर।
२६-६-३७

माननीय शुक्ल जी,

सादर नमस्कार। कृपापत्र और पुस्तकें मिली। धन्यवाद। तुकाराम और हरिश्चन्द्र की आलोचना तो भेज ही दी है। 'मत्स्यगन्धा' की सम्मति पर अत्यन्त कृतज्ञ हू। मै स्वयं तो कुछ हूं नही आपकी कृपा है बस इतना ही। दुर्गा सप्तशती के अनुवाद के लिये प्रयत्न कर रहा हू। प्रकाशको की धारणा है कि यह कथा पुस्तक तो है नही पाठ पुस्तक है। इसके बिकने की सम्भावना कम है। परन्तु विश्वास है पुस्तक प्रकाशन की कोई न कोई व्यवस्था हो ही जायगी। अनुवाद सुन्दर तो है ही मूल के अनुसार भी है। कई पाठको ने भी प्रशंसा की है। हा, महाप्रभु चैतन्य के पहले दो भाग नही हैं केवल तीसरा चौथा भाग ही मुझे मिला है। आलोचना मे कठिनाई होगी। आपकी दया का विशेष आभारी हूं।

योग्य सेवा। विशेष दया—

विनयावनत
उदयशंकर भट्ट

पुनश्च

'मत्स्यगन्धा' यहा परीक्षा के लिये भेज दी है। दिसम्बर पहले हफ्ते या नवम्बर के आखिरी सप्ताह मे फैसला होगा। सरस्वती मे प्रकाशित होने का भी काफी असर पडेगा बोर्ड के मेम्बरो पर।

उदयशंकर भट्ट

३३१

पत्र सं० २२८ स्थापित सूरी ब्रदर्स १६२६
पंजाब प्रांत में हिन्दी साहित्य की बड़ी दुकान
फा० सं० २ मोरी दरवाजा
सं०.......................... लाहौर १७-१०-१६३७

माननीय शुक्ल जी,

सादर प्रणाम। सूची पत्र भिजवाया है, मिल गया होगा। निवेदन है कि आपकी पुस्तक 'दुर्गा सप्तशती' का अनुवाद लाहौर के प्रकाशक सूरी ब्रादर्स ने छापना स्वीकार कर लिया है। यदि मैं गलती नही करता तो मैंने उनसे केवल इतना ही कह दिया है कि छापकर प्रचारार्थ साधारण मूल्य पर वितरण करने (के) लिये ही यह अनुवाद किया है। वे रायल्टी या कोई पारितोषिक नही लेंगे। कृपया आप उनको एक स्वीकृति पत्र लिख दीजिये ताकि पुस्तक प्रेस मे दे दी जाय। फाइनल प्रूफ तो आप देखेंगी ही। टाइप वगैर के सम्बन्ध मे भी आप उन्हें हिदायत कर दीजियेगा। मूल्य, पुस्तक का नाम भी लिख दीजियेगा और जो कुछ आदेश देना हो वह भी। आशा है आप प्रसन्न होंगे।

योग्य सेवा—

मेरा पता—
४, अर्जुन नगर,
लाहौर

आपका विनयावनत
उदयशंकर भट्ट

३३२

पत्र सं० २२६ स्थापित सूरी ब्रदर्स १६२६
पजाब प्रात मे हिन्दी साहित्य की बडी दुकान
फा० स० २ गणपत रोड
सं०.......— लाहौर...... १६३

श्रीयुत शुक्ल जी,

नमस्कार। दुर्गा सप्तशती के प्रूफ आपके पास पहुंचेगे। कृपया लिखिये आपको टाइप पसन्द आया तथा बीच मे संख्या रहने देने के सम्बन्ध मे—जैसा कि आपकी पाण्डुलिपि मे है—क्या विचार है? पुस्तक के लगभग ८० पृष्ठ होगे। इसलिये कृपा करके विस्तारपूर्वक अपनी राय प्रकाशक को लिख भेजिये। आशा है आप प्रसन्न होंगे। योग्य सेवा—

विनीत
उदयशंकर भट्ट

पुनश्च—कागज के सम्बन्ध में भी।

३३३ | पत्र सं० २३०
| फा० सं० २

४ अर्जुन नगर, लाहौर
२१-१२-३७

सम्माननीय शुक्ल जी,

सादर प्रणाम। आपका कृपापत्र मिला। धन्यवाद। भला आपने आचार्य द्विवेदी जी का ब्लाक क्यों नही भेजा ! प्रकाशक से पूछने पर ज्ञात हुआ कि वह तो चाहता था। कृपा करके ब्लाक भेज दीजिये। छप जायगा। शायद वह भी आपके पास पत्र भेजे (भेजें)।

आप सप्तशती के सम्बन्ध मे ऐसा लिखकर मुझे शर्मिन्दा न कीजिये। मैं अपने ऊपर इसका शतांश भी क्रेडिट (credit) नही लेना चाहता। यह तो आपकी उत्कट इच्छा और भगवती की प्रेरणा का परिणाम है। मैं तो दोनो का दास मात्र हूं।

सच पूछा जाय तो आपने साहित्य सरस्वती की क्या कम सेवा की है ! पर यह कृतघ्न संसार कुछ समझे तब न। आपकी इस नीरव एवं मूक साधना को कोई समझे या नही, पर मैं हृदय से मानता हूं कि आपकी उत्कट तपस्या से ही सरस्वती अब तक जीवित हैं और पूज्य द्विवेदी के प्राण उसमे अभी तक सर्वाङ्ग से बोल रहे हैं। अभी उस दिन डाक्टर लक्ष्मण स्वरूप से आपकी नि.स्वार्थ एवं शान्त सेवा का जिक्र चल पडा। वे भी आप पर अनुरक्त दिखाई दिये। गोरखपुर मे श्री निर्मल जी भी आपके नि.स्वार्थ एवं ब्राह्मणत्व तेज से अभिभूत-से होकर आपकी प्रशंसा कर रहे थे। और मैं उस बातचीत को मुग्ध सा सुन रहा था। मालूम होता था जैसे मेरे प्राण उनकी आत्मा में मूर्त होकर बोल रहे हैं। इच्छा होती है कुछ दिन आपके पास रहा जाय, और जीवन का विशाल अनुभव प्राप्त किया जाय। पर यह कैसे हो। मैं तो इस म्लेच्छ देश मे रहते रहते पैशाचिक वृत्ति का होता जा रहा हूं। भाग्य का विधान -'यच्चिन्तितं तदिह दूरतरं प्रयाति।'

ब्लाक याद करके भेज दीजिये— योग्य सेवा।

प्रणत
उदयशंकर भट्ट

३३४ | पत्र सं० २३१ | फा० सं० २

स्टैब्लिश्ड १९२६
सूरी ब्रदर्स
बुकसेलर्स एण्ड पब्लिशर्स
मोरी गेट
लाहौर——१९३

पुज्य (पूज्य) पण्डित जी,

सादर बन्दे, आप के भेजे हुए प्रूफ प्राप्त हो गये हैं धन्यवाद, आज पुज्य (पूज्य) भट्ट जी द्वारा विदित हुआ कि आप द्विवेदी जी का चित्र भी पुस्तक मे देना चाहते हैं। यदि एसा (ऐसा) ही विचार है तो कृपया उनका ब्लॉक लौटती डाक मे भेजकर कृतार्थ करें ताकि वह भी पुस्तक के साथ ही छप जाये। और कोई योग्य सेवा हो लिखे।

भवदीय
उदयशकर भट्ट
२३-१२-३७

३३५ | पत्र स० २३२ | फा० सं० २

हाउस नं० ८३
५ कृष्णा गली
लाहौर

माननीय शुक्ल जी,

सादर प्रणाम।

बहुत दिनो से कोई पत्र नही भेज सका, कुछ घरेलू झंझटे थी। पिछले दो मास से सरस्वती के दर्शन नही हो रहे, क्या बन्द कर दी है ?

मेरी वह कविता जो घर पर आपको दी थी—कब तक छप रही है ? दया तो आपकी है ही। वह सगर विजय का मसाला यदि भेज सके तो मैं लिखूँ दिन आ रहे हैं। आशा है आपका शरीर स्वस्थ होगा। दया दृष्टि——

आपका
१०-१०-३९ उदयशंकर भट्ट

पुनश्च—श्री उमेश चंद्र दवे का कामायनी वाला लेख मुझे बहुत पसन्द आया।
उ०

३३६ | पत्र सं० २३३ | फा० स० २

सम्माननीय शुक्ल जी,

यह गीत भेज रहा हूं। इसी तरह के कुछ गीत लिख रहा हूं। आशा है पसन्द आवेगा। 'सेठ लाभ चंद' सरस्वती के गताक मे देखा। इस बार सरस्वती नही मिली, न जाने क्यों ? पुरस्कार को आशा भी है।

क्या मैं आशा करू' कि सरस्वती के प्रथम पृष्ठ पर यह प्रकाशित होगा। यह अनधिकार चेष्टा तो है किन्तु आपको अधिकार की याद दिलाना अनधिकार न होगा। केवल इतना ही कह जाने की मुझे आज्ञा वीजिये।

हा, वह 'निर्मल' जी के पास का एकाकी नाटक मुझे नहीं मिल रहा है। दो तीन पत्र डाल चुका हूं वे इतने चुप क्यो हैं समझ मे नही आता। बात यह है मेरी एकाकी नाटको की पुस्तक छप रही है, वह नाटक इतना अच्छा बन पड़ा है कि उसको उसमे देने का लोभ मे (मैं) सवरण नही कर सकता। क्या आप कृपा करेंगे।

आशा है आप प्रसन्न होगे। योग्य सेवा—उत्तर दीजियेगा।

विनयावनत

२६-२-४० उदयशकर भट्ट

लाहौर।

पुनश्च—एक और कविता भी तो आपके पास है स्वीकृत।

उ०

३३७ | पत्र स० २३४ | फा० सं० २

५ कृष्णा गली, लाहौर।

मान्यवर शुक्ल जी,

प्रणाम। एक कविता तथा एक पत्र भेज चुका हू। कदाचित् आप उस पत्र से असहमत हैं इसीलिये उत्तर देने की कृपा नही की। उसमे ऐसी कोई बात तो थी नही।

अस्तु इधर ३ मई वैशाख कृष्ण एकादशी को मेरी बड़ी लड़की का विवाह है। इसी झंझट मे फसा रहता हूं। आशीर्वाद दीजिये कि इन अयोग्य कंधो पर उत्तरदायित्व का बोझ ठीक तरह संभाल सकू।

आशा है आप सकुशल होगे। प्रणत

१३-३-४० उदयशंकर भट्ट

३३८ पत्र सं० २३५ / फा० सं० २

मोतीलाल बनारसीदास 'पुस्तक-विक्रेता' सैदमिट्ठा,
पोस्ट बक्स नं० ७१, लाहौर
ता० २४-७-४०

नं०.............

माननीय श्री शुक्ल जी,

प्रणाम। आपका कृपा कार्ड मिला। परामर्श के लिये धन्यवाद। ठीक है वे गीत आपको पसन्द न आये, पर क्या किया जाय जब लिखने की प्रेरणा होती है तब लिखता हूं। लिख तो मैं आजकल एक नाटक रहा हूं जो बिलकुल नया होगा।

भिखारी दास की पुस्तक के सम्बन्ध मे निवेदन है कि वह पुस्तक यहा तो बिक नही सकती। यू० पी० मे बिकेगी। मोतीलाल बनारसीदास का कहना है वह पुस्तक छपकर यू० पी० मे बेचेगा कौन। कम से कम वे तो असमर्थ है।

आपकी पुस्तको के सम्बन्ध मे मै उस प्रकाशक से बातचीत करूंगा, वह अभी बाहर गया है। मै भी बाहर जा रहा हू। सितम्बर तक निर्णय होगा।

'मानसी' नामक काव्य आलोचना के लिये भेज रहा हू। आशा है शीघ्र सरस्वती में आलोचना निकाल देगे। योग्य सेवा। कृपा भाव बना रहे।

आपका
उदयशंकर भट्ट

३३९ पत्र सं० २३६ / फा० स० २

५ कृष्णा गली,
लाहौर

श्री माननीय शुक्ल जी,

खेद है इच्छा करते रहने पर भी मैं इलाहाबाद आपके फिर दर्शन न कर सका। इधर दारागंज से लौटते हुए इक्का उलट जाने के कारण मुझे कुछ चोट भी आ गई थी, ज्वर भी आ गया था।

पिछले मास की सरस्वती मुझे नहीं मिली है। मैं देखा कि राधा की आलोचना उसमे छपी है। दो चार दिन मे एक नाटक प्रकाशनार्थ भेजूगा। उसे शीघ्र प्रकाशित करने की कृपा कीजियेगा और पुरस्कार भी। आशा है आप प्रसन्न होगे। दया भाव बना रहे।

२१-१०-४१

आपका
उदयशंकर भट्ट

३४० | पत्र सं० २३७
फा० सं० २

माननीय शुक्ल जी,

यह 'गीत' भेज रहा हू । आशा है स्वीकार करेंगे । मैंने पिछले पत्र मे 'एक' को सरस्वती में प्रकाशित करने के लिए प्रार्थना नही की थी । वह देशहित के लिए सदेश था ।

पिछले दिनो जिन दो कविताओ के प्रूफ आपने कानूनी ढंग से आपत्ति-जनक मानकर भेजे थे । उनमे एक तो छापने लायक थी ही । हा, एक बात और है । क्या इण्डियन प्रेस मे मेरी कोई पुस्तक प्रकाशित हो सकती है ? सुना है श्री उमेश चद्र जी उस विभाग के इचार्ज (incharge) हैं । यदि उक्त प्रेस से मेरी कोई पुस्तक भी प्रकाशित हो सके तो अनुगृहीत होऊँगा ।

प्रकाशनार्थ पुस्तको म दो नाटक एक कविता सग्रह है । यदि आप कोई सहारा दे सके तो कृतज्ञ होऊगा ।

'स्त्री का हृदय' सम्मेलन को आलोचनार्थ आप के पास भेजने को लिखा है । मिल गया होगा । उसकी आलोचना भी कर दीजिएगा ।

शेष कुशल-
२६-१-४३

प्रणत
उदयशकर भट्ट

५ कृष्ण गली, लाहौर ।

३४१ पत्र स० २४१
| फा० सं० २

मान्यवर शुक्ल जी,

प्रणाम । आपका कृपा पत्र मिला । धन्यवाद । भेजी हुई कविता आपकी समझ मे नही आई उसमें ऐसी कोई बात तो है नही । पसन्द न हो तो दूसरी बात है किन्तु मुझे तो वह बहुत पसन्द है वह मैंने कलकत्ता यूनिवर्सिटी मे सुनाई थी, वहाँ भी वह काफी पसन्द की गई ।

उपन्यास से संबन्ध मे निवेदन इतना ही था कि सरस्वती मे प्रकाशित होते रहने के बाद भी वह इण्डियन प्रेस से तो प्रकाशित न होता । फिर मुझे उसे प्रकाशित कराने के लिये प्रकाशको का द्वार खटखटाना पड़ता । यह मैं जानता हूं

कि सरस्वती में प्रकाशित होने से उसका महत्त्व बढ़ जाता। बात यह है आप की कृपाओं का मैं चिर ऋणी हूं और आपके स्नेह का भी किन्तु जो कुछ मैंने सोचा उसमे आपके समझने वाली कोई बात भी नहीं है। इस व्यंग्य के लिये धन्यवाद। मैं निकट भविष्य मे दूसरा उपन्यास लिख कर सरस्वती को ही दूंगा यह विश्वास दिलाता हूं। आप दया दृष्टि रखिये यही मेरे लिये बहुत है।

आशा है आप पसन्न होगे।

पुनश्च—जनवरी के नोट पढ़कर प्रसन्नता हुई। अच्छे हैं।

उ० आपका प्रणत
उदयशंकर भट्ट

३४२ पत्र सं० २३६ / फा० स० २

सनातन धर्म कालेज, लाहौर।

मान्य शुक्ल जी,

यह एक लम्बी कविता भेज रहा हूं। मुझे विश्वास था कि मेरी एक कविता आपके पास पड़ी है इसीसे अभी तक कुछ भी नही भेजा था। यह कविता मैंने अपने जन्म दिन पर लिखी थी। कैसी है यह तो आप पढ़ेंगे "किन्तु मैं समझता हूं यह मेरी बहुत अच्छी कविताओ में है। आपको भी पसद आयेगी।

उपन्यास मैंने एक प्रकाशक को दे दिया है। आपके यहा उसका कोई उचित उपयोग न होता। आशा है आप प्रसन्न होगे। कृपया शीघ्र प्रकाशित करने का कष्ट करें। बड़ी कृपा होगी—

१ जनवरी, १९४४
५ कृष्ण गली, लाहौर

आपका विनीत
उदयशकर भट्ट

३४३ | पत्र सं० २४० | ५ कृष्ण गली, लाहौर ।
फा० सं० २ | २२-१२-४३

आदरणीय शुक्ल जी,

प्रणाम । बहुत दिनों से आपको कोई पत्र नही लिखा । इधर आपका कोई समाचार भी नही मिला । मैंने तीन चार मास हुए दो तीन कविताएँ सरस्वती को भेजी थीं वे अभी तक प्रकाशित नही हुई क्या कारण है ? पिछला अंक भी सरस्वती का नही मिला है ? एक पत्र और, मेरे एक बात के उत्तर मे आपने लिखा था कि मेरी किताब 'सरस्वती सिरीज' मे प्रकाशित हो सकती है यदि उपन्यास हो । आजकल मेरे पास एक उपन्यास तैयार है । यदि उसके प्रकाशित होने की संभावना हो तो प्रबन्ध करा दीजिये । मैं पाण्डुलिपि आपको भेज दूंगा । मैं उसका प्रकाशन जरा शीघ्र चाहता हूं वह व्यवस्था भी आप कर ही देगे ऐसी आशा है । एक नाटक'मुक्ति पथ' भी तैयार है । वह नाटक बुद्ध के ऊपर है । मुझे विश्वास (है) आप मेरी दोनो पुस्तको के लिये कही न कही और विशेष करके इण्डियन प्रेस से प्रबन्ध करने की कृपा करेंगे । शेष कुशल । दया भाव बना रहे । उत्तर की प्रतीक्षा मे—

आपका विनीत
उदयशंकर भट्ट

———